मार्च (प्रथम) 1992, रुपए 10.00

सरिता



नया धारावाहिक उपन्यास

शेयर बाजार
पैसा कैसे लगाएं

धर्म
भ्रष्टाचार की जड़

उपहार
पत्नी के लिए भी

पौष्टिक पकवान
कामकाजी महिलाओं के लिए

जैसलमेर
हवेलियों का नगर


रिया की सलोनी दुनिया में आइ
बादाम
नींबू
Ria
Almond
नया रिया. बादाम के गुणों से भरा बादाम रिया.
नींबू की ताज़गी छलकाता नींबू रिया. आइए, अपनी त्वचा का
शाही सिंगार कीजिए. सपनों-सा रूप पाइए.
नया रिया आज़माइए.
नया
रिया
आपकी त्वचा का शाही सिंगार
टाटा उत्पादन

सरिता

सामाजिक व पारिवारिक पुन[...]
की पाक्षिक पत्रिका

संपादक व प्रकाशक: विश्वनाथ   अंक: 885   मार्च (प्रथम) 199[...]

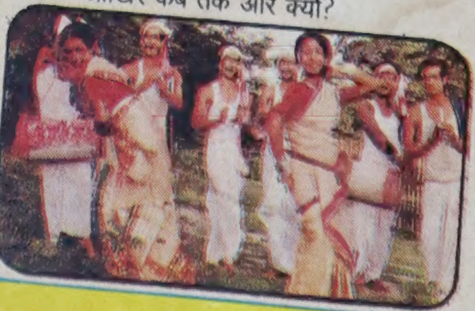


कथा साहित्य

धारावाहिक उपन्यास

लेख







स्तंभ

कविताएं



संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा प्रकाशित तथा दिल्ली प्रेस समाचार पत्र प्रा. लि. साहिबाबाद/गाजियाबाद में मुद्रित
अन्य कार्यालय : अहमदाबाद-503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009.
बंगलौर : 302-बी, ए' क्वींस कार्नर एपार्टमेंट्स, 3, क्वींस रोड, बंगलौर-560001. बंबई : 79-ए, मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. कलकत्ता : तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता-700016. मद्रास : 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, मद्रास-600008. सिकंदराबाद : 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्कलेन, सिकंदराबाद-500003. लखनऊ : फ्लैट न. बी-जी/3,4 सप्रू मार्ग, लखनऊ-226001. पटना : दिल्ली प्रेस, 111, आशियाना टावर्स, एक्जीबिशन रोड, पटना-800001.
कोचीन : दिल्ली प्रेस, जी-7, पायोनियर टावर्स, 1, मेरीन ड्राइव, कोचीन-682031.

वैवाहिक विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001.
वार्षिक मूल्य केवल ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'सरिता' के नाम से ई-3, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055, को ही भेजें चैक व वी.पी.पी. स्वीकार नहीं किए जाते
मूल्य : विदेशों में (समुद्री डाक से) 450 रु., (हवाई डाक से) 1,080 रु.

मूल्य : एक प्रति 10.00 रुपए, वार्षिक 240 रुपए.
वायुसेवा अधिभार 50 पैसे प्रति.
सिलचर, डिब्रूगढ़, अगरतल्ला, तेजपुर, इंफाल, पोर्ट ब्लेयर, अकारस और नेपाल में

आप के पत्र

सरित प्रवाह/जनवरी/द्वितीय

'सरित प्रवाह' में मंत्रियों की संख्या पर नियंत्रण के बारे में आप के विचार प्रशंसनीय हैं.

जहां सरकार ने प्रत्येक कार्यालय/विभाग में होने वाले चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी तक की संख्या को निश्चित कर रखा है, वहीं सरकार के कर्ताधर्ताओं (मंत्रियों) की संख्या उन के मुखिया की इच्छा पर क्यों निर्भर रहे?

मंत्रियों की संख्या को केंद्र व प्रत्येक राज्य की आवश्यकता के अनुरूप एक बार निश्चित कर देना चाहिए तथा यह संख्या कुल सदस्यों के 10% से अधिक नहीं होनी चाहिए. इस में बढ़ोतरी विशिष्ट परिस्थितियों में ही की जानी चाहिए.

इस से जहां केवल योग्य व्य
मंत्रिमंडल में शामिल किया जा
प्रधान मंत्री/मुख्य मंत्री केवल असंतुष्ट
लिए मंत्री पद का लालच नहीं दे सकेंगे,
पद के लालच में दलबदल की प्रवृत्ति में

सब से बड़ा लाभ तो यह होगा वि
देश अनावश्यक मंत्रियों पर होने वाले बेत
से बच जाएगा. साथ ही सभी मंत्रि
आवश्यक स्थान जैसी मूलभूत सुविधाएं
जा सकेंगी और वर्तमान केंद्र सरकार के उप
तरह उन्हें केंद्रीय कक्ष में इधरउधर बैठ
काम नहीं निबटाना पड़ेगा.

—अनि

*

समसामयिक लेख

लेख 'यूरोपीय आर्थिक समुदायः एक
की शुरुआत' (जनवरी/द्वितीय) में लेखक ने त
सामयिक घटना के परिप्रेक्ष्य में अपने सटीक
प्रस्तुत किए हैं.

इस समुदाय के माध्यम से यूरेशिया मह
एक नई दुनिया की नींव पड़ रही है. जिस का
भौगोलिक, राजनीतिक स्वरूप पर प्रभावशाली
होना अवश्यंभावी है. भले ही समुदाय का निम
राष्ट्रों की दबी हुई संकल्प शक्ति का परिणाम

इन की मानसिक, आर्थिक मजबूरी.

लेकिन अंततोगत्वा यूरोपीय आर्थिक समुदाय सदस्य राष्ट्रों के आर्थिक विकास में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा कर विकासशील देशों के लिए भी आर्थिक, व्यापारिक, सामूहिक आत्मनिर्भरता की दिशा में काफी उपयोगी साबित हो सकेगा.

—अनीता सुमन बनीरोत

*

लालफीताशाहों की कुंठित संवेदना

लेख 'दूर हो रहा है गण से तंत्र' (जनवरी/द्वितीय) में लेखक ने बड़ा सटीक चिंतन किया है.

यह लेख बड़ा ही उपयोगी सिद्ध हो सकता है, अगर लालफीताशाही इस में व्यक्त भावनाओं तथा विचारों को महसूस कर सके. पर लगता है कि इन की संवेदना इतनी कुंठित हो चुकी है कि न तो ये नैतिकता का मूल्य ही समझ पाते हैं, न ही अंतरात्मा की आवाज. अगर इन में से एकदो ईमानदार एवं कर्मठ मिलते भी हैं तो सारा तंत्र उन के मनोबल को तोड़ने पर उतारू हो जाता है.

इस का इलाज तो बस एक ही नजर आता है कि गण को फिर से चेतनायुक्त होना होगा, जागना होगा.

—रमिता सिन्हा

*

लेख 'दूर हो रहा है गण से तंत्र' काफी विचारोत्तेजक लगा.

शासनतंत्र में नेताओं की झूठी भाषणबाजी से जनता ऊब गई है. परिणामस्वरूप उस की रुचि शासनतंत्र से भी धीरेधीरे हट रही है. इस का सीधा उदाहरण है कि चुनाव के समय मत देने के लिए मतदाताओं की संख्या घटती जा रही है.

नेताओं को चाहिए कि वे जनता के विश्वास को ठेस न पहुंचा कर, उस का आदर करें और भाषण देने से पहले वे काम कर के दिखाएं, तभी जनता की रुचि शासनतंत्र में लौट सकती है. —विनोदकुमार भोलानी

*

आज के परिवेश में भारतीय गणतंत्र की सफलता के मार्ग को पगपग पर रिश्वतखोरी अवरुद्ध कर रही है. कार्य छोटा हो या बड़ा, बगैर रिश्वत के समय पर हो ही नहीं सकता. यहां के अधिकारियों तथा उन के वफादार कर्मचारियों को सोचना चाहिए कि उन्हें जो मोटीमोटी तनख्वाहें सरकार द्वारा दी जाती हैं, वह क्यों और कहां से दी जाती हैं. क्या उन्हें मिलने वाली तनख्वाह का भार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आम जनता वहन नहीं करती है? क्या उन का कार्य ईमानदारीपूर्वक नैतिकता को ध्यान में रखते हुए भारत में गणतंत्र को सुदृढ़ता प्रदान करने में सहयोग देना नहीं है?

सच्चे अर्थों में आम जनता की सेवा ही भारतीय

गणतंत्र की सेवा है तथा आम जनता के परस्पर सहयोग द्वारा ही भारत को अपने गणतंत्र की सफलता प्राप्त हो सकती है.

—सुचिनकुमार

*

आधुनिकता पर कटाक्ष

लेख 'क्या हो गया है हमारी गैरत को' (जनवरी/द्वितीय) आधुनिकता पर कटाक्ष समेटे हुए था. यह एक कड़वा सच है कि आधुनिक युग में प्रत्येक व्यक्ति का उद्देश्य मात्र स्वार्थ में सिमट कर रह गया है. कहीं भी चले जाओ, हर जगह मैं शब्द को ले कर दंगेफसाद हो रहे हैं. किसी व्यक्ति को इस बात से कतई मतलब नहीं है कि किसी दूसरे पर कैसी गुजर रही है. बस, खुद के जीवन में कोई कमी नहीं रहनी चाहिए, चाहे इस के लिए दूसरों का बड़े से बड़ा नुकसान ही क्यों न करना पड़े.

जनता की सोच में इस परिवर्तन का कारण पश्चिमी सभ्यता में ढलना है. हम पश्चिमी सभ्यता में इतने ज्यादा ढल गए हैं कि हमारी सभ्यता की अच्छाई हमारे लिए कोसों दूर हो गई है.

—ऋषिकुमार खदरिया

*

लेख 'क्या हो गया है हमारी गैरत को' हमारे व्यवहार प्रतिमानों पर करारी चोट करता है. वास्तव में हमारी स्वार्थपरायणता इतनी बढ़ती जा रही है कि हम सिवा अपने संबंध में सोचने के और कोई कार्य ही नहीं करते. इसी वजह से समाज का पतन हो रहा है.

—कमलकिशोर सिंह

*

गागर में सागर

'व्यवहार विशेषांक' (जनवरी/द्वितीय) के सभी लेख एक से बढ़ कर एक हैं लेकिन इस अंक की एक कविता 'धर्म की दुकान' बेहद पसंद आई. भले ही यह कविता छोटी है लेकिन इस का महत्त्व गागर में सागर के समान है और धर्म के ठेकेदारों पर एक करारी चोट.

—रमेश लुधियानवी

*

उत्कृष्ट अंक

'व्यवहार विशेषांक' (जनवरी/द्वितीय) बहुत अच्छा लगा. इस से हमें बहुत कुछ सीखने को मिला. आशा है सरिता से हमें हमेशा कुछ नया सीखने को मिलेगा.

—दीपक एवं नितिन गुप्ता

*

वास्तव में व्यवहार इनसान के आचरण का दर्पण है. व्यवहार से ही रिश्ते बनते एवं बिगड़ते हैं. ह[र] इनसान अच्छे व्यवहार की अपेक्षा रखता है.

इस अंक में प्रकाशित कहानियां 'रुक जा नूपुर' 'दांव', 'सांवली' उत्कृष्ट, मनमोहक एवं शिक्षात्म[क] लगीं. खास कर कहानी 'रुक जा नूपुर' नवयुवतियों [के]

लिए काफी प्रेरणादायक एवं शिक्षात्मक है. यह कहानी स्पष्ट संकेत करती है कि किसी भी लड़की को भावना में बह कर अपने प्रेमी के साथ घर नहीं छोड़ना चाहिए. घर से भागी लड़की का संबंध अपने परिवार से हमेशा के लिए टूट जाता है, और यदि प्रेमी धोखा दे दे तो उस के पास सिवा आत्महत्या के कोई और रास्ता नहीं बचता है.

कविता 'समाजवाद आएगा' एकदम नवीन लगी व यह कविता बढ़ती महंगाई की ओर स्पष्ट संकेत देती प्रतीत होती है. —हनुमान लाल बलाई

*

नवपीढ़ी को संदेश :

कहानी 'रुक जानूपुर' (जनवरी/द्वितीय) बड़ी प्रेरणास्पद लगी. यह नए युग के युवकयुवतियों के लिए संदेश है एवं वर्तमान परिवेश पर आक्षेप है.

कहानी 'सांवली' एवं 'दांव' भी रोचक एवं शिक्षाप्रद लगी. 'सांवली जैसी कहानियां प्रेरणा देने के साथसाथ विचारों का मंथन भी करती हैं एवं आदर्श को ऊंचा उठाती है. —विष्णु प्रसाद सैनी

*

सराहनीय आंदोलन

'शैक्षिक सुधारों की आवश्यकता' से संबंधित आप का रचनात्मक आंदोलन सराहनीय एवं विचारणीय लगा.

आज जब कि हमारा भारत अपनी कठिन आर्थिक स्थितियों के कारण विदेशी कर्जे में दबा हुआ है, वहीं शिक्षा विभाग भी लाखों की चोरी तथा घाटे से देश की अर्थव्यवस्था को बरबाद करने पर तुला है. आज विश्वविद्यालय एक शिक्षा का केंद्र न रह कर, एक राजनीति का अड्डा बन गया है.

कृपया शिक्षा में सुधार लाने के लिए आप ऐसी ही और रचनाएं प्रकाशित करें. —के.के. यादव

*

वास्तव में शिक्षक समाज का सच्चा निर्माता होता है. यदि वह ही यह लक्ष्य बना ले कि 'यावज्जीवेत सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत' तो फिर सामान्य जनता का क्या होगा? कुम्हार घड़े को गोल, टेढ़ा चौकोर जैसा भी बनाएगा, वह बन जाएगा. उसी प्रकार छात्र निर्माण का जिम्मेदार शिक्षक है. वह जो सिखाएगा छात्र वैसा ही करेगा. काश, आप के द्वारा सुझाए गए विचार अक्षरशः लागू हो जाते.

सरिता सद्ज्ञान प्रवाह करे, सुख युक्त समाज बने जिस से

व्यवहार विचार समुन्नति हो, मर्यादा शिक्षण हो इस से

प्रतिफल चिंतन यही शशि का, नित्य प्रवाह बहे 'सरिता' का. -शिव पांडेय 'शशि'

निर्भीक लेख

लेख 'कुप्रथाओं का शिकार हो गया है जैन समाज' (जनवरी/प्रथम) स्पष्ट तथा निर्भीक है. जैन समाज में यह पाया जाता है कि बाल साध्वियां आगे चल कर संन्यास से पलायन कर जाती हैं. इंदौर की इंदुप्रभा जैन साध्वी ने, साध्वी जीवन त्याग कर राधेश्याम दूधवाले को संरक्षक के रूप में अपना लिया. आज इंदुप्रभा एक संतान की मां है. जैन समाज में सुधार की नितांत जरूरत आ पड़ी है.

—राजकुमार 'हंस'

*

लेख 'कुप्रथाओं का शिकार हो गया है जैन समाज' (जनवरी/प्रथम) लगता है राजस्थान के जैन समाज पर आधारित है. वैसे चाहे कोई भी समाज या प्रदेश हो, संकीर्णता, आडंबर और कुप्रथाओं को त्याग कर ही स्वस्थ रह सकता है.

जैन सिद्धांत और दर्शन वैज्ञानिक हैं लेकिन बालदीक्षा उचित नहीं है. बालदीक्षा की बजाय बच्चों के पूर्ण विकास के लिए उन्हें उपयुक्त वातावरण दिया जाना चाहिए.

—राकेशकुमार जैन

*

सरित प्रवाह/दिसंबर/प्रथम

संपादकीय विचारों के अंतगर्त क्रिकेट को दी गई संज्ञा 'निठल्लों का खेल' बहुत अच्छी एवं सटीक लगी.

सरिता के लेखक

नूरणी परमेश्वरन विश्वनाथन

कहानी 'प्रतिबोध' के लेखक नूरणी परमेश्वरन विश्वनाथन 'राचेकविपुरा' इलाहाबाद बैंक, बंबई में उपप्रबंधक (राजभाषा) हैं. आप की हिंदी, तमिल, कन्नड़, पंजाबी और अंगरेजी भाषा में कहानी, व्यंग्य और उपन्यास लेखन में रुचि है.





डा. सुमन कौल

लेख 'बस्ते के बोझ तले सिसकता बचपन' की लेखिका डा. सुमन कौल के सामाजिक, पारिवारिक विषयों पर हिंदी में लेख आदि सरिता, मुक्ता के अलावा अन्य पत्रपत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं.

इस में कोई शक नहीं कि उक्त संज्ञा की सार्थक[ता] के कारण ही यह खेल उन देशों में (जैसे रूस, जापान, अमरीका आदि) अपना स्थान नहीं बना पाया, जह[ां] निठल्लों की संख्या नहीं के बराबर है.

—निर्मला जोश[ी]

*

मार्गदर्शन का अनुरोध

वैसे तो सरिता के हर अंक में मर्मस्पर्शी कहानिय[ां] होती हैं परंतु 'स्वयंवरा' व 'प्रतिदान' (दिसंबर/प्रथम) कहानियां कुछ अधिक ही मर्मस्पर्शी लगीं.

मैं एक 27 वर्षीय सारस्वत ब्राह्मण युवक हूं व 'सरिता' का 11 वर्षों से नियमित पाठक हूं. मैं ने 'सरिता' में क्रमशः दो बार अपने विवाह हेतु विज्ञापन दिए.

प्रथम विज्ञापन के बाद कुछ पत्र भी आए परं[तु] सरकारी नौकरी न होने के कारण बात नहीं बनी. दूस[रे] विज्ञापन के बाद पत्र नहीं आए. कुछ माह पूर्व रिश्त[ा] अहेरीपुर, इटावा, उत्तरप्रदेश में तय हुआ परंतु शाद[ी] के कुछ दिनों पूर्व लड़की के दूसरे भाई ने (जो सगाई [के] वक्त अनुपस्थित था) यह कह कर रिश्ता तोड़ दिय[ा] कि पहली बहन का रिश्ता बेरोजगार से होने के कारण अभी तक उस की जिम्मेदारी हम पर है, अत[ः] गैरसरकारी व्यक्ति से विवाह नहीं होगा.

मैं तीन शिक्षण संस्थानों का संस्थापक व सचि[व] हूं. मेरी मासिक आय 4,000 रुपए है परंतु रिश्ता ब[न] ही नहीं पा रहा है. मेरे पास तीन निजी भवन व पू[री] सुविधाएं हैं. क्या सरकारी नौकरी ही विवाह का मू[ल] आधार है?

उपर्युक्त या अन्य किसी भी संबंध में मेरी दहे[ज] की कोई मांग नहीं थी. शरीर व स्वभाव से भ[ी] आकर्षक हूं. क्या ऐसी मानसिकता मेरे मस्तिक में ऐ[से] लोगों के प्रति विकृति नहीं उत्पन्न कर देगी?

यह सही है कि गैर सरकारी रोजगार में भवि[ष्य] की सुरक्षा की गारंटी अपनी लगन, परिश्र[म] कार्यक्षमता पर निर्भर करती है. मैं उपर्युक्त गुणों [से] परिपूर्ण हूं. परंतु लोग सोचते हैं कि भविष्य की सुरक्ष[ा] की गारंटी सिर्फ सरकारी नौकरी में ही संभव है. त[ो] क्या सभी कन्याओं के विवाह सरकारी नौकरी वालों [से] ही होंगे? क्या गैरसरकारी कर्मचारी अपनी सूझबू[झ] लगन, परिश्रम से अपना भविष्य सुरक्षित व सुखम[य] नहीं बना सकते?

ऐसी परिस्थितियों में मेरी मानसिकता कुंठा [की] ओर अग्रसर होती जा रही है. मैं एकाकी होता जा र[हा] हूं. किसी विवाहित व्यक्ति के यहां जाने में संको[च] होता है कि कहीं वह मेरे आगमन को अन्यथा न ले[ले].

ऐसी विकट परिस्थितियों में सिर्फ 'सरिता' [की] कहानियां ही मेरा संबल, पथप्रदर्शक व मित्र हैं, जि[न्हें] पढ़ कर मैं अपने मन को शांत बनाए रख पाता हूं.

कृपया अपनी रचनाओं व अन्य माध्यमों से मे[रा] पथप्रदर्शन करते रहें.

—वीरेंद्र शुक्ल



सरकारी क्षेत्र के बैंक हमेशा ही बेहतर क्यों

नहीं नहीं - हम अपनी तारीफ स्वय नहीं करेंगे - बल्कि हम आपसे ही यह जानने की कोशिश करने का अनुरोध करेंगे कि हम यह क्यों कह रहे हैं कि 'जब भी कभी आपकी बैंकिंग आवश्यकताओं को पूरी करने की बात होगी, सरकारी क्षेत्र के बैंक हमेशा ही औरों से अपेक्षाकृत बेहतर साबित होंगे

- **खाता खोलने के लिए बस थोड़ी सी राशि:**
  शुरूआत करने के लिए बस हमारे पास आ जाए - शायद आपको मालूम होगा कि बचत खाता खोलने के लिए थोड़ी यानी एक छोटी सी रकम की जरूरत होती है दरअसल बचत करना हम आसान बना देते हैं
- **अपेक्षाकृत अधिक लाभ** : हमारी ब्याज की दरें सचमुच ही काफी आकर्षक हैं - तीन वर्ष या इससे अधिक अवधि की जमा-राशियों पर 13 प्रतिशत वार्षिक, जबकि अधिक अवधि की जमा-राशियों पर 13 प्रतिशत वार्षिक, जबकि अधिक लम्बी अवधि की जमा-राशियों पर तो 25 9 प्रतिशत वार्षिक तक ब्याज मिल जाता है.
- **आपकी आकांक्षाओं के लिए योजनाएं** : आपकी विशिष्ट आवश्यकताओं के लिए हमारी विशेषरूप से बनाई गई योजनाओं की जानकारी आप प्राप्त कर सकते है - अपने धन की सुरक्षा के प्रति आप आश्वस्त रहते हो हैं
- **हर जगह मौजूद** : समूचे राष्ट्र मे 59,000 से भी अधिक शाखाओं का जाल फैला हुआ है. दूर दराज के गांवों तक में भी आप इन्हे बिल्कुल अपने पास में पाएंगे (यानी हर थोड़ी दूर पर बैंक की एक शाखा आपको मिल जाएगी).

लेकिन यही भर तो सबकुछ नहीं - 'ग्राहकों के प्रति हमारी जागरूकता' हमें प्रेरित करती रहती है कि हमारी सेवाएं समय के अनुरूप हो और उनका क्षेत्र बढ़ता रहे इसमें जो मुख्य तथ्य है वे हैं:-

- **सुरक्षा** : आपका धन पूरी तरह से सुरक्षित रहता है आप '**संयुक्त खाता और नामांकन सुविधाओं**' का लाभ उठा सकते है
- **तरलता** : आपका धन कभी अवरुद्ध नहीं होता आप अपनी इच्छानुसार इसे निकाल सकते हैं या जमा-राशि के 75 प्रतिशत तक ऋण ले सकते हैं
- **मामूली सेवा-शुल्क** : माग ड्राफ्टों के माध्यम से एक जगह से दूसरी जगह धन भेजने पर मामूली और वह भी वाजिब सेवा-शुल्क
- **कर-लाभ** : एक वर्ष मे ब्याज से 7000 रुपये तक मिलनेवाली आय कर-मुक्त है इसके अलावा बैंक मे जमा की गई 5 लाख रुपये तक की राशि पर 'सम्पत्ति-कर' नहीं लगता

आपभी जरा सोचिए, इनके बारे में और हमारी जो भी शाखा आपके ज्यादा पास हो, उसमें एक खाता खोल लीजिए, आप देखेंगे कि हम आपके धन को एक 'सुरक्षित और प्रणामी भविष्य' के साथ कुछ 'और भी' प्रदान करते है

हम आपके धन को अतिरिक्त शक्ति प्रदान करते है.

28 सदस्य बैंक

- इलाहाबाद बैंक
- आंध्र बैंक
- बैंक ऑफ बड़ौदा
- बैंक ऑफ इंडिया
- बैंक ऑफ महाराष्ट्र
- केनरा बैंक
- सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
- कार्पोरेशन बैंक
- देना बैंक
- इंडियन बैंक
- इंडियन ओवरसीज़ बैंक
- न्यू बैंक ऑफ इंडिया
- ओरिएंटल बैंक ऑफ कामर्स
- पंजाब नेशनल बैंक
- पंजाब एंड सिंध बैंक
- स्टेट बैंक ऑफ इंडिया
- स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एंड जयपुर
- स्टेट बैंक ऑफ हैदराबाद
- स्टेट बैंक ऑफ इन्दौर
- स्टेट बैंक ऑफ मैसूर
- स्टेट बैंक ऑफ पटियाला
- स्टेट बैंक ऑफ सौराष्ट्र
- स्टेट बैंक ऑफ त्रावणकोर
- सिंडिकेट बैंक
- यूको बैंक
- यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
- यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया
- विजया बैंक

संयुक्त प्रचार समिति

सरकारी क्षेत्र के बैंक

हर दिन, हर जगह सबके जीवन मे नया विश्वास जगा रहे है

Mode/JPC/113/91 HN


पर्यटन के
इस बार फिर आप के लिए पेश हैं :
दो पर्यटन विशेषांक
अप्रैल (प्रथम) व मई (प्रथम) अंक
देश भर में बिखरे आकर्षक पर्यटन स्थलों पर पहुंचने, रहने, खानेपी
घूमने की नवीनतम जानकारी, जो आप के पर्यटन को सुखद बना देगी
सफर में आप के सच्चे सा



सरिता
के संग
पर्यटन विशेषांकों की विशेषताएं:
जम्मू, हरिद्वार, ऋषिकेश, मसूरी, शिमला, चंबा, धर्मशाला, डलहौजी, कुल्लूमनाली, बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्रीयमुनोत्री, नैनीताल, अलमोड़ा, रानीखेत, कौसानी, माउंट आबू, कोडाइकनाल, ऊटी, दार्जिलिंग, बंबई, माथेरान, महाबलेश्वर, गोआ, आगरा, भुवनेश्वर, कोणार्क, पचमढ़ी, खजुराहो, मद्रास, महाबलीपुरम, बंगलौर, कन्याकुमारी, रामेश्वरम, हैदराबाद, अहमदाबाद, उदयपुर तथा बहुत से अन्य पर्यटन स्थलों की संपूर्ण जानकारी.
एक पत्रिका में दो पत्रिकाओं की सामग्री
इन के अतिरिक्त इन विशेषांकों में पूरे परिवार का मनोरंजन करने वाली कहानियां, कई अन्य लेख, मर्मस्पर्शी कविताएं और सभी स्तंभ.
टन विशेषांक : खरीदना न भूलें

मुझे शिकायत है

इन प्रकाशित शिकायतों को काट कर संबंधित व्यक्तियों को भेजिए या उपयुक्त स्थान पर चिपकाइए ताकि इन्हें पढ़ने वाले अपनी त्रुटियों को पहचान कर उन्हें दूर कर सकें.



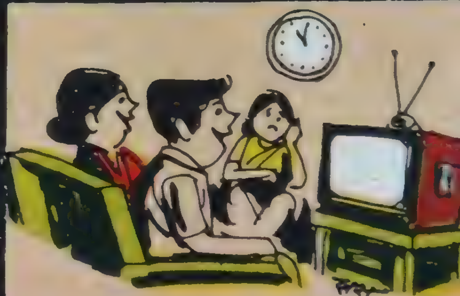
मुझे शिकायत है ऐसे लोगों से जो सड़क के किनारे लगे यातायात नियम बोर्डों पर विज्ञापन के पोस्टर चिपका देते हैं.

—बृजेशकुमार गुर्जर 'नितिन'



मुझे शिकायत है उन महिलाओं से, जो बसों में महिला सीट छोड़ कर पुरुषों की सीट पर बैठ जाती हैं, लेकिन महिला सीट पर पुरुषों के बैठने पर उन्हें आंखें दिखाती हैं.

—एस. लाल वरसैया



मुझे शिकायत है उन पड़ोसियों से जो देर रात तक दूसरों के घरों में बैठ कर टीवी देखते रहते हैं.

—ओमप्रकाश चौहान



मुझे शिकायत है उन डाकियों से जो मनीआर्डर आने पर अपना कमीशन मांगते हैं. —आर.वी. सिंह



मुझे शिकायत है ऐसे लोगों से जो बस में दरवाजे के बजाय खिड़कियों से सामान अंदर रखते हैं.

—हुकमीचंद दाधीच



फ्रेस्का क्रीम
आपकी त्वचा को मुलायम बनाए,
उस पर रौनक लाए.
NEW
FRESCA
CREAM
नया
गोदरेज
फ्रेस्का
देखभाल करे
अनेक रूपों में
रु.6.00*100 ग्राम
NEW
FRESCA
फ्रेस्का कूल
अनचाही चिकनाहट मिटाए,
तन मन खिलाए.
धिकतम रीटेल कीमत
(सभी करों सहित)
TSMcCANN-B:GSL:314-Hn



सरित प्रवाह

पाकिस्तान के शासकों से शह पा कर, और शायद भाजपा के अध्यक्ष मुरलीमनोहर जोशी की एकता यात्रा के जवाब में, पाकिस्तान द्वारा कब्जा किए हुए कशमीर स्थित जम्मूकशमीर मुक्ति मोर्चे के अध्यक्ष अमानुल्लाह खां ने भी एलान किया कि वह 11 फरवरी को अपनी 'फौज' के साथ कशमीर में घुसेगा और श्रीनगर के लाल चौक में अपना झंडा फहराएगा.

ऊपर से यह कहते हुए कि हमारा इस से कोई संबंध नहीं है, पाकिस्तानी प्रधान मंत्री नवाज शरीफ ने देश भर में एक दिन की हड़ताल की घोषणा की जिस के द्वारा यह जाहिर किया गया कि पाकिस्तान पूरी तरह से कशमीरियों के आत्मनिर्णय का समर्थन करता है.

इधर भारत सरकार ने घोषणा कर दी कि किसी भी हालत में अमानुल्लाह खां की 'फौज' को सीमा रेखा पार नहीं करने दी जाएगी और भारतीय सेना को खुली छूट दे दी कि जिस प्रकार भी हो कोई बाहर का आदमी भारत की सीमा में न घुसने पाए. साथ में अमरीका, ब्रिटेन, फ्रांस इत्यादि मुख्य देशों के राजदूतों को बुला कर यह सब समझा दिया गया कि अगर सीमा पार की गई तो पाकिस्तान भारत युद्ध छिड़ जाने की संभावना है.

आज कोई देश संसार में कहीं भी युद्ध नहीं चाहता– सद्दाम हुसैन जैसे सिरफिरे लोगों के अलावा. युद्ध अब सर्वनाश का प्रतीक है. फिर अमरीका, ब्रिटेन, फ्रांस इत्यादि देश पाकिस्तान व भारत दोनों को पुनर्निर्माण और विकास के लिए, ग
हटाने के लिए, भारी वित्तीय सहायता
हैं. यदि दोनों में युद्ध होता है तो यह
सहायता बेकार हो जाती है.

भारत के कड़े रुख और अन्य रा
दबाव में पाकिस्तान को पीछे हटना
यहां तक कि अमानुल्लाह खां को गिर
भी किए जाने के आदेश दिए गए और
चला कर काफी संख्या में 'मुजाहि
(पवित्र धार्मिक योद्धा) जो सीमा पार
का प्रयत्न कर रहे थे, मार डाले गए
प्रकार यह प्रकरण समाप्त हुआ.

कुछ लोग कह सकते हैं कि
मुरलीमनोहर जोशी अपनी यात्रा नहीं
तो यह नौबत नहीं आती. पर क्या अप
देश में अपना ही राष्ट्रीय झंडा फह
गुनाह है? अगर पाकिस्तानी इस से उत्ते
होते हैं तो हों, उन की तेजीतुर्शी से हम
प्रदेश पर से अपना अधिकार छोड़ दें

महत्त्व की बात तो यह है कि
आप किसी भी देश के किसी भी टुक
आजाद होने की छूट दे दें तो कोई देश स
नहीं बचेगा, जैसे भूतपूर्व सोवियत सं
हाल हुआ. हर प्रांत, हर जिला, हर
कहेगा हम स्वतंत्र क्यों न हों? और अं
झख मार कर, विशाल धन और जान
कर फिर एक होना पड़ेगा–जैसे आज
में हो रहा है.

हां, यह बात अवश्य मानी
चाहिए कि जहां तक संभव हो बिना देश
एकता को छिन्नभिन्न किए हर श
जिले, प्रांत और राज्य को अधिक से अ

अपना प्रबंध स्वयं करने की छूट होनी चाहिए. जनतंत्र का मतलब ही यह है.

*

कांग्रेस और कांग्रेस से निकले भूतपूर्व कांग्रेसियों के अन्य राजनीतिक दल जैसे जनता दल, समाजवादी जनता दल इत्यादि हमेशा रूस और अरबों के चरण चूमने की विदेश नीति अपनाते रहे हैं, और इस प्रकार भारत की महत्ता को चोट पहुंचाते रहे हैं. केवल भारतीय जनता पार्टी इस नीति के विरुद्ध आवाज उठाती रही है. अब तक हमारा यह रहा है कि रूस और अरब देश यदि यह कहते कि सूरज पश्चिम में निकलता है तो यह जीहुजूर चाटुकार वर्ग जोर से नारा लगाते हैं कि माईबाप, आप सही फरमा रहे हैं.

इस नीति का आधार यह था कि भारत के कम्यूनिस्ट, समाजवादी व मुसलमान नाराज न हो जाएं और अपने वोटों से कांग्रेस या भूतपूर्व कांग्रेसियों को वंचित न कर दें. इस के अलावा यह भी धारणा थी कि रूस और अरब देश महाशक्तियां हैं और इन्हें भारत से ज्यादा अपनत्व रहेगा. इसलिए जवाहरलाल नेहरू व उन के उत्तराधिकारियों ने अमरीका से बैर मोल लिया और पश्चिम एशिया की एक ताकत इजराइल को पूरी मान्यता देने और उस से कोई संबंध रखने से लगातार इनकार किया.

नतीजा यह हुआ कि अमरीका को पाकिस्तान का हाथ पकड़ना पड़ा और पाकिस्तान ने दो बार भारत पर चढ़ाई की जिस से भारत का अपार धन नष्ट हुआ और उसे बड़ी लंबीचौड़ी फौज रखनी पड़ी. रूस को भारत के इस अमरीका विरोध से बड़ा लाभ था पर भारत बराबर घाटे में रहा. रूस ने अपना रद्दी फौजी सामान भारत को अच्छी कीमतों पर धड़ल्ले से बेचा और ऐसा ही अरब देशों ने तेल के मामले में किया.

इजराइल को अछूत बना कर रखने के कारण देश का पश्चिमी एशिया में प्रभाव लुप्त हो गया और वह तिरस्कार का शिकार बन गया, और अरब देशों को 'गुलाम' निर्यात कर के पैसा कमाने वाला देश रह गया.

अब जब रूसी साम्राज्य छिन्नभिन्न हो गया और उसे अमरीका के पांव में सिर रख कर खाने तक की भी भीख मांगनी पड़ी, और अरब देशों की शक्ति संपन्नता की पोल खाड़ी युद्ध में खुल गई, तब भी भारतीय कांग्रेसी शासकों को अक्ल नहीं आई और वे अपनी पुरानी लीक पर चल कर इजराइल का विरोध करते रहे. परंतु जब स्वयं अरब देश और विशेषतः फिलिस्तीनी मुक्ति मोर्चे के सरदार यासर अराफात इजराइल से बातचीत कर रहे हैं तो खिसियानी हो कर भारत सरकार इजराइल से पूर्ण संबंध बनाने की घोषणा कर रही है.

वैसे नरसिंह राव को दाद देनी पड़ेगी कि वह अल्पमत की सरकार चलाते हुए भी नेहरू खानदान की देशद्रोही रीतिनीतियों को शीघ्रता से बदल कर भारत को एक नए युग में ले जा रहे हैं

*

अमीरी,समृद्धि जहां स्वयं में सुखसंतोषदायक होती है, वहां वह गरीबों में इस समृद्धि में हिस्सा बंटाने की भावना भी पैदा करती है. अमरीका और यूरोप के देश संसार में सब से अधिक समृद्ध देशों में से हैं. और सारे गरीब देशों के लोग यहां आ कर बसना चाहते हैं क्योंकि इन्हें अपने पिछड़े गरीब देशों में सूखी रोटी भी आसानी से, या यों कहिए मेहनत करने पर भी नहीं मिलती.

एक समय था जब उद्योगधंधों का आज की तरह मशीनीकरण नहीं हुआ था, और हाथ की मजदूरी करने के लिए दो हाथ वाले मजदूरों की बड़ी आवश्यकता थी. इसलिए संयुक्त राज्य अमरीका ने सारे संसार के लिए अपने दरवाजे खोल दिए थे, और वहां धड़ाधड़ कम समृद्ध व गरीब देशों के नागरिक पहुंचने लगे. अमरीका में

लगभग हर देश के नागरिक गुजरबसर करते मिल जाएंगे—भारत के भी कई लाख लोग वहां जा कर बस गए हैं और काफी धन और यश कमाते भी हैं.

इसी प्रकार दूसरे विश्वयुद्ध के बाद पश्चिम जरमनी में भी जब पुनर्निर्माण शुरू हुआ तो उस ने भी तुर्की व उस के आसपास के लोगों का खुले हाथों स्वागत किया क्योंकि जरमनी के अपने अधिकांश नागरिक लड़ाई में मारे गए थे. यही हाल ब्रिटेन, फ्रांस, इटली आदि देशों का भी हुआ. वहां भी इन के पूर्व उपनिवेशों से बड़ी संख्या में लोग गए और वहां जा कर बस गए.

पर अब पुनर्निर्माण समाप्त हो चुका है और फैक्टरियों में स्वचालित मशीनों ने काम शुरू कर दिया है तो अब वहां बाहर के लोगों के लिए काम मिलना संभव नहीं रहा है, इसलिए सब देशों ने बाहर के नागरिकों को आने से रोकना शुरू कर दिया है. हर देश आप्रवासियों पर प्रतिबंध लगा रहा है.

यह एक अजीब बात है कि जितने भी समृद्ध देश हैं वे अधिकांश गोरे हैं, और भूरे या काले लोगों के देश पिछड़े या गरीब. इसलिए इन गोरे देशों में भूरे या काले लोग स्वत: गरीब, आप्रवासी माने जाते हैं और उन के साथ भेदभाव रंग के कारण सहज ही पैदा हो जाता है.

जहां अमरीका में भूरे और काले लोगों को बाहर निकालने वाला गुट 'कू क्लक्स कलान' है, वहां स्वीडन में स्थानीय गोरे लोगों का एक नया दल उभरा है जिस का नाम है 'विट्ट अरिसिक्त मोत्सतुनि' जिस का हिंदी अनुवाद होगा 'गौरवर्ण आर्य आंदोलन.' पिछले दिनों इस गुट के लोगों ने ईरान व अन्य देशों से आए,स्वीडन में बसे भूरे व काले लोगों को मार डाला है,और पुलिस इन्हें पकड़ने में कोई सतर्कता नहीं दिखा रही है.

ब्रिटेन और फ्रांस में भी एशिया के देशों से आए,बसे लोगों के विरुद्ध आंदोलन और दंगे शुरू हो गए हैं. जब अगले 5-6 वर्षों में यूरोप एक महादेश बन जाए यह रंग व आप्रवासी भेद और पकड़ेगा.

इस रंग, भाषा व देश आधा भेदभाव की भर्त्सना तो की जा सकती है यह स्वाभाविक. क्या भारत बंगलादेशियों की घुसपैठ के विरुद्ध आ नहीं उठ रही है और भारत बंगलादेश सीमा पर तारों की बाड़ लगाई नहीं जा है? पर अंतिम रूप से इस व्याधि का इल भूरे और काले देशों को कड़ी मेहनत क समृद्ध होने व अपनी बढ़ती आबादी पर नियंत्रण रखने की जरूरत है ताकि इन दे से गोरे समृद्ध देशों की ओर पलायन रोका जा सके.

*

यूरोपीय बिरादरी (यूरोपियन कम्यूनि की संसद ने फैसला किया है कि तंब व सिगरेट के विज्ञापन समाचारपत्र पत्रिकाओं में व सड़कों पर लगे विज्ञा बोर्डों (होरडिंग) पर प्रकाशित नहीं वि जाएंगे क्योंकि तंबाकू का सेवन स्वास्थ्य लिए हानिकारक है. टेलीविजन पर सिगरे के विज्ञापनों पर प्रतिबंध पहले ही से ल हुआ है.

आज यह साबित हो गया है तंबाकू का सेवन जानलेवा बीमारिय विशेषत: कैंसर पैदा करता है और लाख लोग इस से हर वर्ष मर जाते हैं.

भारत सरकार ने पहले ही से ह सिगरेट व तंबाकू के पैकेट पर यह लिखन अनिवार्य कर दिया है कि तंबाकू का सेव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, प विज्ञापनों पर कोई रोक नहीं लगाई है (सरिता व दिल्ली प्रेस के अन्य प्रकाश तंबाकू के विज्ञापन किसी भी मूल्य पर नह छापते). तंबाकू सिगरेट कंपनियों को इ लिखावट से कोई अंतर नहीं पड़ता. पत्रपत्रिकाओं में बड़े लुभावने विज्ञाप छपवाते हैं, नृत्य, गायन और खेलकूद व समारोह आयोजित करते हैं और इस बहाने लोगों को सिगरेट पीने की लत सिखाते हैं

एक कंपनी राज बब्बर व जैकी श्राफ जैसे फिल्मी सितारों को ले कर चित्र भी बनवाती है जिस में सिगरेट पीने वाला गुंडों को मार कर किसी की जान बचाता है, किसी को आग में जलने से बचाता या इसी तरह के बहादुरी के काम करता दिखाया जाता है.और अंत में वह हीरो कहता है—मैं अमुक सिगरेट पीता हूं—यानी यह सिगरेट पीओ और बलवान, जांबाज बनो.

इसी प्रकार एक अन्य कंपनी ने औरतों के लिए एक सिगरेट बनानीबेचनी शुरू की जिस के बारे में विज्ञापन छपे कि आधुनिकता की पहचान यह सिगरेट पीना है. यह सिगरेट कंपनी अयोध्या के राम मंदिर आंदोलन चलाने वाले विश्व हिंदू परिषद के एक बड़े नेता विष्णु हरि डालमियां से संबंधित है. प्राचीन संस्कृति की रट और आधुनिक अभिशाप, धर्म और अर्थ का,सम्मेलन यहां बखूबी हुआ है.

इसी प्रकार पिछले दिनों शरजाह में जो क्रिकेट टूर्नामेंट हुआ था, जिस का बहुत प्रचार था, वह भी एक बहुद्देशीय सिगरेट कंपनी द्वारा आयोजित किया गया था. इस प्रतियोगिता का नाम ही विल्स क्रिकेट टूर्नामेंट था—विल्स एक सिगरेट का ब्रांड है.

सिगरेट व तंबाकू के विज्ञापनों पर प्रतिबंध के साथसाथ सिगरेट व तंबाकू कंपनियों द्वारा खेलकूद, साहित्यिक व सांस्कृतिक आयोजनों पर भी पाबंदी लगनी चाहिए. अन्यथा सरकार द्वारा सिगरेट पैकेटों पर सावधानी की लाइनें बेमानी और बेवकूफी ही मानी जाएगी.

इस विषय में अमरीका की एक नई योजना बहुत भर्त्सना योग्य है. अमरीका में जहां पहले सब से अधिक सिगरेट पी जाती थी, अब चिकित्सकों के प्रचार से, और कैंसर की व्याधि से लाखों लोगों के हर वर्ष मरने से, सिगरेट की खपत कम होती जा रही है. इसलिए तंबाकू उगाने वाले किसानों की हानि को रोकने के लिए सरकार अमरीकी तंबाकू विदेशों में विशेषतः तीसरी दुनिया के देशों में अधिक खपाने के लिए द्विपक्षीय सहायता दे रही है. यह सरासर इन देशों के स्वास्थ्य पर अप्रत्यक्ष आक्रमण है. इस के बजाय अमरीका को तंबाकू की खेती पर ही रोक लगानी चाहिए न कि तंबाकू को अन्य गरीब देशों पर लादने की कोशिश की जाए और उन के स्वास्थ्य व रहनसहन को नष्ट किया जाए.

पर यह तभी संभव होगा जब ये तीसरी दुनिया के देश तंबाकू, सिगरेट की खपत को स्वयं अपने देश में भी रोकें और सिगरेट विज्ञापनों पर प्रतिबंध लगाएं. भारत में भी सरकार को तंबाकू की खेती पर धीरेधीरे पाबंदी लगानी चाहिए और इस की जगह अनाज बोने को प्रोत्साहन देना चाहिए.

*

केंद्रीय भूतल परिवहन मंत्री श्री जगदीश टाइटलर की हिम्मत की दाद देनी चाहिए कि उन्होंने अन्य राजनीतिक दलों की घोर आलोचना को झेलते हुए दिल्ली में 3,000 नई बसों को निजी क्षेत्र में परमिट देने की योजना को सब से स्वीकार करा लिया है. इन बसों के किराए लागत के अनुपात से होंगे और दिल्ली परिवहन सेवा की खस्ता बसों और कुप्रबंध से राजधानी के लोगों को राहत मिलेगी और सरकार को बस सेवा का घाटा पूरा नहीं करना पड़ेगा.

सरकारी बस सेवा निरंतर लगभग 200 करोड़ रुपए वार्षिक का घाटा दे रही है. उस के पास पुरानी चीथड़ बसों की बजाय नई बसें खरीदने के लिए पैसा ही नहीं है. इस का एक विशेष कारण यह भी है कि राजनीतिक दलों के, विशेषतः भाजपा के दबाव में आ कर सरकार को 3,000 से अधिक बस कंडक्टर और चालक दोबारा नौकरी पर रखने पड़े जिन को पिछले दिनों हड़ताल करने के जुर्म पर बर्खास्त कर दिया गया था. इन की जगह नई भर्ती कर ली गई थी. इसलिए इन्हें खाली बैठा कर वेतन और सुविधाएं दी जा रही थीं. ●

नक्सली हिंसा और प्रतिहिंसा से ग्रस्त मध्य बिहार का क्षेत्र गत 13 फरवरी की रात को एक बड़े सामूहिक नरसंहार के बाद फिर से सुर्खियों में आ गया है. 13 फरवरी की रात को 'बारा' गांव के लोग दिनभर की मेहनतकश जिंदगी से लौट कर

चैन की नींद सो रहे थे. अचानव
करीब 10 बजे गोलियों व बमों क
से शांति भंग हो गई. देखते ही दे
कुछ अस्तव्यस्त हो गया. मा
कम्यूनिस्ट सेंटर (एम.सी.सी.) के

लेख • प्रदीपकुमार झ

बिहार में जाती

बिहार में जातीय नरसंहार कोई नई बात नहीं है. आए दिन ऐसी घटनाएं होती रहती हैं. यह एक ऐसा अंतहीन सिलसिला है जिस का निराकरण कोई भी सरकार या राजनीतिक दल ईमानदारी से नहीं करना चाहता क्योंकि जातिवाद की सीढ़ी पर चढ़ कर ही तो वे सत्ता तक पहुंचते हैं.



गांव में प्रवेश करते ही करीब 20 घरों में आग लगा दी. लोग चीखनेचिल्लाने लगे. घर के पास के खलिहान भी आग की चपेट में आ कर धूधू जलने लगे.

करीब 700 लोगों ने घरों पर एक साथ आक्रमण किया. कुछ घर जल रहे थे और कुछ के किवाड़ों को तोड़ने की कारवाई चल रही थी. एम.सी.सी. वाले चिल्ला रहे थे, "डायमंड (रामाधार सिंह), हरिद्वार सिंह, और ललन सिंह को फौरन हवाले करो. एम.सी.सी वालों ने पूरे गांव को घेर रखा था ताकि कोई बच कर न निकल जाए.

गांव वालों ने विनती के स्वर में कहा,

नरसंहार: एक अंतहीन सिलसिला



"यहां कोई डायमंड नहीं है, और न ही वे किसी डायमंड को जानते हैं."

परंतु हथियारबंद लोगों ने ग्रामीणों को बुरी तरह से पीटना शुरू कर दिया. फिर एकएक को नंगा कर के उन के ही कपड़ों से उन के हाथपैर बांध दिए. रोती महिलाओं ने बताया कि हत्यारे घरों में घुसघुस कर अपना शिकार ढूंढ़ रहे थे.

उधर जिन घरों में आग लगी थी वहां से भागते लोगों में से एकएक को पकड़ लिया गया. उन्हें घसीटते हुए पास की नहर के पास ले जाया गया और उन्हें ऐसी मौत दी गई जो दिल दहला देने वाली थी.

एकएक का गला गड़ासे से रेत कर काटा गया. कुछ लोगों के पहले पैर काटे गए, फिर हाथ और अंत में सिर को धड़ से अलग किया गया ताकि वे एकबारगी ही आसानी से न मर जाएं.

बारा गांव गया जिला मुख्यालय से 40 किलोमीटर दूर स्थित एक भूमिहारबहुल गांव है. यहां 40 घर भूमिहारों, 4 घर ब्राह्मणों, 1 घर तेली, 1 घर यादव, 1 घर गोराइत और 2 घर मोचियों के हैं. इस हमले का शिकार सिर्फ भूमिहार जाति के लोग बने, जबकि अन्य जाति के लोगों को छुआ तक नहीं गया.

इस महाविनाशकारी आक्रमण से बचे 20 वर्षीय भूमिहार युवक सतीश सिंह ने बताया कि जब उसे भी हाथपैर बांध कर काटने के लिए नहर के पास ले जाया जा रहा था तो उस ने कहा कि 'मैं ब्राह्मण हूं. मेरा नाम रमेश मिश्रा है और अखिलेश्वर मिश्रा मेरे पिताजी हैं.' सतीश को ब्रा[...] बताने के कारण अभयदान दे दिया [...]

उस तांडव नृत्य के एक चश[...] गवाह शिव शर्मा ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से ब[...] कि 'मैं कोठरी में चौकी के नीचे छिप[...] था इसलिए मेरी जान बच गई, पर [...] परिवार मारा गया.'

मिथिलेश शर्मा की विधवा जनक[...] ने बताया कि 'उस के परिवार में कोई [...] नहीं बचा है'. गोरा सिंह उर्फ राम नार[...] सिंह के परिवार में दो साल के एक [...] और महिला को छोड़ कर कोई पुरुष स[...] नहीं बचा है.

यह खूनी वारदात करीब 4 घंटे बेरोकटोक चलती रही लेकिन बिहा[...] पुलिस अपने स्वाभाविक आचरण [...] अनुसार तब आई जब कुछ भी घटने [...] शेष बचा नहीं था. बारा गांव से नज[...] ही मखदुमपुर, अलीपुर, नोनी गांव[...]

बिहार में सामूहिक नरसंहार: आंकड़ों के आईने में

लालूप्रसाद 7 मार्च 1990 को जनता दल के विधायक दल के नेता चुने गए थे. 10 मार्च को उन्होंने मुख्य मंत्री पद की शपथ ली थी. इस के बाद अब तक 31 सामूहिक नरसंहार हो चुके हैं जिन में से कुछ इस प्रकार हैं:

मार्च 1990 के द्वितीय सप्ताह में चिरौरा वादीपुर संहार.

20 मार्च 1990 को हरलाखी कांड (मधुबनी).

27 मार्च 1990 को लखावर कांड (जहानाबाद).

17 दिसंबर 1990 को दरियापुर संहार (पटना).

फरवरी 1991 में तिसखोरा कांड (पटना).

30 मई 1991 को हरपुर सैदाबाद गोलीकांड (समस्तीपुर).

4 मई 1991 को मलबरिया कांड (पलामू).

22 मई 1991 को सहियारा सामूहिक हत्या (भोजपुर).

12 जुलाई 1991 को संग्रामपुर कांड (सारण).

जुलाई 1991 को रैलीगढ़ा कोलियरी कांड (हजारीबाग).

14 अगस्त 1991 को बहादुरगंज कांड (पटना).

25 अगस्त 1991 को गोदरामा कांड (सहरसा).

15 सितंबर 1991 को पोठिया गोलीकांड (किशनगंज).

21 सितंबर 1991 को सावन बिगहा कांड (जहानाबाद).

30 सितंबर 1991 को तीन डीह कांड (गया).

दिसंबर 1991 में मेनगांव एवं बरसीमा कांड (गया).



पुलिस संरक्षण में मुख्य मंत्री लालू प्रसाद यादव : उग्र भीड़ ने उन्हें गया मेडिकल कालेज के प्रांगण में घुसने तक नहीं दिया.

पुलिस कैंप स्थित हैं. ये सभी कैंप एकदूसरे से एक से डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर हैं. टेकारी थाना भी बारा गांव से मात्र 5 किलोमीटर की दूरी पर है. पर आश्चर्य है कि गोलियों की गूंज, आग की ऊंची लपटों और रात्रि में चीखतेपुकारते लोगों की आवाज पुलिस तक 4 घंटे बाद ही पहुंच पाई.

मगध क्षेत्र के आरक्षी उपमहानिरीक्षक बलवीर चांद के अनुसार, पुलिस को घटना स्थल पर पहुंचने में इसलिए देर हुई क्योंकि उग्रवादियों ने पेड़ काट कर रास्ते में गिरा दिया था, इसलिए सड़क बंद हो गई थी. उन के अनुसार पुलिस ने गांव पहुंच कर उग्रवादियों को खदेड़ दिया और कम से कम 70 लोगों की जान बचाई जा सकी. इन में से अधिकतर लोगों के हाथपांव बंधे थे और इन्हें काटने की तैयारी थी.

उग्रवादियों के बाद पुलिस ने अपना जालिमाना तेवर दिखाया. उस ने पहले लाशों को इकट्ठा करना शुरू किया. अनेक लाशों को पहचानना मुशकिल था क्योंकि कुछ का सिर धड़ से अलग था और हाथपांव बिखरे पड़े थे. महिलाओं ने जब लाशों को देने से मना किया तो पुलिस ने अपने डंडे का चमत्कार दिखाया.

उषा देवी ने अपनी पीठ दिखाई और पुलिस जुल्मों की करुणाभरी कहानी सुनाई.

राज्य सरकार का जो भी मंत्री और स्वयं मुख्य मंत्री जब इस गांव में पहुंचे तो उन्हें ग्रामीणों के कोपभाजन का शिकार बनना पड़ा. उग्र भीड़ इतनी उत्तेजित थी कि उन्होंने मुख्य मंत्री को गया मेडिकल कालिज के प्रांगण में भी प्रवेश करने नहीं दिया, जहां घायलों का इलाज चल रहा है.

सरकार के अनुसार, अब तक कुल 37 लोगों की हत्या का समाचार मिला है. परंतु गया में ग्रामीणों ने 45 मृतकों की सूची दी और बताया कि 30 लोगों का इलाज हस्पताल में चल रहा है तथा 20 लोग गायब हैं. संभवतः जाते समय उग्रवादियों ने उन का अपहरण कर लिया था. ग्रामीणों को इन के जीवित लौटने की कोई संभावना नहीं है.

ग्रामीणों का आरोप है कि सरकार जानबूझ कर मृतकों की संख्या छिपा रही है क्योंकि मुख्य मंत्री लालूप्रसाद यादव ने मृतकों के आश्रितों को एकएक लाख रुपए

अनुग्रह राशि और उन के परिवार के एक व्यक्ति को 7 दिन के अंदर सरकारी नौकरी देने की घोषणा की है.

व्यापक तौर पर यह अनुमान लगाया जा रहा है कि यह सामूहिक नरसंहार इस कांड से 48 दिन पूर्व इसी थाना क्षेत्र के मेन गांव हत्याकांड का प्रतिशोध है जब डायमंड सेना द्वारा 10 हरिजनों की हत्या कर दी गई थी. हत्या चाहे जिस की ओर से भी हो रही हो, इन कांडों ने एक ऐसा माहौल तैयार कर दिया है जिस में हिंसा के थमने के कोई आसार नजर नहीं आते.

मध्य बिहार का यह इलाका पिछले 6-7 वर्षों से सामूहिक नरसंहार की त्रासदी झेल रहा है. आज लोग उत्तेजित हैं, परेशान हैं और निराश भी. उन में प्रतिशोध की आग जल रही है.

'सवर्ण लिबरेशन फ्रंट' ने कहा जल्द ही वे इस नरसंहार का प्रत्युत्तर किसी बड़े आसन्न नरसंहार की घटना ओर से उपेक्षित नहीं रहा जा सकता 'खून का बदला खून' एक धारावाहि प्रक्रिया मालूम होती है जिस के आगे विराम नहीं दिखता क्योंकि कभी कि सरकार ने इन हत्याओं के मूल में झांकने प्रयास नहीं किया है.

उग्रवादी हिंसा के पीछे मूल का भूमि सुधार की प्रक्रिया का पूर्णतया विफ होना है. हालांकि देश के और भी कई भा में भूमि सुधार कानून ठीक से लागू न किए गए है परंतु बिहार इन सब में अव्व है. न यहां ठीक से जमींदारी उन्मूलन का



माओवादी कम्यूनिस्ट से के लोगों ने खुशहाल ग (बाएं) को देखते ही देख तबाह कर खंडहर बदल दिया. (**नीचे**).





लागू हुआ, न अतिरिक्त भूमि का भूमिहीनों के बीच व्यावहारिक रूप से बंटवारा हुआ और न चकबंदी हुई. सरकार ने भूमिहीनों को भूमि सिर्फ कागज पर बांट दी परंतु जमीन पर उन का कब्जा नहीं हो पाया.

नरसंहार के बाद विलाप करती महिलाएं : मुखाग्नि देने वाला भी कोई शेष नहीं बचा.

भूमिपति प्रशासन और राजनीति पर हावी हैं इसलिए आज तक सभी सरकारों ने भूमि

एम.सी.सी. बनाम सवर्ण लिबरेशन फ्रंट: नहले पे दहला

गया के बारा गांव में सामूहिक नरसंहार के लिए उत्तरदायी माओवादी कम्यूनिस्ट सेंटर" (एम.सी.सी.) बिहार के नक्सवादी संगठनों के बीच धुर वामपंथी हथियार बंद संगठन माना जाता है. गया, औरंगाबाद, रोहतास, हजारीबाग, पलामू की पहाड़ियों, धनबाद आदि जिलों से जुड़े ग्रामीण क्षेत्रों में इस संगठन के पांव पसरे हुए हैं. वैसे तो एम.सी.सी. बिहार में 15 वर्षों से अधिक समय से सक्रिय है तथापि उस का नाम सुर्खियों में तब आया जब औरंगाबाद के दलेलचक बघौरा गांव में 29 मई 1987 की रात को एक साथ 54 लोगों को इस संगठन ने मौत के घाट उतार दिया. एम.सी.सी. बिहार में नक्सलवादी राजनीति सी.पी.आई. (एम.एल.) लिबरेशन, पार्टी यूनिटी से अलग संगठन माना जाता है.

उधर सवर्ण लिबरेशन फ्रंट बिहार में सक्रिय विभिन्न निजी सेनाओं की तरह ही एक निजी सेना है जिस का गठन नक्सलवादियों के खिलाफ लड़ने के लिए किया गया है. वैसे तो इस संगठन में अधिकांश लोग भूमिहार जाति के हैं परंतु इन्हें ब्राह्मणों, राजपूतों और बनिया जाति का सक्रिय सहयोग प्राप्त है. इस के अतिरिक्त भूपतियों ने (इन भूपति में अधिकांशतः भूमिहार, राजपूत, यादव और कुछ ब्राह्मण हैं) अपने कृषि संबंधी हितों की सुरक्षा करने एवं नक्सलियों से लोहा लेने के लिए भूमि सेना, लोरिक सेना, किसान संघ, सनलाइट सेना जैसे संगठन बनाए हैं.

—कुंदनकुमार सिंह

सुधार के लंबेचौड़े वायदे किए पर वे लागू करने में असफल रहे.

सामूहिक नरसंहार के लिए सिर्फ भूमि सुधार कानून की विफलता ही कारण नहीं है.

बिहार में जातीय राजनीति की जड़ें अत्यंत गहरी चली गई हैं. राजनेताओं ने अगड़ीपिछड़ी जाति को एकदूसरे से भिड़ा कर अपनी रोटी सेंकी है. कतिपय नेता जातिगत व्यवस्था को उभारने का प्रयास करते रहते हैं क्योंकि इस से उन को राजनीति में अपना अस्तित्व बनाए रखने में आसानी होती है.

भूमिहार, राजपूत, ब्राह्मण और मुसलमानों का एक वर्ग एक जगह गोलबंद हो रहा है, जबकि दूसरी ओर यादव और कुछ पिछड़ी जातियां अपना जत्था बना रहीं हैं. वहीं अत्यंत पिछड़ी जैसे–धानुक, तेली, चांय, निषाद के साथ हरिजनों में चमार, एम.सी.सी. जैसे उग्रवादी संगठनों से भरती हो रहे हैं.

बारा गांव के चारों ओर भ आतंक का वातावरण है. अर्द्ध सैन्य 6 कंपनियां बी.एम.जी. के साथ गश्त रही हैं पर लोग आतंक के साए में ज क्योंकि उन्हें भय है कि आज नहीं 'सवर्ण लिबरेशन फ्रंट' कोई कारवाई अवश्य करेगा. पुलिस अनुसार, सवर्ण लिबरेशन फ्रंट वच लड़ाई में कभी पीछे नहीं रहेगा ऐसी आशंका व्यक्त की जा रही हत्याओं का अंतहीन सिलसिला पि तो रुकने वाला नहीं दिखता.



जादू प्यार का

गुस्से का तापमान
चढ़ा दे पारा आसमान
हर नापसंद आदत
लगे बड़ी हिमाकत.

छोटी सी बात
बन जाए आफत
नामाकन चर्चे बकार
बन जाएं कयामत.

करा दे तैयार
छोड़ने को कायनात
ओझल होते ही आंखों से दूर
उमड़ पड़े प्यार भरपूर.

बड़ी से बड़ी मात
लगे छोटी सी बात
जरा सी अशुभ आशंका
दहला दे दिल जोरों का.

पिघल जाए पारा गुस्से का
ऐसा है जादू प्यार का.

–स्नेह

भ्रष्टाचार की जड़ हमारा धर्म है

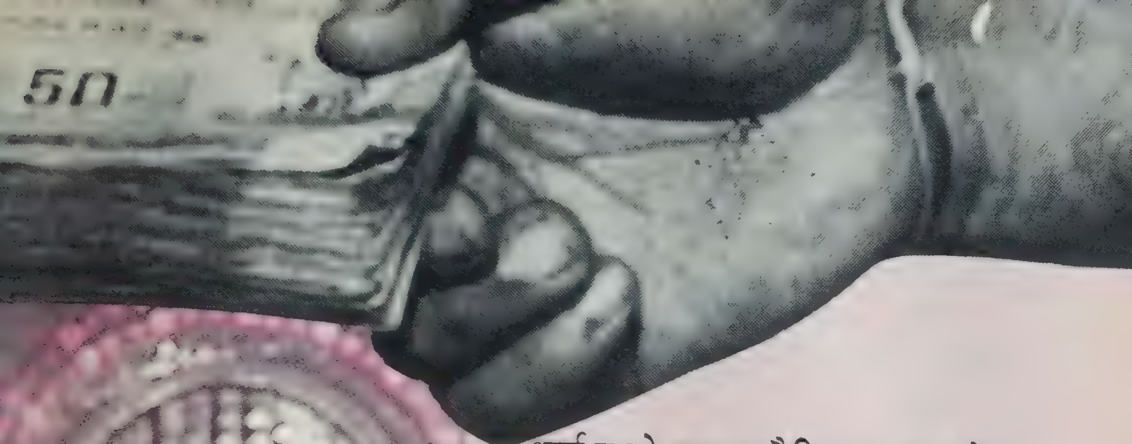


लेख ● ब्रजगोपाल राय चंचल

भ्रष्टाचार का एक बड़ा मजेदार उदाहरण उस दिन कचहरी में देखा. कचहरी में एक दीवार पर लिखा था—'रिश्वत लेना देना पाप और अपराध है.' किसी विलक्षण असाहित्यिक ने 'लेना' 'शब्द में 'ले' के आगे अल्पविराम लगा दिया. इस अल्पविराम ने वर्तमान भारतीय भ्रष्टाचार संस्कृति को एक सार्थक नारा दे दिया—' रिश्वत ले, ना देना पाप और अपराध है.'

भ्रष्टाचार को ले कर चिरकाल से बहस चल रही है. मंत्री से ले कर संतरी तक तथा पत्रकार से ले कर चित्रकार तक सभी इस बात से चिंतित हैं कि भ्रष्टाचार दूर कैसे हो? लेकिन भ्रष्टाचार है कि दिनरा ही जा रहा है.

भ्रष्टाचार के तीन कारण हैं के मूल में है हमारी अपनी संस्कृति सांस्कृतिक चेतना व चिंतन जिन क धर्म से होता है, उस में ही इस के बीज हैं, जिन से यह शाश्वत पुष्पितपल्लवित होता रहा है.





ण हैं– 1. भ्रष्टाचार सर्वदा ऊपर से, व्यवस्था से शुरू होता है. 2. हमारा चार व व्यवहार उसे सींचना है. 3. के प्रति हमारी मानसिकता दोहरी है.

टाचार का मूल उद्‌गम

भ्रष्टाचार की मोटी परिभाषा है, भी कार्य करने का पारिश्रमिक समाज

धर्म न तो ज्ञान व नैतिकता का स्रोत है और न ही पाप से मुक्ति दिलाने वाला, लेकिन वह अनैतिकता तथा भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने वाला अवश्य है. यह तथ्य असत्य नहीं, यथार्थ सत्य है. और फिर हाथ कंगन को आरसी क्या, यह सब तो धर्मशास्त्रों में ही लिखा है.

या व्यवस्था द्वारा नियत हो, लेकिन उसे करने वाला उस से अधिक प्राप्त करे.' यह पारिश्रमिक किसी भी रूप में हो सकता है. नकद धन के रूप में, ऐयाशी के साधन के रूप में, नौकरी दिलवा कर या कोई भी अहसान कर के. इसी प्रकार भ्रष्टाचार करने वाला अपने पद, प्रतिष्ठा या हैसियत को इस्तेमाल कर सकता है. काम को रोक सकता है, लटका सकता है या लाभहानि करा सकता है. इस व्यवस्था में सिपाही को पिलाई गई एक सिगरेट से ले कर बोफोर्स की दलाली जैसी बातें सभी आ जाती हैं.

भ्रष्टाचार का मूल धर्म में है. इस बात को समझने के पहले यह जरूरी है कि हम यह सोचें कि हम भ्रष्ट क्यों हैं? हमें भ्रष्ट होने की ऊर्जा कहां से मिलती है? भ्रष्ट होने के बाद हम अपराधबोध से कैसे मुक्त हो जाते हैं? हमारी नैतिकता को कौन नियंत्रित करता है?

उत्तर है–हमारा धर्म. यह सोचना भ्रम है कि इस धर्म से हमें नैतिक संस्कार मिलते हैं. धर्म का नैतिकता से दूरदूर का भी वास्ता नहीं है.

रिश्वत का उदाहरण लीजिए. हनुमान के मंदिर में सवा रुपए की रिश्वत (प्रसाद) चढ़ा कर पढ़ाई में पास होने की कामना करने वाले किशोर का मस्तिष्क क्या किसी पापबोध से ग्रस्त होता है? करोड़ों व्यक्ति मनौतियां मांगने दिनरात मंदिरों में जाते हैं और भगवान को चढ़ावे के रूप में रिश्वत देते हैं या देने का वायदा करते हैं, बशर्ते कि उन का 'काम' भगवान कर दे. काम 'हो' जाने के बाद तो चढ़ावा चढ़ाने या दानपुण्य को समाज में भारी प्रतिष्ठा प्राप्त है. सूक्ष्मता से विचार करें, क्या यह आचरण भ्रष्टाचार के रंगीन चित्र का कैनवास नहीं है?

भ्रष्टाचार ऊपर से शुरू होता है.

भ्रष्टाचार सर्वदा 'ऊपर' से, यानी व्यवस्था के उच्च स्थान से ही शुरू होता है. बाल्मीकि ने रामायण (1/14/35) में लिखा है कि राजा चार पत्नियां रख सकता है. महाभारतकार ने राजा के तीन व्यसन बताए हैं–युद्ध, शिकार और जुआ (देखें द्रौपदी चीरहरण प्रसंग). जब राजाओं को ये अधिकार दिए गए तो वे जनता को भ्रष्टाचार से कैसे रोक सकते थे? व्यवस्था के व्यवस्थापक व रक्षक क्षत्रिय थे और वे थे पुरोहितों के नियंत्रण में. क्षत्रियों को उन्होंने कुछ अधिकार दे दिए. लेकिन वैश्यों और शूद्रों को, जो कि असली 'प्रजा' थे, मनमाने ढंग से लूटनेखसोटने के नियम बना दिए. जब क्षत्रिय द्वारा ब्राह्मण को दुर्वचन कहने पर 100 पण, वैश्य द्वारा कहने पर 150 या 200 पण तथा शूद्र द्वारा कहने पर उस का वध किए जाने का आदेश मनु ने (8/267) दे रखा हो तो फिर इस भ्रष्टाचार को आप क्या कहेंगे? एक जगह शूद्र की जीभ काट लेने का आदेश दिया गया है (8/270 मनु.).

ब्राह्मण को यह अधिकार दिया गया कि वह आवश्यकता पड़ने पर शूद्र का धन हड़प ले (मनु 10/129, 8/417) और शूद्र की यह स्थिति बता दी गई कि वह यदि पढ़ने की कोशिश भी करे तो कानों में गरम तेल

भर दें (मनु 8/272). ब्राह्मण के षट्
से एक भी कर्म उत्पादन से सीधे नहीं
उसे समाज पर शासन करने का अ
किस ने दिया? यह अपने पद या ज
अहंकार के बल पर भ्रष्टाचार करने
से प्राचीन कारण है या नहीं?

और आज के संदर्भ में यदि
क्या यह सच नहीं है कि व्यवस्था के
पर आज भी उसी ब्राह्मण मानसि
लोग विराजमान हैं, जो उत्पादकता
जुड़े हैं. उत्पादक वर्ग की स्थिति अ
शूद्रों से कम नहीं है क्या? हां, हजारों
अंतराल ने उसे ले दे कर काम नि
सिखा दिया है.

20 हजार की रिश्वत दे कर थ
पाने वाले दरोगा से क्या आप नैतिक
आशा कर सकते हैं? यह 20 हज
रिश्वत भी वह इसी लिए देने को
क्योंकि वह अमुक स्कूल में नहीं
अमुक स्कूल में इसी लिए नहीं प
क्योंकि वह अभिजात्य वर्ग का नहीं है
'अभिजात्य' तो वह कभी हो ही नहीं
क्योंकि जाति को बदल पाना तो उस
के बस में भी नहीं है. प्राचीन स
गुरुकुलों में राजाओं, ब्राह्मणों के
ही पढ़ने का अधिकार था, और आ
कानवेंटों में किस वर्ग के लोग पढ़ते

हमारा लोकाचार

हमारा लोकाचार भी इस व्यव
सींचता है. हमारे संस्कार ही ले दे क
कराने वाले बन गए हैं. वर्ण व्यवस्था
इतने गुलाम बन गए हैं कि दो हजार व
निरंतर दासता ने हमारे रक्त
कायरता के विषाणु घुसा दिए है
कायरता के विरुद्ध पढ़, सुन, लिख स
लेकिन बोल नहीं सकते. लड़ने के लिए
पास शक्ति नहीं है. हमारा हाथ अस्
में उठता ही नहीं.

रेल में बर्थ के लिए हम 20 रु
नोट पहले से ही जेब से निकाल कर बै
हैं और टीटी की कृपा की प्रतीक्षा क



साद रूपी रिश्वत चढ़ा कर मनोकामना पूरी
रवाना और कार्यालय में रुपए दे कर अपना
ाम करवाना क्या एक ही बात नहीं. फिर दो
ष्टिकोण क्यों?

यों? क्योंकि शिखर पर बैठे व्यक्ति से हम सी लिए नहीं लड़ सकते क्योंकि वहां बैठे यक्ति को ईश्वर ने ही वहां बैठने के लिए जा है. हम लोकतंत्र में जीते हैं, लेकिन मारा आदर्श है—कोऊ नृप होऊ हमें का नि? हमें तो परमात्मा ने जो बनाया है, हम स से ज्यादा और कुछ कर भी कैसे सकते ? ले दे कर 'काम निकालने' का चरित्र इसी रण बना है.

धन के प्रति दोहरी धारणा

धर्म के कारण धन के प्रति हमारी तना भी दोहरी है. शास्त्रों ने हमारे ाग में यह ठूंस दिया है—धन क्या है? ा है, हाथ का मैल है. इसे त्यागो, फेंको. नरक है. हमारे धर्मगुरु इसी बात का देश देते हैं और हम भी अपने दैनिक वन में इस बात को कहते हैं. इसी आदर्श ले कर जीते हैं. लेकिन धन की शक्ति उस की आवश्यकता के सामने हर बार भी टेकते हैं. हम भ्रष्टाचार कराते ही नहीं, स्वयं भी करते हैं.

धर्म हमें धन से विरत करता है, लेकिन धन को धर्माचार्य अपने पास रखते हैं. हम इस बात से कोई सबक नहीं लेते कि गुरु लोग सब से ज्यादा चिल्लाते हैं—स्त्री नरक का द्वार है. कामिनी, कंचन का त्याग करो. लेकिन सब से ज्यादा कामिनियों और कंचन के लोभी वे ही हैं. हमारे शास्त्र दरिद्र को नारायण कहते हैं और दारिद्रय को महाभाग्य. श्रीमद् भागवत में इस आशय के श्लोक मिलते हैं कि जो आवश्यकता से अधिक धन कमाता है, वह चोर है और उसे सजा मिलनी चाहिए.

पापबोध

पापबोध से छुटकारा पाने के लिए भी धर्म ने अनेक द्वार खोल दिए हैं. हमारा धर्म भ्रष्टाचार और अनैतिकता को पाप नहीं मानता. धर्म की दृष्टि में पाप केवल ब्राह्मण की पूजा न करना, गंगा स्नान न करना, साधुओं की सेवा न करना, ब्राह्मणों को गाय दान न देना आदि ही हैं.

हमारे धर्म ग्रंथों में पाप की ऐसी व्याख्याओं से पोथे भरे पड़े हैं. गरुड़पुराण में (3/35) में सभी प्रकार के पाप गिनाए गए हैं और उन पापों का फल भी बताया गया है. लेकिन उन में भ्रष्टाचार या अनैतिकता को कोई पाप नहीं माना गया है. नरक का भय दिखा कर कहा गया है :

'पुष्ट काष्ठ से बनी हुई, मनोहर, अनेक चित्रों से सुसज्जित, पुष्ट रेशमी सूत से बनी हुई और स्वर्णपत्रों से शोभित, हंस के समान श्वेत रूई से ढकी खटिया हो. सुंदर तकिया हो और ऊपर सुंदर चादर के वस्त्र से युक्त और गंध आदि से सुगंधित हो. उस शय्या पर स्वर्ण की लक्ष्मी सहित विष्णु की मूर्ति को स्थापित करें. विष्णु की मूर्ति को संपूर्ण गहनों और आभूषणों से युक्त करने तथा शंख, चक्र, गदा आदि शस्त्र तथा वस्त्र, उपवस्त्र से अलंकृत कर के तत्पश्चात् गंध पुष्प से भूषित कर के ब्राह्मण को कान के भूषण, अंगूठी, सिकड़ी आदि भूषणों से और

सोने के अलंकारों से भूषित करें. पगड़ी, दुपट्टा और अंगरखा धारण करा के शय्या के ऊपर लक्ष्मी नारायण के आगे बिठाएं. श्रद्धापूर्वक दान करते हुए कहें कि हे ब्राह्मण आप इसे ग्रहण कीजिए! आप को कौन दे सकता है?

(गरुड़ पु. 60/73/13)

लोग दरिद्र क्यों होते हैं? क्योंकि वे ब्राह्मण को दान नहीं करते, दान कर दीजिए, आप के सारे कुसूर माफ और स्वर्ग का वैभव भी—

'जो मनुष्य धान्य से पूर्ण पृथ्वी ब्राह्मण को दान करता है, वह सुर तथा असुरों में पूजित हो कर चंद्र लोक को जाता है.' (गरुड़ पु. 51/53-8)

जानेअनजाने किए गए पाप के लिए दान, वह भी ब्राह्मण को, इस तथ्य का उल्लेख गरुड़ पुराण के सातवें अध्याय में लिखा है.

> **कर्तव्य**
>
> *मन को कर्तव्य की डोरी से बांधना पड़ता है, नहीं तो उस की चंचलता आदमी को न जाने कहांकहां लिए फिरे.* —प्रेमचंद

तुलसीदास ने रामचरित मानस के उत्तर कांड (67/14) में लिखा है, 'संसार में पुण्य एक ही है—मन, वचन और कर्म से ब्राह्मणों की सेवा करना, जो कपट छोड़ कर ब्राह्मणों की सेवा करता है, मुनि तथा देवता उसी के अनुकूल रहते हैं.'

देखिए, भगवान श्रीकृष्ण गीता में क्या कहते हैं—

'यदि कोई व्यक्ति अत्यंत दुराचारी है, किंतु अनन्य भाव से मेरा भजन करता है तो उसे साधु ही मानना चाहिए क्योंकि वह ठीक काम कर रहा है.' (अध्याय, 7/30).

तथा—'हे अर्जुन, सब धर्मों को छोड़ कर मेरी शरण में आ. मैं तुझे सभी पापों से मुक्त कर दूंगा.' (18/66)

रामचरित मानस तथा कवितावली में ऐसे अनेक दोहे और पद हैं जिन में राम को करोड़ों पापों से मुक्ति दिलाने वाला बताया गया है. शर्त एक ही है—मेरी शरण
'मेरी' का मतलब—पुरोहित, यानी व
का धंधेबाज.

जिस धर्म के भगवान यह ध
करते हों कि सिर्फ मेरी शरण में आ
की देर है, मैं सारे पाप क्षमा कर दूं
मनुष्य पाप से क्यों डरे? धर्म व्यक्ति क
करने से मना कब करता है? वह यह तो
कहता कि तू पाप कर, किंतु चतुराई
कहता है कोई बात नहीं, मेरी शरण
जा, मैं सब माफ कर दूंगा. बस, मेरे
को हलवापूरी खिलाए जा. मेरी दुक
(मंदिरों में) चढ़ावा चढ़ाए जा. मेरे
गाए जा. मालमलीदा खाए जा. गीत
के गाए जा.

मनोविज्ञान ने यह सिद्ध कर दि
कि प्राकृतिक रूप से मनुष्य शांत, अ
और नैतिक होता है. देश, काल
परिस्थितियां उस का विकास कर
शिक्षा, अध्ययन और समाज से वह स
पाता है. अनैतिक या भ्रष्टाचारी
लिए बड़े साहस या कहिए दुस्साह
आवश्यकता है. हर आदमी ठीक त
'भ्रष्ट' भी नहीं हो सकता. भ्रष्ट या अ
होने के लिए उसे स्वयं को मानसिक
तैयार करना पड़ता है. ऐसे में धर्म य
की पीठ थपथपा दे तो उसें अपने भ्र
का नैतिक आधार मिल जाता है. आ
होंगे, सब से अधिक भ्रष्ट और अ
व्यक्ति ही सब से अधिक धार्मिक
दिखावा करते हैं. धर्म से उन्हें सा
सुरक्षा और प्रतिष्ठा तो मिलती
आत्मसंतोष भी मिल जाता है.

इन धार्मिक संस्कारों के रहते
भ्रष्टाचार कभी भी दूर नहीं होगा.
इस पर बहस करना ही व्यर्थ है. व्य
सार्थक और प्रभावी परिवर्तन कर
थोड़ा कम हो सकता है. समाज
आस्था को जगाने के लिए शैक्षिक
की आवश्यकता है. आज नहीं तो
मानना ही पड़ेगा कि नैतिक होने
समाज को 'अ-धार्मिक' होना पड़े

शिष्टाचार



1. अगर आप को कभी लगे कि आप ने किसी बुजुर्ग, वरिष्ठ अधिकारी या विशिष्ट व्यक्ति को गलत बात कह दी तो बेहिचक अपनी गलती के लिए क्षमा मांग लें. शशोपंज में रह कर हो सकता है आप अपने संबंध बिगाड़ लें. आम तौर पर तुरंत क्षमा मांगने पर दूसरे व्यक्ति के मन में मलाल नहीं रह जाता.

2. अपने निकटतम व्यक्तियों को आप अपना या अपने साथ उस व्यक्ति का कहीं खींचा हुआ फोटो भी उपहार में दे सकते हैं. फोटो को अच्छी तरह से फ्रेम अवश्य कराएं. लेकिन दूर के परिचित को यह उपहार देना ठीक न होगा.

3. विवाह गुपचुप बिन संबंधियों को बुलाए करना सही शिष्टाचार नहीं है. यद्यपि यह दो व्यक्तियों का निजी मामला है, फिर भी पूरा समाज उन से संबंधित होता है. अतः विवाह मित्रों, संबंधियों के बीच ही करना चाहिए. हां, खर्च कितना करना है, यह छूट सभी को है और अच्छा भोज देना कोई आवश्यक नहीं है.

4. व्यावसायिक रूप से अथवा किसी अन्य जानकारी हेतु आप ने किसी को पत्र लिखा है तो अधीर न हों. किसी भी चिट्ठी का जवाब आने में कम से कम 15 दिन तो लग ही सकते हैं. 15 दिन से अधिक समय होने पर स्थानीय मामलों में फोन द्वारा संपर्क किया जा सकता है कि आप का पत्र गंतव्य तक पहुंचा है अथवा नहीं. दो दिन बाद ही फोन कर के भी उस के यहां पहुंच कर अपना व उस का समय खराब न करें.

5. अगर आप प्राचार्य, डाक्टर अथवा ऐसे पद पर हैं, जहां जन सामान्य से सीधा संपर्क है तो अपने कार्यभार तथा अन्य व्यस्तताओं को देखते हुए लोगों से मिलने का समय निर्धारित कर लें. इस से आप को व मिलने वालों को सुविधा रहेगी. अगर लोग बेवक्त आएं तो बिना हिचक उन्हें किसी अन्य समय आने को कहें.

6. यदि आप ने मेहमानों को खाने पर आमंत्रित किया हो और कुछ मेहमानों के आने में विलंब प्रतीत हो तो कुछ देर इंतजार कर फोन द्वारा पूछा जा सकता है कि आने में विलंब का क्या कारण है. कहीं ट्रैफिक ही तो विलंब का कारण नहीं है. दिए गए समय के 45 मिनट बाद आप अन्य मेहमानों को भोजन परोसना शुरू कर दें. वरना यह समय पर आए लोगों का अपमान होगा.

7. यदि आप किसी जनाजे में शामिल हो रहे हैं तो जरूरी नहीं कि आप रोचिल्ला कर ही दुख की अभिव्यक्ति करें. ऐसे मौकों पर गमगीन रह कर भी दुख प्रकट किया जा सकता है.

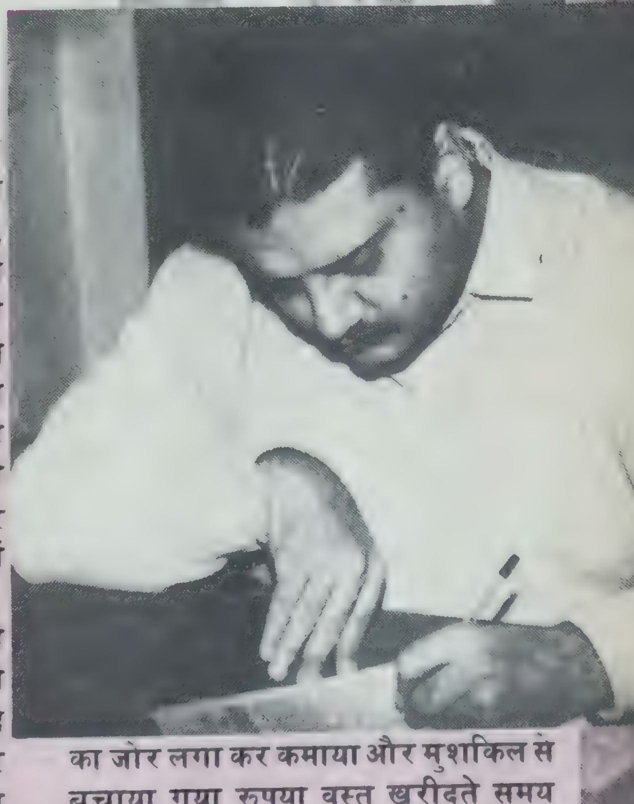
8. आम तौर पर लोग कह देते हैं कि हमारे यहां भी आओ. ऐसे ही अचानक वक्तबेवक्त किसी के यहां पहुंच जाना ठीक नहीं. शिष्टाचार के अनुसार दिन व समय निर्धारित कर के जाना ही उचित है.

9. कुछ स्थानीय मेहमानों के आने का समय उचित नहीं होता. ऐसे में मेहमान से यह कहें कि वैसे तो आप के आने से हमें अच्छा लगता है, पर सुबह नींद पूरी न होने के कारण जल्दी उठ नहीं पाते और बच्चों की बस छूट जाती है. मेहमान आप का इशारा समझ जाएंगे. ●

शेयरों में धन कैसे लगाएं?

लेख • विकास चंद्रगुरु

व्यक्ति द्वारा आमदनी का ऐसा भाग, जो भविष्य की आवश्यकताओं हेतु बचाया जाता है, बचत कहलाता है. प्रत्येक व्यक्ति अपनी सुविधानुसार बचत करता है परंतु बचत करने से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण होता है उस का सही निवेश. हमारे देश में बचत आमतौर पर बैंक खातों में रखी जाती है क्योंकि बैंक जमाखाते जहां सुरक्षा की कसौटी पर खरे उतरते हैं, वहीं उन पर आयकर और धनकर संबंधी कुछ रियायतें भी उपलब्ध होती हैं.



परंतु महंगाई (मुद्रास्फीति) की बढ़ती रफ्तार आज प्रति वर्ष 16% की चरम सीमा पर पहुंच गई है. ऐसे में यदि आप बैंक की अधिकतम दर 13% पर अपना धन रखते हैं तो भी आप 3% का नुकसान उठा रहे हैं. उदाहरण के लिए, यदि आप आज 100 रुपए की बचत करते हैं तो एक वर्ष बाद आप मात्र 113 रुपए प्राप्त कर सकते हैं. जबकि बाजार में यदि आप (100 रुपए की) वस्तु खरीदने जाएं तो वह अब 116 रुपए में मिलेगी.

जरा सोचिए यदि आप के एड़ी चोटी का जोर लगा कर कमाया और मुशकिल से बचाया गया रुपया वस्तु खरीदते समय कम पड़ जाए तो आप को दुख होगा या नहीं इस लिए बैंक जमा खातों में धन उस सीमा तक रखना ही बुद्धिमानी है जिस सीमा तक आप की आकस्मिक जरूरतें पूरी हो सकें और वक्त पर किसी दूसरे के आगे हाथ न पसारना पड़े.

बचत के निवेश के लिए शेयरों का

माध्यम दिन प्रतिदिन लोकप्रिय होता जा रहा है. आप ने भी अपने परिचितों और रिश्तेदारों से इस के संबंध में बहुत कुछ सुना होगा. सूझबूझ और सही सलाह से इस माध्यम में किया गया निवेश दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि करता है. शेयरों में धन लगा कर दिवाला निकलने वाली बातें या नींद हराम हो जाने की डरावनी बातें भी आप ने सुनी होंगी परंतु ऐसा अपनी हैसियत से अधिक जोखिम लेने के कारण ही होता है. इस लिए ऐसी सतही बातों से प्रभावित हो कर कोई पूर्वाग्रह या धारणा न बनाइए. यहां शेयरों के विषय में विस्तार से जानकारी दी जा रही है.

शेयर क्या होते हैं?

कंपनी संयुक्त धन से व्यवसाय या व्यापार करने वालों का समूह होता है. कंपनी प्राइवेट और पब्लिक दो प्रकार की होती है. प्राइवेट कंपनी जनता से धन एकत्र नहीं कर सकती है. शेयर इस बात के प्रमाण होते हैं कि उस में उल्लिखित व्यक्ति उस सीमा तक कंपनी का मालिक है. एक पब्लिक कंपनी में अनेक शेयरहोल्डर यानी अंशधारी होते हैं और वर्ष के अंत में कंपनी को हुआ मुनाफा उन के शेयरों के अनुपात में बांट दिया जाता है. पब्लिक कंपनी के शेयर की स्वतंत्र खरीदबिक्री होती है.

शेयर कैसे प्राप्त किए जाएं?

शेयरों को दो तरह से प्राप्त किया जा सकता है. पहला तरीका है कंपनी के आरंभ में ही आवेदन पत्र के द्वारा और दूसरा, स्टाक एक्सचेंज यानी शेयर बाजार से विद्यमान कंपनियों के अंश खरीद क[र] पहला जरिया प्राइमरी यानी प्राथमिक औ[र] दूसरा सेकंडरी यानी परवर्ती या परोक्ष कहलाता है. शेयरों की बिक्री रजिस्ट[र्ड] शेयर ब्रोकर के माध्यम से शेयर बाजार [में] होती है जो अपनी सेवाओं के लिए मूल्य का 2% तक पारिश्रमिक लेते हैं.

सीधे कंपनी से शेयरों की खरीद

समयसमय पर नई कंपनियां अपने कारोबार के लिए पूंजी जुटाने के लिए और पुरानी कंपनियां भी अपने विस्तार के लि[ए] धन इकट्ठा करने के लिए अपने निर्गम यानी शेयर ले कर पूंजी बाजार में आती हैं तब उन के शेयर खरीदने के लिए आप को निर्धारित फार्म में आवेदन करना होता है. आवेदनपत्र आप शहर के किसी भी शेयर ब्रोकर से प्राप्त कर सकते हैं. आवेदनपत्र के साथ 'प्रास्पेक्टस' (विवरणिका) मिलता है जिस के अंतर्गत कंपनी तथा उस के कारोबार के बारे में विभिन्न जानकारिय[ां] होती हैं. यदि आप थोड़ी सी भी वाणिज्यि[क] सूझबूझ रखते हैं तो कंपनी के पूर्व परिणाम, प्रबंधकों की योग्यता, भविष्य की योजनाए[ं], व्यवसाय से संबंधित जोखिमों, जो कि प्रास्पेक्टस के अंतर्गत दी जाती हैं, [के] आधार पर निर्णय ले सकते हैं.

इस संबंध में आप अपने परिचि[त] ब्रोकर अथवा बैंक मैनेजर से भी सलाह [ले] सकते हैं जो कि वित्तीय बातों की सम[झ] रखते हैं. आवेदन के साथ निश्चित रा[शि] निर्दिष्ट बैंक में जमा करनी होती है. ती[न] माह के अंदरअंदर आप को लाटरी द्वा[रा] निकाले परिणाम सूचित कर दिए जाते ह[ैं]

अपने गाढ़े पसीने की कमाई को अधिकतर लोग बैंकों में जमा करना ही उचित समझते हैं लेकिन बढ़ती मुद्रास्फीति और महंगाई को देखते हुए शेयरों में पूंजी लगाना अधिक लाभकर हो सकता है. परंतु इन में पूंजी कैसे लगाएं व इन की खरीद फरोख्त कैसे की जाए, इस की जानकारी होना बहुत जरूरी है अन्यथा यह घाटे का सौदा भी साबित हो सकता है.



यदि आप को शेयरों का आबंटन किया जाता है तो आप का पैसा रख लिया जाता है, अन्यथा आप का पैसा आप को लौटा दिया जाता है.

यह जरिया नए निवेशकों के लिए उत्तम है जो कि शेयर बाजार के दिनप्रतिदिन के उतारचढ़ाव का विश्लेषण नहीं कर सकते हैं. मध्यमवर्गीय परिवार के ताराचंद ने 10,000 रुपए शेयरों में लगा रखे हैं. उन के अनुसार, इस माध्यम में जोखिम बिलकुल नहीं है. यदि शेयरों का आबंटन न हो तो 3 माह का ब्याज अवश्य हाथ से चला जाता है परंतु किसी न किसी कंपनी के शेयर मिलने के बाद बेचने पर मुनाफा अच्छा हो जाता है. उन के अनुसार 3-3 माह में आबंटन या रुपया वापस आने से 10,000 रुपए को वर्ष में 4 बार अलगअलग कंपनियों में लगाया जा सकता है.

ऐसी खरीद उन्हीं लोगों के लिए उपयुक्त है जो कि शेयर बाजार की प्रक्रिया, कंपनी के बदलते परिणामों, व्यवसाय से संबंधित जोखिमों, वित्तीय, आर्थिक, मौद्रिक नीतियों से निरंतर जुड़े रहते हैं और जोखिम भी ले सकते हैं.

शेयरों में पैसा लगाने के लिए आप को

सूझबूझ और सही सलाह के साथ शेयरों मे पूंजी लगाई जाए तो आप को आकर्षक आय प्राप्त हो सकती है. ▲

एक विश्वसनीय शेयर ब्रोकर ढूंढ़ना होता है जो कि आप के लिए शेयरों का क्रयविक्रय कर सके. शेयर ब्रोकर को निर्देश एकदम स्पष्ट दें. उसे वह मूल्य सीमा बता दें जिस पर कि शेयर की खरीद/बिक्री करनी है. खरीद/बिक्री के दिन आर्थिक अखबारों से बाजार भाव भी पता कर लें.

इस प्रकार अगर सूझबूझ और सही सलाह के साथ शेयरों में धन लगाया जाए तो आप को आप की बचत पर आकर्षक आय प्राप्त हो सकती है. निवेश का यह सब से चमकदार माध्यम है. एक जानकारी के अनुसार, बंबई शेयर बाजार में जो शेयर 1979-80 में 100 रुपए में खरीदे जा सकते थे उन का 1988-89 में मूल्य 500 रुपए हो गया था.

परंतु ऐसे लोग जिन पर किसी भी तरह का बड़ा पारिवारिक दायित्व हो और जिन का शेयरों के जानकार विश्वस्त लोगों से संपर्क न हो तथा विधवा स्त्री जिसे पति की मृत्यु पर उस के जीवन भर की अल्प बचत प्राप्त हुई हो इस माध्यम में निवेश करने का लालच बिलकुल न करें. ●

खाद्य तेलों का आयात क्यों और कब तक?

लेख ● वेदप्रकाश अरोड़ा



पिछले दिनों केंद्रीय वाणिज्य राज्य मंत्री पी. चिदंबरम ने कलकत्ता में पश्चिम बंगाल वाणिज्य उद्योग मंडल की बैठक में बताया कि केंद्र ने 10 लाख टन गेहूं और काफी मात्रा में खाद्य तेलों के आयात का निश्चय किया है, जिस से बाजार में इन चीजों की उपलब्धता बढ़ सके और मुद्रास्फीति का दबाव कम हो सके. इधर, खाद्य तेलों के मूल्यों में काफी वृद्धि हुई है. व्यापारियों के स्वेच्छा से मूंगफली के तेल का मूल्य घटाने के आश्वासन के बावजूद उस की कीमत में कोई कमी देखने में नहीं आई.

उधर गुजरात में व्यापारियों के साथ तेल के भाव 43 रुपए से घटा कर 38 रुपए कर देने पर

केंद्रीय वाणिज्य राज्य मंत्री पी चिदंबरम : मुद्रा स्फीति का दबाव कम करने के लिए खाद्य तेलों का आयात किया जाएगा.

देश में खाद्य तेलों की बढ़ती कीमत और घटती उपलब्धता के कारण एक बार फिर इन्हें आयात करना पड़ रहा है. हालांकि देश में तिलहन का उत्पादन पहले से काफी बढ़ा है. फिर क्या कारण है कि खाद्य तेलों की मांग और पूर्ति की खाई पाटने के लिए हमें बारबार इन के आयात पर निर्भर रहना पड़ता है?

सहमति हुई थी. लेकिन दिल्ली में मूंगफली के तेल के मिल भाव ही 3,750 रुपए प्रति क्विंटल से नीचे नहीं आए. इसलिए परिवहन और दूसरे खर्चे मिला कर 38 रुपए प्रति किलो बेचने का सवाल ही नहीं उठता था.

उपलब्धता बढ़ाने के लिए सरकार ने मात्र 1½ लाख टन खाद्य तेलों का आयात करने की अनुमति दी है. जबकि स्वयं सरकार के कथनानुसार पूर्ति मांग से 6 लाख टन कम थी. उधर व्यापारी वर्ग के अनुसार यह कमी उस से लगभग दुगनी थी.

पिछले वर्ष तिलहनों के बेहतर उत्पादन के बावजूद खाद्य तेलों के भावों रिकार्ड वृद्धि हुई. खाद्य तेलों की मांग औ पूर्ति के बीच बढ़ती खाई, विदेशी मुद्रा व तंगी के कारण आयात में कटौती, जुलाई रुपए के 22% अवमूल्यन, अधिक मुनाफ कमाने की व्यापारियों की मानसिकता औ बड़े किसानों तथा व्यापारियों की जमाखो की प्रवृत्ति, 29 मई को पूर्व प्रधान मंत्र राजीव गांधी की हत्या से कुछ हिस्सों तनाव, 10 वें आम चुनाव की सरगरमियों बाजार पर अनियंत्रण आदि कारण मूल को ऊंचा बनाए रखने के लिए जिम्मेदा रहे.

जहां सरकार प्रशासनिक तथा समर्थ मूल्य बढ़ा कर चीजें महंगी कर देती है वहां व्यापारी इस से शह पा कर सरका द्वारा निर्धारित किए गए मूल्य से भी अधि मूल्य खुले आम वसूल करते हैं. वर्ष 1990 91 में मूंगफली तेल का सरकार द्वा निर्धारित निर्गम मूल्य 19 रुपए प्रति किलोग्राम निश्चित किया गया था, लेकि खुले बाजार में इस का मूल्य 35 रुपए प्रति किलोग्राम था. अगर इतनी कीमत दें त खुले बाजार में यह खुलेआम मिल जाता थ वरना नदारद. आज बाजार में मूंगफली तेल का फुटकर भाव 46 रुपए, सरसों तेल का 38 रुपए, तिल के तेल का 46 रुप और नारियल के तेल का खुदरा भाव 7 रुपए प्रति किलोग्राम है.

गुजरात में ग्रामीण प्रबंध संस्थान आनंद, के प्रोफेसर एस.जे. फंसाल्कर के ए सर्वेक्षण से पता चलता है कि सार्वजनि वितरण प्रणाली के जरिए दिया गया 80 तेल निजी व्यापारियों के पास पहुंच जाता है यही कारण है कि सार्वजनिक वितर

तिलहनों की खेती

तिलहनों की खेती अधिकतर यानी 80% वर्षा पर निर्भर, बारानी इलाकों में की जाती है. उधर गेहूं और चावल की बोआई आमतौर पर सिंचाई वाले क्षेत्रों में की जाती है. वनस्पति तेल ज्यादातर 9 तिलहनों से बनाए जाते हैं. ये हैं मूंगफली, तोरिया, सरसों, तिल, कुसुम, नाइजर, सोयाबीन, सूरजमुखी और अलसी. तिलहनों के कुल उत्पादन में मूंगफली, तोरिया और सरसों का प्रतिशत सर्वाधिक यानी 70% से ऊपर रहता है. सोयाबीन और सूरजमुखी की खेती आरंभ किए अधिक समय नहीं हुआ तो भी खाद्य तेलों के भंडार में इन का काफी योगदान रहने लगा है. खरीफ के तिलहनों का गुजरात और रबी के तिलहनों का उत्तर प्रदेश सर्वाधिक उत्पादन करते हैं. वैसे प्रमुख तिलहन उत्पादक राज्य हैं गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, उड़ीसा और तमिलनाडु.



मूंगफली के तेल की बढ़ती कीमत आम उपभोक्ता को सब से अधिक कचोटती हैं क्योंकि घरों में इस का सब से अधिक प्रयोग होता है.

ाली के माध्यम से दिया गया तेल कभी र्याप्त नहीं होता. गुजरात में 1987 से 91 तक के बीच 66 लाख 17 हजार टन फली के उत्पादन में से लगभग 7 लाख हजार मूंगफली ही बाजार में आई, जो कुल उत्पादन का मात्र 11.6% है. ऐसी ति में मूल्यों को ऊंचाइयों की तरफ बढ़ने ोई नहीं रोक सकता. इन्हीं सब कारणों मूंगफली के मूल्य महंगाई की दौड़ में सब आगे हैं.

मूंगफली के तेल की किल्लत और इस महंगापन इसलिए अधिक कचोटता है कि खाना पकाने में मुख्य रूप से इसी तेल प्रयोग किया जाता है. अगर दिसंबर 39 में मूंगफली के तेल का मूल्य 22 रुपए किलोग्राम था तो दिसंबर 1990 में यह बढ़ कर 34 रुपए प्रति किलोग्राम, वरी 1992 में 38 रुपए प्रति किलोग्राम गया और अब यह 46 रुपए प्रति ोग्राम को भी पार कर सकता है. बंबई में ह 1989 के 26 रुपए से बढ़तेबढ़ते 55 ए प्रति किलोग्राम हो गया, जो 1989 के से दुगने से भी अधिक है. खरबूजे को कर खरबूजा रंग बदलता है. मूंगफली तेल की देखादेखी बिनौले, सरसों, तोरिया, सोयाबीन, नारियल और तिल के तेल भी चढ़ते चले गए.

यह सब तब हुआ, जब देश में तिलहनी फसलों के उत्पादन में निरंतर वृद्धि हो रही है. 1986-87 में तिलहनों का उत्पादन 1 करोड़ 12 लाख 70 हजार टन हुआ जो 1990-91 में बढ़कर 1 करोड़ 92 लाख 30 हजार टन हो गया. उत्पादन में लगभग 80 लाख टन वृद्धि हो जाने के बावजूद वर्ष 1990-91 में 6 लाख टन खाद्य तेल की कमी रही. इस का कारण यह था कि सप्लाई की तुलना में खपत अधिक थी. यह कमी आयात के द्वारा पूरी हो सकती थी.

तिलहनों के उत्पादक 7 प्रमुख राज्यों के उत्पादक संगठन हिंदुस्तान तिलहन उत्पादक एसोसिएशन का तो सरकार से कहना है कि पूर्ति और मांग के बीच की खाई को थोड़े प्रयत्नों से भरा जा सकता है तथा खाद्य तेलों का आयात करने और उस पर 1000 करोड़ रुपए से अधिक राशि खर्च करने का कोई औचित्य नहीं है. वैसे इस बार तो सरसों और तोरिया की भी भरपूर फसल होने की आशा है.

खाद्य तेलों की कमी से उबरने का संकल्प व्यक्त करते हुए प्रधान मंत्री नरसिंह राव ने भी नववर्ष के पहले दिन राजस्थान के बाडमेर क्षेत्र में कहा था कि अगर देश में अनाज का उत्पादन बढ़ाने के लिए हरित क्रांति हो सकती थी तो अब तेल क्रांति क्यों नहीं हो सकती. उन्होंने कहा, "लगभग 3 वर्षों में खाद्य तेलों की समस्या का समाधान कर देने की आशा है. उस के बाद चाहे जो हो, मैं खाद्य तेलों के आयात के लिए कोई विदेशी मुद्रा नहीं दूंगा. कारण, देश खाद्य तेलों के आयात पर 30 अरब रुपए से अधिक की विदेशी मुद्रा के खर्च को बरदाश्त नहीं कर सकता."

विडंबना यह है कि भारत में किसी

अन्य देश के मुकाबले अधिक क्षेत्र में तिलहन की खेती होती है फिर भी यहां उस की औसत उपज प्रति हेक्टेयर कई विकसित देशों की पैदावार की तुलना में कम है. इस कमी की वजह से ही भारत में प्रतिदिन प्रतिव्यक्ति औसतन 14 ग्राम ही खाद्य तेल उपलब्ध होता है, जबकि आहार विशेषज्ञों के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन कम से कम 55 ग्राम तेल खाना चाहिए.

खाद्य तेल की कमी की वजह से ही भारत में तेल और वसा प्रति व्यक्ति मात्र 6 किलोग्राम प्रतिवर्ष ही मिल पाती है. इस के विपरीत विश्व में इन की उपलब्धता औसतन 18 किलोग्राम प्रतिवर्ष है जो भारत से लगभग तिगुनी है. यह स्थिति तब है, जब कि तिलहन हमारी विभिन्न फसलों का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है. इन्हें लगभग 2 करोड 30 लाख हेक्टेयर इलाके में उगाया जाता है, जो विश्व में तिलहन की खेती का सर्वाधिक क्षेत्र है.

तिलहनों का उत्पादन बहुत कुछ वर्षा और मौसम की कृपा पर निर्भर करता है.



"श्रीमान, बंद को सफल बनाने के लिए इस से अच्छा और कोई इश्तहार नहीं हो सकता...?"

अगर वर्षा नहीं तो तिलहनों की फसल
बहार आने के आसार क्षीण हो जाते हैं.

कम उत्पादन का एक बड़ा कारण य
भी है कि जिस गति से तिलहनों का उत्पाद
और उस की उत्पादकता बढ़ती है उस
कहीं अधिक गति से जनसंख्या बढ़ जाती है
और खाद्य तेल की उपलब्ध मात्रा के अनुपा
से कहीं अधिक हाथ उसे लेने के लिए आ
बढ़ जाते हैं. अनुमान है कि सन 2000 त
भारत की जनसंख्या 1 अरब हो जाएग
जिसके लिए कम से कम 2 करोड़ 60 ला
टन खाद्य तेलों की आवश्यकता होगी.

नतीजतन अभाव की स्थिति
आयात की मनहूस छाया पसरी रहती है
और साथ ही कीमतों में उछाल आता रहत
है. उधर, व्यापारी वर्ग तंगी के माहौल
अपनी रोटी सेंकता रहता है.

इस स्थिति से उबरने का रामबा
उपाय यह है कि तिलहन की फसलों के क्षे
के साथसाथ प्रति हेक्टेयर उत्पादकता बढ़
जाए. यह काम उन्नत बीजों की सहायता
बिना नहीं हो सकता. किसानों को उन्न
बीज मिलने में कोताही अथवा लापरवाह
बरतने से पर्याप्त मात्रा में पानी औ
रासायनिक खाद आदि की उपलब्धता
अप्रासंगिक हो जाती है और वांछित ला
नहीं मिलता. बीजों का महत्त्व समझते ह
ही सरकार ने 1963 में राष्ट्रीय बीज निग
बनाया था. यह निगम ही सुधरे बीजों
उत्पादन और वितरण के लिए जिम्मेदार

सरकार ने 1969 में भारतीय रा
फार्म निगम भी बनाया, जो आधुनिक फा
की स्थापना कर बीजों का उत्पादन करते
सरकार ने केंद्रक, नाभिकीय, प्रजन
आधार और प्रामाणिक यानी सभी तरह
बीज उगाने का काम भी मुस्तैदी से हाथ में
रखा है. केंद्रक और प्रजनक बीजों
उत्पादन का पूरा दायित्व भारतीय कृ
अनुसंधान परिषद का है. लेकिन ये स
सरकारी संस्थाएं अब तक सफेद हाथी सि
हुई हैं और कोई भी ठोस लाभ किसान त
नहीं पहुंच पाया है.

जैन समाज में बाल दीक्षा

आलोचनाओं व आपत्तियों के उत्तर

लेख• प्रतिनिधि

सरिता अगस्त, (द्वितीय) 1991 अंक में प्रकाशित 'जैन समाज में बाल दीक्षा' लेख पर कई आक्रोश भरी टिप्पणियां प्राप्त हुई हैं.

सर्वप्रथम मैं यह स्पष्ट करना चाहूंगा कि इस लेख में दिए गए सभी तथ्य उच्चतम न्यायालय के अधिवक्ता अरविंद जैन की उस याचिका से लिए गए हैं जो कि उन्होंने उच्चतम न्यायालय में 'जैन समाज में बाल दीक्षा पर प्रतिबंध' लगवाने के लिए प्रस्तुत की है.

इस याचिका पर अभी न्यायालय में सुनवाई चल रही है. फिर भी पत्र लेखकों द्वारा उठाई गई आपत्तियों के संदर्भ में कुछ अवश्य कहना चाहूंगा.

सभी प्राप्त पत्रों को बारबार पढ़ने के बाद भी मुझे इन सभी पत्रों में एक भी पंक्ति ऐसी नहीं दिखाई दी, जिस में कि लेख में दिए गए तथ्यों की सत्यता को नकारा गया हो. इस बात का किसी ने खंडन नहीं किया



कि जैन समाज में बाल दीक्षा एक प्रथा मौजूद है, केश लुंचन होता है, साधुसाध्वियों को भिक्षा पर आश्रित रहना पड़ता है, आदिआदि.

इन सभी पत्रों में इन प्रथाओं की आलोचना से उद्वेलित पाठकों ने इन प्रथाओं को धर्मसंगत, न्यायसंगत, तर्कसंगत ठहराने का प्रयास किया है. प्रायः हर पत्र में यह कहा गया है कि दीक्षा जबरन नहीं दी जाती, व्यक्ति के मन में स्वयं प्रेरणा जागृत होती है और उस के बाद ही उस की, समाज की तथा उस के परिवार की सहमति से उसे दीक्षा दी जाती है. यहां हम एक बार फिर उसी बात को दोहराना चाहेंगे, जो कि हम ने लेख में कही थी.

किशोरावस्था का समय मन की परिपक्वता का समय नहीं होता, उस समय मन को किसी की तरफ मुड़ने के लिए आसानी से प्रेरित किया जा सकता है. यही कारण है कि लड़कियों को 18 साल तथा लड़कों को 21 साल तक नाबालिग माना जाता है. अब अगर समाज और सरकार यह मानती है कि इस आयु तक युवकयुवतियां विवाह का निर्णय लेने के लिए परिपक्व नहीं होते तो फिर वे संन्यास का निर्णय लेने के लिए किस प्रकार सक्षम हैं. और जहां तक मन में प्रेरणा उठने का संबंध है, तो किशोरावस्था में विवाह की कितनी तीव्र इच्छा युवकों में जागती है, वह किसी से छिपी नहीं है. अब अगर मन में उठी प्रेरणा मात्र के आधार पर उन्हें साधुसाध्वी बनने की इजाजत दी जा सकती है तो फिर किशोरावस्था के प्रेम विवाहों को भी इजाजत देनी होगी.

रही बात आदि शंकराचार्य आदि कुछ विभूतियों के उदाहरण की, तो यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि कुछ अपवादों की आड़ में किसी प्रथा को मान्यता प्रदान नहीं की जा सकती. अगर ऐसे अपवाद अब भी जैन समाज में उत्पन्न होते हैं, तो क्या वे साधु समाज के बाहर उन की प्रतिभा के विकास के लिए उर्वरा भूमि समाप्त हो गई है?

रही केश लुंचन की बात तो
लेखकों ने स्वयं माना है कि इस में कभीक
खून भी निकल आता है, जिस पर तत्क
राख लगा दी जाती है, मगर उन्होंने
साधु जीवन के अनुशासन की संज्ञा दी
हम इस विषय पर थोथी धार्मिक मान्यता
पर तर्क नहीं करना चाहते. अगर हम ऐ
करते हैं तो हमें सती प्रथा, बाल विवा
विधवा मुंडन तथा देवदासी प्रथा के समर्थ
को भी जवाब देना होगा, जो कि अपनी
प्रथाओं के संबंध में अभी भी परंपराओं अ
मान्यताओं का हवाला देते हुए काफी ठ
तर्क प्रस्तुत करते हैं.

हमारा तर्क मात्र यह है कि नाबालि
बच्चों को दीक्षा दिलाना न केवल भारत
संविधान व भारतीय शिशु नीति
खिलाफ है अपितु इस से संयुक्त राष्ट्र संघ
मानव अधिकार घोषणापत्र का भी ह
होता है. अब यदि सरकार कानून के त
बाल विवाह, देवदासी प्रथा तथा सती प्र
पर अंकुश लगा सकती है तो फिर ब
दीक्षा पर भी प्रतिबंध लगना ही चाहि

कुछ पत्र लेखकों ने कहा है कि य
गरीब मातापिता अपनी लड़कियों
साध्वी बना देते हैं तो वे उन मातापिताओं
तो अधिक अच्छे हैं, जो धन के अभाव
अपनी लड़कियों को बेच देते हैं या फिर ि
की लड़कियां दहेज के अभाव में ससुराल
जला दी जाती हैं. यदि यह एक तर्क है
फिर यह एक बुराई से बचने के लिए दूस
बुराई को गले लगाना हुआ. तो क्या
समाज के लिए बेहतर यह नहीं होगा
लड़कियों को साध्वी बनाने की अपेक्षा
अपने यहां दहेज रहित विवाहों को प्रोत्सा
दे.

पत्र लेखकों ने यह भी कहा है
साध्वियों के लिए दोबारा समाज में प्र
पर कोई प्रतिबंध नहीं है. यदि ऐसा है तो
सम्मानित जैन भाई अभी इंदौर के इंदु
जैन प्रकरण को भूले नहीं होंगे. इस मा
पर पूरा जैन समुदाय बौखला क्यों उठा

असम की महिलाएं

लेख ● विनोदिनी गोयनका

दहेज, परदा प्रथा, स्त्रियों के साथ दुर्व्यवहार आदि सामाजिक कुप्रथाएं जहां पगपग पर महिलाओं को त्रस्त करती हैं, वहीं दूसरी ओर असम की महिलाएं इन कुप्रथाओं की जकड़न से मुक्त हैं. आइए देखें, कुप्रथाओं की जकड़न से मुक्त असम की महिलाओं की खुशहाल जिंदगी की एक झलक.



हम लोग करीब 30 वर्षों से ...सम के गुवाहाटी ...हर में रह रहे हैं. ...ारे पड़ोस में बार-...लाई साहब के पुत्र 4 दिन बाद ही ...वाह था. घर में ...हलपहल थी. घर ...मानों से भरा हुआ ... पड़ोसी होने के ...े मैं उन के यहां ...लने तथा मेरे योग्य ...ई काम हो तो पूछने ...लिए गई.

उन्होंने बड़े ...मान से अपने होने ...समधी व समधिन ... मिलाया. कहने ..., "इन के ठहरने ... विवाह के लिए ...मकान ठीक किया ... वह अभी तैयार ... हुआ है इसलिए ... लोगों को यहीं ...े पास ही ठहरा ...ा है. अब तो हम ... का परिवार ... कर एक ही होने ...रहा है."

इतने में उन की ... पुत्रवधू के साथ ...वाली नई वधू भी ...नाश्ता ले कर ...ाई. उन्होंने उस ...े मुझे मिलाया.

हमारे यहां तो लड़की के पिता को कितना नीचे झुकना पड़ता है. बेचारा हरदम हाथ जोड़े ही खड़ा रहता है फिर भी बराती किसी न किसी बात पर नाराज हो ही जाते हैं, और यहां कैसा सौजन्यपूर्ण वातावरण है. दो दिन बाद हम शादी में बरात के साथ गए. वहां भी हमारे पड़ोसी के बेटेबहुएं ही मेहमानों के स्वागत तथा खिलाने में मदद कर रहे थे.

मुझे चकित देख कर वह हंस कर बोले, "कन्या पक्ष वाले बाहर शहर से आए हैं न, उन के पास काम करने वालों की कमी है. इसलिए मदद के लिए अपने बेटे-बहुओं को ही लगा दिया है. अब तो इन का सम्मान ही हमारा सम्मान है."

खड़ेखड़े ही उन्होंने एक रसगुल्ला तथा चाय ली और कहने लगे, "मैं चलता हूं, घर में मां अकेली होगी." क्योंकि असम



में 'दोरा' यानी वर की मां तथा 'कोइना' यानी वधू की मां विवाह नहीं देखती हैं.

दूसरे दिन जब मैं बहू को देखने गई तो कोई परदा नहीं था. बहू खुले सिर वह भी श्वेत सिल्क का सुंदर जरी वाला मेखला चद्दर तथा सोने के सुंदर आभूषण पहने बैठी थी. उस ने घर के सभी बड़ों को एकएक फूलन गमछा दे कर पूर्ण सम्मान से पृथ्वी पर बैठ कर चरण स्पर्श किया और सभी लोग गद्गद् हो गए. बहू एकदम देवी स्वरूप लग रही थी.

मैं ने लड़के की मां से धीरे से दबी जबान से जिज्ञासा की, "आप लोगों के लिए बहू साड़ी, कपड़े इत्यादि कुछ तो सामान लाई होगी?"

उन्होंने मुंह पर उंगली रख कर मुझे चुप करा दिया. फिर अकेले में ले जा कर कहने लगीं, "यहां दहेज का नाम लेना भी बहुत ही शर्म की बात है. हम लोग तो बहू से न तो पूछते हैं और न ही देखते हैं कि वह पिता के घर से क्या लाई है. यह तो उस के मातापिता की इच्छा तथा सामर्थ्य की बात है कि अपनी बेटी को एक मेखला चादर पहना

'बीहू' त्योहार पर नाचतीगाती असम की युवतियां : एकदूसरे को उपहार देने का इस से अच्छा अवसर और कोई नहीं. ▲

कर विदा करें या चार दें."

शादी के दोतीन दिन पहले 'जो[illegible] (गोदभराई) में वर पक्ष की महिलाएं वधू [illegible] घर जेवर, कपड़ा ले कर जाती हैं तथा [illegible] का शृंगार करती हैं. वह भी बहुत अधि[illegible] नहीं होता है. वही जेवर कपड़ा वधू शादी [illegible] समय पहनती है. इसी प्रकार वर के लिए [illegible] शादी में पहनने के लिए धोतीकुरता क[illegible] के घर से आता है.

शादी तय होने पर लेनदेन की बात [illegible] होने का तो प्रश्न ही नहीं उठता. दहेज [illegible] बात होने से समाज में बहुत बदनामी [illegible] जाती है. विवाह में सजावट पर भी ज्या[illegible] खर्च नहीं किया जाता है. अधिकतर तो [illegible] टिन का पंडाल वर्षाधूप से बचने के लि[illegible] लगा दिया जाता है, उसी में विवाह त[illegible] खानापीना संपन्न होता है. आजकल शह[illegible] में शामियाने तथा बिजली द्वारा सजावट ह[illegible] लगी है. वरपक्ष केवल एक रात्रिभोज [illegible] कन्या के यहां लेता है.

वर पक्ष तथा कन्या पक्ष दोनों ही पनेअपने मेहमानों को अपने घर पर ही जन कराते हैं. खाद्य सूची भी निश्चित ती है– लूची, सब्जी, चटनी, दो मिठाई था दही या क्रीम. यही भोजन अमीरगरीब भी के यहां हर अवसर पर बनता है और कड़ों व्यक्ति सपरिवार यहां तक कि सेवक क निमंत्रित होते हैं.

बरात में वर पक्ष के 5-10 खासखास दमी ही विवाह के लिए वधू के घर जाते दोनों परिवार के लोग साथसाथ बड़े जन्यपूर्ण वातावरण में बैठते हैं. शादी देर क चलती है फिर मांसाहारी रात्रिभोज ता है. लड़की भोर के पहले ही विदा हो ती है. विवाह तो वैदिक मंत्रों द्वारा ही ता है, केवल थोड़े रीतिरिवाज भिन्न हैं.

29 अप्रैल 1988 को असम के 34 र्षीय तत्कालीन मुख्य मंत्री प्रफुल्ल कुमार त का विवाह 25 वर्षीय जयश्री गोस्वामी साथ सादगीपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ. उन परिचय 8 वर्ष पूर्व असम आंदोलन के य हुआ था तथा यह परिचय प्रेम में बदल .

जयश्री अपनी शिक्षा पूर्ण कर के यहां त्रटन कालिज में शिक्षिका हैं. उन के 80 य पिता रमेश गोस्वामी अस्वस्थता के ण विवाह में सम्मिलित नहीं हो सके तो ादान, गुवाहाटी विश्वविद्यालय के कुलपति देबो बोरा ने दिया. जयश्री म की परंपरा के अनुसार सफेद पाट क की जरीदार मेखला चादर तथा र से सजी अपनी सहेलियों के साथ मुख्य के घर सम्मानपूर्वक लाई गईं. वहां क के कुरतेधोती में सजे दूल्हे के साथ घर' के सम्मुख एकदूसरे को माला ई गई. फिर अग्नि के सम्मुख जीवन साथ देने का वचन दिया गया. चारों उमंग व प्रेम का वातावरण छाया था. भोज भी असम की पुरानी प्रथा के ार दिया गया. दही, चिड़वा तथा यल के लड्डू से सभी अतिथियों का र किया गया. सभी आगंतुकों से उपहार न लाने का अनुरोध किया गया था. देशविदेश के सम्मानित प्रतिनिधिगण तथा मेहमान भी यह सादगी तथा सद्भाव देख कर चकित रह गए.

असम में बहू को बहुत प्यार से बेटी की तरह ही ससुराल में रखते हैं. परदा भी नहीं है. बहुएं विवाह के बाद भी पढ़ती हैं. अन्य काम तथा नौकरी भी कर सकती हैं. यहां बेटेबहू के अलग घर बसाने को भी बुरा नहीं मानते. लड़की के मांबाप भी बेटी के यहां आ कर खाते और रहते हैं, उसे बुरा नहीं माना जाता है. बेटी के घर में भी बेटे के घर के समान साधिकार आतेजाते, खातेपीते हैं.

गांवों में सभी महिलाएं घरों में करघे पर कपड़ा बुनती हैं. शहरों में कुछ महिलाएं करघों पर कपड़ा बुनती हैं और सुंदरसुंदर नमूने डाल कर मेखला चादर बनाती हैं, फूलन गमछे बनाती हैं और उन्हें सम्मानपूर्वक भाइयों तथा घर के बड़ों को 'बीहू' पर भेंट करती हैं. कपड़ा बुनना पहले तो महिलाओं के लिए आवश्यक गुण माना जाता था परंतु आधुनिक लड़कियां इस तरफ अधिक ध्यान नहीं दे रही हैं.

यहां महिलाओं में शिक्षा बहुत है. बूढ़ीबूढ़ी महिलाएं भी पढ़ीलिखी हैं तथा घर से निकल कर समाज सेवा इत्यादि अनेक काम करती हैं. नई पीढ़ी की महिलाएं नौकरी तथा व्यापार करना पसंद करती हैं. इस से घर में एवं समाज में सम्मान तथा आर्थिक स्वतंत्रता रहती है. यहां अधिकतर महिलाएं उच्च शिक्षा पाती हैं. प्रत्येक पिता बेटे के समान ही बेटियों को भी प्यार से पालता तथा सामर्थ्य के अनुसार खूब पढ़ातालिखाता है. गांवों में भी अधिक निरक्षरता नहीं है. यहां लड़के तथा लड़की में भेदभाव नहीं होता.

यहां लड़की के लिए संबंध मांगने लड़के वाले आते हैं तथा चुनाव का अधिकार लड़की के अभिभावक को होता है. शहरों में लड़कियों पर अधिक बंधन नहीं है. उन्हें जीवनसाथी चुनने की स्वतंत्रता भी है. अधिकतर यहां प्रेम विवाह ही होते हैं.

अंतर्देशीय एवं अंतर्जातीय विवाह पर भी मांबाप आपत्ति नहीं करते बल्कि सहयोग ही देते हैं.

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में मेरे साथ पढ़ी मेरी अभिन्न सहेली कल्पना बेजबरुआ स्वयं एक विख्यात मनोवैज्ञानिक तथा समाज सेविका हैं. उन के पति एक दैनिक पत्र के संपादक हैं. उन की बड़ी पुत्री जो डाक्टर है, ने एक उत्तर प्रदेशीय डाक्टर से प्रेम विवाह किया और दूसरी पुत्री जो आर्कीटेक्ट है, ने अपने मातापिता के सहयोग व आज्ञा से एक सहकर्मी बंगाली लड़के से प्रेम विवाह किया है, और समाज तथा परिवार में उसे पूर्ण मान्यता तथा प्रोत्साहन मिला है.

दहेज की कुप्रथा न होने के कारण लड़की परिवार पर बोझ नहीं होती है. यहां शादी में लड़केलड़की की पसंद ही देखी जाती है. कभीकभी वधू के पिता विवाह का व्यय वहन करने में समर्थ नहीं होते तो वे लड़की को ले कर आ जाते हैं और सारा खर्च तथा प्रबंध वर पक्ष ही वहन करता है और इस बात की बाहर किसी को भी भनक तक नहीं होती है.

कुछ दिनों पहले ही हमारे परिचित संभ्रांत शर्मा दंपती अपने पुत्र के विवाह के लिए हमें निमंत्रण देने आए तो कहने लगे कि विवाह केवल परिवार के कुछ सदस्यों के सम्मुख मां कामाख्या के मंदिर में होगा क्योंकि लड़की वालों की स्थिति सामान्य है. हम उन पर बोझ नहीं डालना चाहते. आप लोग हमारे यहां प्रीतिभोज में अवश्य आएं. यह कहते समय उन के मन में तनिक भी क्षोभ नहीं था. हम आश्चर्यचकित रह गए. कितना सौजन्यपूर्ण विचार है.

मां कामाख्या के मंदिर में भी बहुत से विवाह प्रतिदिन संपन्न होते हैं. इस परिणय को भी समाज में पूर्ण मान्यता मिलती है. इन विवाहों में खर्च भी नगण्य होता है.

लड़कियों को भी लड़कों के समान ही उच्च शिक्षा दी जाती है और अकेले विदेश भी भेजा जाता है. हमारे मित्र मेधी साहब की लड़की देवयानी तो लंदन से अंगरेज प[...] पसंद कर के लाई थी फिर यहां भी वैदि[...] रीति से उन का विवाह कराया गया. विव[...] में संभ्रांत परिवारों के लोग खुशीखु[...] सम्मिलित हुए.

घर तथा समाज में महिलाओं का [...] सम्मान तथा अधिकार है. यहां कानून द्वा[...] नहीं परंतु स्वेच्छा से ही लड़की को भी पि[...] की चलअचल संपत्ति में हिस्सा मिलता [...] घर का शासन तथा आयव्यय भार [...] महिलाओं के हाथ में ही रहता है. वे स[...] तथा घर एवं बच्चों को खूब स्वच्छ रख[...] हैं.

यहां घर में काम करने व[...] लड़केलड़कियों को नौकर की तरह [...] रखा जाता है. गरीब घरों की संतान को [...] कह कर लाया जाता है कि हम उन [...] लालनपालन करेंगे तथा शिक्षा [...] दिलाएंगे. उन्हें घर के कामकाज के स[...] पढ़ने भी भेजते हैं या घर में मास्टर[...] पढ़वाते हैं. उन्हें अपने घर के सदस्य [...] तरह ही रखते हैं. घूमनेफिरने भी साथ[...] जाते हैं.

लड़की के युवा होने पर उस की श[...] करने में भी सहायता करते हैं. लड़का है[...] उसे अच्छी नौकरी में लगा देते हैं. पहले[...] काम के बदले वेतन देना बुरा समझा ज[...] था परंतु आजकल वेतन का भी प्रचलन[...] रहा है.

आज जब भारतवर्ष के प्रायः स[...] प्रांतों में दहेज, स्त्रियों के साथ दुर्व्यवह[...] परदा इत्यादि सामाजिक कुप्रथाएं किस[...] किसी रूप में विद्यमान हैं तब भारत[...] पूर्वोत्तर राज्यों– असम, मेघालय, अरुणा[...] प्रदेश, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम, त्रि[...] में महिलाओं का पूर्ण सम्मान है. ये प्रदेश[...] सभी कुप्रथाओं से बचे हुए हैं. इन में से[...] राज्यों में तो मातृप्रधान व्यवस्था ही है[...]

असम में महिलाएं सम्मानपूर्वक [...] ऊंचा कर के चलती हैं. यहां व्यवहा[...] सादा जीवन तथा उच्च विचार देखने[...] मिलता है.

प्यार दे दूं



खिले अधर को
प्यारा सा उपहार दे दूं
शर्मीली आंखों को
एक सुनहला संसार दे दूं

सुर्ख कपोलों पर
प्यार की बौछार दे दूं
धड़कते दिल को
योग्य एक उपचार दे दूं

छटपटाती आह को
तृप्ति का पैगाम दे दूं
अंगड़ाई लेती काया को
बांहों में विश्राम दे दूं

गर्म सांसें व्यर्थ न हों
उन को एक प्रवाह दे दूं
थक न जाए चांद सा मुखड़ा
वक्षस्थल पर ठहराव दे दूं.

—डा. अखिलेश्वर तिवारी

आजादी



अरे मधु, बहुत दिन से दिखाई नहीं दीं?
जब से मेरे पति का तबादला हुआ है, मैं कामका
महिला हास्टल में रहती हूं.
अच्छा! पर तुम्हारा मुंह क्यों उतरा हुआ है
अपनी रूममेट पर मैं बिल्कुल विश्वास नहीं कर सकती. सब चीजें ताले में रखनी पड़ती हैं. इस से तो मेरी ननद ही अच्छी थी.
यहां रहने वाली महिलाएं
छोटी से छोटी बात भी वार्ड
तक पहुंचा देती हैं, इतनी
चुगलखोर तो मेरी पड़ोसनें
भी नहीं थीं.
?
वार्ड


वार्डन तो मेरी सास से भी ज्यादा कठोर है.
और तो और इतनी टोकाटाकी तो मेरे ससुर ने भी नहीं करी, जितना यहां का चौकीदार बोलता है.
ओह! तुम यहां आईं ही क्यों?
यही तो रोना है. वहां घर में सास, ससुर और ननद द्वारा अपनी आजादी में रुकावट डालना मुझे कतई पसंद नहीं था.

कामकाजी महिलाओं के लिए पौष्टिक व्यंजन

आंकुड़ी

सामग्री : 6 अंडे, $1\frac{1}{2}$ प्याला ताजा दूध, 2 बड़े चम्मच मक्खन, 1 प्याज, 2 शिमला मिर्च, 1 प्याला चीज कद्दूकस किया हुआ, 1 टमाटर (इच्छानुसार), $\frac{1}{2}$ प्याला उबली हुई शैल स्पेगिटी, $\frac{1}{2}$ छोटा चम्मच गरम मसाला, स्वादानुसार नमक.

विधि : प्याज, टमाटर (यदि डालना चाहें तो) व शिमला मिर्च को धो कर बारीक काट लें. स्पेगिटी को 2 प्याले पानी में $\frac{1}{4}$ छोटा चम्मच नमक डाल कर उबाल लें व पानी निकाल कर रखें. अब आधे दूध की सफेदी को अच्छी तरह फेंटें औ आधे दूध में अंडों की जर्दी डाल कर इस में नमक, चीज व उबली हु स्पेगिटी मिला दें.

अब एक नोनस्टिक फ्राइंग (कड़ाही) आग पर रखें. उस में डालें. जब मक्खन गरम हो जाए तो बारीक कटा हुआ प्याज डाल हलका लाल न होने दें. अब उस में कटी मिर्च, टमाटर डाल कर पहले अंडे के भाग के साथ फेंटे हुए दूध को डालें. के चम्मच से लगातार चलाते रहें. दो बाद चीज, दूध व शैल स्पेगिटी का डाल कर चम्मच से च स्वादानुसार नमक व काली डालें. आंकुड़ी तैया गरमगरम आंकुड़ी या परांठे व टमाट के साथ पेश करें पौष्टिक व स्वादिष्ट ही हैं.

स्पेगिटी कटलेट

सामग्री
पैकेट स्पे
250



आंकुड़ी



स्पेगिटी कटलेट

आलू, 1 प्याज, 2 हरी मिर्च, ½ हरी धनिया, स्वादानुसार नमक 1 छोटा चम्मच सिरका, ½ छोटा काली मिर्च, 1 गाजर, ½ प्याला बंदगोभी, 1 बड़ा चम्मच कार्नफ्लोर या ½ प्याला ब्रेड का चूरा, तलने के लिए मात्रा में तेल.

विधि : स्पेगिटी को पानी में नमक डाल बाल लें. पानी गिरा दें. अब उबले हुए कद्दूकस कर लें. बंदगोभी, गाजर, हरी मिर्च, हरी धनिया सभी को काट लें और उस में स्वादानुसार व मिर्च मिला कर आलू व स्पेगिटी के गूंथ लें और अपनी इच्छानुसार आकार कटलेट बना लें.

अब कार्नफ्लोर या मैदे का घोल बनाएं. एकएक स्पेगिटी कटलेट भिगो कर से ब्रेड का चूरा लगा कर गरम तेल में र कुरमुरे स्पेगिटी कटलेट परोसें.

क्की के मीठे पकौड़े

सामग्री : 2½ प्याले मैदा, ½ प्याला (मक्की दाना, टिन किया हुआ भी ल कर सकते हैं), ½ प्याला चीनी, 1 चम्मच वेनीला एसेंस, 1 छोटा चम्मच ए तिल, 1 अंडा, 1 बड़ा चम्मच काजू हुआ, ½ छोटा चम्मच बेकिंग , तलने के लिए पर्याप्त मात्रा में तेल.

विधि : पहले मैदे को छान कर उस में बेकिंग पाउडर मिलाएं. अंडे को फेंटें. दूध में चीनी को घोलें और अब उस में फेंटा गया अंडा मिला दें. फिर उस में मैदा मिलाएं, ध्यान रहे कि दूध में गुठली न पड़े. मक्की दानों को उबाल कर(यदि टिन वाले इस्तेमाल किए हैं तो ऐसे ही)मिक्सी में पीस लें व पहले के घोल में मिलाएं. अब इस में भुने हुए तिलकाजू पीस कर इच्छानुसार मिलाएं. एक कड़ाही में तेल आंच पर रखें और खूब गरम होने पर उस में मक्की के फ्रिटर चम्मच से डालते हुए तल लें.

नूडल इडली

सामग्री : 100 ग्राम नूडल उबले हुए, 1 प्याला दूध, 1 अंडा, 1 छोटा चम्मच कार्नफ्लोर, 1 चम्मच मक्खन.

भरने के लिए सामग्री : 1 प्याला कटी हुई बंद गोभी, 1 शिमला मिर्च बारीक कटी, 2 टमाटर, ½ प्याला उबली मटर, स्वादानुसार नमक व लाल मिर्च.

विधि : नूडलस के पैकिट को खोल कर ½ पतीला पानी में 1 चम्मच नमक डाल कर उबाल लें, पानी फेंक दें. अब एक चम्मच मक्खन को एक नोनस्टिक पैन में डालें. गरम होने पर कार्नफलोर डालें. थोड़ा भूरा होने पर उस में दूध व फेंटा हुआ अंडा डालें. उस में स्वादानुसार नमक मिला दें. अब इस घोल



मक्की के मीठे पकौड़े



में उबले हुए नूडल मिला कर इडली का मिश्रण तैयार कर लें. फिर इडली के बरतन को साफ कर के तेल लगा कर उस में एकएक इडली का मिश्रण डालें. ऊपर से बारीक कटी बंद गोभी, शिमला मिर्च, मटर वगैरह रखें और भाप में पका लें. नूडल इडली तैयार है.

सीताफल स्कोन

सामग्री : 250 ग्राम मैदा, 75 ग्राम मारजरीन या मक्खन, ¼ छोटा चम्मच


नूडल इडली


सीताफल स्कोन

नमक, 1 प्याला दूध, 3 बड़े चम्म
चीनी, ½ प्याला कद्दूकस किया सी
1 अंडा, ¼ छोटा चम्मच बेकिंग पाउ
छोटा चम्मच वैनीला एसेंस.

विधि : मैदे में नमक मिला कर
मक्खन मिलाएं. यह मिश्रण ब्रेड क्रम
जैसा हो जाएगा. अब उस में बेकिंग
मिला कर अंडा मिला दें व दूध डाल
लें और उस में कद्दूकस किया सी
मिला लें. फिर एकएक बेकिंग कप में
चिकनाई लगा कर उस में एक बड़े च
मिश्रण डालें. और पहले से गरम
ओवन में 20-25 मिनट तक
सीताफल स्कोन तैयार है.

मसूर न

सामग्री : 1
लाल मसूर की दा
प्याला कुटीपिसी मूं
(दाने), 1 बड़ा
तेल, 1 बड़ा प्याज
तुरी लहसुन, 1
अदरक, 2 हरी मिर्च,
नुसार नमक 1 छोटा
धनिया, ½ छोटा
जीरा, 1 बड़ा
सिरका,
ब्रेड चूरा
के लिए


मसूर नट

विधि : मसूर दाल को रात को पानी में
दें. सुबह पानी निकाल कर सिलबट्टे या
ी में दरदरी पीस लें. प्याज, अदरक
ुन बारीक काट कर सब को एक साथ
चम्मच तेल में भूनें. फिर दाल को छोंके व
मसाले डाल कर कलछी से सुखाती
जब दाल का पानी सूखने लगे तब उस में
ली का चूरा व सिरका डालें.

अब आंच से उतार लें और थोड़ी ठंडी
पर हाथ से दाल की छोटीछोटी
कयां बना कर ऊपर से ब्रेड का चूरा
कर नोनस्टिक तवे पर तलें. बहुत
केदार मसूर नट तैयार है.

ब्रेड क्रंचीज

सामग्री : 6 टुकड़े ब्रेड के, 2 बड़े चम्मच
न, ½ प्याला मूंगफली भूनी हुई, ½
ा मटर उबली हुई, ½ प्याला आलू
हुए, थोड़ी सी हरी धनिया, 2 हरी
कटी हुई, ½ बंद गोभी, 1 बड़ा चम्मच
ई, स्वादानुसार नमकमिर्च.

विधि : ब्रेड के टुकड़ों को चारों तरफ से
लें. यानी उस का सख्त भाग (क्रस्ट)
से निकाल दें. अब प्रत्येक टुकड़े पर
थोड़ा मक्खन लगाएं.

भरने के लिए मसाला तैयार करने के
उबले व कद्दूकस किए आलू, भूनी व पीसी हुई मूंगफली, उबली मटर, बारीक कटी हरी धनिया, प्याज (चाहें तो), बारीक कटी हरी मिर्च व एक बड़ा चम्मच मक्खन सब को मिला कर अच्छी तरह गूंध लें. अब एक बड़ा चम्मच मिश्रण एक ब्रेड के टुकड़े पर डालें व पानी से ब्रेड के दो हिस्सों को चिपका दें. ऊपर से थोड़ा मक्खन लगा कर ओवन में 5-10 मिनट तक पकाएं. हलका गुलाबी होने पर निकालें. ब्रेड क्रंचीज तैयार है.

—डा. नीलम मलिक

सरिता मार्च (द्वितीय) 1992 अंक में

होली के पकवान

सूजी के दही बड़े
सिहैजन के फूल के रोल
टमाटर जाम
केले की चाकलेटी बर्फी
मूंग घूट
दाल दही टुकड़ा
मक्की के खस्ता पकौड़े
पालक तिल की बर्फी
कीमा चावल के चटपटे रोल
जर्दा पुलाव



ब्रेड क्रंचीज





कली यादों की

हर रोज तुम्हारी याद कुछ ऐसे आए
ज्यों फूल पर गिरे शबनम और बिखर जाए.

थी बंद
हृदय की कली
आ गई याद
तो खिल पड़ी.

ज्यों नई नवेली चौंक उठे हर आहट पर
बांके नयनों से देखे सहसा शरमाए

खिली कली
यादों की
झरी पंखुरी
यादों की.

ज्यों सुहावनी चांदनी पर अनायास ही
काली बदसूरत सी बदली छा जाए

इंतजार का
सिंधु अथाह
जिस में डूबती
हर चाह

ज्यों जाड़े की भली धूप पर अकस्मात
कोहरे की चादर छा जाए.

—रजनी माथुर

प्रणय सेतु

कहानी • वीना टहिल्यानी

चंदन के छात्रावास में जाते ही घर भर में खामोशी का साम्राज्य छा गया. कौन बात करे और किस से करे? फर बात करे भी तो क्या?

अमल और जया तो दोनों ऐसे थे, ानो एक ही नदी के दो किनारे, जिन्हें ोड़ने के लिए सदैव ही एक सेतु की ावश्यकता होती है, जो जुड़ कर भी नहीं ुड़ते और मिल कर भी नहीं मिलते. ाथसाथ समानांतर एक ही दिशा में लते ही जाना उन की विवशता है.

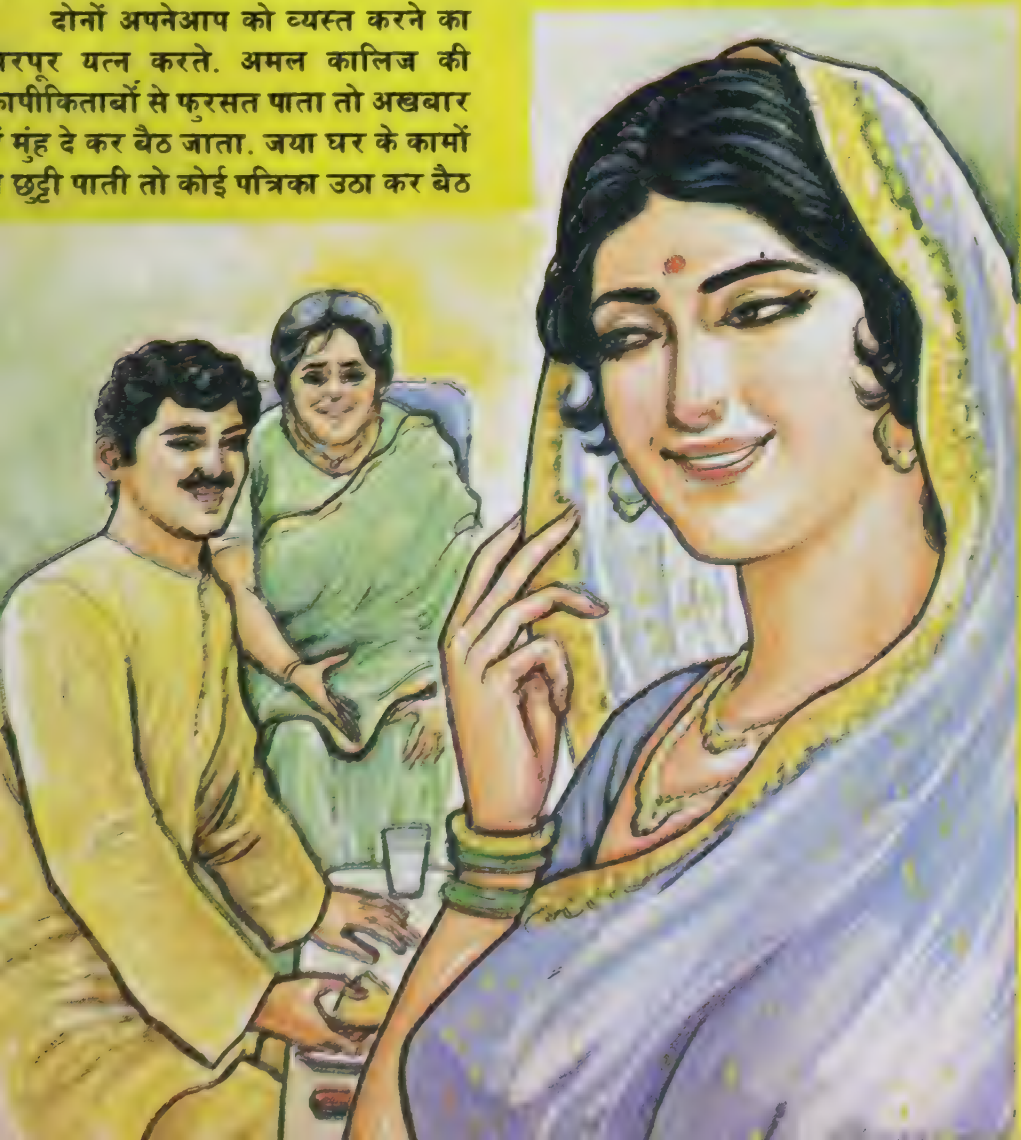
दोनों अपनेआप को व्यस्त करने का रपूर यत्न करते. अमल कालिज की ापीकिताबों से फुरसत पाता तो अखबार मुंह दे कर बैठ जाता. जया घर के कामों छुट्टी पाती तो कोई पत्रिका उठा कर बैठ जाती. परंतु एक अव्यक्त दुविधा, एक अजब सी असहजता सदैव ही दोनों के बीच पसरी रहती. घर की नीरवता जब हाहाकार कर उठती तो छोटेछोटे वाक्यों, नन्हेनन्हे शब्दों का वार्त्तालाप आरंभ करने का प्रयत्न दोनों ओर से किया जाता.

"आज देर कर दी?"

"हां, आज क्लास लेनी थी."

"गरम पानी रख दूं, नहाओगे?"

"नहींनहीं, बड़ी भूख लगी है,



हाथमुंह धो कर खाना खाऊंगा."

जया जल्दीजल्दी खाना गरम करने लगती. अमल हाथमुंह धो कर मेज पर पहुंच जाता. खाना खातेखाते दोनों बीच में फैले मौन से जूझते रहते. 20 वर्ष के लंबे वैवाहिक जीवन के बाद भी दोनों मानो एकदूसरे के लिए नितांत अपरिचित और अजनबी हो उठे थे. कैसा आश्चर्य था? परंतु यह आश्चर्य कहां था, यह तो उन की आदत थी. किसी माध्यम का सहारा ले कर बात करना उन का स्वभाव बन चुका था. पहले वह माध्यम अम्मांजी बनती थीं, फिर उन के बाद दो वर्ष तक चंदन का सहारा था.

"चंदन, मां को बोल मेरा खाना लगा दे."

"चंदन, मां से पूछ मेरी कलम ली है क्या" या फिर "चंदन, पिताजी को बोल, जातेजाते बनिए को गेहूं पहुंचाने का बोलते जाएं."

"चंदन, जा बेटा, यह थैला अपने पिताजी को पकड़ा दे...बोलना, लौटते हुए फल और सब्जियां लेते आएं."

अब अम्मांजी नहीं रहीं और चंदन छात्रावास चला गया. अमल और जया आमनेसामने बैठते तो एक असहज चुप्पी दोनों को ही कचोटती रहती. अम्मां और चंदन उन दोनों को जोड़ने वाले दो सेतु थे. उन में से एक तो पूरी तरह से ध्वस्त हो चुका था, दूसरा नदी के बहाव में बहता बहता दूर निकल गया था.

इकलौते बेटे का छात्रावास में चले जाना जया के दुख और उदासी का कारण कदापि न था, उसे तो जाना ही था. इंजीनियरिंग में प्रवेश मिल गया, यही क्या कम खुशी की बात थी. पटना न सही, दिल्ली ही सही, घर न सही, छात्रावास तो है. उच्च शिक्षा और उन्नति के लिए जी... में कुछ समझौते, कुछ त्याग तो करने... पड़ते हैं.

'सदा ही बेटे की उंगली थाम कर ... आंचल की ओट में छिपा कर नहीं रखूं... यह निश्चय तो जया ने बहुत पहले ... लिया था. चंदन को छात्रावास में भेजना ... समय और परिस्थितियों की मांग भर ... जिस के लिए वह पूर्णतः तैयार भी थी.

जया सोच की गाड़ी को बीच में ... ब्रेक लगा देती है. क्या परिस्थितियों ... समझौता करतेकरते उस के अंतर ... कड़वाहट भर गई है या फिर वर्षों पहले ... दमित इच्छाएं आज भी उस के मनप्राणों ... आस की कुंडली मारे बैठी हैं? वह खुद न... समझ पाती. प्रत्यक्ष में तो उसे नई समस्या... ही जूझना पड़ रहा था. बिना माध्यम, बि... सहारों के कैसे पहुंचे वह अमल तक? ज... तक जया समझती है, अमल भी इ... दुविधा के दौर से गुजर रहा है. परंतु ... दूरियां, यह अबोलापन वर्षों से उन ... स्वभाव में शामिल हो गया था. वर्षों ... इस प्रवृत्ति से उपजी इस झिझक, दुविध... असमंजस का कैसे अंत होगा?

वर्षों के संगसाथ के बाद भी ... अभी तक यह झिझक, यह चुप्पी उन ... जीवन के साथ लिपटी हुई है? आजकल ... नवविवाहित जोड़े भी आपस में ... खुलेखुले हिलेमिले दिखते हैं. जया ... दिनों में खोने लगी, जब वह स... नवविवाहिता थी, जब वह स्वयं नई दुल... बन छमछम करती इस घर में आई थी. ... यह बात कल की नहीं, युगों पहले की प्रत... होती है.

जया बी.ए. प्रथम वर्ष में पढ़ने वा... अबोध किशोरी ही थी कि मातापिता...

मां के लाड़प्यार और वात्सल्य भावना ने तो जया और अमल को जैसे एक दूसरे के लिए अजनबी ही बना दिया था. परंतु उन्हें क्या पता था कि अचानक आई बीमारी प्रणय सेतु बन कर उन का दामन इस तरह खुशियों से भर देगी?



जया ने उठने की कोशिश की तो अमल ने कंधों से पकड़ कर लिटाते हुए कहा, "महारानीजी, आज आप आराम करने का कष्ट करें."

च्छा घरवर मिलते ही उस का ब्याह कर या. वर्षों बाद आज भी वह मन से ोकार करती आई है कि अमल से अच्छा तो उस के लिए कोई हो ही नहीं सकता .

उच्च शिक्षित, सज्जन, संभ्रांत, ोची, शांत, मितभाषी किसी भी र्यसन से बहुत दूर विश्वविद्यालय में ेसर था अमल. स्वयं जया भी अंतर्मुखी, त प्रवृत्ति की किशोरी थी, चरित्र और वहार के छिछोरेपन से कोसों दूर. समान त्तियां और वैचारिक समानता दोनों को त पास ला सकने की क्षमता रखती थी, फिर भी कैसी थीं वह दूरियां, जिन को वे ज तक नहीं लांघ पाए थे.

अमल अपने मातापिता का इकलौता था, न भाई, न बहन. उस के पिता का पहले देहांत हो चुका था. मां ने ही उसे पोस कर बड़ा किया था. वर्षों से वे दूसरे के साथी और सहारे रहे थे. फिर न जाने क्यों दोनों के बीच एक झीना सा ा था, जो उन के व्यवहार को प्रभावित ना था.

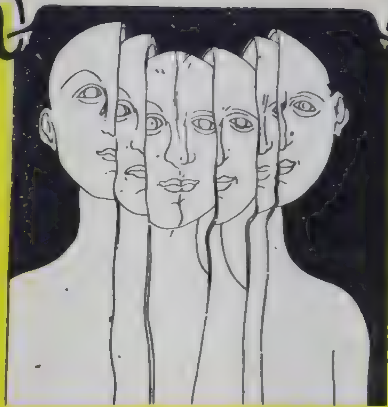
मां अनपढ़, पुरानी मान्यताओं, दाओं और परंपराओं में अंध श्रद्धा े वाली सरल स्त्री थीं. बेटा ही उन के न का केंद्र भी था और परिधि भी.

अमल अपनी मां से भरपूर स्नेह करता था और उन का भरपूर सम्मान भी. वैचारिक समानता न होते हुए भी मां की पुरानी पारंपरिक मर्यादाओं और मान्यताओं को निभाना वह अपना कर्तव्य समझता था. शायद यही कारण था कि अनचाहे ही उन में एक दबीदबी मानसिक दूरी पनप गई थी, जिस से वे दोनों शायद अनभिज्ञ तो न थे, पर इसे पीढ़ियों की स्वाभाविक दूरी समझ कर विशेष महत्त्व भी न देते थे. इसी कारण घर का वातावरण शांत और सहज रहता था.

जया जब दुलहन बन कर इस घर में आई तो मांजी के हर्ष और उत्साह की कोई सीमा न थी. वह हर समय बहू के आगेपीछे डोलती रहतीं, हर वक्त उसे पलकों पर बैठाए रखना चाहतीं. पल भर को भी उसे वह अकेला न छोड़तीं. हर बात में उस के साथ होतीं. हर काम में उस का हाथ बंटातीं.

बचपन से ही जया को पत्रपत्रिकाएं पढ़ने का विशेष चाव था. सुबह के काम निबटा कर वह अखबार अभी हाथ में उठाती ही कि मांजी मुसकराती पास आ कर बैठ जातीं, "आजकल की लड़कियां तो बड़ी सयानी हैं, सभी अखबार बांच लेती हैं. मुझे भी तो सुना दुलहनियां, दुनियाजहान की खबरें." उन की वाणी में न ही दुराग्रह होता, न ही कोई दुर्भावना, बस एक अदम्य ललक.एक असीम हर्ष से भरीभरी वह सदा ही बहू के आगेपीछे डोलने को आतुर दिखतीं.

दोपहर के खाने के बाद जया मनपसंद



फासले

एक इंसां का फर्ज
जब दूसरे का हक बना,
फासले इंसान के
इंसान से बढ़ने लगे.
—कांता स. पाल

पत्रिका ले कर लेट जाती तो मांजी एक बार फिर उस के पास सरक आतीं, "कहानी पढ़ रही है बहूरानी, हांहां, आराम से पढ़." उन की आंखें स्नेह से छलक पड़तीं. वाणी दर्प से भर उठतीं, मानो कह रही हों कि कैसी सलोनी और सयानी है मेरी बहू. वह वहीं जया के साथ वाले पलंग पर लेट जातीं. लगातार उस स्नेह और दर्प भरी दृष्टि को झेलते हुए कुछ पढ़ना जया के लिए मुशकिल हो जाता और वह असहज और अनमनी हो उठती.

जया सदा से ही मितभाषी, अंतर्मुखी, एकांतप्रिय थी. विशेषकर संध्या के समय डूबते सूरज को निहारते हुए अथवा कथा साहित्य के पात्रों का सुखदुख झेलते हुए उस के संवेदनशील मन को बस अपना साथ ही भाता था. ऐसे में अपने एकांत में विघ्न उसे जरा न भाता. पर मांजी के सरल स्नेह और मीठे अपनत्व की अवहेलना और अवमानना करना भी उस के स्वभाव के विपरीत था.

"लंबा जीवन काट लिया मैं ने अकेले... अब तो जी भर कर तुम से बातें करूंगी." मांजी की उमंग, उन की प्रसन्नता छिपाए न छिपती थी. जया और अमल को साथ बैठ कर वार्तालाप करते देखतीं तो खुशी से बावली हो जातीं, "तू ही ब करना सिखा सकती है इसे बहू, वरना मे तो यह बात ही नहीं करता. जब दे अपनी किताबों, कापियों में उलझा रह है...चुप्पा कहीं का."

मांजी खुशी के अतिरेक से खिलखि कर हंस उठतीं, उन्हें यों साथ बैठे देख स्नेह से निहारतीं, मानो आंखों ही आंखो दुलार रही हों, परंतु उन का यह सह सरल स्नेह पतिपत्नी के वार्तालाप प्रवाह बाधाएं खड़ी कर देता. अमल असहज कर चुप्पी ओढ़ लेता.

अमल के कालिज से लौटते ही मां की समस्त इंद्रियां सजग और सक्रिय उठती थीं. उस के हाथ में से खाने का डब लेते हुए वह बहू को आवाज लगात "बहूरानी, अमल का तौलिया और क निकाल देना."

"अमल बेटा, पहले नहाएगा कि च पिएगा?"

"जया बिटिया, पानी का गिलास लेती आ अमल के लिए, कितनी तो गरमी आज. अरे फ्रिज का पानी तो अमल का ग पकड़ लेता है... यह तो हमेशा ही मटके पानी पीता है."

जया गिलास वापस ले जाती. फि मटके से पानी भर लाती.

"आज बहू ने तेरे लिए समोसे ब कर रखे हैं." मांजी पास बैठ कर बेटे से और समोसा खाने का आग्रह करतीं फि कहतीं, "तू भी अमल के साथ बैठ कर बहूरानी."

जया संकोच से शरमा जाती मांजी की हंसी का निर्झर फूट पड़ता. उन सदैव की उपस्थिति, उन की स्नेहि आतुरता पतिपत्नी के व्यवहार को सदा मर्यादा की सीमाओं में बांधे रखती.

"आज रात को खाने में बनाऊं?" जया के सहज प्रश्न का अ अभी उत्तर भी न देता कि मांजी ब

पड़तीं, "उस से क्या पूछती है बिटिया, उस के सामने तो जो रख दो, चुपचाप खा लेगा. उस की पसंदनापसंद जाननी हो तो मुझ से पूछ. चावल के साथ इसे अरहर की दाल भाती है. रोटी के साथ इसे काली उड़द की दाल पसंद है. करेले, कद्दू और तोरई का तो इस के सामने नाम भी मत लिया कर." और मांजी सदा की भांति बहूबेटे को स्नेह से निहारती हुई मुसकराने लगतीं. फिर सदा की भांति पतिपत्नी के बीच मौन और असहजता की दूरियां फैल जातीं.

कभी अमल की तबीयत बिगड़ जाए या फिर कभी जया को ही ताप चढ़ आए तो मांजी बेझिझक बीमार बहू या बेटे को रात को अपने साथ सुलातीं और सेवाशुश्रूषा में दिनरात एक कर देतीं.

महीने में एक बार वह बेटे को यह याद दिलाना भी न भूलतीं कि वह बहू को बहुत दिनों से घुमानेफिराने या सिनेमा दिखाने नहीं ले गया.

"जया, तू भी तो उसे कुछ याद नहीं दिलाती. कभी कोई जिद नहीं करती, तभी तो जब देखो तब वह पढ़ाई और किताबों में ही उलझा रहता है." मांजी बहू से शिकायत करतीं तो वह फीकी सी हंसी हंस कर रह जाती.

आज्ञाकारी बेटा मां के आदेश पर पत्नी को घुमाने तो ले जाता, पर दोनों के बीच सब कुछ यंत्रवत और मशीनी हो कर रह गया था. न कभी प्यार भरी नोकझोंक, न अपनत्व भरी झड़प और न ही उद्दाम भावनाओं का आवेग. जया को हर समय अपनी पीठ पर एक जोड़ी स्नेहिल आंखों की दृष्टि चुभती प्रतीत होती और वह असहज हो उठती.

अन्याय का तो विरोध किया
सकता है, घृणा के विरुद्ध विद्रोह किय
सकता है, परंतु स्नेह और वात्सल्य के
उफनते आवेग पर अंकुश रखना उस के
में ही कहां था. इस ममता का निरादर
वह मांबेटे के बीच दीवार बनना भी
चाहती थी. फिर अगर अमल संयम
सकता है तो वह क्यों नहीं?

परंतु अमल की छटपटाहट उ
छिपी थोड़े ही थी. वह भी पतिपत्नि
बीच की भावनात्मक दूरियों को पा
चाहता था. दिन के उजाले में भी वह
एकांत क्षण चाहता था, जिन में बस व
और हो जया. हमउम्र साथी का साथ
सब को ही प्यारा होता है. पर मां
स्नेहिल छाया का वह क्या करे, जो
समय उन के आसपास ही मंडराती रहत

उन दिनों वे जिस घर में रहते थे,
नीचे दो छोटेछोटे कमरे थे. ऊपर छत
एक छोटी सी बरसाती भी थी. जब
घर में मेहमान आते, अमल उ
लिखनेपढ़ने का काम ऊपर ही कर ि
करता था. परंतु विवाह के कुछ समय
तो अकारण ही वह किताबेंकापियां स
कर ऊपर चढ़ जाता. जया भी पति
आकर्षण में बंधी ऊपर जाने का को



"इस से भी ज्यादा आतंकित कर देने वाली बात है गैरराजनी
व्यक्तियों का राजनीति में प्रवेश!"

कोई बहाना ढूंढ़ ही लेती थी. कभी चाय, कभी फल और कभी पानी पहुंचाने के बहाने वह भी ऊपर चढ़ ही आती थी.

कच्ची उम्र, सुमधुर एकांत और पिया का साथ, सब कुछ कैसा प्यारा लगता था, कच्ची धूप सा खिलाखिला और उजास से भरपूर. किसी विषय पर अभी वार्तालाप शुरू ही हुआ होता कि नीचे से मांजी पुकारना शुरू कर देतीं. "अरी, देख तो कौन आया है? किस को पूछ रहा है?" या फिर "बहूरानी, बड़ी देर हो गई, आज तरकारी कौन सी बनेगी? मुझे बता तो, मैं काट दूं."

> **कर्तव्य**
>
> *जो कार्य आप के सामने है, उसे शीघ्रता एवं निष्कपट भाव से करना ही कर्तव्य है, यही आज के अधिकार की पूर्ति है.*
>
> —गेटे

जया ऊपर जाने के लिए जितने बहाने गढ़ती थी, उस से कहीं ज्यादा कारण मांजी ढूंढ़ निकालती थीं उसे नीचे बुलाने के. पर उन का ऐसा व्यवहार न अमल को उचित लगता, न जया की समझ में आता. शायद स्वयं मांजी को भी अपने इस व्यवहार पर ग्लानि होती थी.

तभी तो एक दिन जया को लाड़ भरा उलाहना देती हुए बोलीं, "काम में खलल तो अमल को जरा नहीं भाता, कोई ऊपर चढ़ जाए उस के काम के बीच तो कैसा गुस्साता था वह. हमारी बरसाती के ठीक सामने जो घर है न , वहां की तेरी मौसी बड़ा ध्यान रखती हैं हमारे घर का. सारे महल्ले में बोलती फिरेंगी कि बहूबेटा दिन भर ऊपर बैठे रहते हैं. किसी का सुख उस से सहा नहीं जाता. मुझे तो बड़ा डर लगता है, तभी बारबार आवाज दे कर तुझे नीचे बुला लेती हूं." हिचकतेहिचकते मांजी ने बात
पूरी कर दी थी, जैसे सफाई दे रही हो
जया क्या कहती? कैसे वि
करती? विश्वास के मूल में भी तो इक
बहूबेटे के प्रति अंध मोह झलक रहा
विरोध या प्रतिवाद करना तो दूर की
थी, मांजी की असहजता से स्वयं जया
असहज हो उठी. फिर मांजी की आज्ञानु
उस ने ऊपर जाना भी धीरेधीरे बंद
दिया.

अमल शुरूशुरू में कुछ खीजा भी
"क्या मां की हर उलटीसीधी बात में '
हां' मिलाती रहती हो." पर खुल
विरोध करने का साहस उस में भी कहां

फिर अब तो जया को बार
सीढ़ियां उतरनेचढ़ने की सख्त मनाही
उस की कोख में नन्ही कोंपल जो फूटी
मांजी ने सुना तो ऊपर से नीचे
हर्षोल्लास की प्रतिमूर्ति बन उठी, "
यह न कर... बहू वह न कर... बहू यह
बहू वह खा." हर पल वह जया की रा
फूल बिछाती रहतीं, हर क्षण वह उस
दुविधाओं को अपने ऊपर ओढ़ती रह

ऐसा उन्मुक्त, उल्लास का समय
जया और अमल के जीवन में कोई वि
परिवर्तन ले कर नहीं आया. जया की
सुखसुविधा का ध्यान रखने का उत्तरदा
मांजी ने अपने ऊपर ले लिया. उ
खानपान का ध्यान रखना, उस के आ
का ख्याल रखना, यहां तक कि उसे डा
के पास ले जाना और उसे समय से पथ्य
आदि सब काम उन के हिस्से के ही थे

मांजी के चलते पतिपत्नी
भावनात्मक और मानसिक दूरियां स
अथवा एकदूसरे को समझने का अवस
न मिल पाता. जया और अमल ने इ
अपनी प्रवृत्ति बना लिया. उन जैसे अंत
जीवों के लिए और कोई विकल्प ही
था. सब कुछ उन के लिए जैसे यंत्रवत
मशीनी हो कर रह गया था, भावना
उद्वेग और उद्दीपन से बहुतबहुत

(शेष पृष्ठ 169 पर)

बड़ी भाभी

कहानी ● पुष्पा भा

लाल जोड़े व भारी आभूषणों से लदी दुलहन बनी मैं एक बड़े से कमरे में कब से सिर झुकाए बैठी थी. हर ओर रिश्तेदारों व अपरिचित चेहरों की भीड़ थी और मैं स्वयं को अकेला सा महसूस कर रही थी. विवाह समापन के पश्चात् कैसा विचित्र वातावरण होता है. जिस परिवार से लड़की को पूरे जीवन के लिए जुड़ना होता है, उस के सदस्य उस के लिए अजनबी होते हैं. बारबार मां व बाबूजी की याद आ रही थी.

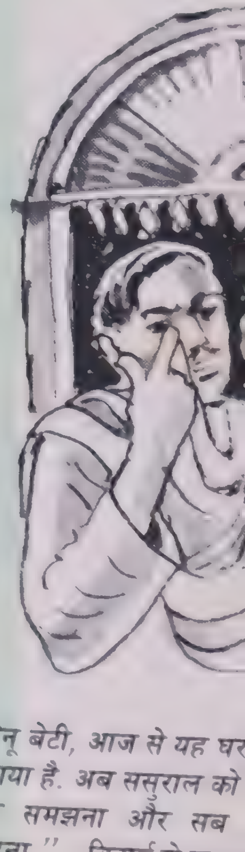
विदाई के समय मां ने भींच कर गले से लगा लिया था और भर्राए स्वर में बोली थीं, "रेनू बेटी, आज से यह घर तेरे लिए पराया है. अब तो ससुराल को ही अपना घर समझना. तनमन से सब की सेवा करना, बेटी."

मन भावुक हो उठा. सोच रही थी, मैं कितनी अकेली हूं यहां. सभी अपनेअपने काम में व्यस्त हैं. किसी का भी ध्यान मेरी ओर नहीं था. कानपुर से लखनऊ की यात्रा यों तो डेढ़दो घंटे में समाप्त हो जाती है, पर जेठ की गरमी और दुलहन के जोड़े में पसीने से सराबोर हो गई थी. पिछले तीन दिनों से विवाह की रस्में निभातेनिभाते थक गई थी. कूलर की हवा भी असर नहीं कर रही थी. यदि मां के पास होती तो कब का घिसापिटा सूट पहन कर लेट जाती, पर यहां तो इसे अशिष्टता ही समझा जाएगा.

तीन घंटे हो गए थे मुझे यहां आए हुए. इस बीच बारबार एक ही शब्द सुनाई पड़ रहा था, 'बड़ी बहू' या 'बड़ी भाभी'. वह कभी दौड़ कर हलवाई को खाद्य सामग्री पहुंचा रही थीं, कभी लोगों को कपड़े निकाल कर दे रही थीं. कहीं जीजाजी को खाना खिलवा रही थीं तो कहीं बड़ेबूढ़ों के लिए खिचड़ी पकवा रही थीं. कभी फोन पर ब्यूटी पार्लर का समय निश्चित करवा रही थीं. कितनी व्यस्त थीं वह. आरगेंजा की साड़ी में लिपटी हलके गहनों से सजी वह ऐसी प्रतीत हो रही

थीं मानो संगमरमर की मूर्ति ह
किसी मूर्तिकार ने अथक प
तराशा हो. सिर पर पल्ला यों टिक
कील से ठुका हो. गोरा रंग, छरह
और लंबा कद. कभी इधर दौड़तीं
उधर भागतीं. अभी कुछ स
द्वाराचार के समय उन का गायन
मधुर स्वर था.

बड़े प्यार से बड़ी भाभी ही म



"रेनू बेटी, आज से यह घर पराया है. अब ससुराल को घर समझना और सब करना." —विदाई के समय रेनू को समझाते हुए भर्राई मां बोली.

थ इस कमरे में लाई थीं और बोली थीं, से यह घर तुम्हारा है, रेनू. हम तो दनों के मेहमान हैं. यदि किसी चीज की यकता हो तो निस्संकोच मांग लेना." अतुल तो पल्ला छुड़ा कर दोस्तों में जा

भाभी की प्रशंसा सुनसुन कर ोली दुलहन रेनू के कान थक ी. उसे ईर्ष्या व घृणा हो गई थी के नाम से. पर एक दिन जब उसे भाभी की प्रशंसा का राज स हुआ तो उस का मन ग्लानि से भर उठा और वह आप को बहुत छोटा महसूस लगी.

बैठे थे और बड़ी भाभी के दर्शन ही नहीं हो रहे थे. मैं इन औरतों से उकता गई थी. कोई साड़ी छू कर उस के दाम बताती, कोई गहनों के भार का अंदाजा लगाती. छोटेछोटे बच्चे मेरी गोद में बैठने को ललक रहे थे और मैं गरमी से बेहाल हुई जा रही थी.

तभी बड़ी भाभी दौड़ीदौड़ी कमरे में आई थीं. सभी को संबोधित करते हुए बोलीं, "अब बहू कुछ देर आराम करेगी. आप लोग इसे अकेला छोड़ दें."

मैं ने चैन की सांस ली थी. पर उन औरतों के चेहरों से प्रतीत हो रहा था कि बड़ी भाभी के इस वाक्य से वे नाखुश हैं. एक ने धीमी सी आवाज में कहा भी, "पूरा जीवन पड़ा है आराम करने को. मेहमान पूरी जिंदगी थोड़े ही बैठे रहेंगे."

पर बड़ी भाभी ने आदरपूर्वक सब को बाहर निकाला, सिर का पल्ला उतार कर



कमर में ठूंस लिया और बोलीं, "कुछ देर आराम करो. शाम को मुंह दिखाई की रस्म है और फिर स्वागत समारोह.... थक जाओगी," बड़े ही प्यार से मेरे सिर पर हाथ फेर कर बोली थीं, "भूख नहीं लगी है?"

मैं ने मना कर दिया तो जल्दी से जूस ले आईं, फिर सलवारकमीज मेरे हाथ में पकड़ा कर बोलीं, "चार बजे तक उठना होगा," और वह चली गईं.

मुझे तो अपनी बहन जैसी ही लगी थीं. 12 बजे की मैं ऐसी सोई कि 4 बजे तक उठ ही न पाई थी. अचानक किवाड़ खुलने की आवाज सुनाई दी थी. बड़ी भाभी हाथ में ट्रे ले कर खड़ी हुई थीं. मुझे स्वयं पर लज्जा आ रही थी. उन के कहने के बाद भी मैं उठ जो न पाई थी. पर उन के चेहरे पर तो मुसकान खेल रही थी. बड़े प्यार से मुझे भोजन खिलाया था उन्होंने.

मैं देख रही थी दोनों ननदें एक पल भी उन से दूर नहीं हो रही थीं. बड़ी दीदी तो अपना बेटा ही संभाल न पा रही थीं. एक बार अम्मांजी की गोद में बेटे को दे कर बोली थीं, "तुम्हीं संभालो मां, मैं तो थक गई." पर अम्मांजी सब से ज्यादा थकी हुई थीं. बोलीं, "बड़ी बहू को दे आ, उसी से संभलेगा यह शैतान."

और सच, नन्हा बालक बड़ी भाभी की गोद में किलकारियां भर रहा था. मैं देख रही थी, हर ओर भागदौड़ करने के पश्चात भी उन के चेहरे पर थकान का दूरदूर तक पता न था. कुछ समय पश्चात स्वयं ही बोलीं, "रेनू, अब उठ कर नहाधो लो. अभी औरतें आ जाएंगी, मुंह दिखाई की रस्म निभाने."

उन्होंने भारी साड़ी और गहने फिर से निकाल दिए थे. अभी सजधज कर बैठी ही थी कि अम्मांजी आ गईं और बोलीं, "बहू, जा अपने ससुरजी को कपड़े निकाल दे और जलपान का प्रबंध भी देख लेना. जल्दी आना यहां... मुझ से हिसाब न रखा जाएगा."

तभी अतुल आ गए थे. "भाभी, मेरे कपड़े कहां हैं? मेरी टाई नहीं मिल रही."

आज तो भैया तुम्हें कुछ
मिलेगा... अब कल से तुम्हारी डू
संभालेगी." और वह खिलखिला
सब को निबटा कर कापीपेंसिल
लेनदेन का हिसाब करती रही थीं.

तभी औरतों ने दहेज दिखाने
की थी. अम्मांजी बोलीं, "बहू, संदूक
सभी दहेज देखेंगी."

"अब समय कहां है अम्मांजी.
अभी तैयार होना है स्वागत समा
लिए. सात बजे तक तो होटल पहुं
दहेज दिखाने के चक्कर में तो 10 य
जाएंगे." उन की बात सुनते ही औ
फुसफुसाहट शुरू हो गई थी. अम्म
चेहरे पर भी नाराजगी के भाव थे.
डांट पिलाई थी उन्होंने बड़ी भाभी
जाने कभीकभी कैसी हरकतें करत
क्या सोचती होंगी मन में सब. ऐसे मौ
ये औरतें अपनी बेइज्जती समझती

"समझने दीजिए अम्मां, कम
रेनू की छीछलेदार तो न होगी. मुझे त
तक याद है, जब मेरा दहेज देख कर
टिप्पणियां की थीं, औरतों ने. कटा
आक्षेप सुन कर नई ब्याहता
छटपटाती है, यह तो भुक्तभोगी ही
सकता है."

मेरा मन उन के प्रति श्रद्धा से भ
था. मैं ने तो यही जाना था कि उ
देवरानी को उलाहने या प्रताड़
अतिरिक्त कुछ दे ही नहीं सकती.
दया सी उमड़ आई थी उन के प्रति. स
शाम तक एकएक का ध्यान रखतीं
निबटातीं थकी न होंगी. अम्मां और
निश्चिंत थे. पूरी बागडोर भाभी
संभाली हुई थी. भैया के चेहरे पर भी
के भाव थे. पूर्ण रूप से शायद विश्व
अपनी अर्धांगिनी पर.

बड़ा अच्छा लगा देख कर कि य
पर विश्वास तो किया जाता है. स
निबटा कर वह मुझे व अतुल को फूलों
कमरे में छोड़ गईं थीं. जातेजाते अ



"अब बहू कुछ देर आराम करेगी. आप लोग इसे अकेला छोड़ दें." सभी को संबोधित करते हुए बड़ी भाभी बोलीं.

ा था, "अब तुम्हारे जिम्मे है, हमारी रानी."

वह मुझे बांहों में भर कर बोले थे, नू, कैसा लग रहा है यहां?"

मैं महज इतना ही बोल पाई थी, तुल, मैं बहुत खुश हूं कि इस परिवार से ध जुड़ा है मेरा. कितना प्यार व अपनत्व यहां, कुछ भी तो पराया नहीं लगता."

दूसरे दिन अम्मांजी बड़ी भाभी के मर्श से लेनदेन व नेग आदि का काम ती रहीं. शाम को हमें कशमीर के लिए ना होना था. उसी की तैयारी में भी स्त थीं बड़ी भाभी. स्टेशन पर जब उन के ण स्पर्श किए तो पहली बार उन की मुद्रा गंभीर सी दिखी थी. बोलीं, "रेनू, तक तुम लोग वापिस आओगे, हम लोग चुके होंगे. पूरी तन्मयता से इस घर को नाना. इस परिवार के सभी सदस्य बहुत हैं. यदि थोड़ा भी प्यार दोगी तो ारा आंचल खुशियों से भर जाएगा."

जी चाह रहा था उन के साथ कुछ दिन कर इस घर के रीतिरिवाज तो बती. उन्हें छोड़ कर जाने का जरा भी न था.

कशमीर की वादियां कितनी खूबसूरत गुलमर्ग, पहलगाम, खिल्नमर्ग घूमते-घूमते 15 दिन हो गए थे. इस बीच एक बार अतुल से वापस घर चलने को कहा भी मैं ने.

अतुल बोले थे, "घर तो चलना ही है, कुछ दिन और रह लेते हैं यहां." पर मेरी आंखों के आगे बारबार अम्मांजी का चेहरा व भाभी के कहे शब्द घूम रहे थे. मेरे हठ के आगे इन की एक न चली और यह टिकट ले आए. संकल्प के साथ उत्साह की डोर थामे घर की दहलीज पर कदम रखा तो सब ने स्नेह से मेरा आंचल भर दिया.

मेहमान अपने घर जा चुके थे. सब से ज्यादा कमी बड़ी भाभी की खटक रही थी. सफर की थकावट से बेखबर मैं रसोईघर में घुस गई थी, अम्मांजी का हाथ बंटाने. सोचा इतने दिन काम करतेकरते थक गई होंगी. पर तभी उन का रूखा सा स्वर सुनाई दिया, "बहू, पहले नहाधो लो, फिर रसोईघर में घुसना."

ओह, मैं तो भूल ही गई थी. भले ही गाड़ी वातानुकूलित थी, पर सफर की धूलमिट्टी तो होती ही है. जल्दी ही नहाधो कर गाउन पहन कर आ गई थी. अम्मांजी की नजरें नीचे से ऊपर तक कई बार मुझे घूर चुकी थीं. तभी छोटी ननद ने इशारा किया था, "भाभी, अभी से क्यों गाउन पहन लिया, कम से कम चुन्नी तो गले में डाल लो."

बरबस ही बड़ी भाभी का चेहरा सामने आ गया था. हर समय पल्ला सिर पर ही रहता था, उन के. मैं ने जल्दी से ही अपनी

भूल सुधार ली थी. रसोई में जा कर मटरपनीर की सब्जी, दहीबड़े बनाए थे. कालिज से निकल कर मां का हाथ तो कई बार बंटाया था, पर पूरी जिम्मेदारी कभी नहीं संभाली थी. कई बार मां समझाती थीं, पर मैं ध्यान ही न देती.

आज बारबार हाथ कांप रहे थे. डर रही थी कि कहीं नमक ज्यादा न पड़ जाए. सब की नजरों से छिप कर मैं ने सभी सब्जियां चख ली थीं. जब पूर्ण रूप से संतुष्ट हो गई तो मेज सजा कर बड़ी व्यग्रता से सब का इंतजार करने लगी. अतुल को तो पकड़ कर ले आई थी. किसी ने मुझे साथ खाने के लिए न कहा. मैं भी सोच रही थी गरम फुलके सेंक कर सब को परोसूं. बारबार कान खड़े हो जाते अपनी प्रशंसा सुनने के लिए.

तभी पिताजी का स्वर सुना, "बहू, मैं ब्लड प्रेशर का मरीज हूं, जहां तक हो सके घी और मसाले कम प्रयोग करो."

वास्तव में घी ज्यादा पड़ गया था. मन कसैला सा हो गया था. सोचा, कोई बता ही देता कि ससुरजी को घी मना किया गया है. मेरा उदास चेहरा देख कर अतुल ने हंसी में बात टालनी चाही थी, बोले, "कुछ दिन बड़ी भाभी के साथ रहो. कम मसालों व घी के प्रयोग के बावजूद भी वह ऐसा खाना बनाती हैं कि उंगलियां चाटती रह जाओ."

मैं ने निश्चय किया कि अब कभी शिकायत का मौका न दूंगी. दूसरे दिन सुबह चाय पी कर सीधी रसोई में जा रही थी कि अम्मांजी के स्वर ने चौंका दिया, "बहू,बिना नहाए हमारे परिवार की परंपरा नहीं है रसोई में घुसने की. और यह गाउन उतार कर साड़ी पहनो."

कभीकभी मैं सोचती कि क्यों हो जाती हैं यह छोटीछोटी गलतियां मुझ से. मैं घर के हर सदस्य को प्रसन्न करना चाहती, पर बड़ी भाभी के व्यक्तित्व की अमिट छाप उन सब के दिल की गहराइयों तक थी. सोचती, क्या मैं वह स्थान कभी नहीं बना पाऊंगी. मैं अपना आत्मविश्वास खोती जा रही थी.

एक बार छोटी ननद को विश्वा
कर मैं ने पूछा तो वह बोली, "बड़ी भा
सब की प्यारी हैं. उन्हें मां तो क्या पास
वाले भी सुघड़ गृहिणी की उपमा देते
देखा नहीं भाभी, वह हम सब को
प्यार करती हैं. मां की तो दाहिना ह
बड़ी भाभी."

मन अवसाद से भर गया. सोचने
पता नहीं, मैं यह स्थान कभी पा भी स
रविवार को अतुल का अवकाश था.
के पुराने डब्बे निकाल कर फेंके. बाज
कर छोटीमोटी खरीदारी की. अभी
पांव धरा ही था कि अम्मांजी का स्वर
दिया, "यह सब क्या ले आए तुम लोग
तो आजकल बरकत नहीं है. आ
अठन्नी खर्चा रुपया. बड़ी बहू को
चीथड़ों में जान डाल देती है."

मैं चुप हो गई थी. जानती थी
हर काम की तुलना बड़ी भाभी से जरू
जाएगी. जी चाहता, एक बार जा क
का घर देखूं. कौन से सुरखाब के पर
उन्हें, यह जानना चाहती थी. तभी
पत्र मिला. बुलावा भेजा था. मेरा माय
भाभी का घर कुछ ही फर्लांग की दू
था. जल्दी ही छुट्टी मिल गई थी. सास
चाहती ही थीं कि भाभी के पास जा क
अक्ल की बातें सीखूं.

स्टेशन पर मां, बाबूजी, भाभी
सब आए थे. सच कहूं तो मां से भी
वात्सयपूर्ण तरीके से भाभी ने मेरा स्व
किया था. माथा चूम कर बोलीं,
कितने दिनों के बाद मां से मिल रही हो
अपने साथ ले जाइए, अम्मांजी.
औपचारिकता निबाहने के चक्कर मे
पास आ गईं तो मायके जाने की साध
पूरी होगी?"

मैं अवाक रह गई थी कि कि
सुलझा हुआ व्यक्तित्व है? दूसरे दिन
भाभी के घर पहुंची. साधारण से फ
को कितनी कलात्मकता से सजाया
कचरे के डब्बे से ले कर बागबगीचा तक
साफसुथरा था. हर कोने में उन्होंने प्राण

थे. अचानक हवा के झोंके से अलमारी गई थी. बरबस ही बड़ी ननद के शब्द आ गए, 'भाभी की अलमारी तो शो के समान चमकती है.'

बाद में अपने अध्ययनकक्ष में ले गईं. र बोलीं, "जब तक कुछ लिख या पढ़ नहीं ो, नींद नहीं आती है."

मैं ने शरारत भरी नजरों से कहा, या को नींद आ जाती है तब तक?"

न्होंने गंभीरता से उत्तर दिया, न्हें पढ़ने का शौक है." शायद बड़ों को प्रकार अपनी आयु से छोटों से दूरी नी चाहिए, इस संबंध में वह भली प्रकार ती थीं. कभी भी अपने स्तर से गिरते न . मैं ने उन के बहुमुखी व्यक्तित्व को ा, काम करने के तरीके का विश्लेषण . व्यवहार कुशलता को देखा. मन का तो मिट गया, पर यह भावना अभी तक न में कि मुझे क्यों नहीं ऐसा स्थान मिल हा?

मां से आ कर जब मन की बात कही तो इतना ही बोलीं, "देख बेटी, किसी भी त से व्यक्तिगत रूप से तुलना नहीं ी चाहिए. उस का स्वभाव व व्यक्तित्व ससुराल व मायके दोनों में ही आदर ाता है. उस के जैसी बहू, बेटी पा कर ां धन्य हो उठेगी. उसी के कारण तो मैं े उस घर में ब्याहा था."

मैं बड़ों से समता नहीं, समदर्शिता की ा कर रही थी. वापस ससुराल आ कर ी गृहस्थी को संभाल लिया मैं ने. यत कुछ ढीली सी थी. डाक्टर के पास ले गए तो मालूम पड़ा कि खुशखबरी लटियों व चक्कर का दौर शुरू हो गया र यहां भी अम्मांजी को परेशानी थी क यह सब बड़ी भाभी के साथ जो नहीं था. 5-6 माह बाद नारी के शरीर का स होता है तो शरीर बेडौल सा हो ही है. एक दिन अम्मांजी ने सुझाया, ी का पल्ला थोड़ा ढीला छोड़ो. बड़ी बारे में लोगों को तब मालूम पड़ा था,



अक्स

न छेड़ दिल के
टूटे हुए खंडहर को;
राख के ढेर में
मुहब्बतों के अक्स कहां.

—शामा खान

जब मुन्ना हो गया था."

ओफ, 'बड़ी बहू, बड़ी बहू' सुनतेसुनते कान पक गए. उलटियां हो रही हैं तो मेरा दोष है, शरीर बेडौल है तो मेरा दोष है. एक पल के लिए भी इस घर के सदस्यों ने मुझे नहीं अपनाया था. मैं अपना सारा आत्मविश्वास खो बैठी थी. मेरा औचित्य क्या था? अनजाने में भाभी से ईर्ष्या तो क्या, घृणा हो गई थी मुझे. कभी भी उन का जिक्र होता तो मैं कमरा छोड़ कर चली जाती. मेरे स्वभाव का यह परिवर्तन अतुल से छिपा न था. मैं देखती, बड़ी भाभी का नाम वह कभी होठों पर न लाते. हर समय मेरी प्रशंसा करते, जो मुझे मात्र औपचारिकता ही प्रतीत होती थी.

मेरा मन चाहता था कि बड़ी भाभी कभी इस घर में न आएं. यह वही भाभी थीं, जिन का सानिध्य पाने के लिए मैं तरसती थी. सोचती, अकेली अपने पति के साथ रहती हैं, यहां संयुक्त परिवार में सब के बीच रह कर निभाएं तो आटेदाल का भाव मालूम हो. इतने लोगों के साथ तालमेल

बैठती हूं, तब भी उन के पैरों की धूल ही तो हूं.

सहसा छोटी ननद का रिश्ता तय हो गया था. बड़ी भाभी ने अपने रिश्ते के भाई के साथ तय की थी सगाई. मैं हैरान थी अम्मां के व्यवहार पर. सामने बैठी बहू उन्हें तुच्छ प्रतीत हो रही थी. फोन पर भाभी से रोज सलाह करतीं. मैं ने उन्हें कभी भैया से बात करते भी न सुना था. क्या हम इस परिवार के सदस्य न थे. क्रोध आ रहा था अतुल पर जो मिट्टी का माधो बना बैठ रहता.

कृतज्ञता

यदि तुम किसी भूख से पीड़ित कुत्ते को उठा लो और उस को देखभाल से खुश करो तो वह तुम्हें कभी नहीं काटेगा. मनुष्य और कुत्ते में यही प्रधान अंतर है. —मार्कट्वेन

मैं चाहती थी कि शादी की तैयारी में कुछ तो भूमिका मेरी भी होनी चाहिए. भाभी एक माह पहले ही आ गई थीं. मुझे वही प्यार उन्होंने दर्शाया. किस समय क्या सावधानी बरतनी है, समझाती रहतीं, पर मेरे व्यवहार में उपेक्षा थी. मैं इस प्रकार दर्शाती, मानो कई बच्चे पाल चुकी होऊं. ज्यों ही वह रसोई में घुसतीं, उन का मार्ग रोक देती. यदि किसी काम को करवाने में मेरी मदद करना चाहतीं तो मैं उसे पहले ही निबटा देती. यहां तक कि मैं उन का कहा वाक्य भी काट देती.

घर के सभी सदस्य उन्हें बड़ी बहू कहते न थकते, पर वह मेरे उपेक्षापूर्ण स्वभाव को समझ गई थीं. शांत व सौम्य व्यक्तित्व की स्वामिनी बड़ी भाभी ने एक पल के लिए भी मुझे मेरे व्यवहार के प्रति सचेत न किया. बड़े प्यार से बोलीं, ''ला, तेरे बालों में तेल लगा दूं.''

पर मैं तो ईर्ष्या की अग्नि में जल रही थी. उन का हाथ झटक दिया था मैं

शांत मुद्रा में सिर्फ इतना ह उन्होंने, ''रेनू, क्या बात है. क्या अन मैं ने तेरा दिल दुखाया है? या कुछ गई है मुझ से?''

न जाने कहां से शक्ति आ गई में. मैं वह सब कह गई जो मुझे क कहना चाहिए था. मैं गुस्से से बोली, से भला कभी भूल हो सकती है? अ सर्वगुण संपन्न हैं. आप तो अत्यंत सुख सब का प्यार पाती हैं.''

''ओह, तो यहां भी यही हुआ. रे गुण ही सब से बड़े शत्रु हैं मेरे. जान मायके में भाभियां मुझ से ईर्ष्या कर कितनी बार मां से कहा था कि गृहस्वामिनी तुम्हारी बहुएं हैं. उन अपना समझो, पर वह एक कदम बिना नहीं उठाती थीं. आखिर माय जाना ही छोड़ दिया. पर यह तो ससुराल है. इस घर से नाता क्या टूट है कभी? दो मनुष्यों की तुलना क्यों की है, समझ में नहीं आता.''

''वही तो मैं पूछती हूं भाभी. व बहनों का स्वभाव कभी मिल पाया है हम तो दो भिन्नभिन्न परिवार प्रतिनिधित्व करती हैं. कुछ गु वंशानुगत होते हैं परंतु कुछ का समय के अंतराल से भी होता है. मुझे विकास का समय तो चाहिए न?''

भाभी प्यार से मेरे सिर पर फेरती रहीं. उस के बाद मैं ने देखा, व काम में पीछे हटती रहीं. बारबार मुझे करती रही थीं. अम्मांजी के स्वभाव परिवर्तन महसूस कर रही थीं. शादी क्षेत्र में मैं ने बढ़चढ़ कर काम किया

ननद के फेरों का समय हो गया थ तरफ से भैयाभाभी की पुकार हो रह पर दोनों का अतापता नहीं था. उ अनुपस्थिति में विवाह कार्य संपन्न होता? तभी द्वार पर टैक्सी भाभीभैया थे. सभी प्रश्नसूचक नज


मस्ती ने बनाया हमें मर्ज़ी का मालिक
मस्ती
MASTI
LUXURY CONDOMS
मस्ती-इलैक्ट्रॉनिक तरीके से जाँचा हुआ भारत का बेहतरीन लग्ज़री कॉण्डोम। अतिरिक्त आनंद के लिए 0.03 मिलीमीटर महीन, मस्ती विश्वप्रसिद्ध सिलिकॉन तेल से युक्त है। जापानी मशीनों पर बना मस्ती, पुरुषों के लिए परिवार नियोजन का उत्तम साधन ही नहीं, एक बेहतर एहसास है।
MASTI
एक बेहतर एहसास
मस्ती—अब दस के बड़े पैक में भी उपलब्ध!
विपणक परिवार कल्याण विभाग, भारत सरकार सी एस एम पी के अन्तर्गत पापुलेशन सर्विसेज इन्टरनैशनल, इंडिया
Contract-PSI-24508 HIN

उन्हें देख रहे थे. थोड़ी देर बाद बा
स्पष्ट हुई. लड़के वालों ने स्कूटर की
थी. इतना पैसा घर में था नहीं, अत
अपने मायके से मिले हुए हीरे के
बेच आई थीं.

मेरी आंखें नम हो गई थीं. विवा
प्रकार संपन्न हो गया था. मैं अतुल
लग कर फूटफूट कर रोई थी. मुझे
पास बैठाते हुए वह बोले थे, "रेनू, अ
कुछ तुम्हारा पति है, वह भैयाभा
प्रयासों का ही फल है. एक बार पह
उन्होंने कर्णफूल बेचे थे, मेरी इंजीनि
की पढ़ाई के लिए.

"जानती हो, मेरी बड़ी बहन का
संसार उजड़ने से पहले बड़ी भाभी
बसाया था. तीन वर्षों तक जब वह मां
पाईं तो दीदी की सास अपने बे
पुनर्विवाह करने पर उतारू हो गई थ
भाभी ने अपना मुन्ना उस की गोद
दिया था. लेकिन आज तक उन के
एक शब्द नहीं सुना हम ने. वह त्या
नारी हैं. इस घर की मर्यादा सदैव उन्हें
बचाई है.

"कई दिनों से तुम्हारे मन में ई
बीज पनपते देख कर सोचता था कि
कुछ कहूं. पर सोचा, समय स्वयं तुम
कुछ बता देगा. तुम हमेशा भाभी का
मुसकराता चेहरा ही देखोगी. उन का
बड़ा गुण है, समर्पण. सदैव दूसरों के
झुक कर क्षमायाचना कर लेती हैं. त
ममत्व व स्नेह के फूलों से अपने आंच
भर लेती हैं." अतुल चुप हो गए थे.

आत्मग्लानि से मेरा रोमरोम भ
था. सोचने लगी कि अनजाने में मैं ने वि
दुर्व्यवहार किया था बड़ी भाभी से. उ
प्रतिद्वंद्विनी बनने का क्या अधिका
मुझे? यदि स्वयं को उन से छोटा ही र
तो क्या टूट जाती? सच, मेरे विचार वि
ओछे हैं? और मैं एक बार फिर बड़ी
से छोटी हो गई थी. दूसरी श्रेणी में अ
थी मैं.



बंबई महानगर में

सात समंद की मसि करौं

• महेंद्र सरल

क ल की किताब में पढ़ा था: सात समंद की मसि करौं, ...खनि सब बनराई, धरती सब कागद ...रौं, हरि गुण लिखा न जाई.

वह पद तब याद आया जब वर्ष 1990 ... जनसंख्या का हिसाब लगाने के लिए महाराष्ट्र में 1,35,000 लोगों को गिनती के काम पर लगाया गया. उन्होंने छपेछपाए जिन फार्मों पर खानापूरी की, उन्हें अगर धरती पर बिछा दिया जाए तो 2.45 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र की धरती ढक जाएगी. अगर उन्हें एक पंक्ति में बिछाया जाए तो 16,922 किलोमीटर लंबी दूरी तक चौड़ी लाइन खिच जाएगी. कार्यकर्ताओं ने 1,97,000 बाल पाइंट पेन और उन के रीफिल घिस डाले. अकेले महानगर में जनगणना कार्य के लिए 21,000 लोगों को लगाया गया था. महानगर की सीमा पास के थाना जिले को भी आधा समेट चुकी है. उस में थाना नगर, कल्याण और उल्हास नगर की नगरपालिकाएं भी शामिल की गईं. इस जनगणना में 1,25,70,000 नागरिकों के नाम अंकित किए गए.



अगर जनगणना का काम एक ही व्यक्ति को सौंपा जाता तो तमाम फार्म भरने और सब

नागरिकों तक पहुंचने में 749 साल लगते. यानी उस काम को यदि पिता से पुत्र को सौंपा जाता रहता और हरेक व्यक्ति को 40 साल तक काम करने दिया जाता तो 19 पुश्तों तक काम चलता रहता. और तब तक उस में न जाने कितने लाख नए नाम और जुड़ जाते कि काम कभी पूरा ही नहीं होता.

मंगलसूत्र की तलाशी

सुबह दफ्तरों और कारखानों में पहुंचने वाली जनता की भीड़ यहां की लोकल रेलगाड़ियों को ठसाठस भर देती है. उस भीड़ में आए दिन जेबें कटती हैं. ये गाड़ियां अगर कहीं एक पल के लिए भी रुक जाती हैं तो हायतोबा मच जाती है. यात्रियों के मुंह से गालियां निकलनी शुरू हो जाती हैं... ये रेलवे वाले... समय के मूल्य को बंबई निवासी जितना जानता है उतना देश भर में और कहीं का नागरिक नहीं जानता.

तो जनाब हुआ यह कि बोरिवली उपनगर से एक तेज लोकल गाड़ी 8 स्टेशन छोड़ कर सीधे बांदरा ही रुकने वाली थी कि एक स्टेशन पहले खार के सिगनल के पास पहुंचतेपहुंचते महिला डब्बे की एक महिला ने चेन खींच कर उसे रुकवा दिया और चीखचीख कर बोली, "मेरा मंगलसूत्र किसी ने उड़ा लिया है. जब तक वह मुझे मिल नहीं जाएगा, गाड़ी एक इंच भी आगे नहीं सरकेगी."

उस डब्बे का आधा हिस्सा प्रथम श्रेणी की महिलाओं के लिए था और आधा द्वितीय श्रेणी की महिलाओं के लिए. बीच में काफी बड़ेबड़े सूराखों वाली जाली लगी थी.

यात्रियों का रक्तचाप बढ़ता जा रहा था. औरतों का शोर कुछ नहीं सुनने दे रहा था. 'अरे, कोई तलाशी लो सारे डब्बे की. सिर्फ गाड़ी रोकने से क्या फायदा?'

तब तक उस मंगलसूत्र वाली महिला
के कई पुरुष हिमायती भी न जाने क
से वहां आ पहुंचे. सब एक सुर में
रहे थे, "एक का मंगलसूत्र चला ग
को गाड़ी चलाने की पड़ी है. एक दि
जाएगी तो कौन सी कयामत आ जा

प्रथम श्रेणी की एक महिला
कर कहा, "मंगलसूत्र कितने का
150-200 का? तो 100 तो मेरे पा
लो." अभी वह अपने बैग से 100
खींच ही रही थी कि एक दूसरी म
कहा, "तो एक मैं दिए देती हूं. गाड़
दो." और वे 200 रुपए उस शोर
वाली महिला ने जाली के सूराख से इ
झपट लिए जैसे उस को सत्यवान
मिल गया हो. और देखिए चमत्का
कुछ किए धरे ट्रेन चल पड़ी. यात्रियो
की सांस ली.

बांदरा स्टेशन पर गाड़ी रुकते
मंगलसूत्र वाली महिला उतर गई, जै
हुआ ही न हो. और तब लोगों का
गया कि उस की हिमायत करने वाले
भी उस के साथ ही साथ जा रहे थे
महिला ने इशारा किया, "अरे देखो
औरत की बगल में बुरका ठूंसा हु
बुरके वाली मंगलसूत्र कहां पहनती
मगर तब तक ट्रेन प्लेटफार्म से सरक
थी. और तब किसी और का ध्यान ग
उस की हिमायत करने वालों में कि
'कयामत' शब्द का प्रयोग किया
महाराष्ट्र में ऐसे शब्द कौन बोलता

क्या सबक मिला? इस देश
इतिहास ठगीबाजी की कहानियों से
पड़ा है. दिल्ली, बनारस के ठग तो म
हैं ही, बंबई को भी उन के बराबर ला
किया उस महिला ने. कौन कहता
हमारे दिमाग नईनई ईजाद नहीं कर स

यह विदूषकों का खेल

सचमुच ही यह एक अनोखा त
था. दमे की बीमारी वाले 300 लोगों
के पते इकट्ठे कर के निमंत्रित किया



वधाएं जुटाई गईं कि वे कफपैरेड स्थित
श्व व्यापार केंद्र की 32 मंजिली
नचुंबी इमारत पर सुबह 7 बजे से ले
दोपहर तक चढ़ेंगे और उतरेंगे.
तारोहण जैसा यह अजूबा खेल रोगियों में
त्मविश्वास पैदा करने में सहायक हुआ.

आम धारणा है कि दमे के रोगियों को
याम करने से नुकसान होता है. मगर इस
नामक प्रयोग ने उस धारणा को गलत
बित कर दिया. इस सरकस का आयोजन
और फेफड़ों की सूजन का निराकरण
ने वाली संस्था की ओर से किया गया

खेल इतना रोचक रहा कि रोगियों से
दा संख्या में नीरोग लोग आए और
रियन चढ़े और उतरे. फिर चाय के
ने पीए, ठंडी बोतलें खाली कीं.

सावधानी के लिए इमारत की
गअलग मंजिलों पर 25 डाक्टर और 6
रोग विशेषज्ञ तैनात रहे. इमारत का
ढ़ाने वाला क्षेत्र एक हस्पताल के रूप में
वर्तित कर दिया गया था. उन में से भी
किसी का मनोरंजन ही हुआ. उन को
खास काम नहीं करना पड़ा.

ख़ुल्लमखुल्ला धांधली

विश्वास करो न करो, महानगर बंबई

बंबई में जिस को जहां भी मौका मिलता है, अपनी झुग्गी डाल कर रहने लगता है. फिर उसे कोई हटा नहीं सकता.

में यह खुलेआम होता आ रहा है. जब भी, जहां भी किसी को मौका मिलता है अपना झोंपड़ा बना लेता है चाहे वह सड़क के किनारे का फुटपाथ हो, बिल्डिंग के जीने के नीचे की 2-4 फुट की जगह हो, किसी की व्यक्तिगत जमीन का टुकड़ा हो, रेलवे लाइनों के बीच की खाली जगह हो. और कोई माई का लाल उन्हें वहां से हटा नहीं सकता.

कुछ ज्यादा होशियार लोग मसजिद खड़ी कर लेते हैं और उन की देखादेखी अब मंदिर भी बनने लगे हैं. कानून है कि धार्मिक स्थानों को कोई हटा नहीं सकता. यों भी नगरपालिका के कानून हों या अन्य किसी अधिकारी के, सब के सब ऐसे जबरदस्ती करने वालों के पक्ष में ही हैं.

बांदरा पूर्व में कभी चारों तरफ दलदल और झाड़ियों का ही राज्य था. उस को मिट्टी से भरभर कर बस्ती बसाई गई है. नगर योजना बनाने वालों ने उस क्षेत्र में चौड़ीचौड़ी सड़कें और फासला छोड़छोड़ कर बहुमंजिली इमारतें बनवाई हैं. स्कूलों, कालिजों, हस्पतालों, बाजारों, सिनेमाघरों और बस स्टाप तक के लिए जगहें सुरक्षित रखी गई हैं.

बस्ती के बीच मीना बाजार नामक बाजार है. उस के दूसरी तरफ तक एक मैदान खाली पड़ा रह गया था. बाकी और जगह के मैदानों का उपयोग हो चुका था. इस मैदान के बीच से खूब चौड़ी एक सड़क बननी थी और आसपास की जमीन भवन बनाने वालों के लिए निर्धारित थी. मगर उस मैदान में धीरेधीरे कर के लगभग 500 झोंपड़ियों का 'इंदिरा नगर' बस गया था.

जमीन के मालिक ने अदालतों के दरवाजे तो खटखटाए ही, वे फारमूले भी आजमा कर देखे जो कई फिल्मों में अमिताभ आजमा चुका था. मगर पटकथा लेखक जो नहीं दिखाते थे वह हुआ. अपना वोट पक्का करने वाले उस क्षेत्र के सांसद (सुनील दत्त) बुलावा मिलते ही दौड़ पड़ते रहे. वकील लोग अपने जजमान बनाने के लिए दौड़ते रहे और पुलिस अपना मतलब गांठती रही.

सब जानते हैं कि अदालत में इस तरह के मामले 10 साल से पहले बोर्ड पर भी नहीं आते. बस इस अवधि का डट कर दुरुपयोग होता रहा. आखिर शायद 18 वर्ष बाद अभी कुछ महीने पहले उच्च न्यायालय ने आदेश दिया कि सड़क को रोका नहीं जा सकता और बिल्ली के भाग्य से छींका टूटा, जमीन के मालिक के लिए भी वही आदेश

अनूठा किताब चोर

एडीलेड में एक ऐसा किताब चोर पकड़ा गया है, जिस के घर से 12 टन किताबें मिलीं.

64 वर्षीय कैनेथ को 78 अमरीकी डालर की पुस्तकें चोरी करने के आरोप में अदालत में पेश किया गया.

कैनेथ के खिलाफ एक और आरोप तब लगाया जाएगा, जब उस के घर से मिली चोरी की पुस्तकों के मालिकों का पता चल जाएगा. इन पुस्तकों को पुलिस भंडार में पहुंचाने के लिए बड़े ट्रक की जरूरत पड़ी. इन पुस्तकों की कीमत चार लाख अमरीकी डालर आंकी गई है.

हो गया.

अब वह क्षेत्र खाली करा
जिम्मेदारी नगरपालिका और पुलि
आ गई. उन्हें साथसाथ काम करने
तालमेल बैठाने में ही महीनों निकल
इस बीच नोटिस भेजे जाते रहे कि
खाली करो वरना जबरदस्ती हट
जाओगे. मगर उन नोटिसों से किसी
पर जूं भी नहीं रेंगी. उच्च न्यायाल
होता है. हम यही रहेंगे. कहीं नहीं ज
टस से मस न होंगे.

आखिर महानगर पालिका
पुलिस की कई ट्रकें मैदान के पास अ
खड़ी हुई और इस से पहले कि वे
झोंपड़ियों को उखाड़ते, झोंपड़ी वालों
तैयारी के साथ चारों कोनों से पूरी ब
आग लगा दी. टेलीफोन टनटना
अग्निशमन गाड़ियां टनटनाती हु
पहुंचीं. सब कुछ धरा का धरा रह
काम वहीं रुक गया. आग लगाने वाले
से तैयार थे. उन्होंने अपना सामान प
निकाल कर सुरक्षित स्थानों पर
दिया था.

पिछले साल कलकत्ते में हुए
र्राष्ट्रीय फिल्म मेले में मराठी की एक
दिखाई गई थी. उस का शीर्षक
'सूर्योदय'. उसे पुरस्कृत भी किया गय
उस में इसी तरह की समस्या का फिल
किया गया. कुछ लीडरान लोगों की
पर वहां भी झोंपड़ी वालों ने
झोंपड़ियों में खुद आग लगाई थी
कानून का हवाला दिया था कि जला
झोंपड़ियों का हरजाना दिया जा
इंदिरा नगर वालों ने भी वही नुसखा
डाला था.

उन को उखाड़ने आई गाड़ियां
चली गई. वे अभी भी वहीं बसे हुए हैं.
दीवार बनाने के लिए अधजले टी
परतें, टाट वगैरह फिर से जुटा लिए
इंदिरा नगर फिर से स्थापित हो गय
सड़क भी नहीं बनेगी और भवन भी
बनेंगे.

अब नारी की बारी

महानगर में 1981 की जनगणना के
ाय स्त्रियों की संख्या प्रति एक हजार
ुषों के पीछे 934 थी, अब वह और भी
ट कर मात्र 929 रह गई है. यानी स्त्रियों
इस कदर अत्याचार हुए हैं. इस कदर
हें जला कर मार डाला गया है कि अब
ारे पुरुषों से बचने का उन के पास
दोलन के अलावा कोई रास्ता नहीं रह
ा है.

आज की नारी को यह भी पता लग
ा है कि उस के जन्म लेने से पहले ही
क्टर लोग उस की हत्या करने के लिए
ार बैठे रहते हैं. बंबई में किराए के
यारों को सुपारी पर तय करना कहा
ता है. ये डाक्टर भी सुपारी गिरोह में
मिल हैं.

यह बात शायद उन की समझ में नहीं
एगी कि बंबई में आवास समस्या कितनी
गंभीर है. पुरुष लोग अपनी स्त्रियों को महानगर में ला कर उन की मिट्टीपलीद कराने के बजाय उन्हें अपने घरवालों के बीच ही छोड़ आना ज्यादा सुरक्षित समझते हैं. उत्तर, पूर्व, दक्षिण की बात तो क्या कहें, महाराष्ट्र के पुरुष भी अपनी स्त्रियों को अपने साथ नहीं ला पाते. इसलिए पिछले 10 साल में अगर महिलाओं की संख्या 5 प्रति हज़ार कम हो गई है तो उस का यह मतलब नहीं है कि उन की हत्या कर दी गई.

अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान के निदेशक डाक्टर के. श्रीनिवासन का अंदाजा है कि इस बार राजनीतिक हालात ऐसे रहे हैं कि लोगों ने अपने घर की औरतों के नाम ही नहीं लिखाएं. खासतौर पर मुसलिम जनता ने शहर में ही नहीं, गांव में भी औरतों को जनसंख्या सूची से अलग ही रखा है. बंबई विश्वविद्यालय की डाक्टर सुधा देशपांडे ने भी श्रीनिवासन के वक्तव्य की ही ताईद की है. ●

यह भी खूब रही







मेरी जेठानी को एक साथ कई काम करने की आदत है. एक दिन उन का छोटा बेटा बाथरूम से आया और निकर पहनाने को कहने लगा. तभी उन का धोबी कपड़ों की गठरी ले कर आया. उन्होंने धोबी से कहा, "राजू, तू कपड़े खोल, आ तुझे निकर पहना दूं." दरअसल उन्होंने आधी बात धोबी से कही थी और आधी बात अपने बेटे से, लेकिन धोबी ने कुछ और ही समझा और हंसने लगा. बात का अर्थ समझ वह भी हंसे बिना नहीं रह सकीं.

—निर्मल अग्रवाल

*

मेरी एक सहेली को बातबात पर 'यही तो मैं कह रही थी' कहने की आदत थी. हम सभी सहेलियां उस की इस आदत से तंग आ चुकी थीं.

एक दिन बातोंबातों में मैं ने कहा, "तुम्हारे जैसी मूर्ख लड़की मैं ने नहीं देखी."

तब वह तपाक से आदतन बोल उठी, "यही तो मैं कह रही थी." परंतु बोलने के साथ ही वह बुरी तरह झेंप गई. —अलका

*

मेरे मामाजी डाक्टर हैं. एक बार मेरी छोटी बहन को सिर में दर्द हुआ. उस ने मामाजी से पूछा, "सरदर्द ठीक करने के लिए क्या लेते हैं?"

उन्होंने जवाब दिया, "20 रुपए." यह सुनते ही हम सभी हंस पड़े. दरअसल बहन ने दवा का नाम पूछा था, जबकि उन्होंने फीस के रुपए बता दिए.

—प्रतीक जैन

*

एक बार मेरे पति अपने कुछ दोस्तों के साथ दौरे पर गए हुए थे. उन में एक दोस्त ऐसा भी था जो होटल में हर बार रुपए
चुकाने से पहले ही अपने
कर बाहर खड़ा हो जात
बार ऐसा करने पर मे
उन से कहा, "देखो, त
मत चुकाओ, लेकिन ह
के साथ रहा करो."

इस के बावजूद वह
आदतन बाहर जा कर
जाते थे. एक बार खाना
बाद जब बैरा बिल लाय
पति ने कहा, "हम तो
व्यक्ति हैं, पांच लोगों
कैसे?"

बैरा बोला, "अरे
जो साहब यहां बैठे थे, वह
साथ ही तो थे."

पति बोले, "नहीं

यह सुनते ही बैर
खड़े दोस्त से बोला, "अ
बिल चुकाए कैसे बा
गए?"

उन्हें सारी बातें
आ गई. तब अंदर आ कर
बिल का भुगतान कर

—पूनम

*

मेरी भाभी के बच्चे
शरारती हैं. उन से
हो कर एक दिन भाभी ने
कहा, "आप बच्चों को
नहीं कहते. ये दिन पर दि
होते जा रहे हैं."

यह सुन कर भैया
से कहा, "क्यों नहीं
शेरनियों के ही तो शेर पै
हैं."

—सुमन

इस स्तंभ के लिए अपने
अपने संबंधियों के अ
भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अ
पर 50 रुपए की पु
पुरस्कार में दी जाएगी.
अनुभव इस पते पर
संपादकीय विभाग, स
ई-3, झंडेवाला एस्टेट,
झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110





मरीकी टीवी पर महाभारत

मरीका के एक प्रसिद्ध निर्मातानिर्देशक पीटर ब्रुक ने हाल ही में अमरीकी की एक 'मिनी सीरीज' के लिए 'दि भराता' 'महाभारत' का अमरीकी रण) का फिल्मांकन किया है. वहां .एस. (पब्लिक ब्राडकास्टिंग सर्विस) के प्रसिद्ध कार्यक्रम 'ग्रेट परफार्मेंसेज' तर्गत इस का तीन खंडों में प्रदर्शन गया. (जुए का खेल) 'दि गेम आफ', (वन में निर्वासित) 'एक्साइल इन दि ट' और (युद्ध) 'दि वार'.

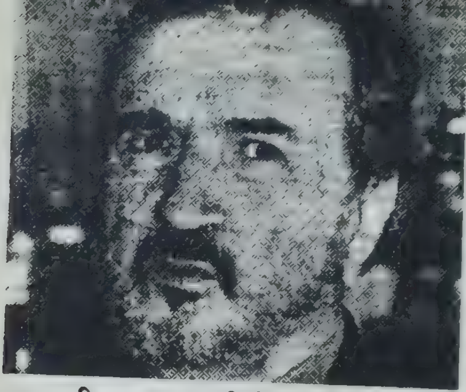
इसे सर्वोत्तम कला प्रदर्शन के लिए र्ाष्ट्रीय एम्मी पुरस्कार' भी प्राप्त है. दरअसल 'दि महाभराता' का ा सर्वप्रथम 1985 में 9 घंटे के एक के रूप में हुआ था. बाद में इसे 3 घंटे ल्म के रूप में फिल्मांकित किया गया. यह फिल्म कई देशों में प्रदर्शित हुई. अब इसे लघु धारावाहिक के रूप में अमरीकी टीवी पर प्रदर्शित किया गया है.

जो अमरीकावासी ' महाभारत' की कथाओं से परिचित हैं, उन्हें 'दि महाभराता' रास नहीं आएगा, क्योंकि इस का प्रस्तुतीकरण अत्यंत घटिया है. मूल अमरीकी दर्शकों को तो इसे समझने में काफी कठिनाई हुई है. इस का कारण यह है कि इस में कई 'विचित्र' चरित्र एक साथ उभर कर आए हैं.

'दि महाभराता' के निर्मातानिर्देशक को अभिनेता पात्रों के चयन में बिलकुल भी सफलता नहीं मिली है. भीष्म पितामह जैसे गरिमावान चरित्र की भूमिका में एक मरियल (दुर्बल) सा नीग्रो (ब्लैक), द्रोणाचार्य सदृश गुरुगंभीर भूमिका में मध्यम



धारावाहिक 'दि महाभराता' का एक दृश्य : घटिया प्रस्तुतीकरण.



कदकाठी का एक चीनी, कृष्ण की चतुर और आकर्षक भूमिका में नितांत प्रभावहीन पश्चिमी गोरा आदि पात्र दर्शकों पर अपने अभिनय की कोई छाप नहीं छोड़ते.

धारावाहिककार ने भीम के विशाल व्यक्तित्व को संभवतः 'दानव' समझ कर प्रस्तुत किया है. धारावाहिक के नारी पात्रों के चयन में भी ऐसी ही असंगतियां दृष्टिगोचर होती हैं. उन में 'महाभारत' के नारी चरित्रों सा सौंदर्य एवं तेज का प्रायः अभाव है.

जीन क्लाउद कारियेट : धाराव
महाभराता' के पटकथा लेखक.

'दि महाभराता' के पटकथ
जीन क्लाउद कारियेट ने संवाद
चाहे कितनी ही शोध एवं माथाप
हो, पर संवादों में कोई आकर्षण
पाया है. वह कथा को गति देने त
के चरित्रांकन में अधिक सफल नहीं
हैं. संभाषणों में ओज, गांभी
उतारचढ़ाव की स्थितियां सम
निर्देशक असमर्थ रहा है. उच्चारण
त्रुटियों की तो भरमार है. स्तरही
एवं वस्त्राभूषणों को देख कर ऐस
होता है कि 'दि महाभराता' पाषा
किसी आदिम जाति की कहानी हो

समग्रतः 'दि महाभराता'
देशों, वर्णों एवं भाषाओं के कलाव
एक 'अंतर्राष्ट्रीय मेला' प्रतीत होत

—कौशल अजि
कैंब्रिज, अमरी



बदसूरत सौत

कहानी ● विनी

पहली बार जब उसे देखा तो अचानक मुझे हंसी आ गई थी. हुआ यों कि मैं
र मेरे पति दोपहर के खाने के बाद
राम कर रहे थे कि दरवाजे पर दस्तक
ई. उठ कर दरवाजा खोला तो एक अनजान
हरे को देख कर चौंक गई.

"कौन हो तुम? क्या काम है? किस से
लना है?" मैं ने एकसाथ कई सवाल
छल दिए.

इस अचानक हुए हमले से वह घबरा
ई. फिर बहुत ही अदा से मुसकरा कर
ली, "हम ने सुना था कि आप को महरी
हिए. इसलिए हम आप के पास आए हैं...
ारा नाम गुलाबो है."

मैं एक बार फिर अपना चेहरा दूसरी
फ फेर कर हंस पड़ी. सोचने लगी, नाम
लाबो' और यह स्याह रंग, चेहरे पर धब्बे, गाल अंदर धंसे हुए, मुंह में पान, आंखों में काजल और कानों में सुनहरे झुमके.

उस ने माथे पर बड़ी सी चमकीली बिंदी लगा रखी थी. गले में चांदी की आधा इंच चौड़ी चेन लटक रही थी. लकड़ी की तरह पतलेपतले हाथों में रंगबिरंगी कांच और गिलट की पालिश की हुई चूड़ियां थीं. नीले और लाल रंग की बड़ेबड़े फूलों वाली साड़ी. पैरों में प्लास्टिक की चप्पलें और काले, बिवाई से फटे पैरों में आलते की मोटी धारियां. हां, नाक में चवन्नी से थोड़ी सी छोटी चांदी की लौंग तो चेहरे की शोभा कुछ और ही बढ़ा रही थी. कुल मिला कर यह थी 'गुलाबो'.

उस के सोलह सिंगार से सुसज्जित रूप के आगे मुझे अपने औरत होने पर शर्म

गुलाबो के रूप को देख कर तो मैं सहम ही गई थी परंतु उस से बात च
कर के मन को सुकून सा मिल गया था. परंतु मुझे क्या मालूम था कि इ
बदसूरती के बावजूद वह पहले दिन से ही सौत के रूप में दिखने लगे
और मेरी खुशियां यों उड़ा ले जाएगी.

सी आ गई. मैं बहुत हलके रंग की मैक्सी पहने हुई थी. एक हाथ में लाख का एक कड़ा, दूसरे में सिर्फ घड़ी. चेहरे पर सज्जा के नाम पर खुले बाल, मांग में सिंदूर लेकिन चेहरा शृंगारविहीन. होठें पर हलकी सी लिपस्टिक थी, जो खाने के बाद और भी हलकी हो चली थी.

हाथोंपैरों में नेलपालिश जरूर थी जो कल रात ही किसी पार्टी में जाने के लिए मैं ने लगाई थी. यहां एक बात उल्लेखनीय है कि मैं नवविवाहिता थी. 2 महीने भी नहीं हुए थे मेरे विवाह को और गुलाबो ने बताया कि वह 6 सेहतमंद बच्चों की मां है.

मुझे बाहर निकले काफी देर हो चुकी थी. मेरे पति कुतूहलवश इधरउधर से झांक कर देखने की कोशिश कर रहे थे कि बाहर कौन है. उस समय मैं गुलाबो के शौक, उस की इच्छाओं को देख कर ईर्ष्यादग्ध हो उठी थी.

मैं ने पूरा दरवाजा खोल दिया और उसे अंदर आने को कहा. मेरे पति को देख कर वह कुछ इस तरह से शरमाई कि मैं अपनी हंसी मुशकिल से रोक पाई. एक नजर उस 'रंगबिरंगी' को देख कर मेरे पति दूसरे कमरे में चले गए. मेरे और गुलाबो के बीच अनुबंध हुआ और उसे दूसरे दिन से आने के लिए कह कर मैं अंदर चली गई.

मैं ने पति से कहा, "आखिर हमें काम करने वाली मिल ही गई."

यह बोले, "बाप रे बाप... कोई जरा अच्छी शक्ल वाली रखती तो कम से कम मैं घर में टिक तो सकता था. अब तो इस के आते ही मुझे घर से भागना पड़ेगा. सोच लो, तुम्हारा ही घाटा होगा. कौन सा रंग नहीं था उस के पास. एक काले रंग की कमी थी, सो कुदरत ने काले रंग की कूची फेर क
कर दी."

मैं भी मजाक के मूड में थी,
लिए तो रखा है इसे... अब मैं आर
मायके जा सकूंगी. न मुझे तुम्हारी
होगी कि कौन खाना बनाएगा और
तुम्हारी तरफ से कोई डर होगा
खूबसूरत काम करने वाली रखने से
औरतों को होता है."

इन्होंने मेरा हाथ पकड़ कर पीछे की
जोर से मोड़ दिया, "अच्छा, अभी से
हम पर शक करने लगीं?"

"और क्या, मर्दों का कभी भी भ
नहीं करना चाहिए. लाख सुंदर पत्नी
बैठी हो, लेकिन ये लोग इधरउधर ताक
करने से बाज नहीं आते." इसी
नोकझोंक में कब शाम हो गई, पता ही
चला.

दूसरे दिन सुबह सूरज की किरण
साथ ही किसी ने हमारे दरवाजे पर द
दी. आंखें मलतेमलते दरवाजा खोल
गुलाबो का चमचमाता चेहरा देख कर
खुमारी उतर गई.

मेरे मुंह से निकल गया. "अरे, तु
इतनी सुबह?"

वह अपनी अदा से मुस्कराई.

"अच्छा आओ." मैं उसे रसोई
गई. काम समझा कर कहा, "देखो, धीरे
काम करना, शोर न हो... साहब अभ
रहे हैं."

वह कुछ ऐसी नजरों से मुझे देख
हंसी कि मैं शर्म से पानीपानी हो गई.

मुझे भी नींद आ रही थी. इतनी स
तो जब मेरे इम्तिहान होते थे, तभी उ
थी. अब शादी के बाद तो मौजमस्ती के



''जरा अच्छी शक्ल वाली रखती तो कम से कम मैं घर में तो टिक सकता था.'' मेरे पति ने कहा.

ए थे. जब जी में आए सोना, जब जी में ए उठना. छुट्टी के दिन तो और भी आराम हता.

लेकिन गुलाबो के आने से मेरे आराम खलल पड़ गया था. शुरू के कुछ दिन सुराल में थी तो इतनी ही सुबह उठना ड़ता था. तब सोचती थी कि कुछ ही दिनों बात है. लेकिन क्या पता था कि ससुराल दूर रह कर भी मुझे इतनी ही जल्दी उठना ड़ेगा. यहां मुझे अपनी गरज थी, फिर भी झे रोना आ रहा था.

ही सोचतेसोचते मैं शयनकक्ष में पहुंची देखा यह आराम से सो रहे हैं. इस का अर्थ हुआ कि महरी रखने से तकलीफ भी झे हुई और आराम भी मुझे ही हुआ. पलंग बैठ कर सोचने लगी कि क्या करूं? उसे से आने को कहूं?

फिर कहीं ज्यादा देर कर दी तो? सी ने बताया था कि उन की महरी ठट से बजे तब आती है, जब वह लगभग सारा म कर चुकी होती है. अगर इस वक्त उस कहीं और काम पकड़ लिया तो जरूर मेरे ां देर से आएगी. क्या ऐसे ही चलने दूं भी? आज शायद दिखाने के लिए इतनी ल्दी आ गई है. 2-4 दिन बाद खुद ही पने समय' से आने लगेगी.

पहले ही दिन इसे सब काम ठीक से समझा दूं और छुट्टी के लिए सख्ती से मना कर दूं.

सुबहसुबह इतना सब सोचसोच कर दर्द होने लगा. उठ कर रसोई में जाने लगी तो इन्होंने हाथ पकड़ लिया. चौंक कर मैं ने पूछा, ''अरे, आप कब जागे?''

''मैं तो काफी देर से तुम्हें देख रहा हूं. पता नहीं, तुम कहां खोई हुई हो. हर रोज तुम्हारा चेहरा फूल की तरह खिला रहता है, आज मुरझाया हुआ क्यों है?''

मैं ने हंस कर कहा, ''नहीं तो, महरी आई है.''

''अच्छा...'' यह खुश हो कर बोले, ''तब तो तुम्हें और भी खुश होना चाहिए. और मेरी चाय?'' मेरी तरफ अपना चेहरा बढ़ाया.

मैं ने उन्हें हटाते हुए कहा, ''हटिए, आप को तो हर समय यही सब सूझता है.''

यह भौचक्के रह गए. कल तक जो बिन मांगे मिल जाता था, आज मांगने पर भी मिला तो नहीं, बल्कि इस तरह झिड़की सुनने को मिली. पता नहीं क्या सोच कर यह खामोश हो गए.

मैं सहम गई. ऐसे चुप यह नहीं होते थे. इन के दिल को जरूर ठेस पहुंची थी.

मैं ने वातावरण हलका करने की कोशिश की. ''आप जल्दी से हाथमुंह धो लीजिए, मैं चाय ले आती हूं.'' चाह कर भी मैं इन की इच्छा पूरी नहीं कर सकी.

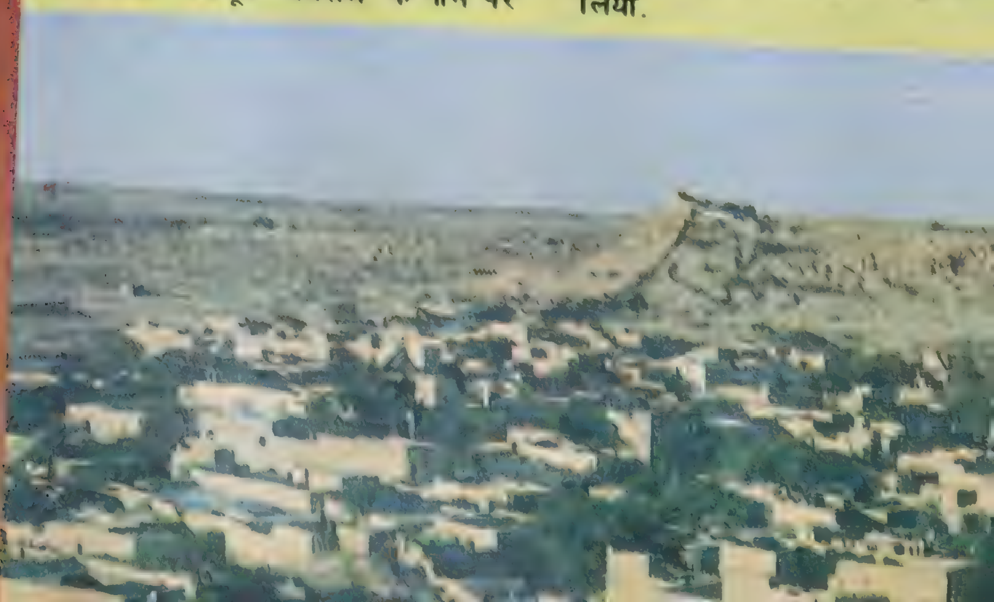
बाहर आतेआते मैं ने सोचा, 'आज महरी का पहला दिन है और यह इतनी बदसूरत होते हुए भी सौत की तरह हमारे शयनकक्ष की अंतरंगता में भी घुस आई है. न जाने अब आगे क्या होगा?' ●

हवेलिय
तथा झरोखों का शह
जैसलमे

लेख ● डा. अजय जो

पश्चिमी राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्र में बसा जैसलमेर अपनी कई विशेषताओं के कारण पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है. सुनहरी आभा लिए इस शहर में पत्थरों में कलावैभव बिखरा पड़ा है. यहां के किले, हवेलियां, झरोखे आदि स्थापत्य कला के बेजोड़ नमूने प्रस्तुत करते हैं. पर्यटक उन्हें देख कर दांतों तले उंगली दबा लेते हैं. यहां की कला, संस्कृति तथा लोकगीत आकर्षण के प्रमुख केंद्र हैं.

पीले रंग में रंगे इस शहर का नाम 11वीं शताब्दी में गड़ीसर झील के पास त्रिकुटा पहाड़ी पर किले का निर्माण करने वाले भाटी राजपूत 'जयसल' के नाम पर पड़ा. जैसलमेर के किले का गौरवशाली इतिहास है. प्रसिद्ध अलाउद्दीन खिलजी की सेना को भी लूट लिया गया था. इस के फल खिलजी 8 वर्षों तक अपनी फौज यहीं पर राजपूतों से जूझता रहा 1295 के अंत में निडर राजपूतों ने निकल कर युद्ध किया तथा रण वीरगति पाई. किले के अंदर 24,000 राजपूत वीरांगनाओं ने अग्नि के सुपुर्द कर दिया. कुछ वर्षों भाटी राजपूतों ने इस दुर्ग पर पुन: कब्जा लिया.





पटवों की हवेली: जिस में छिपी है महलों की प्राचीन कलात्मक शैली.

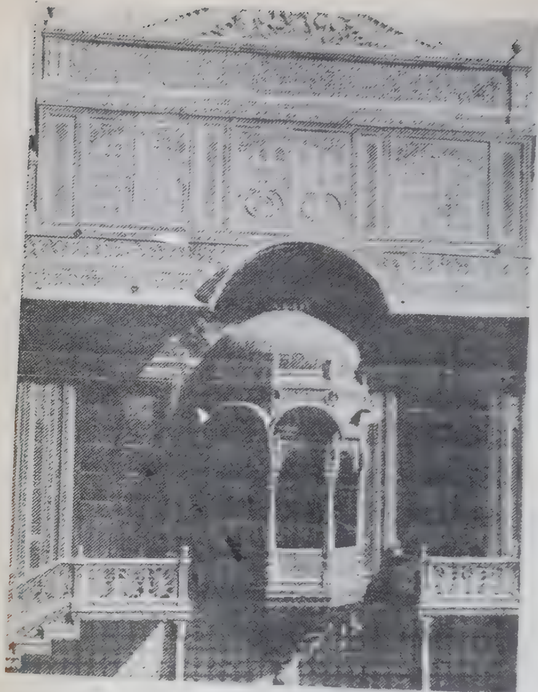
जैसलमेर के किले में लगभग एक पूरा नगर बना हुआ है. यहां के महल अपनी स्थापत्य कला का बेहतर नमूना प्रस्तुत करते हैं. महलों के अतिरिक्त पुरानी कलात्मक शैली में बने भवन, उन के आकर्षक झरोखे तथा होटल भी किले के भीतर ही विद्यमान हैं. यह किला मैदान से लगभग 76 मीटर ऊंचाई पर स्थित है.

किले के परिसर में ही 12वीं से 15वीं शताब्दी में बने जैन मंदिर भी अपनी नक्काशी तथा प्रस्तर शिल्प के कारण पर्यटकों के आकर्षण केंद्र बने हुए हैं. इन में पत्थरों से बनी विभिन्न आकृतियां देखने में सजीव प्रतीत होती हैं. यहां असपदी मंदिर, सूर्य मंदिर, दुर्गा मंदिर तथा गणेश मंदिर भी आकर्षण के केंद्र हैं.

शोध आदि के इच्छुक पर्यटकों के लिए यहां ज्ञान भंडार पुस्तकालय भी है. यह पुस्तकालय जैन मंदिरों के भाग के रूप में स्थापित किया गया था. इस में कई बहुमूल्य और महत्त्वपूर्ण पुस्तकें उपलब्ध हैं.

सालिम सिंह की हवेली तथा पटवों की हवेली भी जैसलमेर के मुख्य आकर्षण हैं. सालिम सिंह की हवेली जैसेजैसे ऊपर की तरफ बढ़ती है, वैसेवैसे उस का आकार बड़ा

रेगिस्तानी क्षेत्र में बसा ैसलमेर रेगिस्तानी टीलों के सौंदर्य का ही प्रदर्शन हीं करता अपितु अपनी क्काशी एवं प्रस्तर कला अभिभूत भी करता है. वेलियों और झरोखों के स शहर में आ कर तो ेखिए, आप का मन यहां जाने का नहीं करेगा.



जैसलमेर महल पत्थरों पर का[री]
अनुपम नमूना है, जो पर्यटकों को
करता है.

इसी प्रकार 19वीं शताब्दी में
नथमलजी की हवेली भी दर्शनीय
कारीगर भाइयों द्वारा निर्मित इस ह
अंदरूनी दीवारों पर की गई पेंटिंग
विशेष कलात्मक प्रभाव छोड़ती है.
के पास पीले पत्थरों से बनाए गए हा
बरबस ही अपनी ओर आकर्षित कर

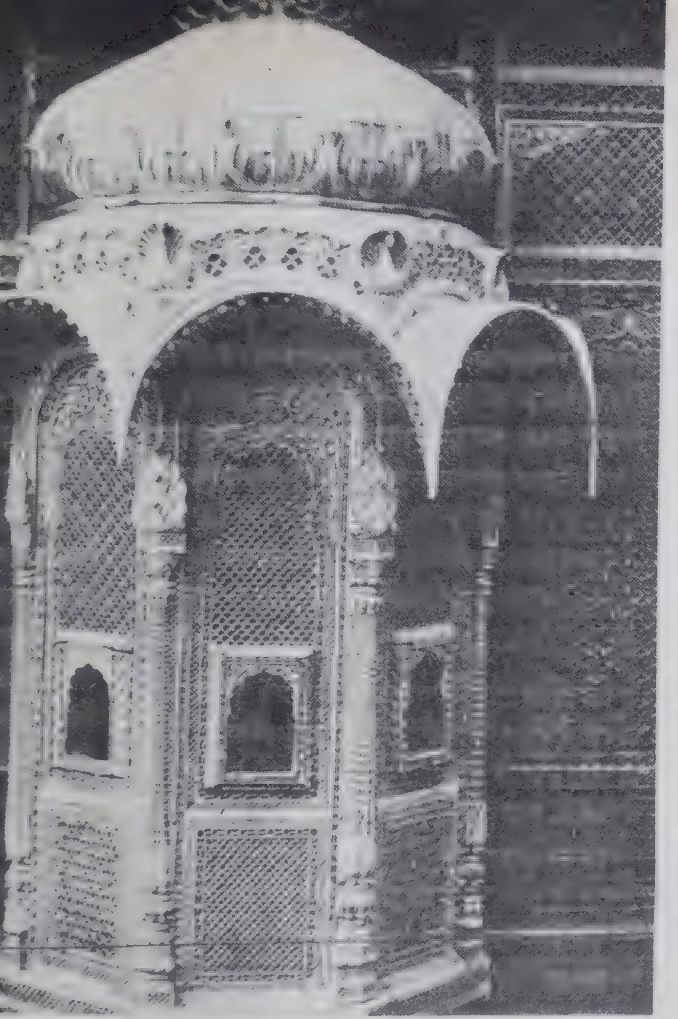
शहर का गड़ीसर ताला
आकर्षण का केंद्र है. तालाब के बीच
छतरियां तथा घाट अपनी कलात्मक
छोड़ते हैं. जैसलमेर शहर के आसप
कई पर्यटन स्थल हैं. यहां से लगभ
किलोमीटर दूर लुद्रवा नामक स्थल
प्राचीन जैसलमेर की राजधानी था. य

होता जाता है. पीले पत्थरों से निर्मित यह हवेली पत्थरों पर कारीगरी का अनुपम नमूना प्रस्तुत करती है. हवेली की नीली छत पर पत्थरों पर खुदी मोर की आकृतियां अपना विशिष्ट प्रभाव छोड़ती हैं.

पटवों की हवेली भी अपना विशेष आकर्षण लिए हुए है. इस पांच मंजिला इमारत की सैकड़ों स्तंभों के सहारे खड़ी नीली छत अपना विशेष आकर्षण लिए हुए है. इस हवेली में बने झरोखे पर्यटकों को लुभाए बिना नहीं रहते.



महल का आंतरिक दृश्य कलात्मक कारीगरी की एक अनूठी मिसाल.



पटवों की हवेली का बाहरी झरोखा, जो पर्यटकों को लुभाए बिना नहीं रहता.

मंदिर अपनी प्राचीनता तथा
सकता के लिए प्रसिद्ध हैं. जैन मंदिर में
क्ष 'कल्पतरू' भी अपनी प्राचीनता के
विशेष आकर्षण लिए हुए है.
द्रवा के रास्ते में जैसलमेर से 5
टर दूर 'अमर सागर' स्थित है.
कृतिक सौंदर्य वाली झील है. यहां पर
कर्षक जैन मंदिर हैं. जैसलमेर से
42 किलोमीटर दूर विशाल रेतीले
. रेगिस्तान का सच्चा दृश्य प्रस्तुत
ाले इन टीलों पर सही मायने के
नी सौंदर्य का दर्शन किया जा सकता
दूरदूर तक रेत का विस्तृत मैदान
ाता है.
सलमेर से लगभग 40 किलोमीटर
पश्चिम डेजर्ट नेशनल पार्क स्थित
लगभग 3,000 वर्ग किलोमीटर में
क सुरक्षित क्षेत्र है. यहां सैकड़ों

प्रकार के पशुपक्षी तथा जंगली जानवर स्वच्छंद विचरण करते हैं.

जैसलमेर का हस्तशिल्प भी अपना विशेष आकर्षण रखता है. यहां पर रंगबिरंगी कशीदाकारी की गई राजस्थानी पोशाकें, परंपरागत ऊनी शालें, कंबल तथा दरियां भी यहां के आकर्षण के केंद्र हैं.

राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्र में 5.1 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला यह शहर सड़क, वायु तथा रेल मार्ग से देश के प्रमुख शहरों से जुड़ा हुआ है. वायु मार्ग से आने वाले पर्यटकों के लिए यहां वायुदूत की भी सेवाएं उपलब्ध हैं.

यहां डाक बंगला, पर्यटक भवन के अतिरिक्त विभिन्न आय वर्ग के पर्यटकों के लिए लगभग 25 छोटेबड़े निजी होटल भी हैं.

शहर में आवागमन हेतु टांगा, ऊंट गाड़ियां, जीपें आदि उपलब्ध हैं. यहां राजस्थान सरकार का पर्यटक सूचना कार्यालय भी है, जहां से विभिन्न सुविधाओं की जानकारी प्राप्त की जा सकती है.

जैसलमेर देश के गरम इलाकों में से एक है. अतः यहां अप्रैल से जून तक भारी गरमी पड़ती है तथा रेतीली आंधियां चलती हैं.

अतः इन महीनों को छोड़ शेष सभी माह यहां पर्यटन की दृष्टि से उपयुक्त हैं. ●

दमके यौवन नीलमणि सी साड़ी में



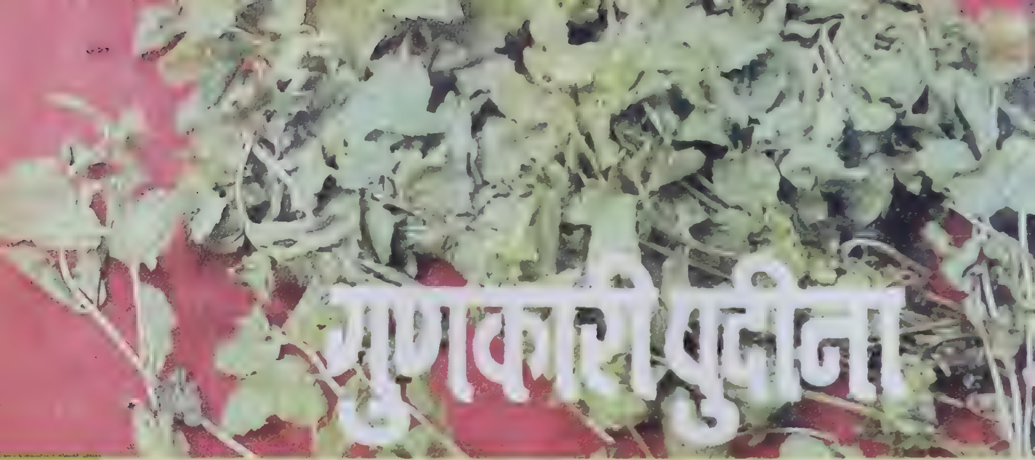
मौसम रंगीन हो या शाम
पार्टी में जाना हो, मेरी पसंद
पारंपरिक डिजाइन वाली
अब जैसे, यह गूजरी कढ़ाई
व त्रिरंगी बार्डर वाली नील
नीली साड़ी. जिसे पहन
खिलेखिले रूपरंग व दूसरों
अपनी ओर ठहरती देख
मनमयूर नाच उठता है.

लुभाती हैं कढ़ाई वाली भारी
ां मगर इन्हें विशेष अवसरों
पहना जा सकता है. इसलिए
हूं हलकी कढ़ाई की ऐसी
जिस के चौड़े पल्ले पर
क कढ़ाई या पैचवर्क हो और
पर किनारी. जैसे मेरी यह
जो हर अवसर पर समां बांध
कि हरेक के मन भाए.





जब मन में चाहत हो शाम 'उन' संग बिताने की, तो आप भी पहनें अंबीबेल के आकर्षक डिजाइन की सुनहरी कढ़ाई व सुंदर किनारी बार्डर के पल्ले वाली सुंदर साड़ी. फिर आप भी करेंगी उन का इंतजार, जैसे मेरी मुसकराहट बयां कर रही है मेरे मन का राज.



गुणकारी पुदीना

पुदीना नामक पौधे से सभी भलीभांति परिचित हैं. ग्रीष्म ऋतु में इस की हरी पत्तियों से बनी चटनी का सेवन किया जाता है. यह भोजन को सरलता से पचाने में बड़ी मदद करती है तथा स्वाद में भी बेजोड़ होती है. उदर विकारों में पुदीने का प्रयोग चिरपरिचित रहा है.

बाजार में काफी कम मूल्य पर उपलब्ध इस वनस्पति को घर में आसानी से उगाया जा सकता है. इस के लिए एक बड़ा गमला पर्याप्त है. पुदीना एक बहुगुणकारी वनस्पति है, जिस के अनेक उपयोग विश्वास के साथ प्रचलन में हैं. उन उपयोगों में से कुछ निम्नलिखित हैं :

- ग्रीष्म ऋतु में होने वाले सामान्य सिरदर्द से छुटकारा पाने के लिए पुदीने की ताजी पत्तियों को पीस कर गुनगुना कर लें, फिर माथे पर लेप लगा दें. कुछ देर में दर्द कम या समाप्त हो जाएगा.
- पुदीने की पत्तियों को पीस कर बनाया गया पेस्ट चेहरे पर लेप करने से त्वचा दमक उठती है तथा चेहरे के विशेष कर मुंहासों के धब्बे मिटने लगते हैं.
- पुदीने का रस व चीनी पानी में घोल कर शर्बत बना लें. इसे पीने से हिचकियां, लू, सामान्य उदर रोग तथा गर्मी शांत हो जाती है.
- पुदीने की पत्तियों को पीस कर जहरीले कीड़ों यथा मच्छर, ततैया, मक्खी आदि द्वारा काटे स्थान पर लेप कर देने से राहत मिलती है.
- गंदे जल के प्रयोग के कारण होने वाले उदर कृमियों को नष्ट करने
पुदीने के रस का सेवन लाभप्रद रह
- पुदीने की कुछ पत्तियों
कर पानी में अच्छी तरह उबाल
उस गुनगुने पानी से कुल्ला करें. व
तक नियमित ऐसा करने से मुंह की
दुर्गंध मिट जाती है.
- उलटी होने तथा जी मिच
दशा में पुदीने की पत्तियों को पीस
उस में थोड़ा सा काला नमक तथा
नीबू का रस मिला दें और उसे थो
मात्रा में उस व्यक्ति को धीरेधीरे
- इस की पत्तियों को पानी
कर भाप सूंघने से सर्दी तथा
राहत मिलती है.
- फेशियल से पूर्व चेहरे
लेते समय उबलते पानी में पुदीने
पत्तियां डाल दें, उस से लाभ होग
- पुदीने का रस, शहद, नी
तथा काले नमक को पानी में
बनाया गया पेय उदर की गर्मी, गै
अपचन को दूर करता है.
- टांसिल होने पर पुदीने क
को पानी में उबाल कर बनाए ग
गरारे करें. इस से लाभ होगा.
- पुदीने का सेवन करने
खुल कर होता है.
- मासिक धर्म के दौरान
सेवन करने से प्रवाह नियमित हो
- नकसीर फूटने की स्थिति
का अर्क पिलाना हितकर होता है

—रेखा स

चेक पर हस्ताक्षर करने से पहले

लेख •
विजयकुमार बजाज



एक वित्तीय कंपनी से सुजाता के पास जब फोन आया कि उस ने कार ऋण की इस माह की किस्त का भुगतान नहीं किया है, तो उस का माथा ठनका. किस्त के भुगतान का चेक तो वह पहली तारीख को स्वयं ही कंपनी के कार्यालय में दे आई थी. उस ने बैंक से पता किया, तो पता चला कि उस चेक का भुगतान कंपनी को नहीं बल्कि काउंटर पर नगद भुगतान किया गया था. सुजाता को ध्यान आया कि चेक देते समय जल्दी में उस ने रकम पाने वाले के नाम की जगह यह सोच कर खाली छोड़ दी थी कि कंपनी वाले खुद भर लेंगे. हुआ यह कि चेक पर न तो पाने वाले का नाम था और न ही चेक रेखांकित (क्रास्ड) था. इसलिए कंपनी के किसी कर्मचारी ने उसे चुरा लिया और फिर उस का नगद भुगतान ले लिया.

नीलम अपने पति के खाते में रुपए जमा कराने गई, तो पास बुक में प्रविष्टियां भी करा लीं. पास बुक देखी तो पता चला कि पिछले सप्ताह उस खाते से 10,000 रुपए नगद निकाले गए थे. ये रुपए उस ने नहीं निकलवाए थे और उस के पति पिछले 10 दिनों से दौरे पर थे. बैंक के प्रबंधक से उस ने बातचीत की तो उन्होंने वह चेक निकलवा कर दिखा दिया. चेक पर हस्ताक्षर तो उस के पति

चेक पर रकम लिखते या हस्ताक्षर करते समय जरा सी लापरवाही आप को आर्थिक नुकसान या परेशानी में डाल सकती है. भविष्य की सुविधा के लिए चेक पर हस्ताक्षर करने से पहले कुछ बातों की ओर अवश्य ध्यान दें.

के ही थे, पर चेक की लिखावट देख कर वह अपने नौकर के रफूचक्कर होने का भी कारण समझ गई. अब क्या हो सकता था? उस के पति तो पूरे चेक बुक पर ही हस्ताक्षर कर के रख छोड़ते थे, ताकि वह उस की अनुपस्थिति में जरूरत पड़ने पर रुपएपैसे निकाल सके.

उपरोक्त उदाहरणों में आप ने देखा कि जरासी लापरवाही से कैसे सुजाता को और नीलम के पति को आर्थिक हानि उठानी पड़ी. चेक सुविधा से जहां एक ओर लेनदेन में आसानी होती है, वहीं दूसरी ओर जरासी असावधानी से भारी नुकसान भी उठाना पड़ जाता है. इसलिए अगली बार आप जब भी चेक पर हस्ताक्षर करें तो जरा ठहर कर सोचें:

● क्या आप ने रकम पाने वाले का नाम चेक पर लिख दिया है?

● क्या आप ने चेक पर रकम अंकों व शब्दों में इस तरह लिखी है कि उस में किसी तरह का परिवर्तन न किया जा सके? रकम को छपे हुए शब्दों 'रुपए' के यथासंभव पास में ही लिखना चाहिए. दो शब्दों या संख्याओं के बीच कम से कम जगह छोड़नी चाहिए. शब्दों में लिखी रकम के अंत में 'केवल' शब्द लिख देना चाहिए या एक लकीर खींच देनी चाहिए.

● कहीं आप कोरे चेक या चेकों पर हस्ताक्षर यह सोच कर तो नहीं कर रहे हैं कि आप की अनुपस्थिति में आप की पत्नी या बच्चे अपनी आवश्यकतानुसार रकम निकाल सकेंगे? भूल कर भी ऐसी गलती आप न करें. अगर अकसर आप को ऐसी

जरूरत पड़ती है, तो अपनी पत्नी
का नाम अपने खाते में जुड़वा दें.

● क्या आप ने चेक लिखते
(नगद भुगतान के अतिरिक्त) च
रेखांकित (क्रास) कर दिया है?
रेखांकित चेक का नगद भुगतान नहीं
बल्कि किसी खाते में वह रकम जमा
जाती है. अतः अपने वैसे चेक क
रेखांकित अवश्य कर दें. रेखांकित क
लिए दो समानांतर रेखाएं चेक के
बाएं कोने पर खींच देनी च

● क्या आप के खाते में चे
भुगतान के लिए पर्याप्त रकम है? इस
में आश्वस्त होना इसलिए अनिवार्य
बिना पर्याप्त रकम या व्यवस्था के
जारी करना गंभीर अपराध माना जा

● 1988 के बैंकिंग, सार्व
वित्तीय संस्थाओं तथा निगोशि
इंस्ट्रूमेंट कानून (संशोधन) अधिनिय
के निगोशिएबल इंस्ट्रूमेंटस अधिनिय
धारा 138 के अंतर्गत खाते में अपूर्ण
होने के कारण नकार दिए गए चेक को
करने वाला व्यक्ति दंड का पात्र होग
दंड एक साल तक की अवधि का का
अथवा चेक राशि की दुगनी रकम या
एक साथ हो सकते हैं.

उक्त संशोधन के लिए निम्नलि
शर्तों का पालन किया जाना आवश्य

● चेक पूर्णतः या आंशिक र
किसी कर्ज या देनदारी के भुगतान के
जारी किया गया हो.

● चेक नकारे जाने की सूचना
के 15 दिनों के अंदर चेक जारी करने
को चेक नकारे जाने का एवं चेक की
मांगने की सूचना भेज दी गई हो.

● चेक जारी करने वाला पक्ष स
प्राप्ति के 15 दिनों के भीतर रकम
भुगतान कर दे.

भविष्य में कभी भी चेक पर हस्त
करने से पहले अगर आप उपरोक्त बात
ध्यान रखेंगे, तो आप व्यर्थ की परेशा
आर्थिक हानि से बचे रहेंगे.

ये पति







एक दिन मेरे पति मेरी कुछ कमियों की चर्चा कर रहे थे. तभी अचानक मेरे पिताजी आ गए. उन्होंने मेरे पति से कहा, "आप को मेरी बेटी के गुणों का खयाल नहीं है. मेरी बेटी तो लाख रुपए की है, लाख रुपए की."

मेरे पति ने तुरंत हंस कर जवाब दिया, "पिताजी, मैं 50 हजार का घाटा सहने को तैयार हूं. आप सिर्फ 50 हजार मुझे दे दीजिए और लाख रुपए की बेटी वापस ले जाइए."

—राजेश दीवान

*

एक दिन जीजाजी, दीदी और मैं एक साथ खाना खाने बैठे. गरमी कुछ ज्यादा ही थी.

दीदी ने पंखा लगाया पर पुराना होने के कारण चालू नहीं हुआ. वह गुस्से में बोलीं, "यह पुराना फटीचर पंखा बदल दो."

जीजाजी बोले, "मैं भी पुराना फटीचर आदमी हूं, मुझे भी बदल दो."

—अंतरसिंह सोनेट

*

हम लोग बिना साससुर को बताए चार दिनों के लिए नैनीताल घूमने चले गए.

हमारे जाने के बाद मेरा देवर आया और हमें न पा कर वापस चला गया. इस से मैं डर रही थी कि मेरी सास बहुत भलाबुरा कहेंगी.

मेरी सास ने हम से पूछा, "तुम ने हमें क्यों नहीं बताया, क्या हम तुम्हारे साथ चल पड़ते?"

मेरे पति ने मुसकराते हुए कहा, "इस का ही तो हमें डर था."

इस पर मेरे ससुर हंसने लगे.

—परमजीत मल्ही

एक दिन सभी बच्चे मां, मौसी और भाभियां मुझे व मेरे पति को घेरे बैठे थे. पति तरहतरह के किस्सेकहानियां सुनाते हुए सब को हंसा रहे थे. मैं खामोश बैठी थी.

तभी पति ने टोका, "तुम क्यों चुप हो."

मैं जवाब देती कि मौसी मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए बोलीं, "हमारी मंजू बड़ी सीधी है. बोलना तो जानती ही नहीं, गाय है यह तो, गाय."

पति ने टेढ़ी निगाहों से मुझे देखा व शरारत से बोले, "हां मौसीजी, आप बिलकुल ठीक कह रही हैं, यह है तो वाकई गाय है, सींगों वाली."

सभी लोग जोर से हंसने लगे

—मंजू चंद्रमोहन नागोरी

*

करवा चौथ के व्रत के दिन मैं बारबार छत पर जा रही थी क्योंकि व्रत की समाप्ति के लिए चांद देखना आवश्यक था.

पति ने मुझ से पूछा, "तुम आज बारबार छत पर क्यों जा रही हो?"

मैं ने चांद देखने की बात उन से कही. उन्होंने अविलंब अपने सिर से टोपी हटा कर बड़ी मासूमियत से कहा, "भाग्यवान, लो देख लो चांद, नाहक परेशान हो रही हो."

—ज्ञान प्रभा श्रीवास्तव 'रागिनी'

इस स्तंभ के लिए अपने तथा अपने संबंधियों के अनुभव भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित अनुभव पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. अपने अनुभव इस पते पर भेजें. संपादकीय विभाग, सरिता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

प्रतिबोध

कहानी ● नूरणी परमेश्वरन विश्वनाथन राचेकविपुरा

'इकनी एक, दूनी दो, तिरका तीन, चौके चार...' राजू कक्षा में बोले जा रहा था. बाकी बच्चे उसे दोहराते जा रहे थे. सौ तक गिनती पूरी होने पर फिर एक बार एक से गिनने का क्रम शुरू हो जाता था.

यह क्रम तभी टूटता, जब पंडित बेचनचंद की नींद सहसा टूटती. वह जम्हाई लेते मेज पर फैलाए अपने पैर आराम से हटाते, नाक के आगे खिसका अपना चश्मा ठीक करते, अधमुंदी आंखों से पूरी कक्षा में एक बार नजर दौड़ाते.

फिर विषय बदलता. 'अब नर्मदा नदी अमरकंटक से निकलती है'... वाला अध्याय शुरू हो जाता है. प्रत्येक वाक्य का सस्वर पाठ राजू करता, बाकी बच्चे समवेत स्वरों में उसे दोहराते. तब तक पंडितजी टांगें दूसरी तरफ पसार कर एक बार फिर निद्रा के आगोश में समा जाते. शिक्षा व्यवस्था के बोझ के कारण अलगअलग किस्तों में नींद लेना उन के लिए जरूरी होता.

स्कूल में सुस्पष्ट नियम था कि पंडित बेचनचंद के लिए सब खून माफ हैं क्योंकि हेडमास्टर दीनानाथ के भाई की लड़की पंडितजी की घरवाली थी. लिहाजा उन पर किसी भी प्रकार की विपत्ति आने की आशंका निर्मूल थी.

बात उन दिनों की है जब देश को आजाद हुए अभी ज्यादा समय नहीं बीता था. शिक्षा प्रणाली में सुधार के बारे में अनुसंधान अभी शुरू होना था. जार्ज टाउन प्राइमरी स्कूल में नाम को छोड़ कर कुछ भी अंगरेजी जैसा नहीं था. दीनहीनों की शिक्षा का यही स्कूल एकमात्र अवलंब था.



पंडितजी यहां काफी अरसे से गि
बारहखड़ी आदि पढ़ाते या सही कहें तो
जैसे छात्रों से पढ़वाते चले आ रहे थे.

उन के बारे में मशहूर था कि वे प
या न पढ़ाएं उन के आशीर्वाद मात्र से ल
बच्चे तरक्की कर जाते और नालायक
उसी श्रेणी में गोता खा कर फिर एक
'इकनी एक...' या 'नर्मदा नदी...' दोह
पर मजबूर हो जाते.

अस्पृश्यता कानून उन दिनों शायद क
से लागू नहीं हो पाया था क्यों
पंडितजी ने पहली कक्षा में वर्णव्यवस्थ
आधार पर कोटा प्रणाली को बड़ी कड़ा
लागू कर रखा था. मसलन, ब्राह्मणो
बच्चे टाटपट्टी के बढ़िया हिस्सों



ल आगे बैठते. फिर आती क्षत्रिय श्यों की बारी जो सुविधानुसार थोड़ी चिरीफटी टाटपट्टियों पर आसन अब रह जाते बेचारे शूद्रों के बच्चे, ंगी और खुरदरी जमीन पर ही बैठ ोष करना पड़ता. क्या पता, आज का ार्ड इसी प्रणाली का विकसित रूप

पंडितजी के स्नेह करने का ढंग भी कम अनूठा न था. ब्राह्मणों के बच्चों के सिर पर प्यार से हाथ फेर कर 'खुश रहो' कहते. क्षत्रिय और वैश्य बच्चे केवल 'खुश रहो' सुनते. शूद्रों को 'खुश रहो' दांत पीस कर कहा जाता यानी कि 'खुश क्योंकर रहो?'

उन की सुस्पष्ट मान्यता थी कि शूद्रों के साथ सिर खपाने से कुछ हासिल नहीं होता. वे ढोर के ढोर ही रहते हैं.

एक बार बसोर पुत्र कनछेदीलाल ने जिज्ञासावश 'एकलव्य' की जाति पूछने की धृष्टता कर दी तो पुरस्कारस्वरूप सिर पर चार बार मोटा, काला और चिकना डंडा पड़ा. फिर दंड प्रक्रिया पूरी हो जाने पर उसी से डंडे को धुलवा कर कमरे में सूखने के लिए रखवाया गया ताकि डंडे की 'पवित्रता' बनी रहे.

शायद ही कभी समय से पहुंचा हो. कभी किया नहीं. प्रार्थना के बाद च अपनी कक्षा में घुसते समय हेडमा नजर उस पर पड़ती तो उस के श्रीगणेश ही वह लचीली बेंत से कर कक्षा में घुसते ही उस मानव को मुर पड़ता. लेकिन कनछेदी पर इस का श कोई असर पड़ता. कुछ लोगों विश्वास हो चला था कि मार खाए वि रात में नींद ठीक से नहीं आती.

कनछेदी स्कूल क्यों चला आता शायद वह स्वयं भी कभी न जान सक से उस का मन बहुत घबराता था. उस जमाने का जब हर साल प्रत्येक का सर्वेक्षण कर के पहली कक्षा में लायक बच्चों को जबरदस्ती स्क

जिस कनछेदीलाल को पंडितजी शूद्र जाति का होने के कारण कक्षा सब से पीछे नंगे फर्श पर बैठाते थे और जिसे पीटने के लिए उन के हा हमेशा खुजलाते रहते थे, उसी कनछेदीलाल ने एक दिन पंडितजी को व सम्मान दिया कि वह अपनी गलती के प्रतिबोध से छटपटा उठे. और य सोचने पर मजबूर हो गए कि आखिर मैं आज तक बच्चों को क्या शिक्ष देता रहा था.

इस गोल डंडे को, जिसे उन दिनों रूलर कहते थे, हाजिरी रजिस्टर पर लाइनें खींचने के लिए कम और छात्रों पर बरसाने के लिए कुछ ज्यादा ही काम में लाया जाता रहा.

कनछेदी के हिस्से में पंडितजी का गुस्सा कुछ ज्यादा ही आता रहा. वह अकसर उन से पिटता ही रहा. न जाने उसे देखते ही पीटने के लिए पंडितजी के हाथों में खुजलाहट क्यों होने लगती. बेचारे की नाक दोनों तरफ से प्रवाहमान रहती. आंखों में चीकट रहता. फटी बनियान और पीछे दोनों हिस्सों में जगजगह से जर्जर पैंट पहने वह कक्षा में बिलकुल खामोश बैठा रहता.

अनियमितताओं में नियमित रहना कनछेदी की विशेषता रही. कक्षा में वह

दाखिला दिया जाता. आज के समान कर भरती किए जाने वाली बात हो बेचारा कनछेदी ज्यादा सुखी रहता. तो उस का बापू दान दे पाता और हमारा कनछेदी स्कूली शिक्षा का भोगता.

वैसे भी उस का मन बापू के साथ कर बांस की टोकरियां बनाने में लगता था. पर बापू था कि डांटडपट लड़के को स्कूल भेज देता था. बेचा खुशफहमी थी कि कनछेदी पढ़लिख कुछ बन जाएगा तो बांस छीलने वाले उ हाथों को थोड़ा आराम मिलेगा. धीरे स्कूल आने के पीछे कनछेदी ने कुछ औ स्वार्थपाल लिया.

बहरहाल कनछेदी उस प्राइमरी स में और भी कारणों से चर्चा का विषय



"पंडितजी, आप से टिकट के पैसे ले कर मैं पाप क्यों सिर लूंगा. गुरु के लिए शिष्य का इतना भी हक नहीं बनता क्या?" मैनेजर ने कहा तो पंडितजी व उन की बेटी आश्चर्यचकित रह गए.

न में बाहर लगी कक्षा में वह सब से आसन लगाता. जब पंडितजी किस्तों द पूरी करने का उपक्रम करते, तब वह से पलायन की संभावनाओं पर विचार । शुरू कर देता.

उस की गिद्ध दृष्टि पंडितजी की मुद्रा पर जमी रहती. जैसेजैसे उसे ास होता जाता कि अब पंडितजी पर की पकड़ मजबूत होती जा रही है, वह कार्यक्रम निर्धारित कर लेता. पहली न में उस की टूटी स्लेट चबूतरे से क कर नीचे आती. फिर आती उस की पेंसिल. कुल मिला कर यही तो दो न थे उस के पास, जिन से वह शिक्षा की वैतरणी पार करने चला आता था. स्लेट और पेंसिल नीचे से उठाने के वह चबूतरे से नीचे कूद कर कुछ देर रोके नीचे बैठा रहता. इस बीच तजी की नींद खुलने की भनक मिल तो वह बड़े इत्मीनान से एक बार फिर रे पर स्लेट पेंसिल समेत आसन जमा वरना नौ दो ग्यारह होने में कोई कसर न ता.

चबूतरे को फांदता स्कूल की इमारत थ लगे शेड की सीमा को पार करता

कनछेदी जा पहुंचता श्याम टाकीज के उस अहाते में जहां मैटिनी शो के लिए पहले से ही लंबी लाइन लगी होती. वह भी उस कतार में शामिल हो जाता और मौके के मुताबिक 'ब्लैक' में बेचने के लिए 3-4 टिकटें निकाल ही लाता.

फिर दबे स्वर में 'दो का चार में' कहता वह जरूरतमंद लोगों को टिकटें थमा कर पैसा वसूलने में लग जाता. इस धंधे में उसे गाहेबगाहे पुलिस के 'मुंशी' से धौल भी पड़ जाती पर धीरेधीरे वह उन को भी पटाने के नुसखे ईजाद करता जा रहा था.

इस क्षेत्र में विशेषता हासिल करते हुए वह थिएटर के कर्मचारियों का भी विश्वासपात्र बनता जा रहा था. कभीकभी वह गेटकीपर के साथ खड़े हो कर टिकट का आधा हिस्सा फाड़ने में मदद करता तो कभी टिकटों के बंडल गिन कर उन पर मनोरंजन कर के टिकट चिपकाने जा बैठता.

कालांतर में उसे ब्लैक में बेचने के लिए टिकटें खरीदने के लिए लंबी लाइन में खड़े रहने की जरूरत नहीं रही. अपने हिस्से की टिकटें उसे पहले ही मिलने लगीं. उस में वह बुकिंग बाबू का हिस्सा रखना भी सीख गया.

इधर कक्षा में 'इकनी एक...' चालू रहता, उधर कनछेदी प्यारे अपने जमाने की मशहूर हीरोइनों की तसवीरें देखने में मशगूल रहता. हीरोहीरोइनों की तसवीरें उसे न जाने क्यों लुभावनी लगतीं कि वह काफी देर तक उन्हें एकटक निहारता ही रहता. इस निराली दुनिया के आगे स्कूल का वातावरण उसे कारागृह ही लगता.

अगली सुबह तक स्कूल में यह खबर फैल चुकी होती कि कनछेदी की आज जबरदस्त पिटाई होने वाली है क्योंकि स्कूल की छुट्टी होने से पहले पंडितजी उस की गैरहाजिरी देख चुके हैं. कनछेदी जब तक स्कूल में दाखिल होता, उस की कक्षा के लड़के उस पर पड़ने वाली मार का भयावह चित्रण शुरू कर देते.

लेकिन कनछेदी इन सब से बेखबर मधुबाला, सुरैया, नरगिस के खयालों में खोया रहता. अपनी निराली कल्पना में वह अनावश्यक दखलअंदाजी पसंद नहीं करता. लोगों का ध्यान बंटाने के लिए वह दूसरे दांवपेच लड़ाता फिरता. जैसे बिरजू से वह कहेगा, "बोल बिरजू अंदर."

"अंदर." बिरजू के मुंह से निकलते ही तड़ाक से वह जड़ता, "तेरा बाप बंदर."

"बोल किसना दंगा."

"दंगा."

"तेरा बाप नंगा."

यानी कि कुल मिला कर वह अब तुकबंदी मास्टर हो चला था और कक्षा में लड़ाई के लिए अच्छाखासा मसाला भी तैयार करता जा रहा था. अंदरबंदर दंगानंगा की तुक बैठातेबैठाते उसे ध्यान ही नहीं रहता कि कब पंडितजी कक्षा में आ गए और उसे घूरे जा रहे हैं. इधर लड़के अपनीअपनी जगह दुबकना शुरू कर देते. फिर शुरू होती कनछेदी की तगड़ी धुलाई.

काला, मोटा, गोल रूलर पड़ते ही व
बिलबिला उठता.

ऐसे ही एक धुलाई दिवस पर
पीड़ा जब बिलकुल ही असहनीय हो च
कनछेदी ने अपनी स्लेट, पेंसिल ग
पंडितजी की तरफ उछाल दी. ज
लोग माजरा कुछ समझ पाते, वह स्कू
दो ग्यारह जो हुआ तो फिर कभी लौ
नहीं आया.

लोग तरहतरह की अटकलबा
लगाते रहे. कोई कहता कि वह हीरो
बिना टिकट रेलगाड़ी से बंबई प्रस्था
गया है. किसी की खबर रहती कि वह
होटल में बैरा बन गया है. किसी को
मिली कि वह धर्म बदल कर ईसाई बन
है. जितने मुंह उतनी बातें. धीरेधीरे ने
के वादों की तरह कनछेदी लाल भी
दिया गया.

हर साल पहली कक्षा के बच्चे इम्ति
पास कर के अगली कक्षा में जाते रहे
हर साल पंडितजी नए छात्रों के समूह
झेलते रहे या कहें कि छात्र उन्हें झेलते
उन की स्थिति कभी नहीं बदली. कभी
तरक्की हासिल नहीं हुई. वह जहां से
वहीं खड़े दिखते.

अकेले पंडितजी ही क्यों पिछड़े
शायद यही सोच कर कुछ छात्र फेल हो
उन्हीं की कक्षा में पड़े रहते. इस से पंडित
को भी तसल्ली रहती कि कुछ छात्र तो है
उन का साथ निभाने उसी कक्षा में
मजबूत करने बैठे रह जाते हैं.

साल दर साल बीतते गए. पंडित
की सेवानिवृत्ति में अभी मात्र 4 साल बाकी
कि पंडिताइन की गोद हरी हुई. बेच
जीवन भर बांझ कहलाने के दर्द से मुक्त ह

पंडित जी थोड़ा मायूस जरूर हुए
बुढ़ापे में कन्या पैदा हुई, लड़का होता तो
से कम बुढ़ापे में सहारा बनता. फिर भी
कन्या के पालनपोषण में जुट गए. लड़की
नाम रखा गया, जानकी. मांबाप ने उस
हर जिद पूरी कर के उसे लगभग बिगाड़

शायद ही कोई दिन ऐसा बीता हो, उस की कोई फरमाइश पूरी न की गई

इधर पंडितजी रिटायर हुए, उधर की को स्कूल में भरती करने का समय . अपनी इकलौती संतान को वह अच्छी महंगी शिक्षा देने के पक्षधर थे. साधन न्हें कमी न थी. पुश्तैनी मकान था. गांव ीनजायदाद से आय अलग आती रही. के अलावा बैंक में जमा फंड की रकम ाज मिलता रहा.

अलबत्ता पंडिताइन इस बात के सख्त फ रही कि बच्ची को अच्छी और शिक्षा दिलाने में पैसा क्यों व्यर्थ किया पर पंडितजी मानें तब न. उन्हें लगता ब नगर निगम के स्कूल में पढ़ने के दिन वह बेशक 'इकनी एक दूनी दो...' रहे हों, अपनी बच्ची को वहां भेजना क़तई मंजूर न था. उन की बच्ची को तो जी सीख कर डाक्टर बनना था.

पंडिताइन के काफी नानुकर करते के बावजूद वह जानकी को कानवेंट में डाल ही आए. जिस दिन वह उसे करने गए उस की कक्षा का मुआइना उन की तबीयत वाकई प्रसन्न हो गई. ुथरी डेस्कें थीं, सफेद कमीज, भूरे फ्राक के साथ टाई पहने बच्चियों को र वह काफी देर ठगे से खड़े रहे.

ब उन की जानकी फर्राटे से अंगरेजी वताएं सुनाने लगी तो पंडितजी नई में ही विचरने लगे. अब तो नींद भी भी आती, जब उन की बिटिया लर्टविंकल लिटिल स्टार...' या ाबा ब्लैक शीप हेव यू एनी वुल...' विता हावभाव के साथ सुनाती.

रूपी पाखी पंख फड़फड़ाता तेजी से गया. कब जानकी कालिज की पर कदम रख गई, पता ही न चला. वह फिल्मों की इस कदर दीवानी हो ी कि पंड़िताइन के सब्र का बांध भी टूटने लगा. पर पंडितजी की शह



गणित

जिंदगी का गणित तो
उलझा हुआ है, जटिल है,
इस में दो और दो हमेशा
चार ही होते नहीं.
—कांता स. पाल

पर बिटिया का फिल्मी मोह कुछ कम न हुआ. हर हफ्ते अपनी सहेलियों के साथ एक दो फिल्में देखना उस की आदत में शुमार हो गया.

''बाबूजी, आज आप भी मेरे साथ पिक्चर चलेंगे.'' एक दिन जानकी ने कहा.

''मुझे क्यों इस चक्कर में घसीटती हो? तुम अपनी सहेलियों के साथ हो आओ या अपनी माताजी के साथ चली जाना. तुम तो जानती हो कि मुझे फिल्मों का कोई शौक नहीं है.'' वह अपना पिंड छुड़ाने के मूड में थे.

''नहीं बाबूजी, आज तो आप को ही चलना होगा. मेरी कोई सहेली आखिरी शो देखने मेरे साथ नहीं आ सकती. फिर 'हम दोनों' फिल्म कल उतर जाएगी. आप तो जानते हैं कि मैं देव आनंद की बड़ी प्रशंसक हूं. मैं यह मौका नहीं छोड़ सकती.'' वह लगभग मचल उठी.

पंडित जी ने बिटिया को दुनिया भर की ऊंचनीच की बातें सुना कर समझाना चाहा, पर कन्या हठ के आगे उन की एक न

चली. लिहाजा रिक्शा कर के बापबेटी जब थिएटर पहुंचे, टिकट खिड़की बंद हो चुकी थी. पंडितजी खुश हुए कि चलो, मामला खत्म हुआ. पर जानकी कहां हार मानने वाली थी. थिएटर के अहाते में कुछ शोहदे किस्म के लड़के ब्लैक में बेचने के लिए टिकटें दबाए फिर रहे थे. जानकी ने बापू को समझाया कि वे इन लड़कों से जरा सौदा तय कर के देख लें. वाजिब रेट पर दो टिकटों का प्रबंध तो हो ही सकता है.

पंडितजी का तो खून खौलने लगा. कहां तो ऐसे शोहदे लड़कों को वह स्कूल में मुरगा बनवा कर पीटा करते थे और यह लड़की है कि इन से ब्लैक में टिकट खरीदने को कह रही है. इधर बापबेटी में तर्कवितर्क होता रहा, उधर ब्लैक की टिकटें भी चुक गईं. पहले चल रहा शो भी छूट गया.

जानकी तो लगभग रोंआसी हो गई. फिल्म देखे बगैर घर लौटना उस के सम्मान को गहरी ठेस जो थी. फिर न जाने एकाएक उसे क्या सूझी कि वह पंडितजी का हाथ पकड़ कर तेजी से मैनेजर के कमरे में जाने के लिए आगे बढ़ी. इधर गेट पर दरबान बहनजी बहनजी चिल्लाता रहा, उधर जानकी मैनेजर के कमरे में जा घुसी. पंडित जी क्रोध में उफनते रहे. एक बार तो उन के जी में आया कि लड़की को कस कर एक थप्पड़ रसीद किया जाए. फिल्म देखने का भला ऐसा भी क्या जुनून?

मैनेजर से जानकी ने अंगरेजी में न जाने क्याक्या झाड़ा, पिता के पल्ले केवल इतना पड़ा कि कुछ 'वीआईपी' कोटे की बात चल रही है. अब तक मैनेजर जानकी को कुछ समझाने की कोशिश कर रहा था. फिर उस की नजर एकाएक लड़की के पीछे खड़े बुजुर्ग पर पड़ी तो उस के शरीर में झुरझुरी सी दौड़ गई. वह कुरसी छोड़ कर उठ गया. "पंडितजी, आप बैठिए. बेटी, तुम भी बैठो. भला आप के लिए टिकट का बंदोबस्त न हुआ तो लानत है मेरी मैनेजरी पर..."

जानकी हतप्रभ थी. पंडितजी भी कम हैरान न थे. यह माजरा क्या है, कु नहीं पड़ रहा था. उन्हें कुछकुछ श होने लगी कि कहीं यह पाजी जवान को साथ देख कर कोई नया गुल खि मूड में तो नहीं आ गया. "क्यों बे झल पीछे इस शो के लिए वीआईपी को कोई फोन आया था क्या?" मैनेजर कर्मचारी से पूछा.

"नहीं साहब."

"अच्छा... तो सुनो, पहले आ कक्ष में जा कर छिदामी से कहना ि तक मैं न कहूं फिल्म शुरू न करे. कह साहब के साथ वीआईपी आ रहे हैं. त दर्शकों को विज्ञापनों की स्लाइडें ही वि रहे. फिर दौड़ कर तीन ठंडा लेते अ

"अरे साहब, यह सब तकलीफ कर रहे हैं. पैसे लीजिए और हमें दिलवा दीजिए बस... हम खुद जाएंगे."

"यह आप क्या कह रहे हैं, पंडि आप से टिकट के पैसे ले कर 'पाप' क्यो लूंगा. गुरु के लिए शिष्य का इतना भी नहीं बनता है क्या? आप हैरान क्यों ह हैं? आप ने मुझे पहचाना नहीं? पहचानते भी तो कैसे? न जाने कितने को आप ने पढ़ाया होगा? भला किसकि सूरत याद रखेंगे?

"मैं हूं, आप का शिष्य, कनछेदी. की कक्षा में सब से पीछे बैठता था और है न... इसी थियेटर प्रेम के कारण मैं आ कोपभाजन भी बनता रहा. जो हो, अ यही समझिए कि आप की कृपा से मैनेजर बना बैठा हूं. चलिए, आप को ब में बैठा देता हूं और बेटी, आईंदा टिक लिए लाइन में कभी खड़ी मत होना, मेरे पास आ जाना या परची भिजवा दे बस."

पंडित जी को कुछकुछ याद आता जा था. उन की आंखों के आगे कुछ धुंधली तसवीर उभरने लगी. याद भी कैसे न आ शिक्षक अपने जीवन में सब से होनहार



पूंजी लाभ को
कर-मुक्त बनाने
के लिए
बेहतरीन निवेश
आईडीबीआई
पूंजी बांड

जमीन जायदाद, जेवरों, शेयरों आदि की बिक्री से अर्जित दीर्घकालीन पूंजी लाभ पर आयकर लगता है. लेकिन इससे राहत पाइए. आई.डी.बी.आई. पूंजी बांड में निवेश कीजिए. अपनी पूंजी सुरक्षित रखिये और ब्याज भी कमाइए.

- बांड सालभर सममूल्य पर उपलब्ध.
- आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 54E के अंतर्गत पूंजी लाभ पर कर नहीं.
- धारा 80L के अंतर्गत आयकर में लाभ.
- संपत्तिकर अधिनियम, 1957 की धारा 5(1) (xvie) के अंतर्गत संपत्तिकर में 5 लाख रुपये तक की छूट. देखिए संपत्तिकर अधिनियम की धारा 5(1A).
- 9% वार्षिक दर से ब्याज का अर्ध-वार्षिक रूप से भुगतान.
- अनिवासी भारतीयों का निवेश भी स्वीकार किया जाता है.
- पूंजी निवेशकर्ता की इच्छानुसार 3 वर्ष की पूरी अवधि के ब्याज का डिस्काउंट आधार पर अग्रिम भुगतान.
- स्रोत पर कोई कर-कटौती नहीं.
- दूसरे शहरों के चैक स्वीकृत. वसूली खर्च आई.डी.बी.आई. के जिम्मे.

श के औद्योगिक विकास में सहयोगी बनेगा आपका निवेश.

अधिक जानकारी के लिए अपने निकटतम कार्यालय से संपर्क करें या प्रबंधक को लिखें

भारतीय औद्योगिक विकास बैंक

आई.डी.बी.आई. टॉवर, कफ परेड, बम्बई 400 005 फोन 2189111/21

सब से कमजोर या बदमाश लड़के को शायद ही भूल पाता हो.

"लेकिन बेटा, तुम ने तो गले में यह क्रास लटका रखा है. मेरा खयाल है तुम तो बसोर के लड़के थे न... और बाहर यह 'के. डामनिक' की तख्ती कैसी?"

"के. डामनिक यानी कनछेदीलाल डामनिक. पंडित जी, अब मैं हिंदू कहां रहा. वैसे गलती मेरी भी कहां थी? स्कूल से क्या निकला, विपत्तियों के जाल में फंसता गया. मांबाप को खोया. टिकटें ब्लैक करते नए इंस्पेक्टर ने जो धरा तो जेल भी हो आया. ईमानदारी की रोटी खाने के घमंड में भूखा ही भटकता रहा.

"तभी फादर डामनिक ने मुझे शरण दी. अपने पास रखा, पढ़ायालिखाया. मेरा धर्म बदलने के पीछे उन का क्या स्वार्थ रहा, यह तो शायद नहीं बता सकता, पर इतना जरूर बता सकता हूं कि भूख से बिलबिलाते मुझ जैसे अनाथ के लिए उस समय एकमात्र 'धर्म' रोटी ही नजर आई.

"मैं ईसाई जरूर बन गया पर संस्कार कहां बदले. बरसों पहले बंबई जाने का मौका मिला. लोकल ट्रेन में लिखा एक वाक्य इतना अच्छा लगा कि उस की इबारत अपनी मेज पर शीशे के नीचे रख कर उस आदर्श को अपने जीवन में सही अर्थों में उतारने की कोशिश करता हूं."

पंडितजी ने भी वह दर्शन पढ़ा.

'मंदिर, मसजिद, गुरुद्वारों में बांट दिया भगवान को,
धरती बांटी, सागर बांटा, मत बांटो इनसान को.'

उन्हें भीतर कुछ कुरेदता लगा.

बाक्स तक आ कर कनछेदी रुका. उस ने झुक कर पंडितजी के पैर छू लिए. जानकी तो खुशी से फूली नहीं समा रही थी. उस ने 'धन्यवाद चाचाजी,' कहते हुए कनछेदी के दोनों हाथ चूम लिए.

पंडितजी को ऐसा मालूम हो रहा था, मानो आज कनछेदी ने उन पर काला रूलर बरसा दिया हो. दिल के किसी कोने में टीस सी उठ रही थी. कहां तो इस बसोर ... लिए उन्होंने कक्षा में अलग कोटा नि... कर सब से पीछे बैठा रखा था और ... आज इसी शिष्य ने उन्हें वीआईपी ... सब से पीछे बैठा दिया. दोनों ने एकदू... सब से पीछे ही बैठाया था, पर दो... कितना अंतर था.

उन के दिल के किसी कोने से ... आवाज आई, 'मैं बरसों तक बच्चों को ... शिक्षा देता रहा. असली शिक्षा तो इ... मुझे दी है.' कनछेदी, हो सके तो मुझे ... कर देना.'

ाहब बहादुर व्रत कथा

जन विधि:

आफिस से कैजुअल लीव ले कर
ा के दिन स्नान आदि से निपट कर
स्थान में आसन पर बैठें. साहब की
कार्ड साइज फोटो पूजा स्थान पर
के बाद सारी फाइलें जो निपटानी हैं
ो भूल कर, साहब का ध्यान कर पूजा
ौर संकल्प करें कि मैं आप का पूजन
. पुष्प हाथ में ले कर साहब का ध्यान
फर पुष्प, धूप, नैवेद्य आदि से युक्त हो
करें,' साहबजी मैं ने श्रद्धापूर्वक
ल आदि सब सामग्री आप को अर्पित
उसे स्वीकार कीजिए. समस्त
ायों से छुटकारा दिला कर मेरी रक्षा
ए. मेरा आप को बारंबार नमस्कार
न के बाद साहब बहादुर
ा पढ़ें.

।अथ साहब
व्रत कथा भाषा।।

व्यंग्य • महेशकुमार शुक्ल

एक समय राजधानी दिल्ली में सेक्रेटरियट के असंख्य क्लर्कों ने सूतजी से पूछा कि हे प्रभु, इस महंगाई के जमाने में हमें कोई ऐसा रास्ता दिखाइए ताकि आफिस का काम न करना पड़े. फाइलों का ढेर मेज पर पड़ा रहे और ओवरटाइम में ज्यादा पैसे प्राप्त हो सकें. इसलिए, हे मुनिश्रेष्ठ, ऐसा कोई उपाय बताइए जिस से यह सब संभव हो जाए और कुछ दिनों बाद प्रमोशन भी मिल जाए. इस के बारे में कोई स्टोरी सुनाइए ताकि हमें भी मनवांछित फल मिले.

सर्वज्ञाता सूतजी बोले, ''सुनो,

सरिता, बीस साल पहले, मार्च (प्रथम) 1972



यदि दफ्तर के अधिकारी से आप की न बनती हो और वह आप बातबात पर डांटताफटकारता हो या आप को ट्रांसफर की धमकी हो तो घबराएं नहीं. बस एक व्रत कथा कर लें, 'साहब बहादुर व्रत क आप को सारी विपत्तियों से छुटकारा मिल जाएगा और मनवांछित भी प्राप्त होगा.

बाबुओं! आप सब ने बड़ी अच्छी बात पूछी है. समाज का एक बड़ा वर्ग आप के समुदाय में शामिल है. अब मैं उस श्रेष्ठ व्रत को कहूंगा जिस व्रत को नारदजी ने लक्ष्मी-नारायण से पूछा था. सो ध्यान से सुनो.

"एक समय नारद मुनि दूसरों के हित की इच्छा से अनेक लोकों का भ्रमण करते हुए मृत्युलोक में जा पहुंचे. वहां जिस आफिस में वे गए, उन्होंने देखा कि सभी लोग, जिन्हें बाबू कह कर पुकारा जाता है, काम की वजह से थकेहारे और परेशान नजर आते थे. इस के अलावा साहब केबिन में बुला कर उन्हें डांटता भी था. क्लर्कों की ऐसी दशा देख कर उन्होंने सोचा, 'इन के लिए कुछ करना चाहिए.

"ऐसा सोच कर वह विष्णु लोक में गए. वहां विष्णु भगवान टेरिलीन का सूट पहन कर पिक्चर देखने की तैयारी कर रहे थे. लक्ष्मीजी मेकअप में व्यस्त थीं. नारद को देख कर कहने लगीं, 'अब इस मुए के कारण पिक्चर का प्रोग्राम रद्द करना पड़ेगा.' विष्णुजी के पास नारदजी पहुंचे तो विष्णुजी ने टाई की नाट कसते हुए कहा, 'अब क्या बात हो गई? 'स्वर्ग टाइम्स' के कर्मचारियों ने वेतन के मसले को ले कर हड़ताल की धमकी तो नहीं दे दी?' नारदजी ने कहा, 'ऐसी कोई बात नहीं है.' फिर अपने आने का कारण बतलाया तो विष्णुजी ने लक्ष्मीजी से कहा, 'तुम मिसेज शंकर के साथ पिक्चर देखने चली जाओ. नारद से एक महत्त्वपूर्ण विषय पर चर्चा करनी है.'

"फिर नारद से कहने लगे, 'तुम ने यह बहुत अच्छी बात पूछी है. जिस व्रत को करने से क्लर्क मजे में रहता है वह मैं बतलाता हूं, सुनो! आफिस के काम से दिलाने वाला और साहब की निगाह जाने वाला यह व्रत मैं प्रेमवश तुम से हूं. साहब बहादुर का व्रत अच्छी विधिपूर्वक करने से क्लर्क की जि ऐसा परिवर्तन आ जाता है कि स्वय को नहीं मालूम रहता कि उस के ऐ भी आ सकते हैं.'

"नारद मुनि बीच में बोलने ल व्रत का क्या फल है? यह व्रत कब जाता है? यह सब विस्तारपूर्वक कि

"भगवान बोले, 'क्लर्क को देखने के झंझट से मुक्ति दिलाने जल्दी प्रमोशन करवाने वाला यह व्रत भी दिन क्लर्क अपने साहब की पोस साइज फोटो (पोस्टकार्ड साइज न मि पासपोर्ट साइज की फोटो) रख भक्तिभाव से पूजा करें. पूजा करने साहब के बच्चों के लिए फल, टापि खिलौने तथा साहब की बीवी के महंगी साड़ी भेंट करे. भले ही उस के बच्चे टाफी व खिलौने के लिए तरस और बीवी नई साड़ी की जिद में करती रहे. ऐसा करने से साहब के दि उस के लिए जगह बन जाएगी और घृ ईर्ष्या रखने वाला साहब उस का दोस्त जाएगा. विशेषकर सरकारी कार्याल क्लर्कों को यह व्रत करना अनिवार्य है. प्रथम अध्याय."

।।द्वितीय अध्याय।।

सूतजी बोले, "हे क्लर्कों! जिस ने यह सब से पहले किया है. उस का वर्णन क हूं. ध्यान से सुनो. विलासपुर नग दुबलापतला रामरतन क्लर्क एक सरक दफ्तर में काम करता था. रातदिन स



"इतनी महंगी साड़ी लाने वाला अवश्य ही कष्ट में होगा. आप उस के दुख दूर कर दीजिए." नए डिजाइन की महंगी साड़ी देख कर साहब की बीवी साहब से बोली.

ांटफटकार सुन कर उस की भूखप्यास ब हो गई थी. उस का वजन 60 किलो ट कर 55 किलो हो गया था.

"साहबों को खुश करने वाले ाचरण नाम के क्लर्क ने उस से पूछा, क्या हालत बना रखी है? कुछ परेशान नर आते हो!' रामरतन ने जवाब दिया, मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता. घर ीवी और दफ्तर में साहब नाराज रहते हब को किस ढंग का काम चाहिए मुझे नहीं.'

"तब सीताचरण ने उस के कान छ कहा. रामरतन को रात भर नींद आई. दूसरे दिन सुबह आठ बजे साहब गले पर वह पहुंच गया. साहब से दो बाद उस की मुलाकात हुई और जब साहब को बतलाया कि उन के दोनों ों को वह मुफ्त में ट्यूशन पढ़ाएगा तो ने खुश हो कर कहा, 'रामरतन आज ो पता चला कि तुम कितने अच्छे ी हो.'

"उस दिन के बाद साहब ने रामरतन बिन में बुला कर डांटना छोड़ दिया एक दिन बुलाया तो मुसकरा कर कहने तुम्हारी रिपोर्ट इतनी बढ़िया भेजी है अगले साल तुम्हारा प्रमोशन हो ा.

"एक दिन रामरतन सीताचरण से मिलने गया तो देखा कि वह पूजा करने में व्यस्त है. उस ने पूछा, 'बंधु, यह किस की पूजा कर रहे हो? इस के करने से क्या फल मिलता है? मुझे पूरी जानकारी चाहिए.' तब सीताचरण ने जवाब दिया, 'आफिस की फाइलों से मुक्ति दिलाने वाला, साहब की कृपादृष्टि बनाए रखने वाला यह साहब बहादुर का व्रत है.' व्रत के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त कर के रामरतन घर लौटा तो बहुत खुश था.

"उस ने उसी शाम को साहब बहादुर का व्रत करने का निश्चय किया. व्रत के प्रभाव से उस का प्रमोशन हो गया और उस की फाइलें किसी दूसरे क्लर्क की मेज की शोभा बढ़ा रही हैं."

।। तृतीय अध्याय ।।

सूतजी बोले, "हे क्लर्को! आगे की कथा कहता हूं, सुनो! एक बार कमिश्नर साहब दौरे पर गए. वह बड़े अच्छे आदमी थे. सारा भत्ता जमा करते थे और उन के खानेपीने की व्यवस्था अधीनस्थ कर्मचारी करते थे. नदी के पास जीप खड़ी कर के वह पूजन कर रहे थे. उसी समय एक क्लर्क आ कर उन से बोला, 'साहब, मेरी तनख्वाह दो वर्षों से रुकी पड़ी है. घर में खाने को एक दाना भी नहीं है. आप कुछ उपाय बताइए.' तब कमिश्नर साहब ने बतलाया, 'साहब बहादुर की व्रत कथा पढ़ने से सब दुख दूर हो जाते हैं. मैं इस वर्ष रिटायर होने वाला हूं लेकिन इस व्रत के प्रभाव से मुझे तीन वर्षों

का एक्सटेंशन मिलने की उम्मीद है.'

''उस क्लर्क के घर पर अपनी बीवी चंद्रकला से सारी बातें बतलाईं तो चंद्रकला ने कहा, 'ठीक है, आप मेरे लिए साड़ीब्लाउज मत लाइए और उस साहब की कलमुंही बीवी को एक टेरिकाट की साड़ी भेंट कर दीजिए.' क्लर्क ने ऐसा ही किया. नए डिजाइन की महंगी साड़ी देख कर साहब की बीवी साहब से कहने लगी, 'इतनी महंगी साड़ी लाने वाला अवश्य ही कष्ट में होगा. आप उस के दुख दूर कर दीजिए.'

''दूसरे दिन साहब ने उस क्लर्क को बुला कर सारी बातें पूछ कर कहा, 'अब तुम्हारी नियुक्ति राहत कोष का पैसा बांटने वाले विभाग में कर देते हैं जहां तुम्हें कभी भी पैसों की तंगी नहीं रहेगी.' वह क्लर्क राहत कोष का पैसा बांटते वक्त हरेक किसान से 20-30 रुपए रिश्वत लेने लगा और कुछ दिनों के बाद उस के पास 15 हजार रुपए जमा हो गए.'

।।चतुर्थ अध्याय।

''एक दिन अखबार में उस क्लर्क के बारे में खबर छप गई कि वह राहत कोष का पैसा बांटने में घपला करता है. राजधानी से दो अधिकारी जांच करने आए. उन्हें देखते ही क्लर्क बेहोश हो गया. उसे याद आया कि उस ने साहब बहादुर का व्रत तो किया ही नहीं है.

''व्रत करने के बाद वह उन अधिकारियों के पास जा कर कहने लगा, 'साहब, मुझ से अनजाने में ऐसा हो गया. अब आप के पास शिकायत नहीं पाएगी.' फिर उन दोनों अधिकारि उस इलाके का मशहूर चावल दो बो 10-10 किलो शुद्ध देशी घी दे क किया. उन अधिकारियों ने जा कर दी कि उस क्लर्क के बारे में जितने लगाए गए हैं, जांच करने पर गलत हुए हैं, उस जैसा ईमानदार क्लर्क मुशकिल है.

''इधर अखबार में छपी खब कर उस क्लर्क की बीवी घबरा गई उस ने शरीर पर मिट्टी का तेल छिड़ मरने की इच्छा की. लेकिन जब उसे चला कि अधिकारियों ने उसे घोषित किया है तो उस की खुश ठिकाना न रहा. उस दिन उस ने मह मिठाई बंटवाई.''

।।पंचम अध्याय।।

सूतजी बोले, ''क्लर्को! मैं औ कथा कहता हूं, सुनो! एक क्लर्क सेल आफिस में काम करता था. उसे साह बुला कर कहा, 'मिस्टर मेहता, ज्योति में नई पिक्चर लगी है. तीन टि कर लौटते वक्त बंगले से सुषमा व उ मम्मी को लेते आइए.'

''मेहता यह सुनते ही तैश में आ कहने लगा, 'मैं आप का नौकर नहीं हूं. सुनते ही साहब भड़क गए. एक गंदी दे कर उसे बाहर निकल जाने को तीसरे दिन उसे साहब का एक मेमो मि जिस में उस पर काफी आरोप लगाए थे. इस में कुछ व्यापारियों से मिल

सरिता के स्वामित्व व अन्य विवरण संबंधी जानकारी फार्म 4, देखिए नियम 8

1. प्रकाशन का स्थान : नई दिल्ली. 2. प्रकाशन अवधि : पाक्षिक. 3, 4 व 5. मुद्रक, प्रकाशक संपादक का नाम : विश्वनाथ. राष्ट्रीयता: भारतीय. पता: ई-3 झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, न दिल्ली-110055. 6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो इस समाचारपत्र के मालिक व हिस्सेदार हैं या जो इस की पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के शेयर होल्डर हैं : दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन लि., ई-3 झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

मैं विश्वनाथ, घोषित करता हूं कि ऊपर दिए गए विवरण मेरी पूरी जानकारी और विश्वास के अनुसार सही हैं.

(ह.) विश्वनाथ, प्रकाशक

त लेने का गंभीर आरोप भी शामिल
ाब ऐसी स्थिति में उस के साथी क्लर्कों
हब बहादुर का व्रत करने की सलाह
स व्रत के प्रभाव से उसे साहब ने माफ
दिया और आजकल वह आफिस की
ों देखने की बजाए साहब की लड़की
ादी के लिए सामान जुटाने में लगा है.
''घर पर बीवी ने बीमार बच्चे की
के पैसे मांगे तो उस ने कह दिया, 'नहीं
ौवैसे.' लेकिन शाम को जब वह
के बंगले पर पहुंचा तो स्टेनलेस
की चार थालियां ले कर गया था.
उस के व्यवहार से बहुत प्रसन्न हो
ौर उस का ट्रांसफर उस सेक्शन में
दया, जहां ऊपरी आमदनी मिलने की
ुश थी.

''इस तरह जो भी क्लर्क परम दुर्लभ
त को करता है, साहब बहादुर की
ो उस के निराशा के बादल छंट जाते
र धनधान्य की प्राप्ति होने लगती है.
''साहब बहादुर हर आफिस में
ामान रहते हैं. कोई उन्हें 'बास'
है, कोई 'बड़े साहब' कहता है, कोई
कहता है, कोई 'माईबाप' कह कर
ात करता है. उन की महिमा का
करना सूरज को फुलझड़ी दिखाना

''जिन्होंने यह व्रत किया है, उन के
ं पता लगा है कि रामरतन क्लर्क का
बढ़ कर 70 किलो हो गया है और बैंक
हजार की रकम जमा है. राहत कोष
ा बांटने वाले क्लर्क ने 60 हजार का
बनवा लिया है और अपने बड़े लड़के
च्च शिक्षा के लिए अमरीका भेजने
है. सेलटैक्स आफिस के क्लर्क ने
खरीद लिया है.
'ऐसी बढ़िया जिंदगी बनाने वाले
बहादुर' को हम नित्य प्रणाम करते

ति साहब बहादुर कथा.
ोट: इस कथा में आरती की जरूरत
●

श ब्द खे ल 12

निर्देश : प्रत्येक पंक्ति में 3 से 7 अक्षरों वाले शब्द बनाइए. बनाए गए शब्दों के अंक अक्षरों के ओर दिए गए अंकों के जोड़ होंगे. 7 अक्षरों वाले शब्द के लिए 50 अंक तथा 6 अक्षरों वाले श के लिए 10 अंक बोनस के होंगे. बोनस अंक प्राप्त करने पर आप का शब्द ज्ञान स्तरीय म जाएगा.

ता 1	र 1	च 2	क	म	ट	ना	अंक योग x 3	प्राप्तांक / पंक्ति
ह 3	सा 1	स 1	फु 4	फु 4	ट 4	ना 1		पंक्ति
आ 2	मा 1	न 1	स 1	क 1	प 1	ल 1		पंक्ति
या 2	ल 1	मि 1	ना 1	क 1	सा 1	इ 2		पंक्ति -

लाभांक : 40 -50

प्राप्तांक कुल योग
समय सीमा - 20 मिन

शब्द खेल–11 का हल

								प्राप्तां
य 2	ं 1	त्री 4	क 1	र 1	ण 2	□		21
चि 2	ं 1	त 1	न 1	शी 5	ल 1	□×3		43
टे 4	प 1	रि 1	का 1	र्ड 5	र 1	□		23
र 1	सा 1	य 2	न 1	□	□	□		5

लाभांक : 70-80

इस के अलावा हल और भी हो सकते हैं.

प्राप्तांक कुल योग 92

माफ कीजिए, आप को कष्ट दिया

लेख ● खेमचंद



आकस्मिक रूप में सभी को दूसरों की मदद या सहयोग की जरूरत जाती है. वैसे भी, पड़ोसियों का यही व्य होता है कि एक व्यक्ति जरूरत पर दूसरे व्यक्ति के काम आने के लिए र रहे.

लेकिन यदि हम दूसरों से मदद लेते उन्हें अंदर ही अंदर चिढ़नेकुढ़ने के लिए बूर करते रहेंगे तो इस का यही मतलब कि हम दूसरों की नहीं, केवल अपनी धा का ध्यान रखते हैं.

प्रेम सिंह के यहां जब भी कोई मेहमान है तो उस का पड़ोसी राम लाल समझ है कि इस बार फिर कुछ बरतन, र आदि प्रेम सिंह उस से मांगेगा. नाल की पत्नी कहती है, "आ गई फिर वन ये लोग हम से ज्यादा कमाते हैं, फिर भी एकाध बिस्तर और कुछ अतिरिक्त बरतन नहीं खरीदते."

प्रेम सिंह व्यर्थ के रिवाजों और आदतों को पूरा करने के लिए तो खूब रुपए खर्च करता है. कई बार तो वह इस के लिए अनेक प्रकार के सामान पड़ोसियों से भी मांग लेता है. इस कारण रामलाल का परिवार प्रेम सिंह के परिवार से सच्ची आत्मीयता नहीं रख पाता. प्रेम सिंह के यहां आने वाले लोगों से भी रामलाल का परिवार आत्मीयता बढ़ाना ठीक नहीं समझता.

पूरनचंद को सिनेमा का दूसरा शो देखने की पुरानी आदत है. जब भी वह सिनेमा देख कर लौटता है, तब मकान का फाटक खोलने हेतु मकानमालिक के परिवार के किसी न किसी सदस्य को जगाता है. हर बार पूरनचंद कहता है, "मैं आप लोगों को बारबार कष्ट देता रहता है."

मोहनलाल का पड़ोसी पत्रपत्रिकाओं का बड़ा शौकीन है. जब उस के यहां अखबार वाला पहुंचता है, तब वह काम पर जा चुका होता है. तब उस का पड़ोसी शंकर अखबार को अपने कब्जे में ले लेता है. वह उसे शाम को देने तब आता है, जब मोहनलाल अपने

परिजनों के साथ व्यस्त रहता है. 'माफ करना... आप को कष्ट दिया' कहने के बाद शंकर वहां से टलता नहीं, बल्कि तब तक मोहनलाल से हालचाल पूछता रहता है, जब तक उस की छोटी बेटी यह कहने नहीं आ जाती कि मां आप को बुला रही हैं.

एक तो किसी की चीज दिन भर अपने कब्जे में रखो, दूसरे उसे असमय लौटाने आओ, तीसरे हालचाल पूछने के चालू तरीके के साथ वहीं डट कर बैठ जाओ. इस पर भी यह कथन कि 'आप को बेवक्त परेशान किया' कोई शिष्टाचार नहीं दर्शाता, बल्कि खुदगर्जी को ढकने की घटिया कोशिश का दर्पण बन जाता है.

हमारे एक मित्र अपने घर वक्तबेवक्त

मदद की जरूरत हो, तब उस के अवश्य आएं. जहां पड़ोसी अपनी लाप और आदत के कारण बारबार मदद म रहे, वहां उसे यह जता देना ठीक रहता उसकी मांगें अनुचित हैं.

मैं ने जब थोड़ा लिखना शुरू किय रुपए जुटा कर हिंदी का टाइपराइटर ख लिया. बस, कुछ परिचित यहांवहां से व कुछ टाइप कराने आने लगे. मैं प्रायः प्र पर रहता हूं और अधिकांश रचनाएं प्रवासकाल में ही लिखता हूं. इसलिए अपनी लिखी सामग्री भी टाइप नहीं पाता. अतः एक दिन उन लोगों से निवेदन किया, "मैं इतना समय नहीं पाता कि किसी अन्य व्यक्ति का काम

अचानक जरूरत पड़ने पर पड़ोसी की सहायता करना सामाजिक जीवन की प्रथम आवश्यकता है. लेकिन जो पड़ोसी अपना अधिकार समझ कर वक्तबेवक्त बारबार मांगने आ जाता है उस से परेशानी होना स्वाभाविक है. इसलिए उस से छुटकारा पाना जरूरी हो जाता है. पर छुटकारा मिले तो कैसे मिले?

आ टपकने वाले अपने एक पड़ोसी के तकाजों से परेशान थे. एक दिन पड़ोसी ने जैसे ही कहा, "माफ कीजिए, आप को कष्ट दिया", वैसे ही मित्र की पत्नी ने बड़ी हिम्मत के साथ कहा, "वह तो आप की नई आदत नहीं है, मगर अब जल्दी से यह बताइए कि आगे क्या इरादा है?"

उस दिन के बाद पड़ोसी ने ऊलजलूल चीजें मांगनी बंद कर दीं. एक दिन उसी पड़ोसी का लाड़ला सीढ़ियों से गिर गया तो मेरे उक्त मित्र की पत्नी ने ही पड़ोसी की अनुपस्थिति में लड़के को हस्पताल पहुंचाया. इतना ही नहीं, कई दिनों तक उस की सेवाशुश्रूषा में डटी रहीं.

वास्तव में पड़ोसी का अर्थ यही है कि जब दूसरे पड़ोसी को आकस्मिक रूप से

सकूं."

तब एक सज्जन स्वयं ही टाइपराइ के सम्मुख बैठ कर बोले, "यदि आप बुर मानें तो मैं स्वयं टाइप कर लेता हूं." उ अगली बार यह सज्जन फिर आए, तो मैं उन का काम ले कर कहा, "आप शाम को आइएगा, मैं टाइप करा कर रखूंगा."

शाम को जब मैं ने टाइप किए हुए के कागज उन्हें थमाए तो वह चौंक क बोले, "अरे, क्या आप ने नया टाइपराइट खरीद लिया? इस का टाइप तो बड़ा सुं है."

"नहीं, मैं ने आप का काम बाजार कराया है. इस से मेरा काफी समय बच ग और आप का काम भी अच्छा हो गया." मैं कहा तो उन का चेहरा उतर गया. वह जे



अचानक जरूरत पड़ने पर मांगना बुरी बात नहीं है लेकिन बारबार मांगना पड़ोसी के लिए परेशानी का कारण बन जाता है.

थ डालने लगे तो मैं ने कहा, "आप में टाइप कराते रहे हैं, इसलिए मैं आप नहीं लूंगा."

इस तरह उन से पिंड छूटा.

जब हम बर्फीले क्षेत्र किन्नौर में रहते ब कुछ लोग हम से रजाई मांगते थे. म मैदानी भाग में रहते हैं तो लोग हम पंखा मांगते हैं. हम तब तक इनकार करते, जब तक यह पता न चल पाए कि हमारे सामान को अपना सामान और स का अवैतनिक चौकीदार समझते हैं. लभ चीजें खरीद लेने के बजाय अड़ोस से मांगने वाले लोगों को भी हम 'नहीं' में संकोच नहीं करते, क्योंकि तनाव दा होता है, जब आप किसी की र की फरमाइशें भी पूरी करते जाएं आप की चीजों या आप का समय ड़ा जाता रहे और अचानक आप र कर दें.

खलल डालने वाले या 'डिस्टर्ब' करने अकसर अच्छेअच्छे शब्दों का इस्तेमाल मक्कारी को छिपाने के लिए करते हैं. ऐसे लोगों की नीयत प्रारंभ में ही जा सकती है. केवल मदद लेने (लेकिन मदद न देने) वाले लोग ज्यादा दिनों तक किसी से अपना संबंध मधुर नहीं बनाए रख पाते.

कुछ लोग बगैर किसी प्रयोजन के बीच में आ कर बैठ जाते हैं. वे जब यह ताड़ लेते हैं कि उन्होंने आप को परेशान किया तो आप उन से साफ कह सकते हैं कि वे भला माने या बुरा, उन्हें अभी उठ कर चले जाना चाहिए, (ताकि आप के अच्छे संपर्क बने रहें.)

बारबार खलल डालने के लिए लोग कई चीजें, जैसे, मोटर साइकिल, साइकिल, अखबार, बरतन, आटा, चीनी, दरी, कुरसी, मेज, चारपाई, बिस्तर, इस्तरी आदि मांगने आते हैं.

यदि ये चीजें मांगने की उन की आदत बंद न हो, तो आप उन से कह सकते हैं "माफ कीजिए या न कीजिए, कृपया भविष्य में कष्ट मत दीजिए." हां, ऐसे लोगों से आप जरा सावधान अवश्य रहें, क्योंकि ये बदला लेने की ताक में रह सकते हैं. ●

घर दुलहन की तरह नहीं तो नवोढा की तरह शालीनता से अवश्य सजा हुआ था. अभिलाषा का आज पूरा दिन इसे सजाने तथा रसोई समेटने में ही गुजरा था. 5 बजने को थे, अभिनव आता ही होगा, यह सोच कर उस ने झटपट अपने 3 वर्षीय पुत्र को तैयार किया और फिर स्वयं भी तैयार हो गई. सारा काम निबट चुका था. अतः वह बेचैनी से अभिनव का इंतजार करने लगी. लेकिन आज उसे देर हो गई. घड़ी में पौने 6 बजे थे. उस ने बेकरारी में चहलकदमी शुरू कर दी. अवि खिलौनों में मस्त था. अचानक घंटी बजी. उस ने दरवाजा खोला. अभिनव खड़ा मुसकरा रहा था.

"हैप्पी बर्थ डे, स्वीट हार्ट! जन्मदिन बहुतबहुत मुबारक हो." अभिनव ने दरवाजे से प्रवेश करते हुए कहा और थोड़ा झुक कर उस के माथे पर होंठ रख दिए.

"तो तुम्हें मेरा जन्मदिन याद था?" अभिलाषा जो अभिनव को अचानक बता कर चकित करना चाहती थी स्वयं आश्चर्य में पड़ गई.

"जी हां, बिलकुल. आखिर तुम्हारा जन्मदिन कैसे भूल सकता हूं?" यह कहते

लेख • आलोक यादव



उपहार जब पत्नी

हुए अभिनव ने अब तक पीछे किए हुए हाथों को आगे किया और एक बड़ा सा पैकेट उसे पकड़ा दिया. एक अन्य छोटा सा पैकेट ले कर वह वहीं खेल रहे अविरल की ओर बढ़ गया.

अभिलाषा ने बेताब हो उस पै
खोलना शुरू किया मगर ज्यों ही
खुला उस के सारे उत्साह पर घड़ों पा
गया. अभिनव मिक्सी ले कर आया



गी कि आखिर यह मिक्सी का
कस लिए? हां, उस ने काफी समय
अवश्य लगा रखी थी कि यदि एक
तो घर के कई कार्य आसान हो

कन आज के दिन यही चीज
ने योग्य बची थी क्या? क्या रसोई
उस का कोई अस्तित्व नहीं है? क्या

उस की व्यक्तिगत आवश्यकता या पसंद की वस्तु नहीं खरीदी जा सकती थी?

अभिलाषा का उत्साह ठंडा पड़ चुका था.

आखिर ऐसा क्यों होता है? पति पत्नी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को परिवार की आवश्यकताओं में क्यों खो देता है? वह पत्नी को रसोई और बच्चों की दुनिया से अलग कर क्यों नहीं देख पाता?

पत्नियों को गृहिणी के रूप में देखने और उस का पर्यायवाची समझने की प्रथा हमारे समाज में सदियों पुरानी है. यह कब और कैसे शुरू हुई तथा इस में किस का दोष है, यह न तो बहस योग्य है और न ही फलदेय. किंतु आज की परिस्थितियों में देखें तो इस स्थिति के लिए स्त्री खुद जिम्मेदार है. लगभग 90% स्त्रियां विवाह के 2-4 वर्ष बाद ही स्वयं को रसोई और बच्चों में इस कदर सीमित कर लेती हैं कि इस के अतिरिक्त वे कुछ भी न करती हैं और न सोचती हैं.

यही नहीं कई बार पत्नियां समय गुजरने के साथसाथ पत्नी कम और मां ज्यादा हो जाती हैं. वे पति के साथ उस गरमजोशी का अनुभव नहीं कर पातीं जो कभी उन के रिश्ते की सब से महत्त्वपूर्ण कड़ी थी. यौन तुष्टि को भी वे प्रजनन से जोड़ कर बच्चे होने के बाद उस से विमुख हो जाती हैं. यह बहुत गलत धारणा है. यौन पतिपत्नी के संबंधों को गति व जीवंतता देता है. यह उन के बीच बहने वाली प्रेम व ऊर्जा की धारा है.

दरअसल जब पति अपनी पत्नी को केवल गृहिणी के रूप में देखता एवं महसूस करता है तो अकसर उस की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को घरेलू आवश्यकताओं से

जन्मदिन पर उपहार तो सभी देते हैं परंतु उपहार व्यक्ति विशे... अनुकूल हो तो उस की कीमत कई गुना बढ़ जाती है. फिर अगर उप... पत्नी के लिए हो तो वह ऐसा होना चाहिए जो एक अनोखी यादगार ... कर रह जाए.

भिन्न रूप में नहीं देख पाता. ऐसे में वह 'मिक्सी' को भी पत्नी की व्यक्तिगत आवश्यकता ही मान लेगा.

अधिकांशतः पत्नियां पति के इस तरह के उपहार को एक मौन के साथ स्वीकार कर लेती हैं किंतु अभिलाषा को लगा कि यदि पति का चिंतन बदलने का प्रयास न किया गया तो यह हमेशा के लिए प्रथा बन जाएगी. बात केवल उपहार या उस की उपयोगिता की ही नहीं है बल्कि उस से जुड़े भावनात्मक मूल्यों व विचारों की है. जन्मदिन उस का नितांत व्यक्तिगत मामला था. इस में कुछ ऐसा उपहार होना चाहिए था जो उस का और सिर्फ उस का हो. उस ने निश्चय किया कि वह अभिनव को इस बारे में धैर्यपूर्वक समझाएगी.

उसी रात बातों ही बातों में उस ने अभिनव को अपनी बात समझा दी. तब जा कर अभिनव को अपनी भूल का एहसास हुआ. ऐसा कर अभिलाषा ने ठीक ही किया. इस के दो कारण हैं : प्रथम, पतिपत्नी जैसे घनिष्ठतम रिश्ते में कोई बात मन में दबाए रखना अच्छी नहीं, और दूसरा, यदि पति कोई भूल करता है तो उसे इस का एहसास कराना पत्नी का कर्तव्य भी है. इसी से रिश्ते में खुलापन भी आता है.

हो सकता है, कई बार आप उपहार देने की स्थिति में न हों. ऐसे में कुछ नए ढंग से प्यार से सराबोर बधाइयां व शुभकामनाएं दे कर भी उपहार की कमी पूरी की जा सकती है. उपहार का उद्देश्य यह प्रदर्शित करना है कि आप उसे कितना प्यार करते हैं तथा उस का कितना खयाल करते हैं. यही कार्य बिना उपहार दिए केवल शब्दों, भावनाओं व क्रियाओं के माध्यम से भी बखूबी किया जा सकता है.

अनेक बार तो बेचारे पति को यही नहीं समझ में आता है कि उपहार ... दिया जाए. मेरे एक मित्र ने अपनी ... जन्मदिन का एक रोचक वर्णन ... पतिपत्नी दोनों ही डाक्टर थे तथा ... क्लिनिक के अलगअलग चैंबरों में बै... पत्नी का जन्मदिन आया तो बेचारे ... तीन दिन पहले से ही बहुत परेशान ... आखिर उपहार क्या दिया जाए.

अचानक मित्र को एक खयाल ... एक खूबसूरत से महकते गुलाबी काग... उन्होंने केवल इतना लिखा, "इस ध... तुम्हारी छब्बीसवीं वर्षगांठ पर दुनि... मेरे लिए एक खूबसूरत स्थान बना... कृतज्ञता में तुम्हारा..." और लिफा... डाल कर 2 दिन पूर्व डाक में डाल दि...

ठीक जन्मदिन वाले दिन वह ... ज्यादा ही व्यस्तता का प्रदर्शन करते ... बिना पत्नी को बधाई दिए क्लिनिक ... गए. पत्नी भी बाद में आ कर अपने चैं... बैठ गई. दोपहर को डाकिया वह लि... पत्नी को दे गया. जब उन्होंने लिफाफा ... तो उन की पत्नी के आश्चर्य मिश्रित सु... सीमा न रही.

शाम को जब मित्र घर लौटे तो ... उन की जीवनसाथी ने जिस तू... संवेगमय प्यार के साथ धन्यवाद दिया ... उन के लिए यादगार बन गया. वह आज ... याद करते हैं कि उस से पूर्व उन के उपहा... बड़ेबड़े पैकेट भी वह काम नहीं कर पा... जो एक छोटे से लिफाफे ने कर दिखा...

अवसर विशेष पर दिए गए उप... आप के प्यार के अतिरिक्त आप की रुचि... व उस व्यक्ति के प्रति आप के दृष्टिकोण... दर्शाते हैं. पति को चाहिए कि अपनी ... के जन्मदिन या उस की विशेष सफलता... विवाह की वर्षगांठ के अवसर पर उप... चुनते समय सावधानी बरतें.

स्ते के बोझ
ले सिसकता
चपन

● डा. सुमन कौल



नर्सरी में पढ़ रहे अपने बेटे के स्कूल में उस की किताबें लेने जब मुझे बुलाया गया तो दफ्तर से छुट्टी ले कर इस छोटे से काम के लिए जाने में मुझे बड़ी झुंझलाहट हुई कि जो चार किताबकापियां होंगी, भला वे बच्चे या नौकर के हाथ क्यों नहीं भेज दीं. खैर, बच्चे की खातिर जाना तो पड़ा ही.

स्कूल के अध्यापक ने 150 रुपए की रसीद और 12 किताबकापियों का सेट जब मेरी ओर बढ़ाया तो मैं ने दोबारा पूछ कर स्वयं को आश्वस्त किया कि क्या यह नर्सरी के लिए है. इस में हिंदी, अंगरेजी वर्णमाला की किताबें, दोनों भाषाओं की नर्सरी गीतों की किताबें, गणित और कला सहित चारों विषयों की अभ्यास पुस्तकें, चार कापियां और एक डायरी थी.

सवा 3 साल का अबोध बच्चा जो अभी 'च' को 'त' और 'र' को 'ल' ही बोल पाता है, कमर पर बंधे इस बोझ को रोज सुबहशाम ढोए तो क्या यह बचपन के साथ अन्याय नहीं होगा.

निस्संदेह शिक्षा ज्ञान की वह मशाल है जिस के सहारे जीवन की समस्याओं और अज्ञान अंधकार को मिटाया जा सकता है. परंतु जब किसी भी कार्य में सच्ची लगन का अभाव और झूठ दिखावा या व्यावसायिकता घर कर ले तो अभीष्ट उद्देश्य की प्राप्ति संदिग्ध हो जाती है.

शिक्षा तो पहले भी दी जाती थी, किंतु

तब किताबों के भार तले बचपन का दम नहीं घुटता था. क्या यह बोझ लादे बिना वे अज्ञानी ही रह गए थे.

आज स्कूल जाने वाले छोटेछोटे बच्चे स्कूल को न टाली जाने वाली मुसीबत मानते हैं. वे औसतन कमजोर व पीले, बचपन की ताजगी और उमंग रहित, किताबी कीड़े बनते जा रहे हैं. यहां तक कि उन की बातों के विषय भी पढ़ाई के इर्दगिर्द ही चक्कर लगाते हैं.

किताबों के ढेर से ऊब कर ही छठी कक्षा में पढ़ने वाली मनीषा कहती है, "मेरा दिल कहता है रोज इतवार आए. फिर मैं खूब खेलूंगी." वह अपनी दिनचर्या के बारे में बताती है कि वह स्कूल आने के लिए सुबह 7 बजे घर से निकलती है और स्कूल में पढ़ कर शाम 4 बजे घर पहुंचती है. वहां दोपहर को

दिखानी होती हैं. कक्षा में काम कापियों पर स्कूल में काम करते किताब तो कोई भी घर रह गई मिलेगी.

सब विषयों के कक्षा कार्य की और जिस चीज की जरूरत घर कर स्कूल में ही हो, क्या वह सब स्कूल की अलमारी में ही नहीं सकता? इस के जवाब में उसी अध्यापक ने बताया, "यह संभव कक्षा के 40-50 बच्चों की यदि रो कापियां भी यहां रखी जाएंगी तो जाएंगी और उन के खोने की संभाव जाएगी. रोज उन्हें रखने और बहुत समय लगेगा."

आज के इस कड़ी प्रतियोगिता में नौकरी के अवसरों की कमी के

निस्संदेह आरंभ से ही बच्चों को शिक्षा देना आवश्यक है, परंतु क शिक्षा का मापदंड मात्र स्कूल की किताबें ही हैं? शायद नहीं. क्यों बच्चों को सिखाने व पढ़ाने के कई ऐसे आयाम भी हैं जिन के माध्यम बच्चा किताबों की अपेक्षा बहुत जल्दी व आसानी से सीख जाता है फिर उन के बचपन को बस्ते के बोझ तले दबाने का औचित्य क्या है

उसे बहुत नींद आती है, पर वह सो नहीं सकती. शाम को वह ट्यूशन पढ़ने जाती है. वहां से आ कर वह स्कूल का दिया गृहकार्य करती है. रात को पिता जी उसे पढ़ाते हैं.

हम ने सचमुच इन बच्चों के बचपन को किताबों तले रौंद कर इन का खेलने का समय चुरा लिया है. हर समय किताबों पर झुके बच्चों को देख कर लगता है कि इन पर बचपन आया ही नहीं. वे स्कूल जाते हैं तो पढ़ने के लिए और घर लौटते हैं तो पढ़ने के लिए.

नवयुग स्कूल के छठी कक्षा के कुलदीप से जब कहा गया कि उसे वही पुस्तकें स्कूल ले जानी चाहिए जो उस दिन वहां पढ़ाई जाएंगी और लिखने के लिए एक कापी, तो वह छूटते ही बोला, " नहीं, हमें रोज सब विषयों के गृहकार्य की कापियां ला कर

मातापिता भी चाहते हैं कि उन के पढ़ाई में अधिक से अधिक जुटे सतभांवा स्कूल की एक शिक्षिका ने ब "मातापिता अकसर हमें उन के अपने पर अलग से ध्यान देने के लिए कह भला इन बच्चों की कक्षा में 45 मिन एकएक बच्चे पर कितना ध्यान दिय सकता है. पाठ्यक्रम इतना अधिक है अतिरिक्त कक्षा ले कर भी मुशकिल से करा पाते हैं."

पाठ्यक्रम ज्यादा ही नहीं, कठिन काफी है. छठी कक्षा के गणित के स इतने कठिन हैं कि कई बार अध्यापक उलझ कर रह जाते हैं. एक अभिभा सुरेंद्रजीत का कहना है, "रेखागणित कि थ्योरम मैं ने नवींदसवीं कक्षा में पढ़ी वही आज मेरी बेटी छठी कक्षा में पढ़ है.



हर वक्त पढ़ाई की चिंता बच्चे के कोमल मनमस्तिष्क को विकसित करने की अपेक्षा कुंठित ही करती है.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा पहली कक्षा में पढ़ाने के लिए 42 पाठ निर्धारित किए गए हैं. शिक्षकों की शिकायत है कि ये पाठ बच्चों के लिए रुचिकर और उन की जिज्ञासा को शांत करने वाले न हो कर बहुत लंबे, उबाऊ और अर्थहीन हैं. जिस उम्र में बच्चे अभी शब्दों को अच्छी तरह पहचानते तक नहीं, उन्हें शिक्षक 42 पाठ कैसे पढ़ाते होंगे?

इन लंबेंचौड़े पाठ्यक्रमों को पूरा करने के लिए शिक्षकों और मातापिता में रस्साकशी चलती रहती है. शिक्षक आरोप लगाते हैं कि मातापिता बच्चों को दाखिला दिला कर सब जिम्मेदारी शिक्षकों की ही मान बैठते हैं और स्वयं कुछ नहीं पढ़ाते. मातापिता की आम शिकायत है कि कोर्स इतने अधिक रख दिए गए हैं कि अध्यापक पूरे करा ही नहीं पाते और घर पर करने के लिए बच्चों को ढेरों काम दे देते हैं. स्कूल में तो बस जल्दीजल्दी बिना जाने कि बच्चे समझ पाए हैं या नहीं, जैसेतैसे पाठ्यक्रम पूरा करा दिया जाता है.

4 वर्षीया सुमति की मां का कहना है, 'गरमी की छुट्टियों में हमेशा मेरे दिमाग पर बोझ बना रहता था कि बच्ची को छुट्टियों में दिया गया बहुत सारा काम कराना है महीने पहले स्कूल जाना शुरू करने व बच्ची को डेढ़ माह की छुट्टियों में जो दिया गया था. वह इस प्रकार है– अंगरे हिंदी में अपना नाम लिखना सीखना, भाषाओं की वर्णमाला का ज्ञान, 1 से 10 गिनती लिखना सीखना, अंगरेजी बोलने अभ्यास, जानवरों की तसवीरों को काट एलबम बनाना और छुट्टियों में हुए अनु की तसवीरें बनानी, जिन पर मातापिता टिप्पणी लिखनी थी. अब भला इ पाठ्यक्रम, इतने गृहकार्य के बोझ तले बच की उमंग, मस्ती, आजादी भरी दु घुटती नहीं जान पड़ती?'

कई शिक्षकों और प्रधानाचार्यों राय में छोटी कक्षाओं के पाठ्यक्रम त्रुटि हैं. किताबें काफी मोटीमोटी और भा भरकम हैं जो बच्चों को शिक्षित करने अपेक्षा भार ढोने में सक्षम कुली ही अ बनाती हैं. सामान्यत: आजकल स्कूल वाले हर बच्चे के बस्ते में कम से कम किताबें, 5 कापियां कक्षा कार्य की औ

र्य की. ज्यामिति डब्बा, 1 खाने का
, 1 पानी की बोतल होती है.
बहुत से पब्लिक स्कूलों में राष्ट्रीय
क अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद
निर्धारित पाठ्यक्रम न पढ़ा कर अपना
पाठ्यक्रम पढ़ाया जा रहा है ताकि
के लिए पढ़ाई थोड़ी आसान हो सके.
ार दिल्ली के कुछ गिनेचुने स्कूलों ने
को बस्तों के भार और पुस्तकों की
कता से छुटकारा देने के लिए पढ़ाई का
या तरीका अपनाया है, जिस में बच्चों
पर करने के लिए गृहकार्य नहीं दिया
है, बल्कि सारा काम स्कूल में ही
ा जाता है. उन्हें याद करने के काम
छ ही किताबें घर लानी होती हैं. बाकी
पीकिताबें स्कूल में ही रखी जाती हैं.
स्कूल से आतेजाते उन के पास कई
ोझ नहीं होता है, बल्कि हलकाफुलका
ता होता है. उन्हें घर पर खेलने के
ी पर्याप्त समय मिल जाता है.
:यह उचित कदम है.
छोटी कक्षा के पाठ्यक्रमों पर एक बार
विचार किया जाना चाहिए. उन में
स्तार की अपेक्षा ऐसे अध्यायों और
को संकलित किया जाना चाहिए जो
क्रियाशीलता बढ़ाए, उन की बुद्धि
कर ज्ञान का संचार करें. केवल एक
परीक्षा के आधार पर ही बच्चे को
नहीं किया जाना चाहिए बल्कि पूरे
मयसमय पर ली गई लिखित और
परीक्षा, सामान्य व व्यावहारिक
परीक्षा, अतिरिक्त योग्यता व स्कूल
तिक कार्यक्रमों, खेलों, एन.सी.सी.,
एस. अथवा अन्य सामाजिक
पों में उन के कार्यनिष्पादन तथा
को ध्यान में रखते हुए पाक्षिक
ासिक प्रगति विवरण बनाते रहना
और बाद में उसी के आधार पर
परिणाम घोषित होना चाहिए.
जा यह होगा कि बच्चों पर पढ़ाई
थ बोझ नहीं पड़ेगा और वे परीक्षा
हीं, गुन कर पास करेंगे. ●

संबंध

धारावाहिक उपन्यास ● जसोदा अग्रवाल

"शिखा."

आगे बढ़ने के लिए उठाया गया शिखा का पांव पल भर को जैसे हवा में ही ठहर कर रह गया. स्वर जानापहचाना था. प्रथम श्रेणी के कूपे में प्रवेश करती हुई शिखा अपना सामान रखवाने में इतनी व्यस्त हो गई थी कि वहां पहले से बैठे युवक





फ उस का ध्यान बिलकुल न जा पाया

र अपना नाम ले कर पुकारे जाने पर ने अचकचा कर आवाज की दिशा में उस की आंखें युवक से चिपक कर

शेखर, तुम...'' शिखा के थरथराते सिर्फ इतना ही कह सके. शेखर की उपस्थिति उस के लिए अप्रत्याशित कस्मिक थी. उस ने कभी सोचा भी कि वह उसे यों एकाएक ऐसी ति में मिलेगा.

मैडम, अपने कूपे में चलिए. रास्ता कीजिए.'' किसी दूसरे यात्री की शिखा को हड़बड़ा कर कूपे में होने के लिए बाध्य कर दिया.

म श्रेणी डब्बे में यह कूपा सिर्फ दो ला था. शिखा का सामान ले कर ी ने उस का सामान अंदर रख दिया. ली को पैसे दे कर विदा किया. उस से साफ लग रहा था कि कूपे में उपस्थित होने की घटना से वह अपनेआप को आश्वस्त नहीं कर उस का दिल बुरी तरह धड़क रहा

खा ने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि एक साल बाद शेखर से उस की पहली मुलाकात इस तरह ऐसे अप्रत्याशित और आकस्मिक ढंग से होगी.

उन दोनों को अलग हुए पूरा एक साल गुजर चुका था. किंतु एक ही शहर में रहने के बावजूद भी कभी दोनों की संयोग से भी मुलाकात नहीं हो पाई थी. इस अप्रत्याशित मुलाकात ने शिखा को विचारों के अथाह समुद्र में फेंक दिया. वह अपने को संभाल नहीं पा रही थी.

जितनी विचित्र परिस्थितियों में वह शेखर से अलग हुई थी, उतनी ही विचित्र परिस्थितियों में उस की शेखर से मुलाकात हुई थी.

''शिखा, क्या खड़ी रहोगी, बैठोगी नहीं?''

एक बार फिर शिखा को झटका लगा. विचारों में खो कर वह सचमुच ही बैठना भूल गई थी. उस ने एक गहरी सांस ली और सीट पर बैठ गई. बैठते समय उस ने इस बात का पूरा ध्यान रखा कि शेखर से दो हाथ की दूरी बनी रहे.

शेखर ने भी इस बात को स्पष्ट रूप से महसूस किया था. अपने प्रति इस बेरुखी पर वह अपना दिल मसोस कर रह गया. पर इस बेरुखी का कारण मालूम था उसे. कोई एक दिन में तो उस का व्यवहार शेखर के प्रति रूखा हुआ नहीं था.

''कहां जा रही हो?'' बातों का सिलसिला जारी रखने के लिए शेखर ने पूछा.

''जहां तक इस ट्रेन की मंजिल है.'' शिखा बोली, ''तुम कहां जा रहे हो?''

''वहीं तक, जहां तक यह ट्रेन जाएगी.''

''यानी हमारी मंजिल एक ही है.''

''कल तक तो थी, पर शायद अब नहीं है.''

शेखर के कथन पर शिखा खामोश रही. नजरें ट्रेन के फर्श को घूरती रहीं.

''यानी आज की सारी रात मुझे इस

जितनी विचित्र परिस्थितियों में शेखर और शिखा का तलाक हुआ उतनी ही विचित्र परिस्थितियों में हुई एक साल बाद मुलाकात. छोटी सी मुलाकात सारे गिलेशिकवों को मिटा कर टूटे संबंधों को अटूट संबंधों की गिरफ्त में जकड़ देगी, यह तो किसी ने सोचा भी न

कूपे में तुम्हारे साथ गुजारनी है." कुछ देर खामोश रहने के बाद शिखा ने कहा.

"हां."

"और वह भी अकेले." जाने क्यों शिखा का स्वर थरथरा उठा था.

"क्यों, मुझ से डर लग रहा है?" जाने क्यों शेखर का स्वर भी एकाएक भारी हो उठा.

"डर?" शिखा ने जैसे स्वर के वजन को तौलने का प्रयास करते हुए कहा, "नहीं, डर भला किस बात का... फिर तुम से कैसा डर."

"क्यों, क्या इतनी जल्दी भूल गईं मेरे स्वभाव को?" शेखर के स्वर में वितृष्णा का भाव आ गया, "क्या भूल गईं कि मैं कितना क्रोधी इनसान हूं? क्या भूल गई कि तुम्हीं ने कहा था कि मैं इनसान की शक्ल में भेड़िया हूं? कितना घिनौना और घृणित लगता था तुम्हें मेरा चेहरा. लगता है, तुम यह भी भूल गईं कि तुम ने कहा था कि तुम मेरे साथ एक रात भी नहीं गुजार सकतीं. क्या एक वर्ष के तलाकशुदा जीवन में सब कुछ भूल बैठी हो तुम? ऐसी बातें भी, जो तुम ने कभी न भुलाने की प्रतिज्ञा की थी."

"नहीं," शिखा अपनी पीठ को सीट की पुश्त से टिकाते हुए हौले से बोली, "मैं इस एक वर्ष में कुछ नहीं भूली हूं और न ही मैं ने भुलाना ही चाहा. मुझे आज भी तुम्हारे साथ बिताया गया एकएक पल उसी तरह याद है, जैसे कल की ही बात हो."

"कभी चाहा नहीं कि सबकुछ भूल जाओ."

"नहीं, कभी नहीं चाहा कि सबकुछ भूल जाऊं. कुछ तो इसलिए कि तुम हमेशा घृणा के रूप में मेरे दिल में जीवित रहो और कुछ इसलिए कि जो हुआ, उस में किस का कितना दोष था."

"बहुत घृणा है तुम्हें, मुझ से?

"नहीं, घृणा तो मैं तुम से कभी नहीं पाई, शायद तब भी नहीं, जब ह एक थे. एक ही नाव के सवार थे. तब तुम से कभी घृणा नहीं कर पाई थी

"क्यों?" एकाएक शेखर का थोड़ा तीव्र हो गया, "क्यों नहीं हुई तु से घृणा? क्यों नहीं भुलाया तुम ने मुझे याद रहा मैं तुम्हें? मेरा और तुम्हारा क्या है?"

"मालूम नहीं, क्यों नहीं भुला प तुम्हें. बस याद रहे तुम. चाहा कि घृ रूप में याद रहो, पर ऐसा नहीं हो सक नहीं हो सका, कभी नहीं समझ पाई." की आंखें जैसे शून्य पर टिकी हुई थीं में गंभीरता थी.

फिर धीरेधीरे उस की आंखें शे चेहरे पर आ टिकीं. कुछ भी तो नहीं था. वही चेहरा, वही आंखें, वही पतले होंठ, वही तीखे नाकनक्श. गंभीर क्रोधित होने पर आंखों में नमी आ जाने अजीब सा गुण. सब कुछ वही तो था. पहले जब सगाई के अवसर पर पहल देखा था, तब से अब तक बहुत परिवर्तन नहीं आया था शेखर के चेह

"क्या देख रही हो?" शेखर ने

"तुम्हें."

"क्या पहले कभी नहीं देखा?"

"देखा है. तभी तो आज एक बा देखने का साहस जुटा पा रही हूं. देख कि कुछ भी तो नहीं बदला. आज भी कुछ वैसा ही है जैसा 4 वर्ष पहले हमारी मिलन की रात को था. समय क तुम्हारे चेहरे पर कहीं नजर नहीं अ

"पहली रात को इतनी गौर से दे तुम ने मुझे?"



शेखर से पांच सौ का नोट ले कर चंचल बोली, 'रात ग्यारह बजे अपने कमरे में पहुंच जाना वहां तुम्हारी मुलाकात भाभी से हो जाएगी'

झा तो था, पर समझा नहीं. काश,
ी."

दली तो तुम भी नहीं. आज भी सब
ही है. वही सुंदर आंखें, वही सुंदर
ही रस भरे होंठ, जिन्होंने मुझे
र में तुम्हारा दीवाना बना दिया

मिला तुम्हें इन रस भरे होठों से?
मैं तुम्हें? मृगमरीचिका से ज्यादा
हो पाई मैं तुम्हारे लिए? इस
ने तुम्हें दिया क्या? कुछ भी तो
ाय मानसिक वेदना के तुम्हें मुझ
पाया?"

"ऐसा न कहो शिखा. दोष अकेले तुम्हारा ही तो नहीं था."

"कुछ दोष तो मेरा था ही... जो दोष मेरा था, वह तो मुझे स्वीकारना ही होगा. यह कड़वा सत्य है कि मैं ने कभी तुम्हें समझने का प्रयास नहीं किया." शिखा के स्वर में वितृष्णा का भाव उभर आया.

"इस तरह अपनेआप को दोषी महसूस क्यों करती हो तुम?"

"दोषी तो मैं हूं ही. शायद इसी लिए तुम से अलग हो कर भी मैं बहुत ज्यादा सुखी नहीं रह पाई. इस एक वर्ष में बहुत कुछ सोचा मैं ने. विचारों का मंथन सा हुआ है,



आंसू

वशता कंठ में घुलने लगी,
लक में आंसू सूख कर चुभने लगे.
तना के सर्ग क्या खत्म होंगे
आतंकित मन में कैक्टस फैले रहेंगे?

—निर्मला जौहरी

ं. फिर तुम से अलग हो कर सोचने वचार करने के सिवाय मेरे पास और क्या? तुम्हें खो कर मैं ने जो पाना वह कभी नहीं पा सकी."

शेखर खामोश रहा. शिखा का यह सा रूप था जो उस ने पहले कभी नहीं ा. अप्रत्याशित और आकस्मिक रूप ने वाली यह मुलाकात बहुत सी ही और अनहुई बातों का खुलासा कर ी.

'कई बार दिल ने चाहा कि तुम से ' शिखा यों बोल रही थी, जैसे जो स के दिल में था, आज वह उसे अपने द्वारा व्यक्त कर देना चाहती हो, "पर किस अज्ञात भावना से प्रेरित हो कर नहीं कर पाई. मेरे कदम उस दिशा में हीं उठ पाए, जिस दिशा में मैं तुम्हें पा थी."

यह एकदूसरे को दोष देने का समय शिखा."

में तुम्हें कहां दोष दे रही हूं. सारा मैं ने अपने सिर ले लिया है."

किस ने कहा तुम्हें सारा दोष अपने सिर लेने को?" एकाएक शेखर का स्वर तीखा हो गया, "क्या मैं ने?"

शिखा के होंठें पर हंसी की हलकी सी लहर दौड़ गई. "बस, यही तो खराबी है तुम में. जरा सी बात पर क्रोधित हो उठते हो. अपने इस अवगुण पर काबू पाया होता तुम ने तो बहुत सी अनकही समस्याएं स्वयं ही सुलझ जातीं."

"शायद ठीक कहती हो तुम." शेखर के स्वर में जैसे अपराधबोध था, "जितनी तुम दोषी थीं, उतना मैं भी था. दोनों समान रूप से दोषी थे."

"टिकट..." कूपे के दरवाजे से टीटीई ने पुकारा.

उस की आवाज सुन कर दोनों ही चौंक पड़े. उस ने दोनों के चेहरों का गंभीरता से अध्ययन किया और अपना चार्ट देखा.

"मैडम, यदि आप चाहें तो मैं आप के लिए किसी दूसरे कूपे में व्यवस्था करवा दूं." चार्ट देखने के बाद टीटीई शिखा से मुखातिब हो कर बोला.

एकाएक शेखर का हृदय अनियंत्रित हो कर धड़कने लगा. उस की आंखों में बेचैनी के चिह्न स्पष्ट नजर आने लगे. शिखा को भी टीटीई का अभिप्राय समझते देर न लगी. शेखर की बेचैनी यह सोच कर बढ़ती जा रही थी कि कहीं शिखा उस के प्रस्ताव को स्वीकार कर किसी दूसरे कूपे में न चली जाए. उस की बेचैनी शिखा से छिपी न रह सकी.

"जी नहीं." शिखा ने जवाब दिया, "इस की कोई आवश्यकता नहीं है. मुझे इस कूपे में कोई असुविधा नहीं है. फिर हम एकदूसरे को जानते भी हैं."

"मरजी है आप की." उस ने कंधे सिकोड़ कर ढीले छोड़े.

शिखा का जवाब सुन कर शेखर के चेहरे पर इत्मीनान के भाव नजर आए. टीटीई ने दोनों के टिकट देखे और जातेजाते बोला, "कूपे का दरवाजा बंद कर लीजिएगा."

"कर लेंगे." शेखर ने जवाब दिया. फिर शिखा की तरफ मुखातिब होता हुआ बोला, "यदि तुम कहो तो दरवाजा बंद कर लूं."

"कर लो."

शेखर उठा और दरवाजा बंद कर लिया. इस बीच शिखा खिसक कर खिड़की के निकट चली गई. खिड़की से बाहर स्टेशन पर गहमागहमी का वातावरण था. लोग तेज कदमों से चलते हुए इधर से उधर दौड़ रहे थे. ट्रेन के छूटने का समय हो गया था. शायद इसी लिए अपने संबंधियों को छोड़ने आए लोग आखिरी बार दुआसलाम करने में लगे हुए थे.

क्षमा

यदि कोई दुर्बल मनुष्य तुम्हारा अपमान करे तो उसे क्षमा कर दो क्योंकि क्षमा करना ही वीरों का काम है, परंतु यदि अपमान करने वाला बलवान हो तो उस को अवश्य दंड दो. —गुरु गोविंद सिंह

थोड़ी ही देर में गाड़ी धीरेधीरे सरकने लगी. एकएक कर सब कुछ पीछे छूटने लगा. धीरेधीरे सब चीजें भागती सी नजर आने लगीं. थोड़ी ही देर में गाड़ी शहर से बाहर निकल चुकी थी. शहर की रंगीनियां कहीं पीछे छूट गई थीं.

"कहां खो गईं?" शिखा को जैसे शेखर के होने का एहसास हुआ. वह देर तक शिखा के सुंदर मुखड़े को निहारता रहा.

"क्या देख रहे हो?" शिखा की पलकें शर्म से भारी हो गईं.

"तुम्हें."

"पहले कभी नहीं देखा था?"

"देखा था."

"फिर."

"फिर भी तुम्हें देखने को जी चाहता है."

शिखा कुछ न बोली. एक बार फिर से दोनों के बीच खामोशी छा गई. शिखा सिर झुकाए गाड़ी के फर्श को घूरती रही. कुछ देर बाद धीरे से उस ने अपनी झुकी गरदन को उठा कर शेखर की आं झांका, "तुम ने शादी कर ली?"

शेखर कुछ न बोला. खामोश शिखा की आंखों में झांकता रहा.

"मैं ने पूछा, क्या तुम ने शादी ली?" शिखा ने अपना सवाल दोहराय

"नहीं." शेखर ने धीरे से ज दिया.

"क्यों? तुम तो कह रहे थे कि मु तलाक लेते ही दूसरा विवाह कर लोगे. क्या हुआ? पूरा एक वर्ष बीत गया है तुम ने अभी तक विवाह नहीं किया. आ क्यों?" शिखा के स्वर में जाने क्यों व्यंग्य भाव उभर आया था.

"सोचा था, कई बार सोचा था दूसरा विवाह कर लूं. पर न कर सका. सोच कर रह गया." शेखर आहत स्व बोला.

"कारण?"

"तुम."

"मैं?"

"हां, तुम. तुम ने नहीं करने दि मुझे दूसरा विवाह. तुम्हारी उपस्थिति नहीं करने दिया मुझे दूसरा विवा एकाएक शेखर का स्वर उत्तेजित हो उ

"लेकिन, मैं तो तुम से..."

"एक बात बतलाओगी?" शेख उत्तेजित हो कर शिखा को बीच में ही टो

"कौन सी बात?"

"क्या तुम ने विवाह कर लिया है

"मैं ने?" शिखा इस के आगे कुछ न पाई.

"हां, तुम ने."

शिखा चुप रही.

"चुप क्यों हो, जवाब क्यों नहीं दे नहीं की न?"

"नहीं."

"या फिर कर नहीं पाईं."

"कर नहीं पाई."

"क्यों?"

"बड़ा सीधा सवाल है, परंतु बड़ा
न है जवाब देना."

"तुम्हें तो शादी अवश्य कर लेनी
हए थी." शेखर व्यंग्यात्मक स्वर में
, "तुम तो कहा भी करती थीं कि तुम
मुहताज नहीं हो. तुम्हें मुझ से बेहतर
मिल जाएगा. फिर क्यों नहीं की तुम ने
? क्या तुम्हें मुझ से बेहतर मर्द नहीं
? क्या कोई दूसरा नहीं आया तुम्हारे
न में?"

"आया."

"तो फिर क्यों नहीं की शादी अब
"

"क्योंकि वह मर्द तुम नहीं थे."
एक शिखा फफक पड़ी, जैसे धैर्य का
टूट गया हो.

"शिखा." उस के यों एकाएक फफक
से शेखर स्तब्ध रह गया.

"तुम शायद नहीं जानते कि तुम मेरे
क्या हो? तुम शायद यह भी नहीं
ते कि एक औरत के जीवन में उस के
पुरुष का क्या स्थान होता है. मर्द हो न.
या समझोगे एक औरत को." ऐसा लग
ा, जैसे साल भर से अंदर ही अंदर
रहा लावा बाहर आने को है. "तुम ने
कभी समझा ही नहीं शेखर, अगर
ते तो हमारी यह स्थिति न होती...
"

फिर जैसे शिखा के कंठ से शब्द न फूट
आंखों से बहते हुए अविरल आंसुओं
हिचकियों ने मन की व्यथा कहनी
कर दी थी.

"शिखा." शेखर बोला, "अपने पर
ाओ. इस तरह नहीं रोते. तुम क्या
ी हो, अकेले रहने की पीड़ा क्या सिर्फ
ी सालती रही है."

"शेखर, तुम नहीं जानते, कितना दुख
तुम ने मुझे. बच्चे की मौत ने मुझे
बना दिया था और मेरे उस बच्चे की
ा कारण तुम थे. तुम्हारी घृणा,
नफरत ने उस बच्चे को मार डाला.
से पहाड़ी से नीचे फेंक दिया था. तुम
इतने निष्ठुर कैसे हो गए थे, शेखर?"

"शिखा," शेखर मानो तड़प उठा, "यह आरोप सही नहीं है... माना कि मैं ने उस बच्चे को कभी नहीं चाहा. मैं उस बच्चे को जीवित देखना भी नहीं चाहता था. पर वह जिंदा भी रहता क्योंकि तुम उस से बेइंतहा प्यार करती थीं. परंतु वह मर गया. यह विडंबना थी कि वह मेरे हाथों से फिसल कर पहाड़ी से गिर कर मरा था. सच मानो, मैं ने उसे जानबूझ कर नहीं फेंका था. यह महज एक दुर्घटना थी, जो मेरे हाथों से घटी और सब कुछ खत्म कर गई."

शिखा ने शेखर की आंखों में झांक कर देखा. उन आंखों में एक तरफ जहां अपनी गलती के लिए अपराधबोध था, वहीं उसे खो देने का गम सागर में उठी लहरों की तरह मचल रहा था.

"शेखर..." शिखा लपक कर उस से लिपट गई. सारे बांध, सारी दूरियां, सारी विषमताएं जैसे अविरल बहते हुए आंसुओं में बह गई थीं. काफी देर तक शेखर किंकर्तव्यविमूढ़ सा बैठा रहा. हिचकोले खाती ट्रेन पूरी गति से दौड़ रही थी.



"अरे भागवान, नाराज क्यों होती हो, पड़ोसी देश से दोस्ती की पहल तो हमारे पक्ष ने ही की है."

फिर शेखर भी शिखा को अपने अंदर समेट लेने के लिए बेचैन हो उठा. उस की बांहें शिखा के इर्दगिर्द लिपटती चली गईं. दोनों एकदूसरे की बांहों में इस कदर समा चुके थे, मानो एकाकार हो जाना चाहते हों.

जाने क्यों शिखा का सारा बदन हौलेहौले कांप रहा था. किसी को यह एहसास नहीं हुआ कि इस तरह कितना समय गुजर गया. शिखा की सिसकियां अभी भी पूर्ववत जारी थीं. पर अब वे मंद पड़ गई थीं.

धीरेधीरे शिखा की सिसकियां बंद हो गईं. लेकिन उस ने अपनेआप को शेखर से अलग करने का प्रयास नहीं किया. एक लंबे अरसे बाद उस की बांहों में आने का जो सुकून उसे मिला था, उसे वह शायद इतनी जल्दी खोना नहीं चाहती थी.

यह पहला अवसर नहीं था, जब शिखा यों उस की बांहों में समाई थी. लेकिन तब और अब में फर्क था. दोनों के मध्य रही एक साल की दूरी ने भी इस मिलन को एक अलग गरिमा प्रदान कर दी थी. एक ऐसा सुख इस मिलन में झलक रहा था, जिस की चाह में शेखर बस तरस कर रह गया था.

बांहों के उस मिलन में सिर्फ शारीरिक मिलन हुआ करता था, परंतु इस मिलन में अनोखी मादकता थी. तनाव से मुक्त यह मिलन शेखर के लिए एक नया अनुभव बनता जा रहा था. शिखा के युवा जिस्म से उठने वाली सुगंध धीरेधीरे शेखर के होशोहवास पर काबिज होती जा रही थी.

शिखा की सांसें उसे और अधिक बेकाबू कर रही थीं. पर शेखर ने अपने को काबू में रखा. अपनी भड़कती हुई भावनाओं पर नियंत्रण रखा. फिर बड़े प्यार से उस ने शिखा को अपने से अलग किया.

शिखा की आंखें अधखुली थीं. पतले और सुर्ख अधर इस कदर अधखुले थे मानो निमंत्रण दे रहे हों.

''शिखा...''

पर शिखा के होंठ बोलने के लिए न खुले.

शिखा का यह अनुपम सौंदर्य शे
को पल प्रतिपल उस के प्रति आसक्त क
जा रहा था. कोई जवाब न पा कर शे
हौले से शिखा पर झुका और उस के अ
पर अपने अधर रख दिए.

तूफानी रफ्तार से चल रही ट्रेन
उस छोटे से कूपे में उठे भावनाओं के तू
की गति का मुकाबला नहीं कर पा रही
मिलन की घड़ी का यह वह समय था
सारी विषमताएं, दूरियां और आ
वैमनस्य पानी में उठे बुलबुलों की त
अस्तित्वहीन हो जाते हैं.

शेखर काफी देर तक शिखा के को
शरीर पर निढाल सा पड़ा रहा. फिर धी
उठा, कुछ इस तरह कि उस की कोई हर
शिखा की नींद में बाधा न डाल दे. उस
उठते ही जैसे शिखा को हलकी सी ठंड
एहसास हुआ. वह तत्काल जैसे अपनेआ
सिकुड़ गई.

शेखर ने अपना सूटकेस खोला
उस में से एक चादर निकाल कर शिख
जिस्म पर हौले से डाल दी.

शेखर खामोश खड़ा रहा. उस
निगाहें बराबर शिखा के मासूम चेहरे
टिकी हुई थीं. कितना मासूम और भोल
झलक रहा था उस के चेहरे से.
मासूमियत, यही भोलापन तो था उस
चेहरे पर, जब वह पहली दफा उस के
आई थी. इसी तरह इतनी ही मासूम
सुंदर तो लगा करती थी, वह उसे. फिर
क्या हो गया था? क्यों वह उस से बिद
लगा था.

लेकिन अब वह इस चेहरे को कि
देर से टकटकी बांधे देख रहा था. घृण
ज्वार जैसे मीठे पानी के सोते में बदल
था.

इस समय जो प्रेम का प्रतीक है, कल
घृणा का अथाह सागर कैसे बन गया
आज जो भावनाएं उमड़ पड़ी हैं क्या वे
नहीं थीं. क्या यह संभव है कि कल तक
के लिए मन में कुछ न हो, वह यों एक

जहां से प्यारा लगने लगे. फिर क्या
त की जो भावनाएं थीं, उन पर दोनों की
ड़ी की इतनी मोटी परत चढ़ गई थी
ावनाओं का ज्वार कभी उभर कर
पूरी रवानगी पर सामने आ ही नहीं

जिस चेहरे की सुंदरता और मासूमियत
उस की नजरें हट नहीं रही थीं, वह
क्या एक दिन या एक महीने में उस के
इतना असहनीय हो गया था कि दोनों
लग हो जाना पड़ा?
नहीं, इतना सब कुछ अचानक नहीं हो
ा. दोनों के बीच नफरत की दीवार
ं काफी समय लगा था. परिस्थितियों
ने सिर्फ एक बार करवट नहीं बदली
लात ने कई बार करवटें बदली थीं.
इस दिशा में तो कभी उस दिशा में.
फर कुछकुछ अनजाने में, कुछकुछ न
हुए, कुछकुछ जानतेबूझते बहुत कुछ
ा. इतना सब कुछ कि जीवन रेत के
ी तरह दोपहर की गरम लू के थपेड़ों
ल हो कर इधरउधर बिखर गया.
कतने अरमानों, कितनी आकांक्षाओं,
सपनों से सजाई थी उस ने सेज.
के शिखा के साथ अपने पहले मिलन
ली रात का एकएक पल उसी तरह
, जैसे कल की ही बात हो. शून्य में
स की आंखें ख्वाबों की उस दुनिया में
जो कल तक सच थी...

ें विवाह का माहौल अपने शबाब पर
हन घर में आ चुकी थी. उस दुलहन
त में जैसे सारा घर बिछ पड़ा था.
अपने मातापिता का इकलौता बेटा
लिए उस के विवाह में उन के सारे
उफनते हुए दूध की तरह
लक कर बाहर आ रहे थे.
स्मोरिवाज पूरे होतेहोते सारा दिन
ाया. इस बीच शेखर एक बार भी
े अकेले में मिल नहीं पाया. एकाध
ां शिखा बैठी थी, वहां गया भी,
ड़भाड़ देख कर बेमन से लौट आया.

दोनों बहनों से भाई की यह बेचैनी छिपी न रह सकी. चंचल जो न सिर्फ नाम की चंचल थी, बल्कि स्वभाव से भी चंचल ही थी. छोटी भी थी, इसलिए उस की शरारतें अनदेखी हो ही जाया करती थीं.

"क्यों भैया, भाभी से मिलोगे?" चंचल ने शरारत से पूछा.

"तू मिलवाएगी मुझे अपनी भाभी से?" शेखर उपहासपूर्ण स्वर में बोला.

"हो सकता है."

"क्या हो सकता है?"

"यही कि मैं तुम्हें भाभी से मिलवा दूं."

"छोड़छोड़, शेखी न बघार, यह काम तुझ से नहीं होने वाला..." शेखर बोला.

आशा

आशा और आत्मविश्वास ही वे वस्तुएं हैं, जो हमारी शक्तियों को जागृत करती हैं और हमारी उत्पादन शक्ति को दुगनातिगुना कर देती हैं. —स्वेट मार्डेन

"हां, मिलवा दूंगी. रोकड़ा खर्च करना होगा."

"कितना."

"501 रुपए."

"बाप रे, यह तो बहुत ज्यादा है."

"ज्यादा है तो 5 सौ दे दो, एक न देना."

"वाह, क्या रईसी है."

"सोच लो."

"यह ले." शेखर 5 सौ का एक नोट उसे थमाता हुआ बोला.

चंचल ने नोट लिया और अपनी कमीज में ठूंस लिया. "ठीक है, रात 11 बजे अपने कमरे में पहुंच जाना. वहां तुम्हारी मुलाकात भाभी से हो जाएगी."

"ठीक है." शेखर झोंक में बोल गया. पर जब बात उस की समझ में आई तो वह बहन पर झपटा, "चंचल की बच्ची, मुझे धोखा देती है."

पर तब तक चंचल यह जा और वह जा.

—क्रमशः

तुम्हारी तरह

कहानी • नंदलाल सागवान

'शाम के 7 बज रहे थे, राजो छोटे से कमरे में बैठी एक पुरानी किताब के पन्ने अनचाहे मन से उलट रही थी. मन में जो उत्साह नरेंद्र के जल्दी आने की खुशी में उमड़ रहा था, वह अब ठंडे भोजन जैसा हो चुका था. 3 बजे तक घर आ जाने की कह कर गए थे, 7 बज गए, लेकिन अभी तक पता नहीं था साहब का. वह सोचने लगी, 'कितनी मुशकिल से राजी किया था फिल्म दिखाने के लिए, सब गुड़गोबर कर दिया. फिल्म नहीं ले जाना था तो कह कर क्यों गए थे?'

राजो इन्हीं विचारों में खोई थी कि दरवाजे पर दस्तक हुई. मन में खुशी और क्रोध का समावेश लिए वह उठी और दरवाजे की ओर बढ़ गई.

दरवाजा खोल कर देखा, सामने गीता खड़ी थी. राजो रूखेपन से मुसकरा दी, "आओ..."

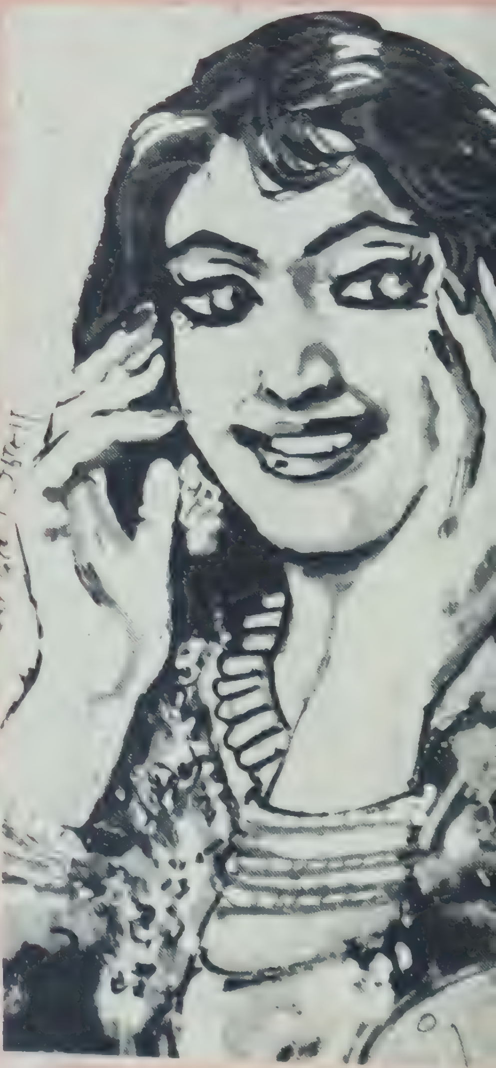
गीता मुसकराती हुई कमरे में आ गई, "कमाल है, भैया अभी तक नहीं आए? तुम बहुत भोली हो भाभी, भैया की बातों में आ जाती हो... क्या पता उन्होंने मजाक में ही कह दिया हो?"

"शायद किसी काम में फंस गए होंगे..." राजो धीरे से बोली.

"भाभी, भूल जाओ कि नरेंद्र भैया तुम्हें आज की तारीख में फिल्म दिखाने ले जाएंगे. तुम करती रहो इंतजार... वह अपने वक्त से पहले नहीं आने वाले. फंस गए होंगे कहीं यारदोस्तों में. रात के 10 बजे तक आएंगे नशे में झूमतेझूमते..."

"अगर आज वह पी कर आए तो देखना..." राजो ने गुस्से में कहा तो गीता खिलखिला कर हंस पड़ी, "रहने दो भाभ... भैया के आगे तो तुम्हारी बोलती बंद ... जाती है. थरथर कांपती हो भैया ... सामने." कहते हुए वह फिर हंसने लगी...

गीता के इस व्यंग्य पर राजो झेंप क... रह गई. सिवा झेंपने के वह कर भी क...

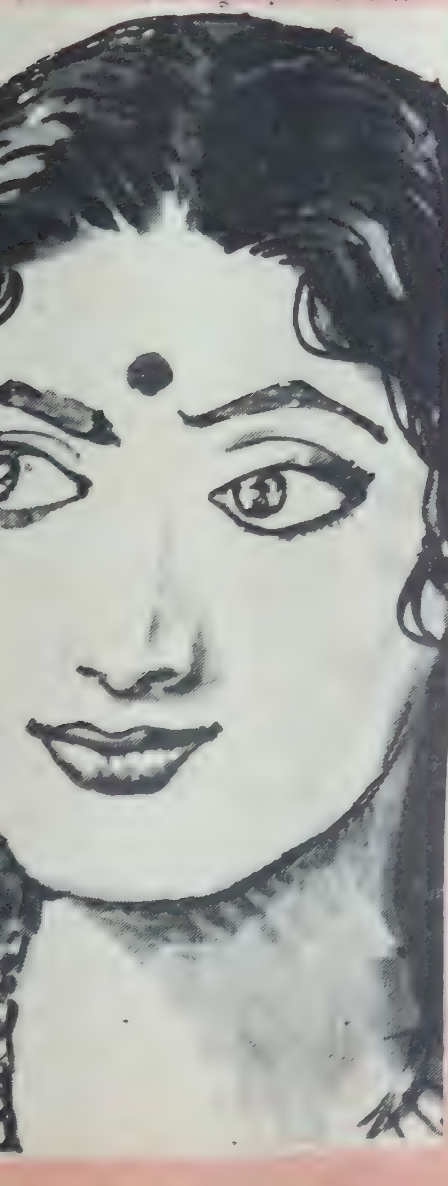


ी थी. गीता सच ही कह रही थी. पति
मने तो वह मानो गूंगी ही हो जाती है.
गीता ने पास ही रखी किताब पढ़ने के
उठाई ही थी कि दरवाजे पर फिर
क हुई.

"लो, आ गए भैया. जाओ और जा कर
स्वागत करो." गीता ने मुसकरा कर
तो राजो तनिक गुस्से में बोली, "तुम्हीं
दरवाजा, मैं नहीं खोलूंगी."

"पति का स्वागत पत्नी को ही करना
ए. जल्दी से जा कर उन की अगवानी
. कहीं दरवाजा ही न तोड़ दें." गीता
ली करते हुए कहा तो राजो आगे बढ़
रवाजा खोलने लगी.

दरवाजा खोल कर देखा, सामने
का छोटा भाई बबलू खड़ा था. राजो



की हंसी छूट गई.

"भाभी, दीदी है यहां?" बबलू ने पूछा.

"तुम्हारे भैया आज मुझ से नहीं, तुम से मिलना चाहते हैं, गीता..." राजो ने दरवाजे से ही मुसकराते हुए कहा.

इस बार गीता झेंप गई. वह मुसकराती हुई बबलू का हाथ थामे चली गई. राजो ने फिर दरवाजा बंद कर लिया और कमरे में आ कर कुरसी पर बैठ गई.

वह सोचने लगी, 'गीता ठीक ही कहती है. वह जब नशे में होते हैं तो बोलने की हिम्मत ही नहीं होती. कितनी परास्त हो जाती है वह उन के सामने. कितनी बार समझा चुकी है, मगर वह सुनें तब न. रोज शराब न पीने की प्रतिज्ञा करते हैं और रोज ही शराब पी कर घर लौटते हैं. शराब और सिगरेट पीपी कर कितने कमजोर हो गए हैं. न अच्छा खाते हैं, न अच्छा पहनते हैं. कोई अच्छा सूट भी तो नहीं है उन के पास. मेहनत से कमाया सब रुपया बरबाद कर देते हैं.'

झुंझला कर वह उठी और खिड़की खोल कर गली में झांकने लगी. गली में दूरदूर तक उस के पति का कहीं पता न था. कुछ देर गली में झांकने के बाद वह वापस कमरे में आ गई और पलंग पर बैठ गई. सोचने लगी कि कितने अच्छे लगते हैं, जिस दिन शराब नहीं पीते. कितने अच्छे लगते हैं, जब थकेहारे काम से लौटते हैं और तेल या ग्रीस से सने हाथ प्यार से उस के गालों पर लगा देते हैं. कितने दिन हो गए हैं, उन के साथ बैठ कर खाना खाए. रोज अकेले बैठ कर खाना पड़ता है.

राजो के विचारों की शृंखला तब टूटी, जब फिर दरवाजे पर दस्तक हुई. वह गुस्से में उठी और दरवाजा खोलते ही बरस पड़ी,

राजो ने गुस्से में पति के बारे में कुछ कहा तो गीता खिलखिला कर हंस पडी और बोली, "रहने दो भाभी, भैया के सामने तो तुम्हारी बोलती बंद हो जाती है और थरथर कांपने लगती हो."

राजो अपने पति नरेंद्र को बहुत प्यार करती थी और नरेंद्र भी राजो को बहुत चाहता था पर उन दोनों के प्रेमपूर्ण संबंधों के बीच शराब दीवार बन कर खड़ी थी, इसी शराब के नशे में एक दिन नरेंद्र ने राजो को थप्पड़ भी मार दिया था. लेकिन राजो को क्या पता था कि यही थप्पड़ सुबह के भूले को घर लौटा लाएगा.

"यह तुम्हारे आने का..."

लेकिन वह आगे न बोल सकी क्योंकि उस के सामने नरेंद्र नहीं, पड़ोस की कमला चाची खड़ी थीं. वह बोलीं, "क्या बात है री, किस पर गुस्सा हो रही है?"

"कुछ नहीं चाची, मैं समझी कि वह..." राजो झेंप गई.

"तू समझी कि नरेंद्र आ गया है... है न...?" मुसकराते हुए चाची अंदर आ गईं. "अरी, वह अभी कहां आने वाला है... उस की तो पुरानी आदत है देर से घर आने की. वैसे नरेंद्र ऊपर से जरूर कड़वा है, पर दिल का बुरा नहीं है. नशे में वह कुछ कह दिया करे तो बुरा न माना कर. ला, मेरे कपड़े सी दिए हों तो दे दे."

राजो ने चाची के कपड़े दे दिए. वह सोच में डूब गई कि चाची ठीक ही कहती हैं. वह दिल के बुरे नहीं हैं. कितना खयाल रखते हैं उस का. कभी किसी चीज की कमी तो महसूस नहीं होने देते. शराब ही तो पीते हैं, लेकिन उन शराबियों की तरह क्रूर तो नहीं हैं जो पत्नियों को अकारण पीटते हैं. सारा दिन पसीना बहाते हैं, शाम को अगर थोड़ा सा अपना शौक पूरा कर लेते हैं तो क्या फर्क पड़ता है. चाहे जैसे भी हैं, मेरे लिए तो सर्वस्व हैं.

यही सब सोचतेसोचते रात के 10 बज गए. पल प्रतिपल उसे एक ही प्रश्न परेशान किए जाता था कि फिल्म नहीं दिखानी थी तो वादा क्यों किया था? फिल्म देखने की खुशी में सारा काम जल्दीजल्दी निबटाया था, लेकिन सारा उत्साह ठंडा पड़ गया.

अंततः दरवाजे पर नरेंद्र ने दस्तक दी. एक बार तो राजो का दिल चाहा कि दौड़ कर दरवाजा खोल दे, किंतु क्रोध अपनी चरम सीमा पर था. कुछ देर तक वह जानबूझ कर दस्तक सुनती रही. बाहर नरेंद्र भी क्रोध में उबल रहा था. वह दरवाजा पीटता रहा और राजो सुनती रही.

फिर राजो ने उठ कर दरवाजा खोल दिया. दरवाजा खुलने की देर थी कि नरेंद्र का भारी हाथ का तमाचा उस के गाल पर पड़ा. "कहां थी इतनी देर से..."

नरेंद्र की कठोर आवाज ने राजो के सारे अरमान कुचल कर रख दिए. वह नजरें नीची किए अपना गाल सहलाती रही. उस की आंखें छलछला आईं. होंठ कांपने लगे. उस ने भरी आंखों से नरेंद्र की ओर देखा. कहने के लिए तो बहुत कुछ था, लेकिन पति के सामने बोलने का साहस ही नहीं था.

राजो साड़ी का पल्ला मुंह में दबा सुबकती हुई रसोई में चली गई और सुबकने लगी. एकएक कर के सारी बातें उस के दिलोदिमाग में उभर आईं जो अभी थोड़ी देर पहले वह अपने पति के बारे में सोच रही थी.

"बस, ज्यादा कुछ कहा तो आंसू बहा दिए. अच्छा हथियार है आदमी को डराने का..." कहते हुए नरेंद्र कमरे में आ कर पलंग पर बैठ गया. फिर डब्बी से आखिरी सिगरेट निकाल कर मुंह में लगा ली और माचिस के लिए जेबें टटोलने लगा.

फिर वह चीखा, "माचिस है घर में?"

राजो थाली में खाना लगा रही थी. उस ने थाली में माचिस भी रख ली.



''आज हम दोनों साथ बैठ कर खाना खाएंगे.'' रोटी का कौर राजो को खिलाते हुए नरेंद्र ने कहा. ◀

रेंद्र के आगे थाली रख कर वह नजर
कर के खड़ी हो गई और नाखून
लगी.
यारदोस्त माचिस तक नहीं छोड़ते...''
सिगरेट सुलगाई और तीली बुझा
परवाही से फर्श पर फेंक दी. ''मैं
हीं खाऊंगा. खा कर आया हूं.''
जो के लिए यह नई बात नहीं थी,
ऐसा होता था. उस ने साहस बटोर
पी तोड़ी, ''एक बात कहूं...?''
मैं जानता हूं, तुम क्या कहोगी...
शराब पीना सेहत के लिए अच्छा
सिगरेट पीने से फेफड़े खराब हो
यही सब कहोगी न? ये सब बातें तो
की बोतल और सिगरेट के पैकेट पर
ी होती हैं. अब इस से आगे न तो मैं

कुछ कहना चाहता हूं और न ही सुनना... समझीं...''

नरेंद्र ने सिगरेट फर्श पर गिरा कर पैर से रगड़ दी और मुंह फेर कर लेट गया. राजो एक ठंडी सांस भर कर उसे देखती रही. फिर वह भी फर्श पर ही बिस्तर लगा कर भूखे पेट लेट गई.

वह सोचने लगी कि आज सुबह ही शराब न पीने की प्रतिज्ञा कर के गए थे. मैं एकएक पैसा पल्ले में बांध कर रखती हूं. हर चीज से अपना दिल मार लेती हूं और यह हैं कि सारे पैसे शराब और सिगरेट में उड़ा देते हैं. इन्हें क्या मालूम कि रोज कुआं खोद कर पानी पीने वालों के घर कैसे चलते हैं. इतना सब कुछ करने पर भी क्या मिलता है, पति का अकारण क्रोध और तिरस्कार.

सुबह जब नरेंद्र की आंख खुली तो काफी धूप चढ़ आई थी. वह आंखें मलता बिस्तर पर उठ बैठा. राजो चाय का प्याला लिए आ गई.

चाय रख कर वह मुड़ी ही थी कि नरेंद्र ने टोक दिया, ''जरा एक गिलास पानी ला दोगी?''

राजो रसोई से पानी ले आई. नरेंद्र ने गिलास थामते हुए पूछा, ''नाराज हो?''

राजो चुपचाप रसोई में चली गई. नरेंद्र भी उस के पीछेपीछे रसोई में चला

गया. उस ने प्यार से राजो के कंधे पर हाथ रखा तो वह बिफर पड़ी, "मेरे नाराज होने या न होने से आप को क्या फर्क पड़ता है?"

"राजो, मेरी बात तो सुनो..."

"शादी के बाद से आप ही की तो सुन रही हूं...कभी मेरी बात सुनी है आप ने. मैं आप की कौन होती हूं जो आप मेरी खुशी के लिए सोचेंगे. मैं क्यों रोकूंगी आप को शराब या सिगरेट पीने से... रोज पीजिए.'

"राजो, मैं सच कहता हूं, मैं ने अपने पैसों की नहीं पी थी..."

"जहर चाहे मुफ्त का हो या अपने पैसों का, जहर ही होता है. कल जल्दी आने की कह कर गए थे न? कितनी जल्दी आए थे और आते ही कितनी अच्छी फिल्म दिखाई थी? आप से दो मिनट की देरी सहन नहीं हुई. यह मैं ही हूं जो घंटों इंतजार करने के बाद भी हंस कर टाल देती हूं." राजो बोलती चली गई.

औरत

औरतें मर्दों से अधिक बुद्धिमती होती हैं, क्योंकि वे जानती कम, समझती अधिक हैं.

—जेंस स्टीफेन

"राजो, मैं सच कहता हूं, मुझे बिलकुल याद नहीं रहा..."

"शराब और सिगरेट के अलावा आप को और कुछ याद भी कैसे रह सकता है. मैं होती कौन हूं जो आप मुझे याद रखेंगे और मेरे लिए समय निकालेंगे. आप ने तो मुझे गाड़ी का फालतू पहिया समझ रखा है... वक्त पड़ा तो उठा कर काम चला लिया और काम निकलते ही गाड़ी के पीछे बांध दिया." कहतेकहते राजो की आंखें बरसने लगीं.

नरेंद्र से कोई जवाब देते नहीं बन रहा था. उसे अपनी गलती का एहसास हुआ. यारदोस्तों के चक्कर में वह तो भूल ही गया था कि उस ने राजो से फिल्म दिखाने का वादा किया है.

उस दिन वह नाश्ता किए और खाना लिए बिना ही काम पर चला गया. राजो के लिए इस से अधिक दुखद बात नहीं हो सकती थी कि उस का पति खाना लिए बिना ही काम पर चला जाए. 'अब सारा दिन खुद भी भूखे रहेंगे और मुझे भी भूखा मारेंगे.' सोचते हुए वह खीज उठी.

राजो घर की सफाई कर रही थी कि गीता आ गई, "क्यों भाभी, रात को भैया की बोलती बंद हुई या तुम्हारी?"

"मैं ने सोच लिया है..."

"क्या?"

"यही कि अब उन से कभी कुछ नहीं कहूंगी."

नरेंद्र दिन भर राजो के बारे में सोचता रहा. आज वह पहली बार उस के सामने इतना बोल गई थी. वह दिन भर इसी उलझन में फंसा अपने काम में व्यस्त रहा. वैसे आज और दिनों की अपेक्षा काम भी ज्यादा ही आ गया था.

शाम को जब उस ने दिन भर की कमाई गिन कर देखी तो खुशी से झूम उठा. पूरे ढाई सौ रुपए थे. सोचने लगा कि राजो के लिए एक अच्छी सी साड़ी खरीद कर ले चलूंगा तो उस का सारा गुस्सा उतर जाएगा. अभी वह रुपए गिन ही रहा था कि उस का एक मित्र आ गया, "क्यों भई नन्नू, आज तो चांदी काट ली?"

"अरे नहीं..." नरेंद्र हड़बड़ा गया और जल्दी से रुपए जेब में रख लिए.

"आज तो अपना भट्ठा बैठ गया उस्ताद." उस के दूसरे मित्र ने कहा.

"कुछ नहीं यार, वही दालरोटी के पैसे बने हैं..." नरेंद्र ने अपने साथियों से पीछा छुड़ाना चाहा था, पर उस की संगत ऐसे लोगों से थी जो खिलाना जानते थे तो खाना भी जानते थे.

उस की एक न चली. दोस्तों ने उसे अपने जाल में फांस लिया. विलायती शराब की बोतल और कबाब मंगवाने में उस की जेब खाली हो गई.

नरेंद्र जब घर पहुंचा तो उस समय रात के साढ़े 10 बज रहे थे. शराब पीने

द आज वह पूरे होशोहवास में था. ो नोटों से भरी जेब खाली हो चुकी ज पहली बार उसे स्वयं से घृणा हो . उस में दरवाजा खटखटाने की भी नहीं रही थी. कुछ देर वह घर के ो खड़ा रहा. फिर साहस बटोर कर टखटा ही दी.

ज दरवाजा खुलने में एक पल की ो नहीं हुई. राजो सहमीसहमी सी ुकाए खड़ी रही. नरेंद्र कुछ देर तक मासूम चेहरे को पढ़ता रहा. उस का ुआ चेहरा साफ बता रहा था कि उस र को खाना नहीं खाया. वह चुपचाप ं आ कर कुरसी पर बैठ गया.

जो दरवाजा बंद कर के रसोई में ई. आज नरेंद्र ने उसे खाना लगाने के ना नहीं किया. वह किसी भी कीमत ो का दिल नहीं दुखाना चाहता था. ाली में खाना लगा कर ले आई.

सुबह जो कुछ भी हुआ, उसे भूल मैं गुस्से में पता नहीं क्याक्या कह ब मैं आप से कभी कुछ नहीं कहूंगी. ना खा लीजिए." इतना कह कर वह ं पानी लेने चली गई.

रेंद्र जड़वत बैठा रहा. तभी उस की स ही रखे एक प्लास्टिक के थैले पर . उस ने हाथ बढ़ा कर उसे उठा

जो पानी ले कर आई तो नरेंद्र पैंट का कपड़ा उलटपुलट कर देख रहा ने पूछा, "यह कपड़ा किस का है?"

आप के लिए है. आज अपनी गुल्लक पैसे थे, सब निकाल लिए. आप के ई अच्छा सूट नहीं था न... यह आप अच्छा लगेगा. अच्छा है न?"

ंद्र एकटक राजो के मुसकराते देखता रहा. फिर वह अपनी जगह ौर उस के चेहरे को अपने हाथों में बोला, "बहुत अच्छा है, तुम्हारी ने तुम्हें बहुत दुख दिए हैं, राजो."

ुझे अब कोई दुख नहीं है, जी..."

"आओ. आज हम दोनों साथ बैठ कर खाना खाएंगे." राजो को पलंग पर बैठाते हुए नरेंद्र भी उस के पास बैठ गया. फिर वह रोटी का एक कौर तोड़ कर राजो को खिलाने लगा.

राजो का दिल भर आया. उस ने छलछलाई आंखों से पति की ओर देखा, जिस की आंखों में अथाह प्रेम उमड़ रहा था. वह राजो के आंसू पोंछने लगा.

सुबह जब राजो की आंख खुली तो काफी धूप चढ़ आई थी. वह हड़बड़ा कर उठ बैठी. नरेंद्र घर में नहीं था. उसे आश्चर्य हुआ कि सुबह 9 बजे से पहले न सो कर उठने वाले महाशय आज सुबहसुबह कहां चले गए? कहीं अनजाने में मुझ से कोई भूल तो नहीं हो गई?

अंधेरा होने से पहले ही नरेंद्र घर आ गया. राजो उस समय रसोई में बैठी खाना बना रही थी. वह दबे पांव उस के पास गया और पीछे से जा कर उस की आंखें भींच लीं.

राजो ने अपने हाथों से उस के हाथों को टटोल कर देखा. अपने पति के हाथ पहचानने में उसे जरा भी देर नहीं लगी, "आज इतनी जल्दी...?"

"हां राजो, अब मैं रोज इतनी जल्दी ही घर आऊंगा... और आज से सिगरेट, शराब बिलकुल बंद..."

"सच कहते हो?"

"बिलकुल सच. अच्छा, अब आंखें बंद करो."

"क्यों?" राजो ने पूछा, "अच्छा बाबा, यह लो..." कहते हुए राजो ने आंखें बंद कर लीं.

नरेंद्र ने अपने हाथ में ली हुई एक खूबसूरत साड़ी उस के हाथों में रख दी.

राजो ने आंखें खोलीं, "साड़ी...?"

"हां, राजो, तुम्हारे पास भी तो कोई ढंग की साड़ी नहीं है. यह साड़ी तुम पर बहुत जंचेगी... अच्छी है न?"

राजो ने प्यार से अपने पति की ओर देखा और मुसकराते हुए बोली, "बहुत ही अच्छी है... तुम्हारी तरह. ●

बंगलादेशियों का भारत

गतांक से आगे

भाटिया मुसलमान असल में 'शेरशाह सूरी' के वंशज हैं. इन्हें शेरशाह–बंदिया अथवा सिसोवदिया या केवल वदिया कहा जाता है. परंतु बोलचाल की भाषा में इस का अपभ्रंश 'बधिया' शब्द इस्तेमाल होता है, जबकि सरकारी तौर पर 'भाटिया' इस्तेमाल किया जाता है.

भाटिया का अर्थ है. 'भाट जमीन' यानी निचली जमीन से आए लोग. इन का भारत में 'अखिल भारतीय शेरशाहवादी संगठन' है जिस के राष्ट्रीय अध्यक्ष भूतपूर्व कांग्रेसी विधायक मुबारक हुसैन हैं.

जब बिहार के मुख्य मंत्री चंद्रशेखर सिंह थे तब कटिहार के रेलवे मैदान में भाटिया मुसलमानों की एक विशाल सभा हुई थी. इस की अध्यक्षता भूतपूर्व कांग्रेसी विधायक तारिक अनवर ने की थी. इस सभा के बहाने सारे शेरशाहवादी मुसलमानों को जमा किया गया और 'शेरशाहवादी संघर्ष समिति' का गठन किया गया. घुसपैठ के विरुद्ध बोलने वालों पर इस सभा में तीख आक्षेप किया गया था. साथ ही चेतावनी भी जारी की गई थी कि जो भी इस के विरुद्ध कुछ बोलेगा, 'शेरशाहवादी संघर्ष समिति' उसे चुनाव में सबक सिखाएगी. इस से पूर्व 1981 में किशनगंज में भी 11 सदस्यीय 'शेरशाहवादी संघर्ष समिति' का गठन हुआ था जिस के आयोजक भाटिया नेता अब्दुल रशीद थे.

आज भाटिया इस क्षेत्र में एक राजनीतिक शक्ति बन चुके हैं. हालांकि प्रशासन ने बीचबीच में कुछ सख्ती दिखाई लेकिन निरंतर पड़ते राजनीतिक दबाव तले प्रशासनिक काररवाई काफी कमजोर दिखाई दी. कांग्रेस, जनतादल, कम्यूनिस्ट कोई भी पार्टी मुसलमानों की इस विशाल संख्या को नाराज नहीं करना चाहती.

1982 में पूर्णिया जिला (जिस

30 जून 1991 को धनबाद रेलवे स्टेशन पर हुई अचानक चेकिंग से पकड़े गए बंगलादेशी घुसपैठिए.



ख़तरनाक जमाव



दलालों और पुलिस की मिली भगत से भाटियों का एक दल सीमा पार कर भारत में प्रवेश करते हुए.

, अररिया भी तब शामिल थे) के
धीक्षक श्री एस.के.सहाय द्वारा
जबीन की काररवाई शुरू की गई
ध नागरिकता वाले 18 हजार
भारतीय नागरिकता प्रमाणित
लिए नोटिस जारी किया गया.
नाओं ने इन संदिग्ध व्यक्तियों की
भारत के ऐसे सैकड़ों विशिष्ट
के नाम जोड़ दिए जो भाटिया थे.
खुली साजिश थी, जिस के द्वारा
ती को रद्द करवा दिया गया, परंतु
1600 व्यक्तियों की नागरिकता

को अवैध घोषित कर दिया. पर आज तक यह मामला ज्यों का त्यों लटका पड़ा है और किसी की भी गिरफ्तारी नहीं हुई और न ही किसी को भारत से बाहर निकाला गया.

इस सीमावर्ती क्षेत्र की स्थिति को विस्फोटक समझ कर तत्कालीन प्रधान मंत्री राजीव गांधी ने एक विशेष जांचपड़ताल करवाई. हालांकि स्वयं राजीव गांधी भी इस क्षेत्र के वोट बैंक को नाराज नहीं करना

भाटिया मुसलमानों यानी बंगलादेशियों के निरंतर जमाव से देश में सांप्रदायिक तनाव ही नहीं बढ़ रहा अपितु हिंदू धर्मावलंबी गांवों से पलायन करने पर मजबूर हो गए हैं. धर्मांतरण की बढ़ती घटनाओं ने भी यह स्पष्ट कर दिया है कि यदि जल्द ही बंगलादेशियों की घुसपैठ पर कठोरता से अंकुश नहीं लगाया गया तो वह दिन दूर नहीं जब उन के द्वारा अलग इलाके की मांग भारत का स्थायी सिरदर्द बन जाएगी.

चाहते थे फिर भी उन्होंने ऐसा रास्ता निकाला जिस से सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे. उन्होंने किशनगंज में बी.एस.एफ. का मुख्यालय बनाने का आदेश दिया. लेकिन इस के लिए भूमि अधिग्रहण राज्य सरकार को करना था. पर वह टालमटोल की नीति अपनाती रही. आखिर केंद्र सरकार ने राज्य सरकार को नोटिस जारी किया. जिस में पूछा गया कि आखिर भूमि अधिग्रहण करने

घुसपैठ की कहानी : आंकड़ों की जबानी

एक गैरसरकारी सर्वेक्षण के अनुसार 1990 तक भारत में बंगलादेशी (भाटिया मुसलमान) घुसपैठियों की कुल संख्या 1.25 करोड़ थी.

विभिन्न राज्यों/नगरों में घुसपैठियों की संख्या–

राज्य/नगर	घुसपैठियों की संख्या (लाख में)
पश्चिम बंगाल	54.00
असम	35.00
बिहार	12.00
दिल्ली एवं उस के आसपास	03.00
त्रिपुरा	01.25
मुंबई	01.50
जम्मूकशमीर	01.00
गुजरात	01.55
हैदराबाद	00.50
भोपाल	00.35
राजस्थान	02.00
सिक्किम	01.00
अंडमान निकोबार द्वीपसमूह	00.04

में क्यों देरी हुई–
(नोटिस संख्या डी.एल.ए.– पी.वी.आर/89)

यह मामला अभी भी अधर में लटका हुआ है. इस पर शांति नगर के एक वरिष्ठ बी.एस.एफ. अधिकारी का कहना है कि राज्य सरकार इस मसले को थोड़े दिनों के लिए टाल सकती है, परंतु निरस्त नहीं कर सकती.

उल्लेखनीय है कि बी.एस.एफ. का मुख्यालय बनने की घोषणा के बाद शहाबुद्दीन की अगुआई में भाटियों ने इस का जबरदस्त विरोध किया था पर इस के पीछे वे लोग कोई ठोस तर्क देने में असफल रहे थे. जब मामला राज्य सरकार ने लटका दिया तो वे लोग भी शांत हो कर बैठ गए.

जो लोग घुसपैठ की बात को स्वीकार नहीं करते हैं उन के लिए 30 जून को धनबाद रेलवे स्टेशन (दक्षिणी बिहार) में हुई घटना खुली चुनौती है. धनबाद रेलवे स्टेशन पर हुई अचानक चेकिंग के दौरान औचक छापामारी भी हुई और इस में 70 बंगलादेशी श्रमिक पकड़े गए और कई बातों का एक साथ परदाफाश हो गया.

ये लोग व्यापक तूफान के कारण बंगलादेश की कृषि और उद्योगधंधे के चौपट हो जाने के बाद काफी दयनीय स्थिति में थे. भुखमरी से परेशान इन लोगों का सीमा पार कराने वाले दलालों से संपर्क हुआ. धनबाद पहुंचे बंगलादेशियों ने बताया कि वे लोग बंगलादेश के 'ब्राम्यणबारिया' जिले के निवासी हैं. उन्हें निजामुद्दीन औलिया क्षेत्र के ईटभट्ठों में काम दिलाने के लिए दलाल भारत लाए थे. उन्हें बताया गया कि

ुसपैठ को प्रश्रय देना देशद्रोह से कम नहीं है."

-ताराकांत झा

बिहार प्रदेश भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष

सपैठ एक राष्ट्रीय त्रासदी बन चुकी है. एक सर्वेक्षण के अनुसार 00 तक पूरे भारत में बंगलादेश से ाले भाटिया मुसलमानों की संख्या 2 से भी ऊपर हो जाएगी. इस का हमारे जक और आर्थिक जीवन पर अत्यंत असर पड़ रहा है. इस राष्ट्रीय के महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर विचार के लिए बिहार प्रदेश भारतीय जनता अध्यक्ष ताराकांत झा से संपर्क किया स्तुत हैं उन से हुई बातचीत के अंश:

ुसपैठ के लिए कौन जिम्मेदार है?

स के लिए पूरी तरह कांग्रेस और मोरचे की सरकार जिम्मेदार हैं. कीकत से वाकिफ हैं पर किसी ने इस कर विरोध नहीं किया. हां, जब इस लोगों ने खूब होहल्ला मचाया तब कुछ सुगबुगाहट दिखाई दी पर बद से बदतर होती गई.

स के पीछे इन दलों की मंशा क्या है?

ात बिलकुल स्पष्ट है. वे इसे अपना तिक वोट बैंक बनाना चाहते हैं. तिक लाभ के आगे इन्हें देश दिखाई देता. दोनों दलों को डर है कि घुसपैठ रदार विरोध करने पर सारे देश के ान वोटर नाराज हो जाएंगे.

रंतु मुझे यह कहने में संकोच नहीं क इन्हें प्रश्रय देने वाले देशद्रोही से म नहीं हैं.

ापक घुसपैठ के जारी रहने के कारण सामाजिक व्यवस्था पर इस का क्या ड़ा है?

मारी सामाजिक संरचना के तानेबाने टूट गए हैं. हिंदुओं पर अत्याचार बढ़ गया है. किशनगंज, अररिया, पूर्णिया, कटिहार, पश्चिमी दिनाजपुर और मालदा जैसे जिलों में हिंदुओं की स्थिति काफी खराब हो गई है.

आखिर प्रशासन क्या करता है?

(आवेश में आ कर) कैसा प्रशासन? सब सहमे हुए हैं. अगर आप में हिम्मत है तो दिन में भाटिया मुसलमान बहुल क्षेत्र में जाएं और यह कहें कि हम लोग घुसपैठियों के बारे में कुछ जानना चाहते हैं. आप वहां से वापस जिंदा नहीं आएंगे.

भाजपा अपने स्तर से घुसपैठ को रोकने के लिए क्या कर रही है?

जो कुछ भी संभव है, सब कुछ कर रही है. हम लोग इस मुद्दे पर व्यापक जनजागरण अभियान चला रहे हैं और लोगों को संभावित खतरे से सचेत कर रहे हैं.

परंतु बंगलादेश तो यह मानने को तैयार ही नहीं है कि भाटिया लोग चोरी छिपे भारत गए हैं.

सत्य को स्वीकार करना ही पड़ेगा. बंगलादेश भारत सरकार की कमजोर नीति का फायदा उठा रहा है. जब बरसों बाद हांगकांग और इंडोनेशिया से वियतनामी अपने देश को लौट सकते हैं तो फिर इन्हें क्यों नहीं खदेड़ा जा सकता है.

क्या इस क्षेत्र की स्थिति कभी कशमीर घाटी जैसी हो सकती है?

उस से भी बदतर. समय रहते अगर केंद्रीय सरकार की नींद नहीं खुली तो वह दिन दूर नहीं जब यहां भी जनमत संग्रह की बात होगी. ●



भारत और बंगला-देश की कोई निश्चित सीमा स्पष्ट न होने का लाभ उठा कर भाटिया मुसलमान जानवरों के झुंड के साथ भारत में प्रवेश कर जाते हैं.

किशनगंज में हथि यारों का एक भार जखीरा पकड़ा गय जो पंजाब के आतंक वादियों और कशमी के जे.के.एल.एफ. क

प्रतिदिन प्रति व्यक्ति 40 रुपए मजदूरी (भारतीय रुपया) मिलेगी लेकिन उन में से 40% दलालों का कमीशन होगा.

उक्त बंगलादेशी नागरिकों को बंगलादेश की 'पेट्रापोल सीमा' एवं भारत के 24 परगना जिला क्षेत्र में 'बेनापोल सीमा' के बनगा नामक स्थान से सीमा पार कराई गई. इन्हें भारत पहुंचाने में बंगलादेशी दलाल मुजीब्बुर एवं भारतीय दलाल दिलीप ने मदद की. भारत में ये मजदूर सबसे पहले पश्चिम बंगाल के राजबांध स्टेशन पर उतरे. उन्हें रात में निकट के एक गांव में ठहराया गया वहां एक धनी किसान के घर ये लोग ठहरे. पर जब उसे पता चला कि ये लोग बंगलादेशी हैं तो किसी झमेले से बचने के लिए इन्हें रफूचक्कर कर दिया. फिर ये लोग अपने दलालों के आदेश पर रातोंरात धनबाद स्टेशन पहुंचे. स्थानीय पुलिस 3 जुलाई को एक्शन में आई पर इस से पहले 2 जुलाई की रात को सभी बंगलादेशी घुसपैठिए लुधियाना एक्सप्रेस से अपने गंतव्य की ओर रवाना हो गए.

रोजगार की सीमित मात्रा और निरंतर बढ़ती घुसपैठ का परिणाम इन सीमावर्ती क्षेत्रों में काफी विस्फोटक हो गया है. हत्या, बलात्कार, तस्करी और चोरी-डकैती में खासी वृद्धि हो गई है. इसी महीने

भेजा जा रहा था.

यहां भाटिया लोग डकैती करने के लिए नेपाल की सीमा के अंदर घुस जाते है और फिर अपना काम बना कर वापस भारत की सीमा में घुस आते हैं. इन डकैतों का अड्ड है 'दीघल बैंक' प्रखंड की 'करमनडांग पंचायत'. यहां भाटियों की विशाल संख्य है. रोजगार के अवसर कम हैं. यहां तस्करी का सामान भी धड़ल्ले से आता है. स्व नेपाल की पुलिस भी इस से त्रस्त है.

परंतु सब से विस्फोटक बात जो साम आ रही है वह है सांप्रदायिक स्थिति की यहां सामाजिक तनाव बढ़ गया है. हिंदू गांव से पलायन कर रहे हैं. शहरों की आबादी वे धीरेधीरे सिमटते जा रहे हैं. गांव औ शहरों में दो समुदायों का ध्रुवीकरण होत जा रहा है. हरिजन के नाम पर बंदोबस्त की गई जमीन पर भाटियों को बसाया ज रहा है. पिछले दिनों धर्मांतरण की घटना भी प्रकाश में आई. अब सवाल उठने लगा आखिर कशमीर घाटी की स्थिति क शुरूआत तो इस क्षेत्र में नहीं हो चुकी है कशमीर की स्थिति कुछ और है. दिल्ली पास होने के कारण उन के विस्थापितों महत्व बढ़ जाता है पर यहां तो शाय घरविहीनों के घायल दिल पर कोई मरह लगाने भी नहीं आएगा.

ंचार उपग्रहों
ा भारत में टेलीविजन
े विदेशी कार्यक्रम



लेख ● राजेंद्र शर्मा

ी बीसी, सीएनएन, एमटीवी, प्राइम स्पोर्ट्स कैनल फ्रांस तथा दूसरे कई के टेलीविजन प्रोग्राम अब भारत में जा सकते हैं. इस तरह की सुविधा न को इसी साल सुलभ हुई है. उपर्युक्त विजन के प्रोग्रामों को भारत में देखने के एल्युमिनियम की डंडियों के बने रण एंटिना के स्थान पर डिश अर्थात तस्तरीनुमा एंटिना लगाना होता है.

डिश एंटिना आजकल भारत में कई कंपनियां प्रचुर संख्या में बना कर न केवल भारत के लोगों की एंटिना की आवश्यकताएं पूरी कर रही हैं बल्कि वे अपने डिश एंटिना विदेशों में बेच कर विदेशी मुद्रा भी देश में ला रही हैं. भारत में ऐसे एक डिश एंटिना की कीमत लगभग एक लाख रुपए से गिर कर 25 हजार रुपए पर आ गई है.

विदेशी प्रोग्रामों को सीधे ही भारत में टेलीविजन पर देखने के लिए अंतरिक्ष में स्थापित दूरसंचार उपग्रहों का सब से बड़ा योगदान है. निस्संदेह जिन्होंने विदेशों के प्रोग्राम अब तक देखे हैं, वे यह भलीभांति जान गए हैं कि हमारे दूरदर्शन के एकदो पुराने प्रोग्राम को छोड़ कर बाकी प्रोग्राम विदेशी प्रो-



ग्रामों की तुलना में बहुत निम्न स्तर के तथा उबाऊ रहे हैं. लेकिन 'बुनियाद' तथा 'महाभारत' धारावाहिकों को दक्षिण पूर्वी एशिया के देश पाकिस्तान तथा इंडोनेशिया एवं थाईलैंड में लोगों ने बड़े चाव से देखा.

विदेशी प्रोग्रामों को भारत में देखे जाने का एक महत्त्वपूर्ण कारण यह भी है कि वहां के प्रोग्राम आधुनिक प्रौद्योगिकी से तैयार किए जाते हैं. वहां के टेलीविजन के मालिक और प्रबंधक बेहिचक पैसा खर्च कर के आज की सभी घटनाओं का आंखों देखा हाल अपने दर्शकों को दिखाने की कोशिश करते हैं. हमारा दूरदर्शन इस मामले में बहुत पीछे है.

खाड़ी युद्ध का ही हम उदाहरण लेते हैं. जिस दिन यह युद्ध शुरू हुआ था उसी दिन दोपहर में ही बंबई के लोगों ने इस युद्ध का आखों देखा हाल विदेशी टेलीविजन की सहायता से देख लिया था. इस युद्ध की कुछ झलकियों को 21 अक्तूबर के दिन ही बीबीसी टेलीविजन केंद्र ने स्टार टीवी के माध्यम से भारतवासियों को दिखा दिया था. इस भूकंप से हुई विनाश लीला को हमारा दूरदर्शन इस के 5 दिन बाद दिखा पाया था. यह हमारे दूरदर्शन की अक्षमता का सब से बड़ा उदाहरण है.

इतना ही नहीं, कितने ही ऐसे समाचार होते हैं जिन्हें दूरदर्शन काटछांट कर के कई दिनों के बाद पेश करता है जबकि दूसरे देशों के टेलीविजन केंद्र उसी दिन ज्यों का त्यों सही समाचार दे देते हैं.

एक अनुमान के अनुसार, भारत में लगभग 2000 डिश एंटिना लगे हुए हैं तथा इन की संख्या आए दिन बढ़ती ही जा रही है. इन में काफी डिश एंटिना तो केबल के माध्यम से पूरे महल्ले या पूरी कालोनी के टेलीविजनों से जुड़े हुए हैं. इसलिए एक

संचार के क्षेत्र में हलचल मचा देने वाला डिश ऐंटिना एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि बनता जा रहा है. इस के कार्यक्रम बहुत तेजी से लोकप्रिय होते जा रहे हैं. यहां तक कि भारतीय दूरदर्शन के कार्यक्रम भी इस के आगे एकदम फीके लगने लगे हैं. आखिर क्या कारण है जो डिश एंटीना संचार के क्षेत्र में इतना लोकप्रिय होता जा रहा है?

एक झलकें हमारे दूरदर्शन ने अपनी 8.30 सायं की खबरों में दिखाया था. दूरदर्शन द्वारा युद्ध की जानकारी इतनी अधूरी दिखाई गई थी कि लोगों की इस के बारे में और जानने की इच्छा अधूरी रह गई थी. लेकिन जिन के टेलीविजन डिश एंटिना से जुड़े थे, वे अमरीका की गैरसरकारी कंपनी सीएनएन (केवल न्यूज नेटवर्क) द्वारा दिखाया जाने वाला इस युद्ध का आंखों देखा हाल चौबीसों घंटे अपने टेलीविजन पर देख सकते थे.

इसी तरह हमारे उत्तर प्रदेश के गढ़वाल क्षेत्र के उत्तरकाशी, अल्मोड़ा, नैनीताल, देहरादून, हरिद्वार तथा केदारनाथ में जो भूकंप आया था, उस से हुए विनाश की डिश एंटिना से हजारों लोग एक साथ ही विदेशी टेलीविजन के कार्यक्रमों का आनंद लेते हैं.

इन डिश एंटिनाओं में से कुछ की दिशा तो पलपा उपग्रह की तरफ है जो कि एटलांटा से सीएनएन के जरिए चौबीसों घंटे टेलीविजन के प्रोग्रामों को प्रसारित करता रहता है. भारत में लगे काफी डिश एंटिनाओं की दिशा एशिया सेट-1 उपग्रह की तरफ है. इस एशिया सेट के मालिक चीन की सरकार तथा हांगकांग में स्थापित इंगलैंड की ब्रिटिश केबल एंड वायरलेस कंपनी है.

वास्तव में यह एशियासेट–1 अमरीका का वह संचार उपग्रह था जो एक बार

रीका की जमीन पर बने उपग्रह नियंत्रण के हाथों से निकल कर कहीं अंतरिक्ष की राइयों में खो गया था, जिसे बाद में रीका के 'शटलयान (अंतरिक्षयान) स्कवरी' ने अपनी अंतरिक्ष उड़ान के न ढूंढ़ निकाला था.

यह घटना मात्र 3 साल पहले की है. में इसे अमरीका ने चीन सरकार तथा नैंड की एक कंपनी को बेच दिया था. उस य इस की कीमत 2 करोड़ 50 लाख र थी. अंतरिक्ष से 'शटलयान द्वारा नीचे गए इस उपग्रह को मरम्मत कर के ही गया था.

गत वर्ष चीन ने अपने लोंगमार्च पणयान द्वारा इसे पृथ्वी से लगभग 36 र किलोमीटर की ऊंचाई पर प्रक्षेपित दिया था. आज यह उपग्रह 38 देशों में ने यहां से प्राप्त होने वाले प्रोग्रामों को रित कर रहा है, जिस से दुनिया की भग आधी आबादी टेलीविजन के मों का आनंद ले रही है.

इस उपग्रह में कुल 24 ट्रांसपोंडर लगे न में से 14 ट्रांसपोंडर विभिन्न एशियाई को दूरसंचार के कामों के लिए किराए दिए हुए हैं बाकी के 10 ट्रांसपोंडर से विजन के 5 चैनल चलाए जाते हैं, जिन नल कर भारत में सब से अधिक विदेशी मों को दिखाने वाला 'स्टार टीवी' ा है.

स्टार टीवी वास्तव में अंगरेजी के 4 रों से मिल कर बना है जिन का अंगरेजी ड़ा रूप सैटेलाइट टेलीविजन एशिया न है. पाकिस्तान भी इस उपग्रह का एक न लेने की सोच रहा है. स्टार टीवी के नों को भारत में ग्रहण करने के लिए 3 र वाले डिश एंटिना की जरूरत पड़ती

चौबीसों घंटे प्रसारण देने वाले स्टार के 5 चैनलों पर आप अमरीका के त व खेल कार्यक्रम, तथा लंदन के न्य से उन के बीबीसी से हर एक घंटे विश्व के समाचार सुन सकते हैं.



पश्चिमी संगीत के लिए अब दर्शकों को सरकारी माध्यमों पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा. ▲

अगर आप अपने डिश एंटिना को थोड़ा सा घुमा दें तो आप को अमरीका के सीएनएन से प्रसारित होने वाले सभी कार्यक्रम मिल जाएंगे. इस के अतिरिक्त, मलेशिया का आरटीएम टीवी तथा इंडोनेशिया का आरपीटीआई, फिलीपीन का एबीएस. सीबीएन, फ्रांस का कैनल टेलीविजन इंटरनेशनल, जापान का एनएचके, हांगकांग तायवान का बिजनिस न्यूज नेटवर्क तथा अगले साल पाकिस्तान द्वारा एक चैनल के लिए जाने पर उन के प्रोग्रामों को देखा जा सकता है.

अब डिश एंटिना का स्थान छोटेछोटे 18 इंच× 18 इंच के वर्गाकार एंटिनाओं ने लेना शुरू कर दिया है. इंगलैंड के हजारों घरों की छतों पर लगे इन एंटिनाओं के माध्यम से वहां के लोग विदेशों के टेलीविजन प्रोग्राम देख रहे हैं. कुछ समय बाद ये भारत में भी उपलब्ध होने लगेंगे. निस्संदेह इन की कीमत डिश एंटिना से काफी कम होगी. ●

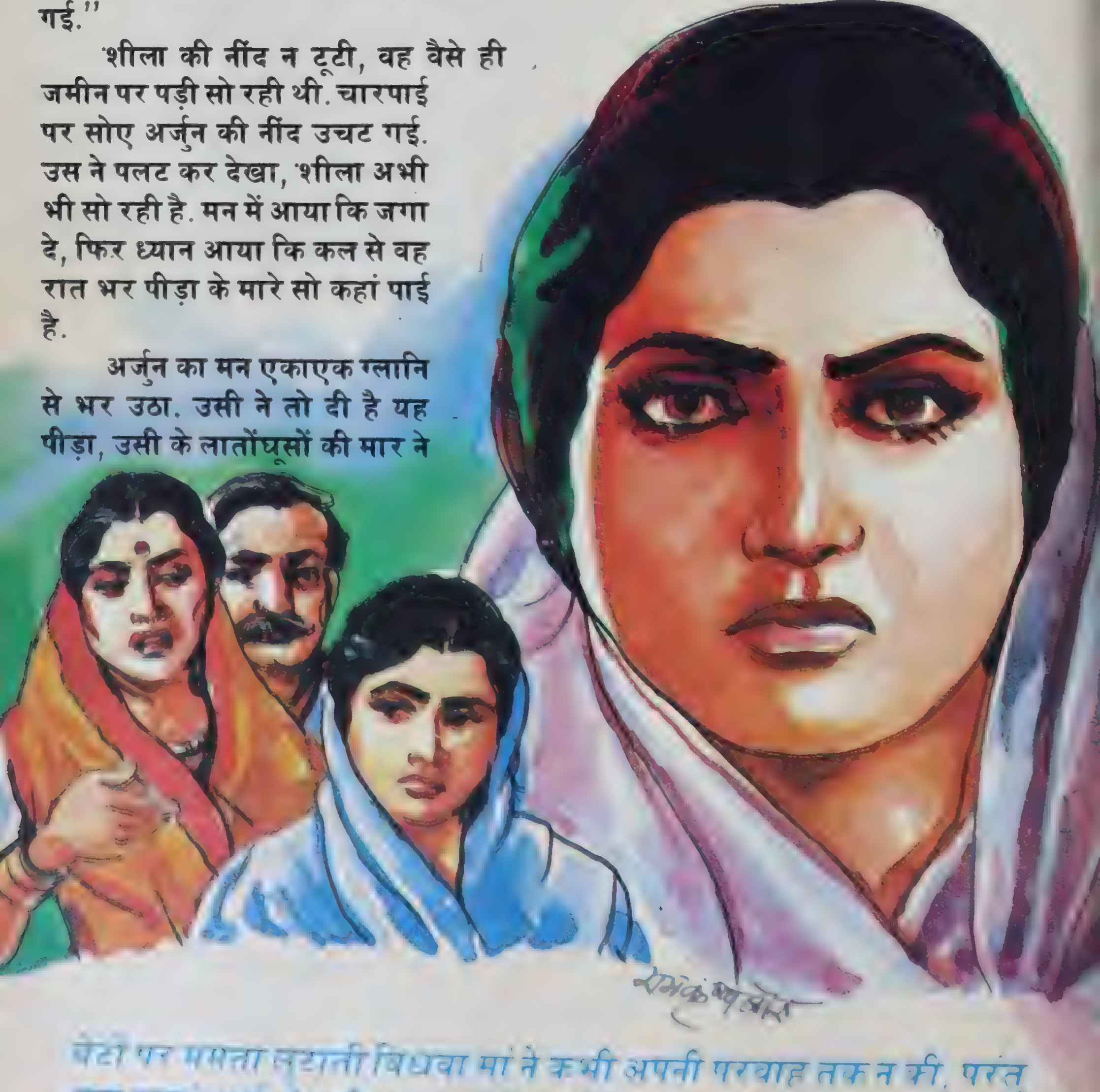
प्रतिज्ञा

कहानी ● छाया श्रीवास्तव

दो बार हौलेहौले कुंडी खड़की. फिर मधुर स्वर से सावित्री ने धीरे से पुकारा, "शीला... शीला, उठ न, भोर हो गई."

शीला की नींद न टूटी, वह वैसे ही जमीन पर पड़ी सो रही थी. चारपाई पर सोए अर्जुन की नींद उचट गई. उस ने पलट कर देखा, शीला अभी भी सो रही है. मन में आया कि जगा दे, फिर ध्यान आया कि कल से वह रात भर पीड़ा के मारे सो कहां पाई है.

अर्जुन का मन एकाएक ग्लानि से भर उठा. उसी ने तो दी है यह पीड़ा, उसी के लातोंघूसों की मार ने



बेटों पर ममता लुटाती विधवा मां ने कभी अपनी परवाह तक न की. परंतु जब बहुएं आईं तो वही ममताभरी मां जैसे जमाने की हवा में बह गई और बहुओं की तो दुश्मन ही बन गई. लेकिन एक दिन ऐसी घटना हुई कि पूरा परिवार किंकर्तव्यविमूढ़ हो कर रह गया.

के अंग सुजा दिए हैं. पूरे तन पर नील
र आए हैं. मारते समय पता नहीं उसे
हो जाता हैं. विवेकशून्य हो कर क्रोध
फुफकारता बौरा कर जहां चाहे वहां
ल कर रख देता है. फिर बाद में मन ही
पछता लेता है. कल रात को वह उसे
ने के लिए ही उस के पास जमीन पर लेट
ा था. जबजब वह शीला पर हाथ
ाता, वह जमीन पर ही पड़ी रहती. न
लना, न उस की ओर देखना, न संग
ना. तब भी वह हर बार की भांति मनाने
पहल करता है, अपनी ओर से.

"शीला, बहुत दर्द हो रहा है क्या बदन
" उस ने पत्नी की बांह पर हाथ फेर कर
.

शीला ने कुछ उत्तर नहीं दिया. उस का
परे झटक कर वह करवट बदल कर
रही. फिर हलकीहलकी सिसकियां
ी आंचल के छोर से आंसू पोंछने लगी.

अर्जुन थोड़ी देर चुपचाप पड़ा रहा.
र समझ गया कि 4-5 दिन से पूर्व शीला
रोष शांत नहीं होगा. वह उठ कर अपनी
रपाई पर जा लेटा.

यह तो आए दिन का किस्सा था. कभी
ला तो कभी सावित्री की करुण चीखें घर
दीवारें लांघ कर पड़ोस में पहुंच जाया
ती थीं. लगभग एक हजार आबादी वाले
में शायद ही कोई ऐसा घर था, जहां



बहुओं की चीत्कारें न गूंजती थीं. कारण होते थे, सासबहू के छोटेमोटे झगड़े या पतिपत्नी की आपसी कलह. तीसरा कारण था अल्पायु, गृहस्थी से सर्वथा अनभिज्ञ बालिका बहुएं, जो कच्ची आयु में ही विदा कर दी जातीं.

आम, इमली, बेर, कैथ के लिए सुबह से दोपहर तक लूधूप में चंचल हिरणी सी कुलांचे भरती ग्राम्य बालाओं पर बैल के जुए का सा भार ही न लद जाता वरन चंचल चरणों में बेड़ियां भी पड़ जातीं. कितनी ही गलतियां नित्य होतीं और नित्य ही झेलने पड़ते प्रतारणा के असह्य दंड. वही कारण अर्जुन के यहां भी नित्य होते. अनुशासन के कठोर फांस में सास ने अपने दोनों बेटों को तो बांध ही रखा था, इधर बिना लगाम की बहुओं पर भी वह अंकुश के तीखे बाण हर क्षण भेदती रहती थी. मजाल न थी कि दोनों बहुओं की जीभ सास के आगे हिल तो जाए.

तीसरी बार फिर कुंडी खड़की. सावित्री फिर वापस आ कर सांकल बजा रही थी, साथ ही हौले से कह भी रही थी, "शीला उठ न, अम्मां जाग जाएगी तो आफत आ जाएगी. भैया, जगा दो न उसे."

अचानक शीला की तंद्रा टूटी. वह उठ कर बैठ गई. फिर अलसाए स्वर में बोली, "अभी अजान कहां हुई है, दीदी? मुरगे ने अभी बांग नहीं दी है... जल्दी उठ बैठी हो क्या?" उस ने सांकल खोलते हुए बात पूरी की.

"अजान और बांग क्या कोई सुनता है री. शुक्रतारा सरक आया है नीचे और सप्तऋषि देख, नीचे उतर आए हैं. फिर पंसेरी भर पीसने में भी तो समय लगेगा. यहां देर होगी तो फिर पशुओं की देखभाल, पानी, खाना... काम का पहाड़ लगा है. चल आ, जल्दी पीस डालें."

"दीदी, पूरा बदन दुख रहा है, अभी कुछ ही देर पहले तो आंख लगी थी. उठने की जरा भी हिम्मत नहीं है, ताप सा चढ़ा है."

"हिम्मत कहां से हो, कल से पेट भर खाया है कुछ? होंठ और जीभ सब लहूलुहान हैं. मर्दों के हाथ जैसे लोहे के होते हैं. देवरजी कौन अपने भैया से कम हैं... पक्के जालिम हैं, कठोर हृदय के. जो कुछ अम्मां ने भर दिया, उसे ही पत्थर की लकीर मान लेते हैं. चल तू पीसना मत, वहीं बोरी बिछा कर पड़ी रहना, मेरा मन लगा रहेगा."

"तुम कहां तक अकेले काम करोगी? जैसे बनेगा, साथ देती रहूंगी. यहां मरो तो भी काम करो, किसे पीर है अपनी?"

अर्जुन ने दीवार की ओर करवट लिए लिए एकएक बात सुन ली थी. हृदय जैसे मथता चला गया था उस का. वह सोचता रहा, करवट बदलता रहा. दोनों देवरानी जेठानी मग्न होतीं चक्की चलाते रोज ही गाती थीं, परंतु पिटने पर कईकई दिन की चुप्पी पसर जाती थी.

घर में केवल एक गाय दूध देती थी, वह भी केवल एक बार. कुल आधा किलो दूध निकलता था, जिस के तीन भाग करने पड़ते थे. दोनों भाइयों को और सास को रात्रि को रोटी के साथ दूध देना पड़ता था. बहुओं को कभी बूंद भर भी नहीं मिलता था. मजाल न थी कि कोई बहू दूध में उंगली डुबो कर स्वाद तो चख ले. मां के कड़े अनुशासन से दोनों शीत खाए पात सी कंपकंपा कर पीली पड़ जातीं.

गांव में सब से प्रतिष्ठित परिवार था उन का. कारण था मां का दृढ़ चरित्र. कुल 25 वर्ष की भरी जवानी में वह विधवा हो गई थी. किशुन और अर्जुन तब 6 और 3 वर्ष के अबोध शिशु थे. रूपरंग में अपूर्व, तेज से दपदप करता सौंदर्य कितने ही मनचलों का संयम डुला देता, परंतु उस ने अपने तेज से किसी को सम्मुख नहीं टिकने दिया.

मांबाप, भैयाभाभी सब ने ऊंचनीच समझाया कि अभी आयु ही क्या है, किसी विधुर को जीवनसाथी बना ले. परंतु उस ने सब से स्पष्ट कह दिया था कि अब वह अकेली नहीं है, हीरामोती से दो नयन तारे हैं. दोनों बेटों को छाती से लगा कर वह यह संसार पार कर लेगी. वह निर्बल नहीं है, अपनी बांहों के बल और दृढ़ इच्छाशक्ति से वह बेड़ा पार कर लेगी. पति के द्वारा छोड़ा छोटा सा घरआंगन है. 10 बीघा सोना उगलती धरती है. अपने श्रम और लगन के बल पर वह दोनों बेटों को पाल लेगी. उसे बच्चों का सौतेला बाप नहीं चाहिए.

फिर उस ने कितने ही कष्ट नहीं उठाए. 6 वर्ष का किशुन तभी से मां की लाठी बन गया. वह हर काम में मां की सहायता करता और छोटे भाई अर्जुन को भी संभाले रहता. प्राइमरी मदरसा होते हुए भी वह पढ़लिख नहीं पाया. यही ललक मन में भरी रहती थी कि यदि वह पढ़ालिखा होता तो पटवारी, साहूकारों के कागजों की हेराफेरी तो समझ सकता. यह अदम्य इच्छा उस ने पूरी की अपने छोटे भाई अर्जुन को पढ़ा कर.

अर्जुन इंटर में पढ़ रहा था. उसे उस ने साइकिल ले दी थी, जिस से वह शहर में पढ़ने जाता.

जब किशुन 15 वर्ष का था, तभी मां ने उस का विवाह कर दिया था. केवल 12 वर्ष

'एस्प्रिन' गर्भवती महिलाओं के लिए

आमतौर पर ऐसा देखा जाता है कि महानगरों में स्वस्थ वातावरण के अभाव के कारण पैदा होने वाले बच्चों में काफी बच्चे औसत वजन से कम होते हैं.

क्लेनलैंड स्थित वैस्टर्न रिसर्च यूनिवर्सिटी के चिकित्सकों द्वारा 394 गर्भवती महिलाओं पर 6 चरणों में किए अध्ययन के अनुसार अगर गर्भवती महिलाएं प्रतिदिन 60 से ले कर 150 मिलीग्राम एस्प्रिन का सेवन करें तो न सिर्फ वे स्वयं तनावमुक्त और स्वस्थ रह सकेंगी, बल्कि गर्भस्थ शिशु का भी समुचित विकास हो सकेगा. इस से प्रजनन क्रिया अपने उचित समय पर होगी.



एक दिन अम्मां चने तोड़ लाई थीं खेत से. शीला को दे कर उड़द की दाल में पकाने को कह गई थीं. दाल-भजिया उन का प्रिय व्यंजन था. शीला ने चूल्हा जला कर हंडिया में दाल और भाजी डाल दी थी.

तभी सावित्री कंडे थाप कर आई थी, "चल शीला, पानी भर लाएं, बहुत देर हो गई है. लाला को जल्दी खाना बना कर देना है."

"मैं ने दालभजिया चढ़ा दी है, दीदी."

"चल, यह ठीक रहा, जब तक पानी भर कर लौटेंगे, पक जाएगी."

दोनों देवरानीजेठानी साथ ही जाती थीं. दोनों एकदूजे के दुखदर्द की अभिन्न साथी. चुपकेचुपके दोनों सास की निंदा कर लेतीं और पतियों की चुगली.

दोनों कुएं पर पहुंची, गांव के उस छोर पर था कुआं. एक तो दूरी, ऊपर से पनिहारिनों की भीड़. नहाधो कर लौटीं तो पूरा घंटा भर लग गया. दोनों ने जल्दीजल्दी गीली धोतियां फैलाईं. तभी रसोई से दाल जलने की गंध उड़ी. शीला झपट कर रसोई में घुसी. चूल्हे का 'धाएंधाएं' जलना देख कर वह स्तब्ध रह गई. हंडिया से धुआं निकल रहा था. वह समझ नहीं पा रही थी कि क्या करे.

...ोल, दूध में पानी क्यों मिलाया? इतना ...ला कैसे हो गया आज? किशुन ने क्रोधित ...कर सावित्री से पूछा.

...सावित्री बहू बन कर आई थी और जब ...ुन 15 वर्ष का हुआ तो उस के और अर्जुन ...कितने ही विरोध के पश्चात मां शीला ...ब्याह लाई थीं. केवल 15 वर्ष की शीला ...सरी बार ससुराल आई थी और अपनी ...ानी के साथ गृहस्थी का बोझ ढोने लगी ...

अल्हड़, चंचल बालिका वधू के पैरों ...अंकुश की बेड़ियां कस गई थीं. देहात की ...ड़की देहात में आई थी, परंतु फिर भी ...स को नित्य कुछ न कुछ अपराध, गलती, ...नर, फूहड़पन दिख ही जाता. दोनों की ...कायतें नमकमिर्च लगा कर दोनों बेटों को ...ातीं तो उन की भवें तन जातीं. मां के ...ज्ञाकारी बेटे पत्नियों को डराते धमकाते. ...भाई की देखादेखी अर्जुन ने भी मर्दानगी ...खानी आरंभ कर दी थी. पत्नियों की ...कल दोनों भाई अपने हाथ में लिए थे. मां के ...न एक शब्द सुनने को भी तैयार न होते थे.

इसी समय सावित्री थाली में आटा लिए घुसी. दाल जलती देख कर वह भी घबरा गई. फिर चिल्ला कर बोली, "अरी, आग तो बुझा. लकड़ियां खींच ले बाहर."

शीला ने लपक कर लोटा भर पानी चूल्हे पर डाल दिया. पूरी रसोई में धुएं का



रिश्ते

वक्त के साथ
सभी संदर्भ बदल जाते हैं,
लोग वही रहते हैं, मगर
रिश्तों के अर्थ बदल जाते हैं.

—पुष्पलता षड़ंगी

गुबार भर गया. आंखों को कुछ सूझ नहीं पड़ता था. तभी अर्जुन कपड़े पहनता रसोई के दरवाजे पर आ कर बोला, "भाभी, जल्दी खाना लगा दो, 10 बज गए हैं."

अंदर का कुछ दृश्य सुझाई नहीं पड़ रहा था. सावित्री समझ गई कि उन्हें कुछ दिखा नहीं, इसलिए बोलीं, "बस अभी रोटी सेंकती हूं, तुम पीढ़ा डाल कर बैठो. शीला, तुम चटनी बना लो तब तक."

"क्यों दाल नहीं बनी क्या?" वह पूछ बैठा.

"आज देर हो गई. चटनी, गुड़ से खा जाओ आज."

दाल की गंध ने बाहर बैठी अम्मां की घ्राण शक्ति को प्रखर गति दे दी. वह भीतर दौड़ी आईं और रसोई में झांक कर बोलीं, "दाल जलने की गंध कहां से आ रही है? कहीं अपने यहां ही तो नहीं जल रही? हाय, यह तो अपनी ही दालभजिया जल रही है. मैं सोच रही थी कि पड़ोस से आ रही है यह गंध. अरी हंडिया उतार, खड़ी तमाशा क्या देख रही है?"

शीला ने चूल्हे से धोती के छोर से हंडिया उतार कर धरती पर रखनी चाही तो चारों ओर से तपी होने के कारण वह हाथ से छूट गई और टुकड़ेटुकड़े हो कर बिखर गई. साथ ही बचेखुचे दाल के दाने यहांवहां छितरा गए. अम्मां का क्रोध ज्वालामुखी सा फूट पड़ा, "अरी, कलमुंही, खाखा कर मुटा रही है. क्या इतनी भी शक्ति नहीं है तेरे इन हाथों में कि हंडिया पटक के फोड़ दी. आंखें फूटी हैं तेरी? जो इत्ती दूर से पटक मारी. अरीं, कुछ तो ढंग शऊर सीखो." वह चीखती चली गईं.

"क्या हुआ अम्मां?" अर्जुन ने पानी का लोटा हाथ में लिए भीतर झांका.

"देख ले, देख ले अपनी आंखों से अपनी सुघड़ लक्ष्मी की करतूत. देख भाजी का कैसा सत्यानाश कर दिया. ऊपर से हंड़िया फोड़ डाली. अब खा ले अपने हाड़. सारा दिन कुएं पर आंखें लड़ाती हैं रांडें, खाना कौन पकाए उन का भरतार?"

दोनों अब तक अपराधिनों सी खड़ी थीं. अब जैसे शीला को होश आया,वह धीमे स्वर में बोली, "अम्मां,कुएं से घंटे भर ही में तो लौट आए हैं. बहुत भीड़ थी वहां. इधर लकड़ियां सुलग कर एक साथ जल उठीं तो मैं क्या करूं? हंडिया गरम हो गई थी इस से छूट गई."

"देख, देख अर्जुन कैसी जीभ चला रही है. अरी हंडिया क्या तेरा बाप दे जाएगा? रोज ऐसे फोड़ेगी तो खाना क्या तेरी खोपड़ी में पकेगा?"

"अम्मां, अब की बापू आएंगे तो मैं गाड़ी भर हंडिया मंगवा लूंगी." शीला ने अपनी अम्मां का क्रोध शांत करने को अनोखी बात कह दी.

"अरी ओ धन्ना सेठ की बेटी, अभी भाजी किस में चढ़ाएगी? खसम को पका कर क्या अपनी खोपड़ी में देगी?"

"अम्मां, ऐसी गंदी बात काहे करती हो? मैं ने जानबूझ कर तो हंडिया नहीं फोड़ी, हाथ से छूट गई."

"बसबस, हो गया बेड़ापार. अब मैं नहीं रह सकती इस घर में? अब तो कतरनी

जीभें चलने लगी हैं इन सांड़नियों की. मैं
न ही मायके चली जाऊंगी. अब क्षण भर
तीं रह सकती इस घर में." वह चीख कर
र पर हाथ रख कर बोली. "अर्जुन, कल
र ही में गाड़ी कस देना."

अर्जुन अभी तक खामोश खड़ा था.
सहनशक्ति जवाब दे गई. एक तो समय
खाना नहीं, दूसरे इतना बड़ा नुकसान
र तीसरे अम्मां से कोई जबान लड़ाए, यह
दोनों भाइयों ने सीखा ही नहीं था. रसोई
घुस कर पत्नी को पीटने लगा.

"जीभ खींच लूंगा जो अम्मां से जबान
ड़ाई." वह क्रोध से उबल रहा था. विवेक-
न्य हो उठा था वह. लातों, घूसों से पत्नी
धुनाई कर डाली. शीला की चीखें घर
दीवार लांघ कर पति के अत्याचारों की
ानी कहती चली गईं.

बैलों की नांद में भूसा डालता किशुन
तर की चीखपुकार सुन कर दौड़ा आया.
या है अम्मां?"

"अरे अब क्या बताऊं? तुम छाती
ड़ कर एकएक दाना घर लाते हो और
ी ये छिनाले, कैसा सत्यानास कर रही हैं
गृहस्थी का. दालभजिया जला डाली है,
ड्या फोड़ डाली है. अर्जुन के जाने का समय
गया, अब बताओ क्या हो?"

...भी किशुन की दृष्टि उधर गई, वह
जा, "अर्जुन, निकल रसोई से बाहर.
र्म नहीं आती मेरे सामने बहू पर हाथ
ते? हो गया नुकसान तो हो जाने दे. दाल
गई तो और बन जाएगी. यह क्या
ारपन है? क्या जान ही लेगा उस की?
ची ही तो है अभी?"

अर्जुन सिर झुकाए बाहर निकल गया.
भाई का वह बहुत लिहाज करता है.

भीतर से शीला का करुण क्रंदन गूंज
था. उस के होंठ फट गए थे. जीभ कट
थी. मुंह सूज गया था. पूरे शरीर पर
उभर आए थे. वह दोनों हाथों से मुंह
फूटफूट कर रो रही थी. सावित्री के
ातेबचाते भी वह बुरी तरह कुटपिट गई
थी. स्वयं सावित्री की कई चूड़ियां टूट कर
बांह में चुभ गई थीं. फिर भी वह शीला के
होंठों से बहता रक्त अपनी हथेलियों से पोंछ
कर उसे चुप करा रही थी. किंतु पीड़ा से
बिलबिलाती शीला की सिसकियां थम नहीं
रही थीं. अम्मां और किशुन का विवाद वे
दोनों सुन नहीं पा रही थीं.

उस दिन अर्जुन शहर नहीं गया. पता
नहीं दिन भर कहां डोलता रहा. घर पर
खाना भी नहीं खाया. सावित्री ने दोबारा दाल
चढ़ाई, रोटी सेंकी परंतु सूजे मुंह के कारण
शीला ने कुछ नहीं खाया.

शीला को चोटों के कारण बुखार चढ़
आया. सारे मुंह के घाव पक गए. तीन दिन से
उस के मुख में अन्न का एक दाना नहीं गया
था. भूखा पेट और पीड़ित देह लिए वह रात
भर रोरो कर गुज़ार देती. ऊपर से पसेरी
भर अनाज पीसना पड़ता था जो अकेले
सावित्री के बस का न था. शीला से चक्की
नहीं खिच रही थी. चक्कर पर चक्कर आ
रहे थे. दोचार बार खींच कर वह हांफ उठी.

"रहने दे शीला, मैं तो पहले ही कह
रही थी कि तुझ से चक्की नहीं खिचेगी. ले
इस बोरे पर लेट जा, तू पास पड़ी रहेगी तो



"जल्दी से मेरा हैलमेट लाना...बजट समाचार शुरू हो गए हैं."

मुझे इसी से बल मिलेगा."

शीला बोरे पर लुढ़क गई. सावित्री जल्दीजल्दी धान डाल कर चक्की चला रही थी तथा बातें भी करती जा रही थी.

"शीला, आज मैं तुझे दवा जरूर बना कर दूंगी, चाहे जो हो जाए. मेरी अम्मां चोट लगने पर दूध में गुड़, हलदी डाल कर गरमगरम पिला देती थीं. उस से बहुत आराम मिलता था."

"दूध कहां से आएगा?" वह पीड़ित स्वर में बोली.

अध्यापक

अध्यापक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली होते हैं. वे संस्कारों की जड़ों में खाद देते हैं और अपने श्रम से उन्हें सींचसींच कर महाप्राण शक्तियां बनाते हैं.

—महर्षि अरविंद

"आज थोड़ा पानी मिला दूंगी. आधा सेर का तीन पाव कर के गुड़ डाल कर खौला दूंगी. रात में इतना कौन ध्यान देता है. उसी एक पाव में तेरे लिए हलदी मिला दूंगी."

"नहींनहीं बहन, अपने लिए आफत मोल न लो. अम्मां जान गईं तो जिंदा गाड़ देंगी. मुझे नहीं चाहिए दवाई, अपनेआप ठीक हो जाएंगे घाव दोचार दिन में."

"इतने दिन क्या कम होते हैं शीला? वैसे भी तीन दिन में आधी हो गई हो. हालत देख अपनी."

"तीनचार दिन और न खाऊंगी तो भी कौन मरी जाती हूं?" वह आंसू पोंछ कर बोली.

"मर भी जाओ तो इस घर में किसे पीर है अपनी? मैं तो जब से आई हूं इस घर में, ऐसी ही दुर्गति से जी रही हूं. तुम्हारे जेठ ने क्या कभी दया की है मुझ पर? जोड़जोड़ टीसता है बरसात के दिनों में. अम्मां ने कान फूंके नहीं कि पिल पड़े कूटने को. न कसूर देखा, न सुना, न बाली उमरिया का लिहाज किया. तुम्हारी तरह ही तो मैं भी ब्याह कर आई थी, अबोध बालिका सी."

"बहन, लगता है भैया की लीक पर ही तुम्हारे देवर चल रहे हैं. कितनी बार हाथ उठा चुके हैं मुझ पर. न दया है, न ममता. जब कुछ बात न होगी तो लगेगा कि इन का सा प्रेमी कोई न होगा दुनिया में. लेकिन मारती दफा पूरे कसाई हो जाते हैं. लगता है, हम दोनों का कुछ नाता ही नहीं है."

"मारते समय मर्दों का कलेजा पत्थर का हो जाता है. शीला, पराई जाई को पीटने में काहे की पीड़ा?"

शाम के समय सावित्री ने पानी मिला कर एक पाव दूध बढ़ा लिया. फिर एक पाव में हलदी मिला कर चुपके से सब की आंख बचा कर शीला को गरमगरम पिला आई.

रात को दोनों भाइयों सहित अम्मां खाने बैठी थीं. दूध में रोटी डाल कर सावित्री ने तीनों के आगे कांसे के कटोरे रख दिए. फिर धड़कते हृदय से घूंघट की ओट से चुपकेचुपके उधर ही निहारने लगी.

सब से पहले कटोरा अम्मां ने ही खिसकाया. पहला कौर मुंह में रखा तो चेहरा कठोर हो गया. उन्हें देखते ही सावित्री का कलेजा मुंह को आ गया. दूसरा निवाला उठा कर मुंह तक ले जाते ही उन्होंने वापस पटक दिया. तभी दोनों बेटों ने बड़ेबड़े ग्रास मुंह में रखे. अम्मां ने दोनों बेटों के मुंह की ओर देखा. फिर बोलीं, "आज क्या पानी में गुड़ घोल कर रोटी पटक दी है, सावित्री? क्यों रे किशुन, अर्जुन... तुम्हें कुछ स्वाद लगा दूध का?"

"हां, कुछ गड़बड़ है... क्या किया है री, आज?" किशुन ने घूर कर देखा, पर सावित्री मौन रही.

उस का बदन पत्ते सा कांप उठा था. असहनीय पीड़ा की कल्पना कर के वह सिहर रही थी.

उत्तर दिया कर्कश स्वर में सास ने, "गटक लिया होगा चुड़ैलों ने. सोचती होंगी रात में पानी मिलाने से कौन जान पाएगा. अरी करमजलियों, अपने खसमों को भी नहीं खिला सकतीं, शुद्ध घीदूध? मैं तो

री बूढ़ी सास... आज मरी कल दूसरा
ा. आग लगे ऐसी जीभों में."

दोनों बहुएं कांप उठीं. सावित्री की
र किशुन ने आग्नेय नेत्रों से घूरा फिर उसे
ा ताव चढ़ आया. जूठे हाथों ही उठ कर
ा ने सावित्री को शीला के निकट से बाहर
च लिया और रसोई से घसीटता हुआ उसे
ामदे तक ले गया. झटके से खींचने से
वित्री की दुबलीपतली बांह से कई चूड़ियां
कर बिखर गईं और रक्त बह निकला.

"बोल, दूध में पानी क्यों मिलाया?
ना पतला कैसे हो गया आज? ये चालाकी
ा कब से सीखी,बोल?" इस के साथ ही
झापड़ उस के मुंह पर पड़ गए. सावित्री
ोंठ सी कर जैसे पीड़ा पीनी आरंभ कर
वह चुपचाप मार खाती रही,परंतु उत्तर
ने की जैसे मन में ठान ली थी. सोचने लगी
से बेचारी शीला न लांछित हो और
ीं देवर उठ कर उस की धुनाई न कर दें.
र दिन से पीड़ा झेल रही शीला क्या इतना
सह पाएगी? वह स्वयं पीड़ा झेल लेगी
ु शीला को अवश्य बचा लेगी, परंतु
ुन था कि सचाई उगलवाने को उसे
मरी किए जा रहा था. उधर शीला
ी रो रही थी, कांप रही थी. सावित्री की
ी से किशुन आगबबूला हो गया. उस ने
पकड़ कर जोर से खींचे तो सावित्री के
से चीख निकल गई. उस ने दोनों हाथों से
ने बाल पकड़ लिए. आंखों से झरझर
ू बह रहे थे, होंठों के कोरों से खून बहने
था.

"बोल बदजात, दूध में पानी क्यों
ाया? नहीं तो मैं तुझे जिंदा गाड़ दूंगा."

"गुड़ ज्यादा डल गया, इस से दूध
ला हो गया." वह रोते हुए बोली.

"सचसच बतला दे नहीं तो तेरी हत्या
के ही पानी पीऊंगा."

"बताती हूं, बताती हूं. मेरे बाल छोड़
हले." वह जोर से चीखी.

"नहीं पहले बता नहीं तो आज तुझे
से मार डालूंगा."

"मैं... मैं ने एक पाव दूध निकाल कर गुड़हलदी डाल कर शीला को पिला दिया है. तीन दिन से उस के मुंह में अन्न का एक दाना नहीं गया है. पति की मार से उस की जीभ कट गई है, होंठ फट गए हैं. इसी से दूध में पानी मिलाना पड़ा है."

"अब यह दूसरा झूठ. जानती है न कि कौन बहू जेठ के आगे बोलेगी. सच बता वरना..."

"विश्वास करो, मैं सच कह रही हूं."

"बहू, यदि यह सच है तो यहां आ कर सिर हिला कर बता दे कि दूध तू ने ही पीया है."

अम्मां, अर्जुन स्तब्ध से सारा कांड देख रहे थे. शीला कांपती सिहरती रसोई से दौड़ी आई और जेठ के पैरों पर तीन बार आंसुओं से भरा मुख पटकती चली गई जैसे कह रही हो 'हां, हां, हां."

फिर वह खंभे कीआड़ में खड़ी हो गई. जेठ के केश जकड़े हाथ तुरंत ढीले पड़ गए. ऐसा लगा जैसे घड़ों पानी उस के सिर पर पड़ गया हो. वह सन्न सा तीर समान बाहर निकल गया.

तभी सास का व्यंग्य बाण छूटा, "अरी कलमुंही तेरी अकल पर पत्थर पड़े हैं क्या? धरमकरम बेच आई जो आज जेठ के पांव छू लिए? कहां रहा तेरा सत? अरे, तभी तो धरती रसातल को जा रही है. यहां हम ने जेठ की परछाई नहीं देखी और यह पापिन जेठ के पांव पर माथा पटक कर जिठानी की वकालत कर आई. घोर कलयुग आ गया है." वह माथे पर हाथ मार कर उफनती चली गई.

तब तक अर्जुन भी हाथ धो कर उठ गया था. पता नहीं कितनी लज्जा, व्यथा ने उसे आ घेरा था. उस में भाभी तथा पत्नी से दृष्टि मिलाने का साहस नहीं था.

मां के एकएक शब्द हथौड़े की चोट से मस्तिष्क पर प्रहार कर रहे थे. मन हुआ कि मां को घसीट कर बाहर ले जाए. पर उन की ओर देखते ही सहम गया और बाहर निकल गया.

क्रमशः

आओ, साथसाथ

कहानी ● मैत्रेयी पुष्पा

वह कैसा था, बिलकुल मेरे मन में समाए कल्पना पुरुष जैसा. काले घनेरे बाल, उन्नत माथा और गौरवर्ण मुख पर मोहक आंखें. वह घायल था, बेहोशी की हालत में कुछकुछ बोल रहा था, जो हम में से किसी की समझ में नहीं आ रहा था.

उसे मैं ने कुछ देर पहले ही मेरठ से आने वाली बस में बैठे हुए खिड़की से झांकते देखा था. हमारी कार बारबार बस से आगे निकल जाती और कभी साथ चलने लगती. वह कुतूहलवश हमारी कार को झुकझुक कर देखता रहा था, इसलिए मुझे उस का चेहरा याद था.

लेकिन अब उस का शरीर सौष्ठव नहीं, बल्कि हमें उस का अति साहसिक कार्य प्रभावित कर रहा था. एकबारगी फिल्मी नायक जैसा रूप मेरी आंखों में तिर आया. वास्तविक जीवन में ऐसा होना असंभव



यलें

ा है, लेकिन...

मई का झुलसता महीना था. लेकिन न क्या हुआ कि मौसम अचानक बदल नन्हीनन्ही बूंदें गहरे काले बादलों से लगी थीं और शीतल हवा तनमन को ोर किए जा रही थी.

ग्रीष्मावकाश का पहला दिन था. ाओं के भार से तनावरहित मन लिए नकित सी इधरउधर फुदकने में मग्न

"तनु दीदी, अब तो चलिए हमारे " मेरी मौसी का बेटा आशीष जिद जा रहा था.

"अच्छा, अब समझ ं, तुम लोग बस से जाना चाहते न, इसी लिए मेरे पीछे पड़े हो."

"नहीं दीदी, ऐसी बात नहीं है. आप कार से चलेंगी तो हलद्वानी पहुंच कर नैनीताल घूमने का कार्यक्रम बनाया जा सकता है. आप के साथ घूमने में बहुत मजा आएगा, दीदी."

हम लोग कार द्वारा हलद्वानी के लिए रवाना हो गए. मैं कार चला रही थी. आशीष मेरे साथ आगे बैठा था. अनुभा और मौसी पीछे की सीटों पर थीं. कार हलकी बारिश से भीगी सड़क पर सरपट दौड़ रही थी. भीगता मौसम, ठंडी हवाएं और कैसेट पर बजते मधुर गीत, कैसा मदभरा वातावरण हो उठा था.

"दीदी, गाड़ी रोक लो. गढ़मुक्तेश्वर आ गया है. चाय पी कर आगे चलेंगे." आशीष ने सुझाव दिया और मौसी तथा अनुभा ने सहमति दर्शा दी.

मैं ने गाड़ी एक छोटे से जलपान गृह के सामने रोक दी. पास ही हलद्वानी जाने वाली वही बस खड़ी थी, जिस में 'वह' मुझे दिखा था. मुसाफिर बस से उतर कर इधरउधर आजा रहे थे. हम



चंचल, अल्हड़ तनु तो हमेशा ही चिड़िया की तरह फुदकती रहती और भविष्य के लिए न जाने क्याक्या सपने संजोती रहती. परंतु एक बार गरमियों की छुट्टियों में घूमने जाते समय एक ऐसी दुर्घटना हुई जिस ने न केवल तनु की चंचलता छीन ली बल्कि उस की दिनचर्या ही बदल डाली. बदलते समय के रुख को पहचान मित्रदेव को भी अपना निर्णय बदलना पड़ गया.

सभी उस जलपान गृह के आगे पड़ी बैंचों पर बैठ गए.

चाय बनने तक आशीष 'एक मिनट' कह कर चला गया. मैं जाते हुए उसे देख रही थी. वह भागता चला जा रहा था. उस के ठीक सामने नैनीताल से आने वाली बस पूरे वेग से आ रही थी. पीछे का द्वार खुला हुआ था. शायद किसी यात्री ने जल्दी उतरने के लिए खोल रखा था.

वह जरा सा दाएं को बचा, लेकिन फिर भी बस का खुला दरवाजा उस से आ टकराया. मैं ने आंखें मूंद कर चीख मारी. पर जैसे ही आंखें खोलीं तो मेरे समक्ष दूसरा ही दृश्य था. आशीष एक ओर को पड़ा था और एक युवक गंभीर रूप से घायल हो कर सड़क पर निर्जीव सा पड़ा था.

मौसी बेहाली की दशा में अपने पुत्र की ओर दौड़ीं. आशीष को बस के नीचे आते उन्होंने स्वयं देखा था. मैं सीधी उस युवक की ओर बेतहाशा भागी. सामने का दृश्य देख कर मेरा कलेजा फट पड़ा था. लहूलुहान हुआ वही युवक सड़क पर पड़ा था, जो मुझे बस से झांकता दिखा था.

लोग आसपास घिर आए, लेकिन उसे हाथ लगाने का साहस उन में से कोई नहीं कर रहा था. सब के मुख पर करुणामय प्रश्नचिह्न टंगा हुआ था. मैं ने दौड़ कर उस का सिर दोनों हाथों में ले लिया और बैठते हुए अपनी गोद में रख लिया. रूमाल निकाला, पर उस के बहते रक्त के लिए रूमाल पर्याप्त नहीं था.

मैं क्या करूं, कुछ समझ में नहीं आ रहा था. मेरा मन करुणा से भर उठा था. वह अनजाना ही सही, लेकिन उस समय कितना अपना लगा था. अपने प्राणों को हमें समर्पित करने वाला हमारा ही तो था, पराया कैसे होता वह. मौसी आशीष को झाड़पोंछ रही थीं, गिरने के कारण उसे हलकी खरोंचें आई थीं.

मेरी आंखों में आंसू भर आए थे. धीरेधीरे और लोग भी आगे आ गए और उस के बहते रक्त को देख कर चिंतित हो उठे. उन्हीं की सहायता से मैं ने उसे कार की पीछे की सीट पर लिटा लिया.

छोटी जगह है गढ़मुक्तेश्वर, कहां हस्पताल खोजती? बहते रक्त को देख कर मेरा हृदय बैठा जा रहा था. उस के प्राणों के लाले पड़े थे और मैं विवेकहीन सी इधरउधर देख रही थी. जैसेतैसे एक डाक्टर मिले, जिन्होंने हमारी भरपूर मदद की तथा साथसाथ मुरादाबाद तक आए.

वहां उस युवक का उपचार हुआ. कई टांके लगाए गए. थोड़ी देर बाद वह होश में आ गया था. वह आशीष के विषय में पूछने लगा और उस की कुशलता जान कर असहनीय दर्द के बावजूद भी उस के अधरों पर पतली सी स्मित रेखा तैर उठी. यह देख कर मैं न्योछावर हो गई थी उस पर.

उन का नाम मित्रदेव था. वह मेरठ से हलद्वानी जा रहे थे. लखनऊ से पदोन्नति के साथ ही स्थानांतरण हुआ था और हलद्वानी में नियुक्ति हुई थी. वह प्रतिष्ठापूर्ण पद पर थे. उन का परिवार मेरठ में रहता था. यही परिचय दिया उन्होंने. वह अविवाहित थे. उन की छोटी बहन रितु मेरी सहपाठिन निकली.



''तनु, भइया ने कहा है कि अपने पिताजी को हमारे पिताजी के पास कल ही भेज देना.'' रिकशा रुकवा कर हांफते हुए रितु ने कहा.

मारे कारण मित्रदेव जिस दुर्घटना के हुए थे, उस से हम सभी में एक बोध समा गया था. सोचते थे कि की अधिक से अधिक सहायता कर किन वह ऐसे स्वाभिमानी कि कोई इ लेना उन्हें सहज स्वीकार्य नहीं था. भी पैसे उन के इलाज में खर्च हुए, वे होंने जबरदस्ती मौसी के हाथ पर ए.

लद्वानी मित्रदेव के लिए अनजाना ा. इस हालत में हम उन्हें अकेला ड़ते. मौसी का अपना घर था यहां. हमारा घायल अतिथि अपने लिए रा खोजता फिरता.

सी ने अपने घर चलने का उन से क्या तो मित्रदेव ने झट से अस्वीकार ा. वह किसी तरह नहीं मान रहे थे. र कर हमें उन्हें डाक्टर के पास ले ड़ा और डाक्टर के परामर्श पर ही वह हमारे साथ स्वस्थ होने तक रुकने को तैयार हुए. पूरा पैसा चुका कर ही उन्होंने इस घर का अन्नजल ग्रहण किया था. उन का यह हठ और आदर्शों के प्रति निष्ठा दिनबदिन मुझे कमजोर करते जा रहे थे. हम दोनों एक ही शहर के थे, पहचान के हलके, पतले कितने ही तार तुरंत जुड़ गए.

आशीष उन्हें 'भैया' कहता. मित्रदेव मुझे भी यही कहते, ''मैं आशीष का भाई हूं तो तुम्हारा भी भाई हुआ न.''

पर मेरा मन तो उन्हें कुछ और ही मानता था. सारे रिश्तों से प्रिय वह मेरे प्रणय पुरुष थे, मेरे नायक थे. मैं तो अपने ही मन के हाथों विवश थी. समर्पण की भावना को किसी नातेरिश्ते का नाम कैसे दिया जा सकता है. वह तो अनाम प्रतीति है, जिसे केवल हम महसूस करते हैं और जिस पर न्योछावर होते हैं.

मित्रदेव को देखते ही मन में एक

निस्सीम पुलक समा जाती थी. लगता था, मैं आकाशचारिन खगी हो गई हूं. सिंदूरी क्षितिज पर जा कर हाथ बढ़ाते ही चांदसितारे समेट लाऊंगी. कल्पना पर भी मनुष्य का जोर नहीं रह पाता. मैं विवश थी, अपने स्वप्नों पर ताले कहां जड़ सकी.

उन की भाई वाली बात मुझे महज दिखावा लगती, बस कहने भर का रिश्ता. मैं ने तो यही सोचा था और जग की रीति भी ऐसी ही है.

मैं ने हमेशा उन का सामीप्य चाहा, आत्मीयता चाही, लेकिन वह किसी न किसी बहाने टालने की कोशिश करते रहे और मैं समझती रही कि वे लोकलाज वश ऐसा करते हैं. मौसी के डर से मुझ से दूर रहते हैं.

स्वस्थ होते ही अपने लिए आवास की व्यवस्था करने के लिए वह भागदौड़ करने लगे. मैं ने सुना तो गहरा धक्का लगा था. उन से दूर रहने की कल्पना मात्र से सिहर उठती थी मैं. सोचती थी, यह आकर्षण मात्र है या प्रेम ऐसा ही होता है. यदि मित्रदेव के मन में मेरे प्रति कुछ नहीं है तो फिर वह अतिरिक्त सतर्कता क्यों बरतते हैं?

मुझे तो मेरठ लौटना था. मौसी से कितनी ही बार कहा, ''आप मित्रदेव को अपने ऊपर के कमरे में क्यों नहीं रख लेतीं... आप के लिए तो वह 'मसीहा' बन कर आए हैं.

आखिर मौसी ने विनती की, ''कुछ तो खयाल करो बेटा, तुम ने आशीष की जान बचाई है. तुम तो मुझे दूसरे बेटे के रूप में मिले हो. जब तक हलद्वानी रहना है, इसी घर में रहो... अपना समझ कर.''

आखिर वह पिघल गए थे. आंखों की कोरें भीग उठी थीं. मौसी के दोनों हाथ अपने



ा में ले लिए और मेरी ओर ऐसी दृष्टि से
ा, मानो पूछ रहे हों कि रह जाऊं तो ठीक
? वही दृष्टि मेरे मन पर अंकित हो गई
मिटाई नहीं मिटती थी. क्यों था इतना
नापन उन आंखों में मेरे लिए कि लाख
यां रखने पर भी कहीं न कहीं से बरस ही
ा था.

उस दिन के बाद से वह उस घर के
य हो गए थे. हम लोग सभी साथ खाते,
घूमते. मैं उन का काम कर के बहुत
न होती. गहरी आत्मीयता ले कर वह
हृदय में आसन जमा चुके थे. कमरे की
एक चीज में उन की झलक दिखाई देती.
के वस्त्रों को छू कर लगता कि उन्हीं का
ल स्पर्श मुझे रोमांचित कर रहा है.
में तल्लीन रहती, मगर अपने गिर्द उन
ांहों के घेरे महसूस होते रहते.

कमरे के गुलदान में रोज ही मैं फूल
ती थी, एक दिन फूलों के बीच एक
रख दी 'प्यार सहित.' नाम मैं ने नहीं
. दिन भर मित्रदेव उस कमरे में रहे.
ह किसी काम से नीचे गए तो मैं ने दौड़
ुलदान देखा. चिट वहां नहीं थी. पानी
ास के पास पेपरवेट से दबी रखी थी.
चिट उन्होंने पढ़ ली थी. वह तो जानते
के फूल कौन सजाता है. मैं कैसी मुग्धा
ा हो उठी थी, लजीली मुसकान लिए
र दर्पण देखती रही थी.

रे जाने के दिन समीप थे. गरमी की
थी, सारा घर सन्नाटे में समाया था.
पने कमरों में सब सो रहे थे. पर मुझे
ीं था.

मत्रदेव ऊपर अपने कमरे में अकेले
ीक सी मैं सीढ़ियां चढ़ती चली गई
कवाड़ धीरे से खोल कर कमरे में
हो गई. वह निद्रामग्न थे. मेरे होंठ
ात चुंबन के उद्दाम वेग में उन के
से जा लगे.

न्होंने उसी क्षण आंखें खोल दीं और
राध वहीं पकड़ लिया. वह हंसने
सचेत कर दिया कि मैं ऐसी गलती
ोहराऊं.

एक दिन मौसी का सारा परिवार किसी विवाह समारोह में गया था. मित्रदेव नहीं जा रहे थे,अतः मेरा मन भी नहीं किया. तबीयत ठीक न होने का बहाना कर मैं घर ही रह गई. वह ऊपर थे, शायद कुछ पढ़ रहे थे. उन दुर्लभ, एकांत क्षणों में मैं उन के कमरे में चली गई.

मैं खड़ी थी उन के सामने. पर वह पढ़ने में तल्लीन थे. आहट से ऊपर दृष्टि उठाई तो ठगे से रह गए और एक क्षण को मुझे निहारा. फिर उठे तो दो थप्पड़ कस कर मेरे गालों पर जड़ दिए. मैं भौंचक सी उन्हें देखती रह गई. वह कुपित दृष्टि से दीवार को घूरे जा रहे थे. फिर धीरे से बोल उठे, "तनु, अपना लिबास देखा तुम ने? इस तरह क्यों आ गई मेरे सामने? क्यों, बोलो न क्यों आईं? पारदर्शी कपड़ों को पहन कर क्या चाहती हो, मुझ से तुम?" वह रोआंसे हो उठे.

मैं खामोश खड़ी रही, क्या बोलती? अपनी गलती का एहसास तुरंत ही होने लगा था मुझे. अपमान और लज्जा के मारे आंखें झरझर बरसने लगीं. लौट कर अपने कमरे में पड़ी देर तक रोती रही.

हिम्मत कर के रात को उन्हें खाने के लिए बुलाने गई तो महसूस हुआ कि वह बेहद दुखी हैं. मैं अपने कृत्य पर बेहद लज्जित थी. मैं ने जा कर पांव पकड़ लिए तो उन की आंखें भर आईं.

वह खाना खाने नहीं आए. अस्वस्थता का बहाना कर के कमरे में बंद हो गए. मैं रात भर सो नहीं सकी. सुबह उठ कर मित्रदेव आए तो उन के हाथ में पट्टी बंधी थी. मैं आशंका से सिहर उठी. मौसी ने पट्टी खोल कर हाथ देखने की जिद की. पट्टी जैसे ही हाथ से उतरी मेरी चीख निकल गई, उन का हाथ बुरी तरह कुचला हुआ था.

"अरे, यह क्या हुआ? यह क्या कर डाला तुम ने?" मौसी कराह उठीं.

"कुछ नहीं, पंखे की पंखुड़ी से कट गया है." वह धीरे से बोले.

"सच?..."

"हां." वह दृढ़ स्वर में बोले.

उस के बाद जो पीड़ादायक दिन शुरू हुए, उन्हें न मैं काट पा रही थी और न मित्रदेव. उन्होंने खानापीना लगभग त्याग दिया था. अपने कमरे में ही बंद हो गए थे. किसी से भी मिलतेजुलते नहीं थे. मैं बेहद डर गई थी.

एक दिन वह मेरे पास आए और कहने लगे, "घबराना नहीं, मैं यह बात कभी किसी से नहीं कहूंगा."

"आप ने क्यों किया ऐसा?" मैं ने पूछ ही लिया, रोते हुए मेरी हिचकी बंध गई.

"क्योंकि यह हाथ तुम पर उठा था, इसलिए." वह बेझिझक बोल गए.

वह जितने अच्छे स्वरूप में मेरे सामने उजागर होते जा रहे थे, मैं उतनी ही अधिक ग्लानि से पीड़ित होती जा रही थी. फिर वह अंतिम दिन भी आ गया, जब मैं बिलकुल दहल गई. उन्होंने त्यागपत्र दे दिया था और मेरठ चले गए. हमें बिना बताए, बिना कुछ बोले. कमरे में मौसी के नाम एक पत्र लिखा रखा था, जिस में बस मन न लगने के कारण नौकरी छोड़ने का जिक्र था.

वही फूलदान मैं देख रही थी. बासी फूल निकाल कर न जाने क्या खोजना चाहती थी कि पंखुड़ियों में एक नन्ही सी चिट निकली, "तनु, मैं ने तुम्हें छोटी बहन के रूप में देखा था, क्या करता मैं?"

अवकाश तो मेरा भी समाप्त हो गया था. कहां मैं एक हफ्ते के लिए आई थी, पर यहां इतना समय गुजर गया. मेरठ जाने का उत्साह रहा ही नहीं था, लेकिन मौसी के घर भी कब तक पड़ी रहती.

मेरठ आ कर जीवनचर्या ही बदल गई. मन में सूनापन सा भर गया था. अपने ही प्रेम की मादकता मेरे हृदय को चीर गई थी. आंखों में खिंचे सतरंगी इंद्रधनुष मेरे ही प्रेम को लहूलुहान कर गए थे. जब से मेरा सान्निध्य मित्रदेव को मिला था, वह विपत्तियों में ही घिर गए थे.

मैं ने कालिज जाना छोड़ दिया था. अम्मां रोज ही पीछे पड़ जातीं, "क्या हो गया है री तनु तुझे? मरीमरी, मुरझाई सी क्यों रहती है? तेरे आने से तो घर में रौनक आ जाती थी."

सुन कर मेरी आंखों में आंसू छलक जाते थे. मुझे इस तरह दुखी देख कर अम्मां चुप हो कर मुझे ताका करतीं. कैसे कहती कि मैं ने एक दुस्वप्न देखा था, उसी से डरी हुई हूं आज तक.

मेरे अंदर की तनुश्री जाने कहां मर गई. नित नए फैशन और नूतन आवरण में सजी तनु कहीं खो गई. अब तो एक वैरागिनी अपने निश्छल प्यार की विडंबना लिए जी रही थी.

अम्मां के कहने पर ही कालिज गई थी. वहां मित्रदेव की बहन रितु मिली थी. पहली बार अंतरंग बातें हुईं.

"तनु, तू भी इतना परेशान है और भैया भी. उन्हें नौकरी तो मिल गई है, लेकिन सीधा हाथ तो बिलकुल काम नहीं करता है. एक प्राइवेट फर्म के मालिक ने आठ सौ रुपए पर रख लिया है उन्हें."

रितु तो कह गई, लेकिन उसे क्या पता था कि उस का एकएक शब्द मेरे कलेजे को चीरता चला जा रहा है. अब सोचती हूं कि कहीं घटिया फिल्मों का असर तो नहीं था मेरे ऊपर, जो मित्रदेव के जीवन को तहसनहस कर डाला. वह अभिमानी तो किसी से एक पैसे की सहायता स्वीकार करने वाला नहीं.

घर आ कर अम्मां से साफ कह दिया था, "मैं नौकरी करूंगी, अम्मां."

"तनु, क्या पागल हो गई है, घर में किस बात की कमी है? अरी, अभी तो तुझे पीएच.डी. भी करनी है... पढ़ ले आगे बेटी."

पता नहीं क्यों मेरा मन ही नहीं माना. आगे पढ़ने का इरादा त्याग दिया और नौकरी कर ली. घर से पैसा भी लेना नहीं चाहती थी. सुखसुविधाओं से अपनेआप को वंचित कर के मुझे अपार सुख मिलता था.

एक दिन रितु आई थी, अपने ही कालिज के सांस्कृतिक प्रोग्राम के लिए बहुत कह गई, पास भी दे गई. मैं जाना नहीं

रती थी, फिर भी उस का आग्रह कहां
पाई. शायद वह मित्रदेव की बहन थी,
लिए.

पंडाल खचाखच भरा था, पुरानी
तयां जाग उठीं. मैं सीट ढूंढ़ रही थी कि
ने आवाज दी, "तनु, इधर आ. देख, मैं
से प्रतीक्षा कर रही हूं कि मेरी कोई
ती आ जाए तो भैया के पास बैठा जाऊं.
अकेले बैठे हैं, मुझे तो कार्यक्रम का
लन करना है. अभी मेकअप रूम में भी
है, तू बैठ यहां."

कह कर रितु जाने लगी, लेकिन फिर
सोच कर लौट पड़ी, "अरे हां भैया, यह
...तनुश्री, और तनु, यह मेरे भैया हैं
व, वैसे तुम दोनों एकदूसरे को जानते
."

रितु चली गई. एक क्षीण सी मुसकान
मित्रदेव और मैं देर तक बैठे रहे.

मित्रदेव चकित मन से सोचते रहे कि
ह वही तनु है? इसे क्या हो गया है?
सी जोगिया रंग की सूती साड़ी,
बेपरवाही से लपेटा जूड़ा और खोईखोईसी
आंखें, थकाथका सा चेहरा.

कहां तनु कटे बालों में सज्जित, जींस
और ढीला टाप पहने यहां से वहां चिड़िया
सी फुदकती फिरती थी. मित्रदेव को एक
मिनट भी चैन से नहीं बैठने देती थी. कहां
अब वह आहत गौरैया सी गुमसुम.

"कैसी हो तनु?" थोड़ी देर बाद बात
मित्रदेव ने प्रारंभ की.

"अच्छी हूं..." कह कर उस ने नीचे
दृष्टि झुका ली.

"आजकल क्या कर रही हो?"

"एक स्कूल में नौकरी करती हूं."

"अरे, तुम तो कहती थीं कि विदेश
जाऊंगी... शोधकार्य करूंगी... फिर?"

तनु ने कोई उत्तर नहीं दिया. खामोशी से
सिर झुकाए बैठी रही.

"तुम तो इतना बोलती थीं, यह क्या
हो गया है तुम्हें?"

"क्या कहूं, कहने को है ही क्या? आप

के साथ जो कुछ भी हुआ, उस की जड़मूल तो मैं ही हूं न... बस अपनेआप को क्षमा नहीं कर पाती मैं. मन में अपराधबोध का विषवृक्ष फैल रहा है तो चुहल कहां से करूं? उमंगों का संसार कहां बसाऊं?" अश्रु निमज्जित नयन बरसने को हो चले थे.

"तनु, वह तुम्हारा पागलपन था. प्यार के ज्वार में तुम सब कुछ भूल गई थीं. सीमा, मर्यादा, नैतिकता... सब कुछ."

"मैं ने कब कहा कि वह पागलपन नहीं था, पर अब उस बात को 3 साल बीत गए, अब भी क्या पागलपन ही कहोगे? मैं जानती हूं कि आप का जीवन मेरे कारण चौपट हुआ है. एक छोटी सी नौकरी महज 8 सौ रुपए...? आप जैसा योग्य व्यक्ति क्या इसी काबिल था? लेकिन सच मानिए, उस दिन से मेरे अति संपन्न घराने की सुखसुविधाएं मेरे लिए वर्जित हो गईं. इसी लिए मैं ने नौकरी की है... अपनेआप को परखने के लिए कि क्या मैं भौतिक सुविधाओं के अभाव में रह सकती हूं?

"पर मित्रदेव, विश्वास करो, मैं ऐसी स्थिति में भी रह सकती हूं. 3 साल से अपनी छोटी सी पगार पा कर अपनेआप में संतुष्ट हूं, तृप्त हूं. कम से कम मैं भी वही स्थिति तो झेल रही हूं जो मैं आप के साथ झेलती. प्यार कर के देखो तो समझ पाओगे कि प्यार में क्याक्या झेलने की शक्ति होती है.

"मैं मानती हूं कि परिपक्वता उस वक्त नहीं थी मेरे भीतर, कोरी भावुकता रही होगी मुझ में भी और आप में भी. इस भावुकता के तहत तो हम बहनभाई भी बन सकते थे और प्रेमीप्रेमिका भी. उस भावुकता को एक नाम मैं ने दिया और एक आप ने. पर उस के मूल में तो प्रेम ही समाहित था... था न? यदि नहीं होता तो आप के निकट आने का दुस्साहस मैं नहीं कर पाती और एक लड़की के पीछे अपने हाथ को कुचलने का पागलपन आप भी नहीं करते. करते क्या... बोलो?

"3 साल का अंतराल कम नहीं होता, मित्रदेव. समय हमें क्याक्या नहीं सिखा देता. इन 3 सालों ने मेरे मन को तपा कर खरेखोटे का भेद समझा दिया है. सोचनेसमझने की शक्ति आई है, मुझ में. मैं आप के जीवन में आऊं न आऊं, पर मेरे जीने का ढंग आप की जीवनचर्या के साथ एककार हो गया है..."

"तनु, तुम जानती हो कि क्या कह रही हो? अपनेआप को इस तरह दुख दे कर क्या मिलेगा तुम्हें? और मुझे पा कर भी क्या पा सकोगी तुम? जीवन बहुत लंबा है तनु, प्यार का ज्वार उतरते ही अभाव कचोटेंगे तुम्हें, बहुत पछताओगी."

"आप जो भी समझें, आप को हक है, पर मैं ने खूब सोचसमझ लिया है. अब इतनी छोटी उम्र नहीं है मेरी कि यथार्थ का धरातल छू ही न सकूं. सोचसमझ कर ही कह रही हूं. यदि आप मुझे अपनी जिंदगी में शामिल कर सकें तो पिताजी को आप के घर भेजूं. कब तक ऐसे अकेले रहोगे... मुझे भी साथ ले चलो न, मित्र."

सांस्कृतिक कार्यक्रम चलता रहा, तालियां बजती रहीं. हम दोनों सब से बेखबर चौंक कर बीचबीच में तालियां बजा देते, पता कुछ भी नहीं चला कि कौन सा कार्यक्रम आरंभ हुआ और कौन सा समाप्त.

सब उठ खड़े हुए थे. रितु भागती हुई हमारे पास ही आ गई. मित्रदेव उठे और रितु के साथ चल दिए. मैं उठ कर विदा लेती हुई अपने मार्ग पर चल दी.

दिशाएं अलगअलग थीं. मैं रिकशा में बैठ कर चल ही रही थी कि पीछे से रितु भागती हुई आई, "ओ तनु, रिकशा रोक..."

रिकशा रुका तो वह हांफती हुई खड़ी हो गई. मैं प्रश्नात्मक दृष्टि से उसे देखे जा रही थी.

"तनु, भैया ने कहा है कि अपने पिताजी को हमारे पिताजी के पास कल ही भेज देना."

कह कर वह उसी वेग से भागती चली गई. मेरा रिकशा धीमी गति से पुल की चढ़ाई चढ़ रहा था.

पाठकों की समस्याएं



मैं भारतीय वायु सेना में कार्यरत एक
वाहित पुरुष हूं. समस्या यह है कि पिछले 4
से मैं अपने दोस्त की बहन को बहन मानता
हा हूं और वह मुझे अपने भाई से भी ज्यादा
करती है. उसे याद कर के आंखों में आंसू आ
हैं क्योंकि वह मेरे लिए बहुत रोती है. जब
ट्टी पर जाता हूं तो उस के घर जरूर रुकता
व्यवहार भी अच्छा होता है. कई बार यों
है कि शायद यह प्रेम हमेशा न रह पाए.
की राय चाहता हूं कि किस प्रकार हमारा
ोह बंधन सदा बना रहे?

दरअसल आप का यह भाईबहन का रिश्ता
गहरा गया है. आमतौर पर इन तथाकथित
में सम्मोहन हो जाया करता है और
ा एकदूसरे से प्रेम भी हो जाता है. इस में
जूबा नहीं है. आप के साथ भी यही हुआ है.
वह अपने सगे भाई से भी ज्यादा प्रेम करती
उधर आप भी उस के लिए इस हद तक
 हैं कि उस से पत्रव्यवहार भी करते रहते
 को टटोल कर देखिए, यदि इस रिश्ते की
 को बरकरार रखना चाहते हैं तो इस को
व स्नेह से लें. जितना गहराई से सोचेंगे
ही डूबते जाएंगे. यदि ऐसा हो जाए कि
न का रिश्ता कहीं दम तोड़ कर कुछ और
नगे तो आश्चर्य नहीं, क्योंकि उस से आप
ता खून का तो है नहीं. आप दोनों को ही
पनी सीमा में रहते हुए इस भाईबहन के
 गरिमा बराबर बनाए रखनी होगी.

20 वर्षीय अविवाहित युवक एक
संस्थान में कार्यरत हूं. स्वभाव से बेहद
ोल हूं. समस्या बड़ी अजीब सी है. हुआ
 एक घनिष्ठ मित्र एवं सहयोगी की 17
तीजी मुझ से बहुत खुल गई है. जब भी
दौरे पर जाते तो मेरा अधिकांश समय
ी के साथ बीतता क्योंकि वह हमारे घर
थी. हम एकदूसरे की ओर आकर्षित
न मेरे मांबाप ने मुझे गलत मान लिया,
य ने कभी सीमा को नहीं लांघा. इधर
इस लड़की का एक वर्ष बरबाद हो गया. उस का
अपराधबोध मुझे सालता है. उधर मित्र की
उपेक्षा सह नहीं पा रहा. सिगरेट भी इस गम में
अत्यधिक पीने लगा हूं. क्या करूं?

सिगरेट पीना किसी गम का इलाज नहीं है. उसे छोड़ दें. उस लड़की के व आप के व्यवहार को आप के मांबाप ने नापसंद किया तभी आप को गलत लगा. यही बात आप के मित्र के साथ भी हुई. अब एक तो आप को अपने मित्र व मांबाप को विश्वास दिलाना होगा और उस पर अमल करना होगा. आप के आकर्षण के कारण वह पढ़ न सकी और उस का साल बरबाद हुआ, आप को स्वयं अक्ल आ गई है. उस लड़की को पढ़ कर भविष्य बनाने दीजिए और प्रेम के चक्कर में मत पड़िए. समय बीतते आप के सही व्यवहार को देख कर आप से सब सामान्य हो जाएंगे.

मैं एक 20 वर्षीय अविवाहित युवक हूं. समस्या यह है कि एक 24 वर्षीया विवाहित स्त्री ने मुझे अपने प्रेमजाल में फंसा लिया है जिस से एक तो पढ़ाई चौपट हो रही है, दूसरे स्वास्थ्य भी गिरता जा रहा है. मैं उसे छोड़ना चाहता हूं पर उस ने मुझे अपने पंजों में जकड़ रखा है.

आप की समस्या आप की अपनी बनाई हुई है. उस विवाहिता से संबंध रखने से पूर्व आप ने कुछ भी न सोचा और वह घोर अनैतिक कार्य आप को अच्छा लगने लगा और अब सारा दोष उस स्त्री को ही दे रहे हैं. गलती उस स्त्री की भी है जिस ने विवाहित जीवन के नियमों को ताक पर रख दिया. आप उस स्त्री से मिलना एकदम बंद कर दें और उसे दुनिया की ऊंचनीच भी समझा दें. इस संबंध को एकदम तोड़ने में ही आप दोनों का भला है.

– कंचन ●

पाठकों की व्यक्तिगत, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक, कानूनी आदि समस्याओं के उत्तर इस स्तंभ में दिए जाते हैं. स्वास्थ्य संबंधी उत्तर देना संभव नहीं है. पत्र द्वारा उत्तर नहीं दिए जासकते. अपनी समस्याएं इस पते पर भेजें : कंचन, सरिता झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

सरिता



और बच्चों का पालन

सरिता का हर अंक कई गंभीर विषयों से भी पाठकों को परिचित कराता है. इस के हर अंक में अभिनव व उपयोगी सामग्री होती है. सरिता सिर्फ मनोरंजन ही नहीं करती, देश व समाज की विषम समस्याओं का सही व निर्भीक विश्लेषण भी करती है.

बच्चों के लालनपालन संबंधी कई लेख प्रकाशित कर सरिता ने माताओं को अनूठी जानकारियां दी हैं, उन्हें इस योग्य बनाया है कि वे अपने बच्चों के विकास में हमेशा अग्रणी रही हैं.

बच्चों के पालन से संबंधित पिछले अंकों में प्रकाशित महत्त्वपूर्ण रचनाओं के शीर्षक

- बच्चे उपेक्षा क्यों करते हैं (जून प्रथम 1991 अंक)
- बच्चों के लिए सेक्स शिक्षा कितनी जरूरी (जून द्वितीय 1991 अंक)
- बच्चों के अटपटे प्रश्नों के उत्तर कैसे दें? (जुलाई द्वितीय 1991 अंक)
- शरारती बच्चे को कैसे पालें? (अगस्त प्रथम 1991 अंक)
- बच्चों की अदालत में मातापिता (सितंबर प्रथम 1991 अंक)
- बच्चों को दुर्घटनाओं से कैसे बचाएं (सितंबर द्वितीय 1991 अंक)
- बच्चों की गलतियां पिता से न छिपाएं (दिसंबर प्रथम 1991 अंक)
- क्या आप अपने बच्चों को पीट सकते हैं? (दिसंबर द्वितीय 1991 अंक)

सरिता : जिस का कोई अंक पढ़ने से न छूटे

प्रणय सेतु

(पृष्ठ 66 का शेषांश)

बार दबाई गई भावनाएं और आवेग एक दिन तो आखिर दम तोड़ ही देते हैं.

यथासमय जया ने बेटे को जन्म दिया. ी ने ही उस का नाम रखा, चंदन. जया थसाथ अब नन्हे से चंदन की देखरेख ए भी मांजी हर पल सजग, सक्रिय चौकन्नी रहती थीं.

जया को बड़ा चाव था कि बेटे की ख और पालनपोषण में अमल की भी य भूमिका हो, पर उसे कुछ करने का र ही कहां मिल पाता था. आधी रात भी अगर चंदन रोता तो मांजी कोच आ कर उसे उठा ले जातीं, "तुम तो अभी खुद बच्चे हो, तुम्हें क्या पता ते बच्चों को कैसे चुप कराते हैं."

जया और अमल एकदूसरे से आंखें हुए शायद यही सोचते कि पिता बनने के नएनए सुख को भी न वे जी पा रहे हैं, न ही जी भर कर बांट हैं. पर करें तो क्या? कहें तो किस से? नब के सुखदुख, व्यथा, वेदना का मूक समय का निर्झर अपनी अबाध गति ना रहा. समय के साथ बहाव की ही में बहता रहा अमल और जया का भी, सुखसंतुष्टि का जामा ओढ़े. फिर ाए तो बाहरी तौर से कोई कमी भी ी उन के जीवन में. मांजी का स्वभाव यवहार भी अंत तक वैसा ही था, ात्सल्य और ममता के हलके से बोझ ने बच्चों को हर ओर से सहेजता मेटता हुआ.

वर्ष पूर्व छोटी सी बीमारी के बाद ह ही जब मांजी चल बसीं तो अमल ा के बीच एक विराट शून्य तन कर गया. संबंधों में पनपी असहजता ी ही मुखर हो उठी.

शोक के सागर में डूबी जया को हर समय मांजी की वाणी आसपास ही गूंजती प्रतीत होती. "जया, अमल का डब्बा बंद किया."

"जया, अमल की कमीज का बटन टूटा पड़ा है, लगा देना."

'जया, अमल को शकरपारे बहुत पसंद हैं, आज थोड़े से बना लेते हैं."

ऐसे में पतिपत्नी के बीच सदा ही एक सेतु का काम करने वाली मांजी के अचानक ही दिवंगत हो जाने पर जया और अमल शायद सन्नाटे से घिरे एक ही सागर के दो टापू बन जाते, अगर उन के बीच उन का बेटा चंदन न होता.

"चंदन, पिताजी को बुला, खाना तैयार है."

"चंदन, पिताजी को बोल दे, लौटते हुए फल और सब्जी लेते आएं."

या फिर... "चंदन, मां को बोलना, आज मैं देर से आऊंगा."

"चंदन, मां को बोल, मेरा खाना लगा दें, बहुत देर हो रही है."

कभीकभार चंदन की अनुपस्थिति में पतिपत्नी के वार्तालाप का दायरा बस 'हां..हूं' और 'हां...नहीं' के बीच ही सिमट कर रह जाता था.

अब चंदन के विदा लेते ही जया और अमल के बीच एक लंबा मौन पसर गया था. इस सन्नाटे की गहनता में दोनों को हर ओर से बस आहटें आती प्रतीत होती थीं. मांजी के वात्सल्य और ममता की आहटें, उन के विराट व्यक्तित्व और अपार स्नेह की आहटें और चंदन की शरारतों की आहटें. मौन सन्नाटों से उभरती इन आहटों की गूंज से पतिपत्नी दोनों ही आंतकित हो उठते.

'कैसे तोड़ा जाए इस मौन को? कैसे भेदा जाए इस सन्नाटे को?' लाख चाहने पर भी दोनों समझ न पाते. वर्षों से माध्यम द्वारा जुड़े रहने की प्रवृत्ति ने उन्हें नदी के दो पाटों के समान कर दिया था. जल की लहरों द्वारा एकदूसरे को सहेजते, समेटते लेकिन

फिर भी एकदूसरे से कितनी दूर?

कभी तो मन कैसे एकांत के लिए अकुलाता था. परंतु वे सब तो जैसे किसी बीते युग की बातें लगती हैं. अब इस वय में वे क्या करें इस एकांत का? दुविधा से घिरा जया का मन एकांत से घबरा कर कभी मांजी को पुकार उठता था और कभी चंदन को आवाजें देने लगता था.

वय और एकांत का तारतम्य बैठातेबैठाते जया को अपने ऊपर ही हंसी आने लगी. अभी तो 40 को पकड़ने में भी दो वर्ष बाकी हैं, फिर अभी से ही बुढ़ापे का सोच क्यों. क्या 40 ही ढलान की शुरूआत है, बहार का अंत और पतझड़ की पुकार है.

जया का मन अभी इन दुविधाओं से उबरता कि एक नई समस्या आन खड़ी हुई. उसे क्या पता था कि यह नई समस्या ही सब पुरानी समस्याओं का अंत करने वाली है. उस रात जया ठीक से सो न सकी थी. सारी रात सिर दर्द से दुखता रहा. सुबह सवेरे दूध वाले की घंटी सुन कर वह उठी तो सिर बुरी तरह चकरा गया. घबराहट में उस के मुंह से हलकी सी चीख निकल गई और वह फिर से लेट गई.

उस की आवाज सुन कर अमल हड़बड़ा कर उठ बैठा, "क्या हुआ?" उस ने घबरा कर पूछा.

जया कुछ उत्तर देती कि दरवाजे की घंटी फिर बजी. "मैं देखता हूं." कहते हुए अमल उठ खड़ा हुआ.

दूध ले कर वह वापस पहुंचा तो जया फिर उठने के प्रयत्न में थी.

"अरे, तुम्हें तो बहुत तेज बुखार है." अमल उस के सिर को छू कर बोला.

जया ने उठने का उपक्रम जारी रखा तो अमल ने कंधों से पकड़ कर उसे जबरदस्ती लिटा दिया और बोला, "महारानीजी आज आप आराम करने का कष्ट करें... मैं चाय बना कर अभी हाजिर होता हूं."

जया ने अविश्वास से उसे निहारा तो अमल चुहल करते हुए बोला, "बंदा चाय भी बना देगा. आप को नाश्ता भी बना कर देगा और दोपहर को आप के लिए खिचड़ी भी बना लेगा. क्यों, विश्वास नहीं हो रहा न ... अरे, आप ने कभी अवसर ही नहीं दिया वरना..." वह खिलखिलाता हुआ रसोई घर की तरफ चला गया.

जया ने महसूस किया कि सच ही कभी उन्हें चुहल और हंसीठिठोली करने का अवसर ही कब मिलता था. 3-4 साल में कभी एक बार 8-10 दिन की छुट्टी पर वह अमल के साथ बाहर होती तो वह उसे बहुत बदलाबदला लगता था. उमंग, उल्लास और उन्मुक्तता से भराभरा, पर घर लौटने पर मांजी की छत्रछाया तले वही ठहराव, वही गांभीर्य, वही मौन पसर जाता.

"चलो उठो, हाथमुंह धो लो, तब तक चाय बनती है." अमल बांहों का सहारा दे कर उसे स्नानघर तक ले गया. साथ खड़े हो कर उसे मंजन करवाया. मुंह धुलवा कर तौलिए से मुंह पोंछने में ऐसे मदद की मानो वह कोई छोटी बच्ची हो. पति के इस नए स्पर्श से जया ऐसे पिघलने लगी मानो वह कोई कच्ची, कोमल किशोरी हो.

डाक्टर को दिखाया गया, दवाई दी गई, पर जया का शरीर तीन दिन तक तवे की भांति तपता रहा. अर्द्धचेतना के बीच कई बार उस ने अपने माथे पर अमल के स्पर्श का अनुभव किया. अनेक बार उस की आंखों में चिंता और व्यग्रता के भावों को पढ़ा. कालिज से छुट्टी ले कर वह दिनरात उस के साथ साए की तरह लगा रहा.

जया अभिभूत हो उठी. इतने लंबे वैवाहिक जीवन में यह पहला अवसर था जब अमल उस की सेवाशुश्रूषा में लगा था. उसे यों घरगृहस्थी के कामों में उलझा देख कर ग्लानि भी होती थी जया को, लेकिन मन में दबीढकी, मीठी सी पुलक भी उठती थी, 'तो इतना प्यार करता है अमल उसे.'

"बड़ा छोटा दिल है तुम्हारा, बेटे के

ाद में यों बुखार चढ़ा लिया."

चौथे दिन जया को काफी आराम था. ह घर के कामों में अमल का हाथ बंटाने ठी तो उस ने उसे मीठी सी झिड़की दी, बैठेबैठे चैन नहीं आ रहा या मेरे हाथ का ाम नहीं भा रहा? अभी एकदो दिन और राम कर लो, पूरी तरह से ठीक हो जाओ, कर शुरू हो जाना, अभी तो मैं ने छुट्टी और ढ़ा ली है"और जया का हाथ पकड़ कर मल ने उसे बिस्तर में लिटा दिया.

दोपहर को लेटेलेटे जया कोई पुस्तक ढ़ रही थी कि अमल ने फिर उसे डपट या, "यह क्या हर समय किताबों में मुंह ाल कर लेटी रहती हो, कुछ पता भी है खार की कमजोरी में दिमाग और आंखों ो भी आराम की जरूरत होती है." हतेकहते उस ने पुस्तक लगभग जया के ाथ से छीन ली और उसे बंद कर के रखने ी लगा था कि पुस्तक का शीर्षक देख कर ठक गया, "अरे, यह तो प्रेमचंद की र्मभूमि' है."

पति के चेहरे पर छाए अचरज के भावों से जया को भी आश्चर्य हुआ. मन ही मन उस ने सोचा, 'हां, प्रेमचंद, की 'कर्मभूमि' ही तो है, पर इस में ऐसा आश्चर्य क्यों?'

"कहां से मिली यह पुस्तक तुम्हें?" अमल ने पूछा.

"क्यों, पास ही के पुस्तकालय से लाई हूं. वहीं से तो मैं हमेशा किताबें लाती हूं. बुखार चढ़ने से एक दिन पहले ही यह उपन्यास लाई थी."

"तुम ऐसा गंभीर साहित्य भी पढ़ती हो, मुझे तो कभी पता ही न चला. वरना अपनी कालिज के पुस्तकालय से तुम्हें भी पुस्तकें ला दिया करता. मैं तो हमेशा यही समझता था कि तुम हलकीफुलकी पत्रिकाएं और उपन्यास ही पढ़ती हो."

जया की बीमारी जैसे उपहार बन कर आई थी. पतिपत्नी को मानो एकदूसरे का अन्वेषण करने का अवसर ही मिल गया था. ऐसा अन्वेषण, जो मानसिक दूरियों को

मेहनत



छुटभैये चोर
की आजकल चांदी थी
सौसौ के नोटों
की होती आबादी थी.
घरवाली ने पूछा एक दिन
आजकल सौसौ से
कम नहीं है बात
बड़ीबड़ी मुर्गियों पे
हाथ डालने की
हो गई है क्या औकात.
बोला, नहीं
बड़ी मेहनत कर रहा हूं
आजकल दिन में
रिश्वतखोर बाबुओं की
लिस्ट बनाता हूं
उन्हीं की पत्नी से छिपाए
रुपयों पे घात लगाता हूं.

—प्रमोद सिंघल

लांघता हुआ हृदय की गहराई तक उतरता चला जा रहा था. यों तो जया और अमल ने सदा से ही तनमन से एकदूसरे का वरण किया था, परंतु अब पारस्परिक संप्रेषण बढ़ जाने से उन के इस मधुर संबंध को तृप्ति के नए आयाम मिल गए थे.

दोनों ही साहित्यप्रेमी जीव थे. शाम की चाय की चुस्कियों के बीच वार्तालाप अकसर ही साहित्य के आसपास ही मंडराता रहता था.

'विदुषी पत्नी के ज्ञान से वर्षों तक कैसे अनभिज्ञ रह सका हूं' अमल को आश्चर्य भी होता तो पश्चात्ताप भी.

जीवन यात्रा में बिछुड़ी मां की याद भी सताती तो दूर पढ़ रहे बेटे की यादें भी चली आतीं. तब दोनों एकाएक ही उदास हो उठते.

ऐसे में उन का पारस्परिक वार्तालाप प्राणवायु का काम करता और उन उदास क्षणों से उबरने में उन की भरपूर मदद भी करता.

"जया, मैं कल से कालिज जाऊंगा... बहुत छुट्टियां हो गईं. तुम अब बिलकुल ठीक हो पर डाक्टर ने बोला है, कमजोरी कुछ दिन रहेगी. और हां, अपने खानपान का थोड़ा ध्यान रखा करो. डाक्टर कह रहा था कि तुम्हारा वजन काफी कम है. सुबहशाम खुली हवा में सैर करने भी चलना होगा."

प्रभात बेला में अब रोज ही अमल और जया सैर को निकल पड़ते. जीवन सफर अब ऐसे था मानो अनुभवों से भरीपूरी वय की आरंभिक ढलान पर ही बसंती बयार का झोंका तनमन को पुनःयुवा चंचल और नादान बना जाए.

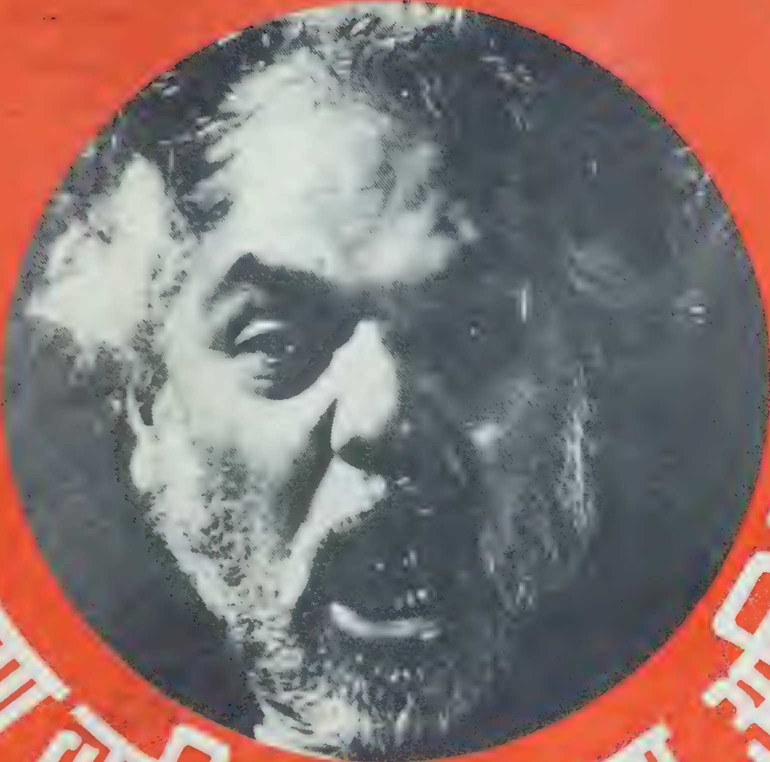
कभीकभी वे आश्चर्य से भी भर उठते कि इस उमर में ऐसा उल्लास और आवेग? पर दबीढकी कामनाओं, भावनाओं को उमर से भला क्या लेनादेना. भावनाओं की अति वृष्टि में जैसे नदी जल से हरहरा उठती है, वैसे ही उन के चारों ओर जल ही जल था. दोनों किनारे मिल कर एक हो गए थे. एक दिन शायद वे कुछ जल्दी ही पार्क में पहुंच गए थे. अलसाई सुबह में वहां कुछ इक्कादुक्का लोग ही नजर आ रहे थे. एक चक्कर लगाते ही जया थक कर हांफने लगी तो दोनों एक घने पेड़ के नीचे बैठ गए.

क्षितिज पर सूरज झांक रहा था. उस की कच्ची कचनारी रश्मियां पेड़ की शाखाओं से छन कर नीचे घास पर विचित्र जाल बुन रही थीं. हवा के झोंकों से पेड़ों की डालियां हिलतीं तो ये जाल भी कांपकांप जाते थे. वातावरण की शांत, स्निग्ध नीरवता को पीते हुए अमल और जया चुपचाप बैठे थे.

अचानक सामने की झाड़ियों के पीछे से एक युवकयुवती प्रकट हुए. शायद वे नव विवाहित दंपती थे या फिर कालिज में पढ़ने वाले प्रेमी युगल. दोनों आपस में बातें करते हुए आगे बढ़ रहे थे. उन की पीठ जया और अमल की ओर थी. अचानक ही युवती ने न जाने क्या कहा कि युवक ने उसे जोर से अपने पास खींच कर उस का भरपूर चुंबन ले लिया.

यों खुले में भावनाओं का ऐसा बेलौस प्रदर्शन देख कर जया का मुखड़ा आरक्त हो उठा और उस के हृदय की धड़कन तेज हो गई. उस ने चोर निगाहों से अमल की ओर निहारा. वह भी मुखड़े पर रहस्यमई मुसकान बिखेरे अपलक उसे ही निहार रहा था. लज्जा से जया के कपोल आरक्त हो उठे. अमल से नजरें चुरा कर वह व्यर्थ ही इधरउधर निहारने लगी.

एकाएक ही अमल को न जाने क्या सूझा कि उस ने पेड़ से झरे फूलों की अंजुलि भर कर जया के ऊपर बिखेर दी. फिर उस का हाथ अपने हाथ में ले लिया तो कमसिन उमर को बहुत पीछे छोड़ आई जया के भीतर बैठी षोडशी बाला कसमसा उठी. उस ने अमल के हाथ को कस कर भींच लिया. धरा पर सूरज द्वारा रचे बिंब और जाल जोरजोर से कंपकंपा उठे थे. •



धारण व्यक्ति असाधारण अभिने

मनोहर सिंह

भेंटवार्ता • सीमा बर्मन

ह र मंगलवार, बच्चों, बड़ों और बूढ़ों को एक ही कमरे में ठीक रात के .00 बजे खींच लाता था 'मुल्ला सरुद्दीन'. गरीबों का मसीहा मुल्ला जीता ोर लंगड़ाता हुआ कसाई साहूकार हारा. च्छाई की जीत हुई और बुरे का मुंह ला. राजा और उस के सेनापति भाग ड़े हुए और साहूकार भी तेजी से गड़ाता हुआ रफूचक्कर हो गया. ारावाहिक तो खत्म हुआ और पीछे छोड़ या मीठीमीठी यादें. सभी ने अपनीअपनी ारह प्रभावित किया. मजे की बात देखिए

धारावाहिक खत्म होते ही कनाट प्लेस के जनपथ होटल में वही कंजूस साहूकार नजर आया, बिलकुल ठीकठाक चलता हुआ.

अजी, चलता हुआ नहीं बल्कि तेजी से, अपनी धुन में कहीं जाता हुआ. आव देखा न ताव, हम ने पीछे से जा कर झट पकड़ लिया. ''कहिए, दिल्ली घूम रहे हैं.''

''हां, अपने निजी कामों के कारण दिल्ली तो मैं महीने में एक बार आ ही जाता हूं. यहां घर है मेरा. दो बेटियां हैं जो

रंगमंच की दुनिया से निकल कर फिल्मों तक छाए अभिनेता मनोहर सिंह देखने में तो साधारण से हैं लेकिन उन्होंने अपने सशक्त अभिनय से जनमानस पर एक अमिट छाप छोड़ी है. छोटे से छोटे किरदार में भी जान डाल देने वाले इस अभिनेता के जीवन की विभिन्न गतिविधियों को जानने की उत्सुकता तो स्वाभाविक ही है. प्रस्तुत है इन से हुई भेंटवार्ता के कुछ अंश.

कालिज में पढ़ रही हैं. एक बी.ए. में तो दूसरी एम.ए. में. दोनों अपनी आंटी के पास रहती हैं. मैं अलग रहता हूं. दूसरा घर मेरा शिमला में है. वहां मेरी पत्नी और बेटा रहते हैं. बेटा वहीं कालिज में पढ़ रहा है और पत्नी एक स्कूल में पढ़ाती हैं. यों समझ लीजिए कि दिल्ली, बंबई, शिमला, इन तीनों जगहों पर घूमता रहता हूं." मनोहर सिंह ने बताया.

प्रश्न: मगर, यह तीन जगह घर क्यों?

उत्तर: बस ऐसा ही होता है जिंदगी में. मुझे अभिनय का शौक है तो बंबई में हूं. पत्नी शिमला में नौकरी करती हैं तो वहां हैं. बेटियां दिल्ली में पढ़ना चाहती थीं तो दिल्ली आ गईं. जिंदगी का कुछ पता नहीं. कब मैं ही सब छोड़छाड़ कर शिमला चला जाऊं. आखिर हूं तो वहीं का न.

प्रश्न: पत्नी की याद नहीं आती?

उत्तर: हां.

प्रश्न: आप का प्रेम विवाह था या तय किया गया विवाह?

उत्तर: प्रेम विवाह, जिसे बाद में बड़ेबूढ़ों ने तय किया.

प्रश्न: थोड़ा खुल कर बताइए न.

उत्तर: क्या बताएं? हमारा जमाना तो गया. हम शिमला में मिले थे. मैं उन दिनों भी नाटक ही करता था. ठंडी हवाओं में, पहाड़ियों में, पेड़ों के आसपास मिलते थे, घूमते थे. गाने नहीं गाए. इसी तरह छः महीने बीत गए कि एक दिन उन्होंने शादी के लिए कहा.

प्रश्न: जी, उन्होंने? आप ने क्यों नहीं?

उत्तर: मैं कह तो देता लेकिन उन्होंने पहले कह दिया. शायद उन्हें मुझ से ज्यादा जल्दी थी. उन्होंने कहा, 'शादी करें.' तो मैं ने जवाब दिया, 'ठीक है, कर लेते हैं.' बस, शादी हो गई.

प्रश्न: प्रेम विवाह है फिर भी इतनी दूरदूर?

उत्तर: बस, प्रेमविवाह में ऐसा ही होता है.

प्रश्न: फिल्मों में पेड़ों के आसपास क्यों नहीं घूमते?

उत्तर: पहली बात तो यह है कि मैं फिल्मों में उस उम्र में आया ही नहीं. सारी जवानी तो रंगमंच पर रहा. और अब इस उम्र में पेड़ों के आसपास हीरोइन के साथ घूमने की भूमिका के बारे में सोचना तो मूर्खता है. हां, ऐसी भूमिका जरूर हो सकती है जहां किसी परिपक्व पुरुष को एक परिपक्व स्त्री से प्रेम करता दिखाया जाए. ऐसा व्यक्ति नाचगा भी सकता है लेकिन उस नाचने व गाने में एक गंभीरता होगी उम्र के लिहाज से. मगर ऐसी कहानी मिले और उस के लिए मुझे ही लिया जाए, यह जरूरी तो नहीं.

प्रश्न: आजकल किस तरह की भूमिकाएं कर रहे हैं?

उत्तर: एक फिल्म है 'जालिम जमाना', चार्ल्स डिकेंस के उपन्यास 'आलिवर ट्विस्ट' पर आधारित. उस में 'फेगन' का किरदार निभा रहा हूं. इस भूमिका में एक अलग किस्म का नृत्य भी कर रहा हूं. कुछ और फिल्में भी हैं, जैसे 'तिरंगा'. इस में हैं राजकुमार और नए लड़कालड़की. '36 का आंकड़ा' में हैं धर्मेंद्र, सोनू वालिया और हेमंत बिरजे, 'मल्लिका'



फिल्म 'दीक्षा' में मनोहर सिंह उड़ पंडित की भूमिका में: दर्शकों पर गहरा असर छोड़ा.

हैं मीनाक्षी शेषाद्रि और राहुल राय. ड़क' में हैं पूजा भट्ट और संजय दत्त. र्मयोद्धा' में हैं डिंपल, राज बब्बर, परेश वल. 'दस्तूर' में हैं एक नए लड़कालड़की. ानम' में हैं पूजा भट्ट. 'प्रेम दीवाने' में हैं धुरी दीक्षित, विवेक मुशरान, पूजा भट्ट. ब याद तो रहता नहीं कि किस में कौन है.

प्रश्न: तो फिर क्याक्या शौक हैं आप ?

उत्तर: पढ़ने का और संगीत सुनने का. ास्त्रीय गायन सुनना अच्छा लगता है. जलें, वाद्य संगीत, सब कुछ अच्छा लगता . हिंदी के उपन्यास अच्छे लगते हैं. हिंदी के ई उपन्यास पढ़ चुका हूं. वैसे तो जो हाथ गे सब पढ़ता हूं. अंगरेजी के उपन्यास भी. ाजकल एंथ्रोपोलोजी पर पढ़ रहा हूं. योतिष का भी शौक है. हाथ दिखा देता हूं रक को, पर उन के कहने से न किसी वहम पड़ता हूं और न ही किसी मसले का हल योतिष में ढूंढ़ता हूं.

प्रश्न: मगर आप ने, यह मोती और क दूसरा नग तो पहन रखा है.

उत्तर: तो आप ने देख लिया. हूं, एक है मोती और यह है रूबी. किसी ने कहा पहनने को, सो पहन लिया. कोई फर्क तो महसूस हुआ नहीं मुझे.

प्रश्न : आप के कैरियर या शोहरत में कोई बढ़ोत्तरी हुई होगी? 'डैडी', 'मैं आजाद हूं', 'चांदनी' के कारण लोगों में धाक जमी होगी? कोई फर्क तो हुआ होगा?

उत्तर : फर्क? अजी, आज तक तो कोई मुझ से आटोग्राफ तक मांगने आया नहीं. कोई पहचानता तक नहीं है मुझे सड़कों पर. मैं ने कहा न, मुझे सच में कोई फर्क महसूस नहीं हो रहा है.

प्रश्न : कैसी है आप की ये दुनिया? कैसे हैं यहां के लोग?

उत्तर: बहुत बेहतरीन लोग हैं यहां पर. देखिए जो महान होगा वही तो अच्छे काम करेगा. गोविंद निहलानी, टिन्नू आनंद, प्रकाश झा, मृणाल सेन, महेश भट्ट- ये और दूसरे वे सभी निर्देशक जिन के साथ मैं ने काम किया है, महान लोग हैं.

प्रश्न: आप ने नाम हासिल किया, काम भी और पैसा भी. अब क्या इच्छा है?

उत्तर: जिंदगी में बस यही आकांक्षा है कि अच्छा काम करूं. मेरा काम रोज और अच्छा होता रहना चाहिए. कोशिश करता हूं कि अच्छा इनसान भी बनूं. इतनी कमियां होती हैं हम सब में. चाहता हूं अपने में से सब दूर करूं. मुझे सच बोलने वाले, मेहनती, ईमानदार लोग ही पसंद हैं.

प्रश्न: आप स्वयं किस तरह के इनसान हैं?

उत्तर: बहुत मुशकिल, बड़ा टेढ़ा. जिसे समझ पाना आसान नहीं है. मुझे गुस्सा भी बहुत आता है. प्रकृति से बहुत प्यार करता हूं. बच्चों और पत्नी से पूछेंगी तो वे मुझे अच्छा ही बताएंगे. वैसे, हूं भी अच्छा, आप की तरह. ●

मंत्रि परिषद छोटा कैसे हो

सरकारी खर्चों में कटौती करने के उद्देश्य से मंत्रि परिषद का आकार छोटा करने के बयान से अनेक मंत्री पहले से ही परेशान थे, लेकिन कांग्रेसी हलकों में इस चर्चा से कि भूतपूर्व कैबिनेट सचिव डा. पी.सी. अलेक्जेंडर इस काम में लगे हुए हैं, उन की बेचैनी और भी बढ़ गई है. अलेक्जेंडर के नाम को इस मामले में पहले ही विश्वसनीयता प्राप्त है क्योंकि पिछले जून में वर्तमान मंत्रि परिषद के गठन के समय उन की अहम भूमिका रही थी.

चर्चा यह भी है कि अलेक्जेंडर इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में बैठ कर यह काम निबटा रहे हैं. उन का काम यह नहीं है कि किन मंत्रियों और कितने मंत्रियों को हटाया जाए. बस वह इस बात पर गौर कर रहे हैं कि विभिन्न मंत्रालयों की सवस्य संरचना किस ढंग से की जाए कि कम मंत्रियों की संख्या से अधिक से अधिक काम हो सके.

कैबिनेट से पत्ता साफ होने के खतरे को भांपते हुए कुछ मंत्रियों ने अलेक्जेंडर से मुलाकात करना शुरू कर दिया है. परंतु कुछ अन्य मंत्री किसी नौकरशाह को यह काम सौंपने के औचित्य के प्रश्न पर खिन्न हैं. किंतु समस्या यह है कि प्रधान मंत्री से कौन कहे.

तास संवाद समिति के कर्मचारियों की हालत

भूतपूर्व सोवियत संघ की सरकारी संवाद समिति तास के दिल्ली स्थित ब्यूरो के कर्मचारियों की हालत काफी पतली है. सोवियत संघ के विघटन के बाद इन कर्मचारियों के वेतन आदि के भुगतान की समस्याएं पैदा हो गई हैं. वैसे इस संवाद समिति को निजी क्षेत्र को सौंपने का प्रस्ताव है परंतु सोवियत संघ के विघटन और उस के पूर्व राजनीतिक अस्थिरता के कारण कर्मचारियों को पिछले कई महीनों से वेतन नहीं मिला है.

दिल्ली में इस संवाद समिति का इतना बड़ा ढांचा रहा है कि इस का वार्षिक बजट करोड़ों रुपए का है परंतु इस समय हालात काफी नाजुक हैं और कर्मचारियों को रोटी चलाना मुशकिल हो रहा है.

तेल बचाओ सप्ताह का आयोजन

पेट्रोलियम मंत्री बी. शंकरानंद ने पेट्रोल एवं पेट्रोलियम पदार्थों की बढ़ती खपत में रोकथाम के लिए 27 जनवरी से देशव्यापी तेल बचाओ सप्ताह मनाने की योजना तैयार की थी और इस के लिए सरकारी स्तर पर पूरी तैयारी हो भी गई थी.

प्रधान मंत्री से शाबाशी हासिल करने के लिए शंकरानंद ने नरसिंह राव से उक्त सप्ताह के लिए उपयुक्त संदेश देने के लिए औपचारिक रूप से आग्रह भी कर दिया.

प्रधान मंत्री के सामने जब संदेश के बारे में फाइल रखी गई तो संदेश देना तो दूर रहा उन्होंने उलटे फाइल पर यह पूछ लिया कि इस पूरे अभियान पर कुल कितना खर्च होगा और इस अभियान के फलस्वरूप कितने तेल की बचत होने की संभावना है. प्रधान मंत्री की इस पूछताछ से मंत्री महोदय के तोते उड़ गए. उन्होंने प्रधान मंत्री की पूछताछ का उत्तर देने के बजाय तेल बचाओ सप्ताह के आयोजन को ही रद्द करना बेहतर समझा.

गुप्तचर एजेंसियों में एक-सूत्रता लाने का प्रयास

सरकार देश की तीन प्रमुख गुप्तचर संस्थाओं को एक संयुक्त नियंत्रण कमान के

अधीन लाने के प्रश्न पर विचार कर रही है. 'रा' इंटेलीजेंस ब्यूरो और सी.बी.आई. की कार्य शैली के बारे में सरकार को बराबर शिकायतें मिलती रही हैं.

स्थिति यहां तक पहुंच गई कि संसद की प्राक्कलन समिति ने इन गुप्तचर संगठनों की कार्यशैली, उन पर खर्च हुए धन और महत्त्वपूर्ण मामलों में उन की विफलताओं की जांचपड़ताल कराने का फैसला किया. अंततः सरकार के हस्तक्षेप से इस जांच को शुरू होने से पहले ही रोक दिया गया.

अब इन गुप्तचर संगठनों में एकसूत्रता लाने तथा उन पर प्रभावी नियंत्रण रखने के उद्देश्य से संयुक्त कमान बनाने का निर्णय किया गया है जो प्राप्त सूचनाओं से सीधे प्रधान मंत्री को अवगत कराएगा, तथा यह कमान सीधे कैबिनेट सचिवालय के अधीन काम करेगा. सेना इंटेलीजेंस को भी पहली बार इस की परिधि में लाया जा रहा है.

विभिन्न गुप्तचर संस्थाओं की सूचनाओं को संयोजित करने के लिए उच्च क्षमता वाला कंप्यूटर भी लगाया जा रहा है.

सुब्रह्मण्यम स्वामी की राजनीति

जनता पार्टी के नेता डा. सुब्रह्मण्यम स्वामी की दावपेंच की राजनीति से समाजवादी जनता पार्टी कानूनी दृष्टि से अस्तित्वहीन हो गई है और उस के अध्यक्ष देवीलाल एवं भूतपूर्व प्रधान मंत्री चंद्रशेखर एक तरह से पार्टीविहीन नेता हो गए हैं.

पिछले वर्ष जून के चुनावों के दौरान जनता दल से अलग हुए गुट ने समाजवादी जनता दल बनाया परंतु चुनाव जनता पार्टी के चुनाव चिह्न पर ही लड़ा जिस के एक मात्र नेता सुब्रह्मण्यम स्वामी हैं. लोकसभा में सजपा के नाम वाले सभी पांचों सांसद जनता पार्टी के हैं.

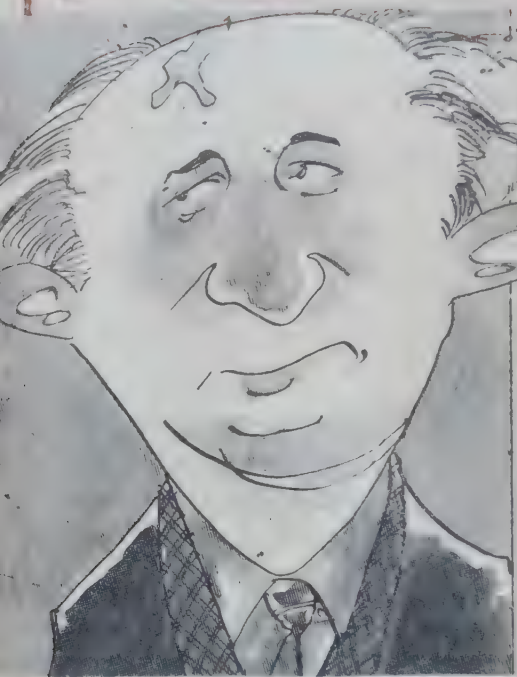
चुनाव में प्राप्त मतों के आधार पर जनता पार्टी को चुनाव आयोग से मान्यता भी हासिल हो गई है और संसद भवन में जनता पार्टी के नाम से कक्ष भी आवंटित हो गया है. परंतु कानूनी तौर पर देखा जाए तो सजपा कहीं पर भी नहीं है.



देवीलाल और चंद्रशेखर की समस्या यह है कि अब सजपा का क्या किया जाए क्योंकि डा. स्वामी अब जनता पार्टी का औपचारिक रूप से समाजवादी जनता पार्टी में विलय करने से आनाकानी कर रहे हैं तथा वह जनता पार्टी को अपनी जेब में डाल कर कांग्रेस की राजनीति कर रहे हैं. देवीलाल इन सभी मामलों को ले कर दुखी हैं और एक नई पार्टी बनाने की बात करने लगे हैं.

नरसिंह राव : कांग्रेस के गोरबाचौफ

प्रधान मंत्री नरसिंह राव की अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष द्वारा पोषित उदारवादी आर्थिक नीतियों के कारण बढ़ती महंगाई से कांग्रेस के भीतर सुगबुगाहट पहले से ही थी परंतु अब इजराइल के साथ राजनयिक संबंध स्थापित करने के फैसले और उद्योगपति टाटा को भारतरत्न और अटलबिहारी वाजपेयी को पद्मविभूषण का सम्मान देने से कांग्रेस में और भी गरमाहट पैदा हो गई है.



उन का कहना है कि नरसिंह राव अपनी अल्पमत सरकार बचाने के लिए कांग्रेस को भाजपा के पास गिरवी रख रहे हैं. जो कांग्रेस अब तक भाजपा और उस के सिद्धांतों के खिलाफ लड़ती रही है उसी को सम्मानित कर उसे सामाजिक और राजनीतिक अल्पता प्रदान की जा रही है. इस के अलावा, टाटा के बजाय घनश्याम दास बिड़ला का योगदान अधिक है क्योंकि उन्होंने महात्मा गांधी के साथ मिल कर स्वतंत्रता संग्राम को आगे बढ़ाया था.

इस कांग्रेसी ने अंत में बड़ी तलखी के साथ कहा कि यदि यही सब जारी रहा तो नरसिंह राव कांग्रेस के लिए सोवियत नेता गोरबाचौफ साबित होंगे जिन्होंने स्वयं अपने यहां कम्यूनिस्ट पार्टी की कब खोद दी.

राजेश पायलट: प्रधान मंत्री की नजर में

संचार राज्य मंत्री राजेश पायलट ने प्रधान मंत्री पी.वी. नरसिंह राव के वरदहस्त के कारण एक सुपर मंत्री की हैसियत हासिल कर ली है और एक विघ्ननिवारक मंत्री के रूप में गृह, सूचना एवं कृषि मंत्रालयों में बढ़ती उन की दखलंदाजी के कारण गृह मंत्री शंकर राव चह्वाण और कृषि मंत्री बलराम जाखड़ पहले से ही नाराज हैं.

गृह मंत्री चह्वाण इस बात से काफी नाराज हैं कि राजेश पायलट पंजाब और कश्मीर के संवेदनशील मसलों पर उन की सलाह के बिना कुछ बोल देते हैं. कृषि मंत्री बलराम जाखड़ किसान नेता के रूप में पायलट को अपना प्रतिद्वंद्वी मानते हैं. जब इन मंत्रियों ने पायलट के खिलाफ शोरगुल मचाया तो उन्हें बता दिया गया कि पायलट जो भी कर रहे हैं वह प्रधान मंत्री के निर्देश पर कर रहे हैं. अब मंत्रियों के लिए चुप रहने के अलावा कोई रास्ता नहीं रह गया है.

हाल ही में सूचना प्रसारण राज्य मंत्री अजितकुमार पांजा को देश में विदेशी टीवी के प्रभाव के प्रसार को रोकने में विफलता के लिए प्रधान मंत्री की लताड़ खानी पड़ी. इस के साथ ही प्रधान मंत्री ने संचार मंत्री पायलट को सीएनएन एवं स्टार टीवी के बढ़ते प्रभाव को नियंत्रित करने का निर्देश दे दिया. लोगों को समझ में नहीं आ रहा है कि पायलट ने प्रधान मंत्री को क्या सुंघा दिया है कि प्रधान मंत्री उन को हर मर्ज की दवा के रूप में इस्तेमाल करने लगे हैं.

हर्षवर्धन की फिर चांदी

सरकारी उपक्रम वायुदूत के भूतपूर्व प्रबंध निदेशक हर्षवर्धन पुनः खबरों में लौट आए हैं. वह वायुदूत विमान सेवा को तो घाटे से नहीं उबार सके लेकिन अब वह निजी क्षेत्र की विमान सेवा 'सहारा एयर लाइंस' के साथ अपना हाथ आजमा रहे हैं.

400 करोड़ रुपए की इस विमान सेवा परियोजना के लिए सोवियत निर्मित दो याक-42 विमानों को पट्टे पर ले कर बड़े शहरों के बीच चलाने की योजना है. इस वर्ष के मध्य तक इस विमान सेवा के शुरू होने की संभावना है.

हर्षवर्धन ने वायुदूत से प्राप्त अनुभवों और संपर्कों के आधार पर इस नई विमान सेवा की सफलता के लिए परामर्शदाता के रूप में काम करना शुरू कर दिया है. —समदर्शी ●



★★★★ अति उत्तम ★★★ उत्तम ★★ मध्यम ★ साधारण ○ बेकार

★ मेरे सजना साथ निभाना

र्माता : किशनचंद बोकाड़िया
र्देशक : राजेश वकील
गीत : आनंद मिलिंद
ख्य कलाकार : मिथुन चक्रवर्ती, जूही
ावला, शक्ति कपूर, शांति प्रिया, प्रेम
ोपड़ा, कुलभूषण खरबंदा, टीनू आनंद,
शवा और निरूपा राय.

'मेरे सजना साथ निभाना' धीमी गति
ी एक सुस्त फिल्म है. कहने को इस फिल्म
प्रेम का त्रिकोण है लेकिन यह त्रिकोण
ाफी कमजोर है. आखिरी आधे घंटे की
िल्म में जरूर कुछ जान है बाकी सवा दो
टे की फिल्म लड़खड़ाती सी चलती है.

कन्हैया (मिथुन चक्रवर्ती) शादीब्याहों
ढपली बजाने का काम करता है. जमींदार
घुवीर सिंह (कुलभूषण खरबंदा) की बेटी
चल (शांति प्रिया) उस से प्रेम करती है.
ांव में एक और जमींदार है ठाकुर प्रताप
ह (प्रेम चोपड़ा) जो एक युवती जानकी
ूही चावला) को अपनी रखैल बनाना
ाहता है. कन्हैया की मुलाकात जानकी से
ती है तो वह उस की ओर आकृष्ट हो
ाती है. रघुवीर सिंह को जब कन्हैया और
चल के प्यार की भनक पड़ती है तो वह
न्हैया को पिटवा देता है और चंचल की
ादी प्रताप सिंह के बेटे शिवा (शिवा) से
य कर देता है लेकिन ऐन मौके पर रघुवीर
ह को प्रताप सिंह और उस के बेटे की चाल का पता चल जाता है तो वह मंगनी तोड़ देता है. शिवा इस का कारण कन्हैया को समझता है. वह कन्हैया को अधमरा कर देता है. जानकी कन्हैया को बचाती है. तभी कन्हैया को जानकी के बारे में असलियत मालूम होती है. वह जानकी को प्रताप सिंह के चंगुल से छुड़ाता है. जानकी कन्हैया को अपना पति मान बैठती है.

इन दिनों फिल्मों में ज्यादा गीत रखने का रिवाज सा हो गया है. इस फिल्म में भी 6 गीत हैं, जिन के सहारे फिल्म की कहानी को आगे बढ़ाने की कोशिश की गई है. लेकिन जब पटकथा ही कमजोर हो तो गीत भला क्या सहारा देंगे. पटकथा में प्रेम का त्रिकोण तो है लेकिन यह त्रिकोण बहुत बाद में स्पष्ट हो पाता है. आधी फिल्म तो भूमिका बांधने में व्यर्थ कर दी गई है.

फिल्म का निर्देशन नए युवा निर्देशक राजेश वकील ने दिया है. निर्देशन में वह अपनी प्रतिभा नहीं दिखा सका है हालांकि उस ने फिल्म में कोई बेहूदापन नहीं आने दिया है फिर भी वह फिल्म में सुंदरता नहीं ला सका है. उस ने जानकी को पढ़ालिखा हुआ दिखाया है, लेकिन उसे विवश भी दिखाया है. एक पढ़ीलिखी लड़की से जमींदार जबरदस्ती करे, उसे रखैल बनाने की कोशिश करे और लड़की चुपचाप सहती रहे, यह तो मुमकिन है ही नहीं.

फिल्म के संवाद महबूब सरवर ने लिखे हैं जो साधारण हैं. छायांकन जरूर



'मेरे सजना साथ निभाना' के एक दृश्य में मिथुन और जूही चावला : साधारण अभिनय

अच्छा है. निर्देशक ने आउटडोर शूटिंग पर ज्यादा ध्यान दिया है. आउटडोर शूटिंग में गीतों का फिल्मांकन भी अच्छी तरह हो जाता है. इस का लाभ इस फिल्म को जरूर मिलेगा. नृत्य निर्देशक ने मिथुन से ब्रेक डांस नहीं करवाए, यह गनीमत है. बस हौलेहौले डफली बजवाई है.

अभिनय की दृष्टि से मिथुन चक्रवर्ती साधारण रहा है. उस ने टेढ़ेमेढ़े हावभाव ही दिखाए हैं. कहींकहीं वह नाटकीय भी हो गया है. शक्ति कपूर ने अलग किस्म की भूमिका कर के दर्शकों को थोड़ा बहुत हंसाने की कोशिश की है. जूही चावला पूरी फिल्म में मूर्ति बनी रही है. शांतिप्रिया ने थोड़ा सा चुलबुलापन दिखाया है. अन्य कलाकार साधारण हैं. गीत समीर ने लिखे हैं. दोतीन गीत अच्छे बन पड़े हैं.

★ शोला और शबनम

निर्माता : पहलाज निहलानी
निर्देशक : डेविड धवन
संगीत : बप्पी लाहिड़ी
मुख्य कलाकार : गोविंदा, दिव्या भारती, मोहनीश बहल, महावीर शाह, हरीश पटेल, आलोकनाथ, मधाचंदन, राजा बुंदेला, रीमा लागू, गुलशन ग्रोवर, बिंदु और अनुपम खेर.

फिल्म 'शोला और शबनम' में मध्यांतर से पहले भरपूर कामेडी है तो मध्यांतर के बाद एक्शन और गोलीबारी. कामेडी के दृश्यों में जहां अनुपम खेर ने दर्शकों को बांधे रखा है, वहीं एक्शन दृश्यों में गोविंदा ने. निर्देशक ने फिल्म को भरपूर मसालों से भरने की पूरी कोशिश की है. फिल्म मूलतः अपराध प्रधान है और अपराध फिल्मों का कोई उद्देश्य नहीं होता. सभी मसाले डाल कर जो चाट बनाई जाती है, दर्शकों को वही परोस दी जाती है. 'शोला और शबनम' भी इसी प्रकार की मसालेदार चाट है, जिसे दर्शक चटखारे ले ले कर खाते तो हैं, साथ ही सी सी भी करते रहते हैं.

करन (गोविंदा) और उस के तीन साथी मेजर लाठी (अनुपम खेर) के छात्र हैं. मेजर लाठी का दोस्त है पुलिस कमिश्नर (आलोकनाथ). पूजा (दिव्या भारती) कमिश्नर की बेटी है. मेजर लाठी अपने छात्रों के साथ एनसीसी कैंप में जाता है. कैंप के पास ही पूजा का कालेज है. पूजा की मुलाकात करन से होती है. प्यार की छेड़छाड़ चाहत में बदल जाती है. उधर जुर्म की दुनिया के बादशाह काली बाबू (गुलशन ग्रोवर) का भाई बाली (मोहनीश बहल) भी पूजा को चाहता है. अपने भाई के लिए काली बाबू करन को एक खून के षड्यंत्र में फंसा देता है. करन खुद को बेकसूर साबित करने के लिए कमिश्नर की बेटी पूजा को अगवा कर भाग जाता है. जो पूजा अब तक करन को खूनी समझती थी, असलियत मालूम होने पर करन को चाहने लगती है. काफी मुसीबतों के बाद करन खुद को बेकसूर साबित कर पाता है. इस जंग में काली बाबू, बाली और उस के सभी गुंडे मारे जाते हैं.

गोविंदा काफी अरसे से फिल्म के परदे से गायब था. उसे इंतजार था एक हिट

ल्म का. इस फिल्म से उसे थोड़ा बहुत
ा तो मिल सकता है, लेकिन उस के
ारा हिट होने की ख्वाहिश पूरी होने में
ी बहुत देर है. इस फिल्म का श्रेय
पम खेर को जाता है, जिस ने अपने
नय से दर्शकों को बांधे रखा है.

फिल्म का निर्देशन कुछ हद तक
छा कहा जा सकता है. निर्देशक ने फिल्म
गति बनाए रखने की पूरी कोशिश की
ह समझ नहीं आता कि फिल्म निर्देशक
म में सिर्फ कुछ पुलिस अफसर ही क्यों
ाते हैं और उन्हें भी मूर्ख क्यों दिखाते हैं.
पूरी फिल्म में सिर्फ दो भ्रष्ट पुलिस
सर ही दिखाए गए हैं और जिस तरह
र में तमाम भीड़ के सामने नायक पुलिस
सर को पीटता है तो लगता है सारे
र की पुलिस मर गई है. यह सब
ाभाविक लगता है.

फिल्म का संपादन कुशलता से किया
है और संवाद छोटे और असरदायक हैं.
ा मित्रा का छायांकन साधारण है. गीत
ान ने लिखे हैं, जिन्हें साधारण कहा जा
ता है.

अभिनय की दृष्टि से गोविंदा सामान्य
है. दिव्या भारती की यह पहली फिल्म
वह साधारण रही है. इस से अच्छा
नय तो उस ने 'दिल का क्या कुसूर' में
ा है जो इस से पहले प्रदर्शित हो चुकी है.
पम खेर कहींकहीं नाटकीयता का
कार हुआ है. सुधाचंद्रन और 'कुछ'
ाने के लिए उतावली लगती है. अन्य
ाकार साधारण हैं.

मीरा का मोहन

ता : गुलशनकुमार
ाक : के. रविशंकर
त : अरुण पौडवाल
कलाकार : अविनाश वधावन, अश्विनी
दीपक सर्राफ, शक्ति राज, प्राण,
कनाथ, अशोक सर्राफ, राकेश बेदी.

'मीरा का मोहन' पूरी तरह से प्रेम के
ण पर आधारित फिल्म है. नाम से तो
लगता है कि यह भक्ति फिल्म है, हालांकि फिल्म के शुरू में आधुनिक 'कृष्णा' की बात कही गई है. अंत में राम की स्तुति भी की गई है लेकिन वास्तव में ऐसा कुछ नहीं है. फिल्म विशुद्ध बंबइया है. इस में एक नायिका है, जिस के लिए दो दो नायक आपस में भिड़ते हैं.

इस फिल्म की अगर कोई विशेषता है तो वह है इस का गीतसंगीत. पूरी फिल्म में 5 गीत हैं और पांचों का फिल्मांकन सुंदर ढंग से हुआ है. एक गीत में तो बहुत बड़ा सेट लगाया गया है जो देखने में भव्य लगता है.

रवि (अविनाश वधावन) एक आदर्श नौजवान है. वह संगीत मास्टर प्रेमशंकर (आलोकनाथ) की बहुत इज्जत करता है और उस की बेटी प्रीति (अश्विनी भावे) के साथ एक स्टेज शो करता है. प्रीति रवि को अपना सच्चा दोस्त मानती है, लेकिन रवि मन ही मन उसे चाहने लगता है. एक दिन जज रायबहादुर देवी प्रसाद (प्राण) का पोता विजय (दीपक सर्राफ) विदेश से वापस लौटता है. विजय और प्रीति एकदूसरे को चाहते हैं. उन दोनों के प्रेम को देख कर रवि का दिल टूट जाता है. विजय अपने दादा को मना कर प्रीति से शादी कर लेता है. एक रात कुछ गुंडे प्रीति के पीछे लग जाते हैं तो प्रीति भाग कर रवि के घर में शरण लेती है. उसी रात प्रीति के पीछे पड़े गुंडे शक्ति (शक्ति राज) का खून हो जाता है. खून के इल्जाम में रवि पकड़ा जाता है. रवि की बेगुनाही साबित करने के लिए प्रीति अदालत में बयान देती है कि उस रात वह रवि के घर में ही मौजूद थी. यह बयान उस की निजी जिंदगी में तूफान ला देता है. उसे बेहया कह कर घर से निकाल दिया जाता है. लेकिन रवि कुछ ऐसे सबूत इकट्ठे करता है जिस से प्रीति अपने पति व ससुर की निगाहों में बेगुनाह साबित होती है. विजय को गुंडों से बचातेबचाते वह स्वयं मारा जाता है लेकिन मरतेमरते प्रीति और विजय को मिला जाता है.

इस प्रेम कहानी को जिस तरह फैलाया

गया है, उस में कई पुरानी फिल्मों की झलक साफ नजर आ जाती है. पूरी फिल्म पर गाने हावी हैं. जहां फिल्म थोड़ी ढीली पड़ती है, गाना हाजिर हो जाता है. मध्यांतर तक तो फिल्म साफसुथरी चलती है, लेकिन मध्यांतर के बाद बंबइया फार्मूलों का समावेश हो जाता है. फिर शुरू होता है मारधाड़ और कचालों का सिलसिला.

फिल्म का निर्देशन कुछ हद तक ठीक है. निर्देशक ने अग्रिम पंक्ति के दर्शकों का ध्यान रखते हुए अशोक सराफ, कनिका और राकेश बेदी पर एक बहुत ही चालू किस्म का गीत भी फिल्म में डाला है.

फिल्म के संवाद ज्ञानदेव अग्निहोत्री ने लिखे हैं. पटकथा भी इन्हीं की लिखी हुई है. यह महाशय पहले केंद्रीय फिल्म सेंसर बोर्ड में थे. बोर्ड से रसिया किस्म के आदमी हैं, अतः इन के द्वारा लिखी पटकथा और संवादों में थोड़ाबहुत रस छलकता है.

फिल्म का छायांकन बहुत ही अच्छा है. 'कृष्णा कृष्णा' गीत में सेट बहुत ही भव्य लगाया गया है. संगीतकार अरुण पौडवाल, जो अनुराधा पौडवाल के पति थे और अब इस दुनिया में नहीं हैं, ने अपने जीवन का शायद सर्वश्रेष्ठ संगीत दिया है.

अभिनय की दृष्टि से अविनाश वधावन ठीक वैसा ही लगा है जैसा अन्य फिल्मों में लगता है, कहीं कोई सुधार नहीं. अश्विनी भावे को 'हिना' के बाद इस फिल्म में पूरा मौका मिला है. वह ठीकठाक लगी है. नए कलाकार दीपक सर्राफ ने निराश किया है. अन्य कलाकार साधारण हैं.

★ इंसाफ की देवी

निर्माता : शबनम कपूर और बी.एस.शाद
निर्देशक : एस.ए. चंद्रशेखर
संगीत : बप्पी लाहिड़ी
मुख्य कलाकार : रेखा, जितेंद्र, नीरज, उपासना सिंह, शक्ति कपूर, कादर खान, सुधा चंद्रन आदि.

'इंसाफ की देवी' प्रतिशोध प्रधान फिल्म है, जिस में कानून की खुल कर आलोचना की गई है. ऐसे लचर कानून का विकल्प क्या है, न तो यह फिल्म बता सकी है और शायद न ही कोई अन्य फिल्म बता पाएगी. हमारे फिल्मकारों के साथ हमेशा यही दिक्कत रहती है कि वे खामियां तो बता देते हैं लेकिन खामियों को दूर करने के लिए कोई राह नहीं सुझाते.

'इंसाफ की देवी' में भी नायिका रेखा द्वारा गुनहगारों को खुद सजा देते हुए दिखाया गया है ठीक उसी तरह जिस तरह अमिताभ बच्चन की फिल्मों 'शहंशाह' और 'इंद्रजीत' में दिखाया जा चुका है. हालांकि रेखा ने यह भूमिका बड़ी कुशलता से निभाई है लेकिन पटकथा असरहीन होने की वजह से फिल्म कमजोर हो गई है.

साधना (रेखा) पुलिस इंस्पेक्टर आनंद (जितेंद्र) की पत्नी है. सूरज (शक्ति कपूर) जब अपनी पत्नी साधना की बहन की हत्या कर देता है तो साधना उसे अदालत तक ले जाती है. परंतु सबूतों के अभाव में सूरज बरी हो जाता है. वह एक दिन साधना की आंखों के सामने ही उस की बच्ची का खून कर देता है. सूरज पर अदालत में मुकदमा चलता है. भ्रष्ट वकील सूरज को फिर से बरी करा देता है. अब साधना कानून अपने हाथ में लेती है. वह भ्रष्ट पुलिस अफसर को खत्म करने के बाद वकील का सफाया करती है और फिर सूरज को मौत के घाट उतार देती है. सबूत न मिलने पर वह स्वयं भी बच जाती है लेकिन अंत में वह अपने इंस्पेक्टर पति के सम्मुख अपना अपराध कबूल कर लेती है.

फिल्म की पटकथा काफी लचर है. निर्देशन में भी बहुत सी खामियां हैं. एक दृश्य में सूरज अदालत में बहरा होने का ढोंग करता है तो दूसरे दृश्य में ठीकठाक अदालत में बोलतासुनता नजर आता है. इस के अलावा स्टेज पर साधना को नाचते हुए उस का पति आनंद भी उसे पहचान नहीं पाता है.

फिल्म के संवाद शब्द कुमार ने लिखे हैं जो घिसेपिटे हैं. बप्पी लाहिड़ी का संगीत

फिल्म में जान नहीं डाल पाया है.

अभिनय की दृष्टि से रेखा का काम मत से कुछ अच्छा कहा जा सकता है. तशोध वाली भूमिका उस ने 'खून भरी ा' में भी की थी. उस भूमिका के मुकाबले भूमिका तो कुछ भी नहीं है. जितेंद्र ारा लगता है. उपासना सिंह अति कीयता का शिकार हुई है. अन्य ाकार साधारण हैं. छायांकन भी धारण है.

विश्वात्मा

र्माता : गुलशन राय
शक : राजीव राय
त : विजू शाह
य कलाकार : नसीरुद्दीन शाह, सनी ल, चंकी पांडेय, दिव्या भारती, सोनम, त्सना सिंह, रजा मुराद, गुलशन ग्रोवर र अमरीश पुरी.

इस फिल्म में अहिंसा का संदेश दिया है. शायद इसी लिए इस का नाम श्वात्मा' रखा गया है. लेकिन इस में नी अधिक हिंसा है कि रोंगटे खड़े हो ते हैं. पूरी फिल्म भीषण गोलाबारी में ती रहती है. इस के अलावा, फिल्म में पानी की तरह बहाया गया है. सभी ह के फार्मूले डाल कर फिल्म को भव्यता न करने की कोशिश की गई है. माना कि वसायिक फिल्मों में हर तरह की छूट ले जाती है, फिर भी फिल्म का कुछ तो श्य होना ही चाहिए. इस फिल्म का न तो उद्देश्य है और न ही कोई लाभ.

इंस्पेक्टर प्रभात (सनी देओल) देश-द्रोहियों के बिछाए जाल में फंस जाता है. स्वरूप उसे अपने छोटे भाई की जान पुलिस की नौकरी से हाथ धोना पड़ता यह घर छोड़ कर अलग रहने लगता है कन कानून के रखवाले उसे ढूंढ निकालते और उसे मजबूर करते हैं कि वह केन्या कर अजगर जोर्राट (अमरीश पुरी) को ड़ कर भारत लाए. उस के साथ आकाश द्राज भी केन्या जाता है क्योंकि उसे भी अपने भाइयों के कातिल अजगर जोर्राट की तलाश है. रेणुका (सोनम) जो आकाश की भाभी की बहन है, भी केन्या पहुंच जाती है. इन सब के पीछेपीछे प्रभात की प्रेमिका कुसुम (दिव्या भारती) भी केन्या पहुंच जाती है. वहां अजगर जोर्राट तक पहुंचने में उन का साथ देने के लिए इंस्पेक्टर सूर्यप्रताप (नसीरुद्दीन शाह) मौजूद है. घटनाएं इस प्रकार घटती हैं कि प्रभात और आकाश अजगर के जाल में फंस जाते हैं. वह जहाज में बम रखवा कर उन्हें वापस भारत भिजवा देता है. उधर सूर्यप्रताप को भी पता चल जाता है कि उस की पत्नी का हत्यारा अजगर ही है. प्रभात और आकाश जहाज से हवाई छतरी द्वारा कूद पड़ते हैं और सूर्यप्रताप के साथ मिल कर उस के पूरे गिरोह को खत्म कर देते हैं.

तकनीकी दृष्टि से फिल्म अच्छी जरूर बनी है. बड़ेबड़े सेट, कारों की दौड़, उन का जलना आदि सब तेज गति में दिखाया गया है. लेकिन यह सब जानापहचाना लगता है. पूरी फिल्म में सनी देओल को सुपरमैन बनाने की कोशिश की गई है. 'घायल' की तरह सनी देओल ने इस फिल्म में भी खूब मारधाड़ की है.

निर्देशन की दृष्टि से फिल्म साधारण ही है. निर्देशक ने ज्यादा ध्यान फिल्म की गति पर ही केंद्रित किया है. लगभग पूरी शूटिंग केन्या में करने पर भी निर्देशक केन्या के दर्शन करा पाने में असफल रहा है. फिल्म के संपादन में भी कई दोष नजर आ जाते हैं. फिल्म में हास्य नहीं है और न ही कोई लंबाचौड़ा सेट ही लगाया गया है. छायांकन जरूर कुछ हद तक अच्छा कहा जा सकता है, लेकिन डबिंग का दोष साफ झलकता है.

अभिनय की दृष्टि से सनी देओल 'नरसिम्हा' से कमजोर ही रहा है. दिव्या भारती की यह पहली फिल्म है, उस में आगे बढ़ने की ललक है. नसीरुद्दीन शाह का काम अच्छा है. अन्य कलाकार साधारण हैं. गीत आनंद बख्शी ने लिखे हैं 'सात समुंदर पार मैं तेरे पीछेपीछे आ गई' गीत अच्छा है. ●



कम्यूनिज्म समाप्त हो गया

लेख ● जगदीश शर्मा

कम्यूनिज्म समाप्त हो गया है.

कम्यूनिज्म समाप्त होना ही था. जो शुरू आरंभ ही नहीं हुई उस की समाप्ति तो पहले ही हो चुकी है. आज तो केवल 'समाप्ति' का नामकरण संस्कार हुआ.

सन 196[illegible] में मैं मास्को में (वास्तव में मस्क्वा में) एक 'स्तोलोवाया' (रेस्तरां) में खाना खा रहा था कि दो श्रमिक आपस में लड़ पड़े. एक श्रमिक ने दूसरे के स्वार्थी व्यवहार की निंदा कर के कहा, "यदि हम लोग बने रहेंगे तो कम्यूनिज्म कभी न आएगा." पर वास्तविकता यह है कि संसार में स्वार्थी व्यक्तियों की ही अधिकता है. समाज, देश या विश्व समुदाय के प्रति कितने लोग जागरूक हैं? अतः उस श्रमिक की बात सच निकली— कम्यूनिज्म विश्व में नहीं आया और पश्चिम ने घोषणा कर दी कि वह समाप्त हो गया.

कम्यूनिज्म एक आदर्शवाद है. प्रत्येक को उस की आवश्यकता के अनुसार (मिले) आदर्श नहीं तो और क्या है? पर यथार्थ और आदर्श में अपार अंतर है. आदर्श असंभव है.

कम्यूनिज्म भी एक धर्म था. जिस प्रकार आस्तिकों के 'ईसाई' या 'यहूदी' या 'इस्लाम' या 'हिंदू' धर्म होते हैं. यह एक नास्तिक धर्म था 'बौद्ध' या 'चार्वाक' की भांति. सब धर्म केवल 'ओष्ठ पू (जिस को अंगरेजी में 'लिप सर्विस' क है) के लिए होते हैं. जिस प्रकार सब समाप्त हो चुके हैं, गांधीवाद समाप्त चुका है, इसी प्रकार कम्यूनिज्म या साम्य भी 'समाप्त' हो गया. 'बुद्धवाद' 'गांधीवाद' अहिंसावादी थे, कम्यूनिज्म साम्यवाद हिंसावादी था. पर थे ये त मानवतावादी. मानवतावाद का अंत होन था. यही तो मानव का मानवतावाद के स संबंध है.

पर मायावादी पश्चिम यह कहत कि वहां समानतावाद (डेमोक्रेसी) का र है. वैज्ञानिक तथ्य यह है कि समानता अशुद्ध है क्योंकि सब मनुष्य असमान आर्थिक तथा सामाजिक तथ्य यह है जहां साम्यवाद 'प्रोलितारियान' समानतावाद था, वहीं मायावादी समानता सार्थों का (धनवानों का) समानतावाद समानतावाद सच्चे अर्थों में न वह था, न है. मायावाद या धनवाद में 'क्या बिकत वाद अपनाया है. यह कोई नई बात नही

व्यक्तिगत विज्ञापन
वैवाहिक विज्ञापन
वर चाहिए

कुशवाहा, 24½, 157, एम.ए. (भूगोल), ीएच.डी. अध्ययनरत, गृहकार्यदक्ष, साफ, स्वस्थ, ध्यम परिवारीय कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. सादा, ीघ्र विवाह. वि.नं. 3729, सरिता, नई दिल्ली-10055.

कुर्मि क्षत्रिय, 23/152, आकर्षक, कानवेंटेड, म.एससी., अति प्रतिष्ठित परिवारीय कन्या हेतु ाई.ए.एस., एलाइड, उच्च सेवारत, डाक्टर, जीनियर वर चाहिए. वि.नं. 3730, सरिता, नई दल्ली-110055.

कुशवाहा, 25, 158, बी.एससी. आनर्स, हकार्यदक्ष, सुंदर, सुशील अध्यापिका हेतु संभ्रांत, ुयोग्य, निर्व्यसनी, दहेजविरोधी, सजातीय वर. व.नं. 3731, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 24/156, बी.ए. आनर्स, गौरवर्ण, ुंदर, गृहकार्यदक्ष, सुशील कन्या हेतु वर. वि.नं. 732, सरिता, नई दिल्ली-110055.

31,33 वर्ष (महाराष्ट्रीयन), रंग साफ, सुशिक्षित, रेलू कन्याओं हेतु कार्यरत वर. जातिबंधन नहीं. दहेज ाकांक्षी क्षमा करें. विवाह सादा, शीघ्र. वि.नं. 3733, रिता, नई दिल्ली-110055.

महार, महाराष्ट्रीयन, 25 वर्षीया, 154 सें.मी., टरमीडिएट, गृहकार्यदक्ष, हलका सांवला रंग, शीघ्र वाह. कन्या हेतु कार्यरत वर चाहिए. वि.नं. 3734, रिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 21 वर्षीया, 5¼ फुट, स्नातक, अति दर, विशेष आकर्षक, गोरी, स्लिम, सुशील, धार्मिक वृत्ति, मृदुभाषी, शाकाहारी, हिंदी भाषी, दिल्ली स्थापित, गृहकार्यनिपुण कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय, च्च शासकीय एवं व्यवसायी, दहेज अनिच्छुक वर. ाथमिकता मूलतः राजस्थान प्रवासी, वर्तमान हानगर निवासी, अति सुंदर वधू इच्छुक उच्च ारिवारिक, औद्योगिक घराना, प्रथम बार सविवरण खें: वि.नं. 3735, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 23, 160, बी.ए., शार्टहैंड डिप्लोमा दी अंगरेजी, भाई अनुभाग अधिकारी, गृहकार्यदक्ष, दर कन्या हेतु वर चाहिए. वि.नं. 3736, सरिता, नई ल्ली-110055.

सिंधी, 32, 155, केंद्रीय सेवारत, गृहकार्य में दक्ष या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 3745, रता, नई दिल्ली-110055.

सुशिक्षित एवं प्रतिष्ठित रजक परिवारीय (अनु. ति), 22, 165, रंग गेहुआं, कानवेंट शिक्षित, एट, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सजातीय, सेवा कार्यरत वर चाहिए. वि.नं. 3826, सरिता, नई दिल्ली-110055.

21, 150, नाई, बी.एससी. एवं कंप्यूटर डिप्लोमा, आकर्षक, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सजातीय, डाक्टर, इंजीनियर, सेवारत अधिकारी वर चाहिए. प्रतिष्ठित परिवार, पिता रिटायर्ड, उच्च पदासीन रेलवे डाक्टर, शीघ्र विवाह. पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 3827, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28/162, जादौन राजपूत (मांगलिक), एम.ए., घरेलू, सुंदर, प्रतिष्ठित परिवारीय कन्या हेतु सुस्थापित, सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. वि.नं. 3828, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, गायत्री परिवार, 28, 158, एम.ए.; बी.एड., गोरी, छरहरी, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ निर्व्यसनी, शाकाहारी, आत्मनिर्भर वर चाहिए. सविस्तार लिखें: वि.नं. 3829, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जायसवाल, 24, 164, 2,600/-, केंद्रीय कर्मचारी कन्यार्थ सजातीय, उपजातीय वर: वि.नं. 3830, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मि क्षत्रिय, 19 वर्षीया, 151 सें.मी., इंटर, सिलाईकढ़ाई, गृहकार्यनिपुण, ब्यूटीशियन कोर्स, गोरी कन्या हेतु सरकारी सेवारत, व्यवसायी, सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 3831, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 23/168, एम.बी.ए. अध्ययनरत, कानवेंट शिक्षित, गौरवर्ण कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय, प्रोफेशनल वर. विज्ञापन उत्तम चयनार्थ. वि.नं. 3832, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26, 162, इंटरमीडिएट, सुंदर, गोरी, पतली, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सरकारी नौकरी, व्यापारी वर चाहिए. दहेज नहीं. एकाकी, दिल्लीवासी को वरीयता. वि.नं. 3833, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 27, 150, बी.ए., गोरी, सुंदर कन्या हेतु प्रशासनिक, बैंक अधिकारी वर चाहिए. उत्तम विवाह. वि.नं. 3834, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बी.एससी., बी.एड., राजस्थान सरकार के शिक्षा विभाग (छात्राएं) में सेकेंड ग्रेड में सर्विस, लंबाई 5.2 फुट, 27 वर्षीया, गोरी, सुंदर, सुसंस्कृत, सौम्य, जैन कन्या के लिए सरकारी सेवा में कार्यरत, इंजीनियर, डाक्टर, सुस्थापित व्यवसायी, बैंक अधिकारी, सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 3835, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोरी, 22/162, एम.ए., गौरवर्ण, सुंदर, इकहरी, गृहकार्यदक्ष, पारिवारिक कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर, शासकीय सेवारत, सजातीय वर चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 3836, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 160, एम.ए. अंगरेजी फाइनल, साहू (तेली) परिवार की कन्या, रंग गेहुआं, चश्मा लगाती है, हेतु

स्वजातीय, इंजीनियर, डाक्टर अथवा उच्च पदाधिकारी वर की आवश्यकता है. पिता एवं भाई सरकारी संस्थान में अवर प्रबंधक एवं इंजीनियर. उत्तम विवाह हेतु अभिभावक पत्रव्यवहार करें. लिखें: वि.नं. 3837, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंधी साहिती कन्या, स्लिम, सुंदर, स्नातकोत्तर, ट्रांसफरेबल जाब, केंद्रीय सरकारी नौकरी में कार्यरत (पश्चिम रेलवे), 30/153/3,000/-, के लिए सुयोग्य वर चाहिए. वि.नं. 3838, सरिता, नई दिल्ली-110055.

नाई, 24, 158, बी.आर्क, प्रतिष्ठित परिवार, गेहुआं रंग, सुंदर, सुशील, छरहरी, गृहकार्यदक्ष, आर्किटेक्ट कन्या के लिए सजातीय, इंजीनियर, डाक्टर या राजपत्रित अधिकारी वर चाहिए. वि.नं. 3839, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वैश्य (गुप्ता), उत्तरप्रदेशीय (कानपुर) निवासी, 26½, 152, स्वस्थ, हर क्लास में प्रथम, सेंट्रल स्कूल में पढ़ी, एम.एससी. (केमिस्ट्री), बी.एड., केंद्रीय विद्यालय में टी.जी.टी. (कास्मेर राजस्थान), वेतन रु. 2,600/-, स्लिम, गोरी, गृहकार्य में निपुण, पिता एयरफोर्स में वारंट आफीसर की कन्या के लिए दहेजविरोधी वैश्य परिवार से संबंधित, स्थापित सेवारत, केंद्रीय विद्यालय अध्यापक, इंजीनियर, बैंक आफीसर, सिविल आफीसर वर की आवश्यकता है. प्रथम बार में पूर्ण विवरण सहित लिखें. वि.नं. 3840, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ग्रेजुएट, 27, 160, आकर्षक, गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष, गुप्ता (मान) कन्यार्थ कार्यरत, शाकाहारी, दहेज विरोधी, सुयोग्य वैश्य वर. संविवरण लिखें. वि.नं. 3841, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मौर्य, (कुशवाहा), बी.एससी., 22, 158 सें.मी., सरकारी सेवारत, सुंदर, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु डाक्टर, इंजीनियर, अधिकारी/व्यवसायी, कार्यरत, सुयोग्य, सजातीय वर चाहिए. गुजरातवासी को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 3842, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोयल, 26/5' 2½", इंटर, रंग साफ, विधवा (दो लड़के 5-2 वर्षीय) हेतु योग्य वर. व्यवसायी को प्राथमिकता. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 3843, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोरी (हिंदू जुलाहा), 23 वर्षीया, 165 सें.मी., एम.ए. अध्ययनरत, गेहुआं, गृहकार्यदक्ष, पिता केंद्रीय सेवा में राजपत्रित अधिकारी, हेतु वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 3844, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26/155, कायस्थ, बिहारवाली, ग्रेजुएट, बी.एड., गेहुआं, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, निस्संतान विधवा हेतु उदार, रूढ़िमुक्त वर. वि.नं. 3845, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली निवासी, कान्यकुब्ज सांकृत, 20, 165, ग्रेजुएट, स्वस्थ, गोरी, सुंदर, गृहकार्यदक्ष, व्यावसायिक परिवार की कन्या हेतु सुयोग्य, व्यवसायरत/सेवारत, सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 3846, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी, 25 वर्षीया, 153 सें.मी., गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष, बी.ए., कंप्यूटर डिप्लोमा, डिप्लोमा इन टीचिंग, दिल्लीवासी, कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. शीघ्र उत्तम विवाह. वि.नं. 3847, सरिता, नई दिल्ली-110055.

20 वर्षीया, 157 सें.मी., बी.ए., कुर्मि क्षत्रिय, स्मार्ट, आकर्षक, मृदुभाषी, गृहकार्य अति निपुण कन्या हेतु सरकारी सेवारत, दहेजविरोधी वर चाहिए. वि.नं. 3848; सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, 162, एम.ए., गुरु सिख कन्या हेतु योग्य वर चाहिए. राजस्थान निवासी को वरीयता. वि.नं. 3849, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीया, 158 सें.मी., स्मार्ट, सुंदर, एम.ए., बी.एड., केंद्रीय स्कूल में सेवारत, खंडेलवाल जैन, दहेजविरोधी, प्रगतिशील कन्यार्थ स्मार्ट, उच्च शिक्षित, खंडेलवाल वर ही लिखें: वि.नं. 3850, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ब्राह्मण, मध्यप्रदेशीय, गोरी, स्नातकोत्तर कन्यार्थ, 23/155, प्रतिष्ठित, कंप्यूटर केंद्र सेवारत, पिता उच्च पदासीन. वि.नं. 3851, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, गोयल, 22/155 सें.मी., गोरी, स्लिम, एम.ए. अध्ययनरत (फाइनल), गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु वर चाहिए. दहेज नहीं. वि.नं. 3852, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा, 25/153, एडवोकेट (अच्छी प्रैक्टिस), सुशील, अति सुंदर, कन्या हेतु शासकीय सेवारत, सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 3853, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ, कुलीन कन्या, 167/28, एम.ए., गृहकार्यदक्ष हेतु वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. उत्तम विवाह. वि.नं. 3854, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौहान, राजपूत, 21/165, रंग गोरा, सुंदर, स्मार्ट, एम.ए. में अध्ययनरत हेतु सजातीय, सेवारत वर चाहिए. वि.नं. 3855, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26/157, कायस्थ, पी.सी.एस., कार्यरत कन्या हेतु आई.ए.एस. या पी.सी.एस. कार्यरत अधिकारी, लंबा व सुंदर वर चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 3856, सरिता, नई दिल्ली-110055.

25/155 सें.मी., एम.एससी., पंजाबी, अरोड़ा, बीमा कंपनी में कार्यरत, एक पैर में दोष, किंतु किसी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं, कन्या हेतु वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. प्रथम बार में ही पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 3857, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सक्सेना, कायस्थ कन्या, 29/152, एम.ए., सुंदर, गोरा रंग, हेतु सुयोग्य वर चाहिए. शीघ्र उत्तम

विवाह. वि.नं. 3858, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिंघल, दिल्ली निवासी, 25, 153 सें.मी., बी.ए., सुशील, सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 3859, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कायस्थ, 34, पीएच.डी., अति सुंदर, गोरी, गृहकार्यदक्ष, सेवाभावी, शादी के एक माह बाद तलाकशुदा कन्यार्थ वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. विधुर, तलाकशुदा स्वीकार्य. लिखें: वि.नं. 3860, सरिता, नई दिल्ली-110055.

संपन्न, उच्च जातीय वर चाहिए. राजपूत, तलाकशुदा, संतानहीन, 35 वर्षीया, स्नातकोत्तर, गौरवर्ण कन्या हेतु गृहप्रबंध में निपुण, पूर्ण विवरण प्रथम बार में. वि.नं. 3861, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23, 161, ओसवाल जैन, बी.ए. अंगरेजी, फर्स्ट क्लास, मेधावी, सुंदर, गेहुआं रंग, स्वस्थ, स्लिम, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सजातीय वर चाहिए. वि.नं. 3862, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा अग्रवाल, म.प्र. से एम.बी.बी.एस., शिक्षित, गेहुआं, 27, 25, 23 वर्ष व प्रत्येक 5′ 2″ ऊंचाई वाली तीन डाक्टर सगी बहनों के लिए सजातीय वर चाहिए. लिखें: वि.नं. 3863, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, गोरी, बी.ए., एलएल.बी., घर कार्य निपुण, 30 वर्षीया, 155, के लिए म.प्र. में स्थापित, सुंदर, एक्जीक्यूटिव इंजीनियर, डाक्टर, लेक्चरार, मिलीटरी में कार्यरत वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 3867, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोरखा, चितोडे गोत्र, 23 वर्षीया, 153 सें.मी., गोरी, सुंदर, स्लिम, गृहकार्य में दक्ष, बी.एससी., बी.एड., शिक्षिका कन्या हेतु सुयोग्य, सजातीय, सेवारत वर चाहिए. वि.नं. 3868, सरिता, नई दिल्ली-110055.

23/156, सुंदर, सुशील, उड़ीसा में पलीपढ़ी, शिक्षित, गृहकार्य में दक्ष, बिहारी, कान्यकुब्ज ब्राह्मण, शादी के डेढ़ साल बाद विधवा हुई, सुयोग्य वर चाहिए. डेढ़ साल की बच्ची. वि.नं. 3869, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुरील (अ.जा.), 20/158, मैट्रिक, गेहुआं रंग, सुशील, गृहकार्यदक्ष कन्यार्थ सजातीय, सुयोग्य, सेवारत वर चाहिए. वि.नं. 3870, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बिहार निवासी, कायस्थ (श्रीवास्तव), बंगाल औद्योगिक क्षेत्र में कार्यरत, 24½, 162, बी.ए. में अध्ययनरत, कानवेंट शिक्षित, गृहकार्य, इंटीरियर डेकोरेशन, ब्यूटीशियन, कुकिंग में दक्षता, सुंदर, सुशील, स्मार्ट कन्या हेतु सेवारत, इंजीनियर वर चाहिए. पिता इंजीनियर कार्यरत. उपजातिबंधन नहीं. वि.नं. 3871, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल मित्तल, 19 वर्षीया, 160 सें.मी., 49 किलोग्राम, बी.काम. द्वितीय अध्ययनरत, आकर्षक, स्लिम कन्या हेतु वर चाहिए. दिल्ली, बंगलौरवासी को प्राथमिकता. उत्तम विवाह. वि.नं. 3872, सरिता, नई दिल्ली-110055.

श्रीवास्तवा, 28 वर्षीया, 150, एम.ए. समाजशास्त्र, पत्रकारिता, दुबलीपतली, गोरी, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु सुयोग्य वर चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 3873, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वधू चाहिए

3,000/-, 26, 169, 58, दुबे ब्राह्मण, कुलीन परिवारीय, साइंस ग्रेजुएट, स्लिम, वायुसेना तकनीकीय हेतु सुशिक्षित, सुंदर, स्मार्ट, कुलीन संस्कारीय, सजातीय कन्या चाहिए. दहेजबंधन नहीं. विज्ञापन उपयुक्त चयन हेतु. शीघ्र, सादा विवाह, वि.नं. 3763, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सरयूपारीण, 28, 185, बी.ई. सिविल, व्यवसायरत, मासिक 10,000/-, आयकरदाता हेतु सुंदर, सुशिक्षित वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 3781, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 28, 178, 4,000/-, अनुभाग अधिकारी (सरकारी), निजी मकान (दिल्ली), हेतु सरकारी अध्यापिका, बैंक कार्यरत वधू चाहिए. वि.नं. 3782, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सिसौदिया राजपूत, 26/185, 4,500/-, सी.ए. (दिल्ली) युवक हेतु अति सुंदर, लंबी, स्नातक, शाकाहारी, 22 वर्ष से कम, उच्च परिवारीय घरेलू कन्या चाहिए. राजस्थानी को वारीयता. वि.नं. 3783, सरिता, नई दिल्ली-110055.

32/152/2,800/-, एम.ए., राजकीय अध्यापक (टी.जी.टी.) नेत्रहीन हेतु शिक्षित, सेवा भावना से प्रेरित नेत्रवान वधू चाहिए. वि.नं. 3784, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कूर्मि क्षत्रिय, 28, 175, 3,250/-, एम.ए., उत्तर प्रदेश सचिवालय, सेवारत हेतु आकर्षक, सजातीय, पोस्ट ग्रेजुएट वधू चाहिए. संपूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 3785, सरिता, नई दिल्ली-110055.

उ.प्र. राजपत्रित, वैटरीनरी डाक्टर, 32/163 सें.मी., ब्राह्मण हेतु प्रोफेशनल, प्रतिभाशाली वधू चाहिए. दहेज नहीं. वि.नं. 3786, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल गर्ग, 23, 167, हायर सेकेंड्री, निजी व्यवसाय, एक मात्र पुत्र, सुंदर, आकर्षक, बंगला, कार, संपन्न परिवार, हेतु सुंदर, शिक्षित कन्या चाहिए. वि.नं. 3787, सरिता, नई दिल्ली-110055.

24, 161, पासवान (दुसाध), बी.काम. फाइनल ईयर, रेलवे के एक्ट एपरेंटिस के अंतिम वर्ष में ट्रेनिंगरत, मकानधारी, संपत्तिधारी हेतु मैट्रिक पास

सुंदर, गृहकार्यदक्ष कन्या चाहिए. वि.नं. 3788, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी (पेशा नहीं), 26, 170 सें.मी., बी.एससी., 3,000/-, रेलवे सेवारत हेतु वधू. बंधन रहित. वि.नं. 3789, सरिता, नई दिल्ली-110055.

संपन्न, अमरीका बसे मातापिता, 33, 178 सें.मी., 28, 180 सें.मी., हैंडसम, कंप्यूटर प्रोफेशनल, हिंदी भाषी, पुत्रों सहित शीघ्र विवाह हेतु आ रहे हैं. कोई बंधन नहीं. देहली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान में बसे परिवारों को प्राथमिकता. जन्मतिथि, ताजा फोटो, सविवरण आवश्यक. कन्या स्वयं लिख सकती है. BOX 16081, ATLANTA, GA30321, U.S.A.

ब्राह्मण भारतीय, सरकारी सेवारत, 175, 70, 2,800/-, 30, युवक शारीरिक संबंधों में सक्षम परंतु संतानोत्पत्ति में असमर्थ हेतु शारीरिक संबंधों की इच्छुक परंतु संतानोत्पत्ति असमर्थ या कम सेक्सयुक्त, शारीरिक अपंग वधू चाहिए. जाति, उम्र बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 3790, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी, बैंक ऑफिसर, 49 वर्षीय, निजी मकान, आय 7,000/- मासिक हेतु विनोदी स्वभाव, सुसम्पन्न, उदार हृदया, महिला जीवनसाथी चाहिए. जाति, धर्मबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 3804, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, मध्य प्रदेश, 27 वर्षीय, 170 सें.मी., बी.एससी., आकर्षक व्यक्तित्व, एम.आर., 3,000/-, हेतु सजातीय, सुंदर, ग्रेजुएट, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 3874, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28 वर्षीय, चौरसिया, ग्रेजुएट, 172 सें.मी., इमारती लकड़ी का व्यापार, नवयुवक हेतु शिक्षित एवं सजातीय वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 3875, सरिता, नई दिल्ली-110055.

50 वर्षीय, भटनागर, विधुर, वेतन 3,100/-, हरियाणा सरकार कार्यरत, दायित्वमुक्त हेतु निस्संतान, विधवा/तलाकशुदा जीवनसंगिनी चाहिए. जातिबंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 3876, सरिता, नई दिल्ली-110055.

28, 165, राजपूत युवक, आकर्षक व्यक्तित्व, कालिज लेक्चरर, पीएच.डी. कार्यरत, हेतु सुंदर वधू चाहिए. दिल्ली निवासी को वरीयता. वि.नं. 3877, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाटव, 26, 160, सुंदर, एम.एससी., एलएल.बी., बैंक क्लर्क, 2,800/-, हेतु सुशिक्षित, सुंदर कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं. 3878, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अमरीका निवासी (ग्रीनकार्ड होल्डर), 32, 165, बी.ए., सिंगल, प्रतिष्ठित संपन्न परिवार युवक, आय 2,000/- डालर, हेतु सुयोग्य, दिगंबर जैन कन्या चाहिए. प्रथम बार पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 3879, सरिता, नई दिल्ली-110055.

27, 167, 4,000/-, एम.टेक., बी.एच.ई.एल. में मैकेनिकल इंजीनियर युवक हेतु जाटव, खूबसूरत, सुशिक्षित, घरेलू, स्लिम वधू चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें: वि.नं. 3880, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 26, 162, आय 5,000/-, ला ग्रेजुएट, टैक्स सलाहकार हेतु गौरवर्ण, शिक्षित वधू चाहिए. वि.नं. 3881, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी विधुर, 53/4,000/-, सरकारी नौकरी, निजी मकान, दिल्ली निवासी हेतु विधवा, तलाकशुदा, संतान रहित जीवनसंगिनी चाहिए. वि.नं. 3882, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कोरी (हिंदू बुनकर), उत्तरप्रदेशीय, 27, 170, 4,700/-, एम.काम., ग्रामीण बैंक अधिकारी, स्मार्ट, आत्मनिर्भर, शाकाहारी युवक हेतु सुंदर, सुशिक्षित, लंबी, सुयोग्य जीवनसंगिनी चाहिए. दहेज एवं उपजातिबंधन नहीं. विज्ञापन उत्तम चयनार्थ. लिखें: वि.नं. 3883, सरिता, नई दिल्ली-110055.

26/170, अंडर ग्रेजुएट, विधुर निस्संतान, हिंदू जाट, धनवान जमींदार, इकलौता पुत्र हेतु गोरी कन्या. बंधन नहीं. लिखें: वि.नं. 3884, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 23, 172, एम.काम. (गोल्ड मैडेलिस्ट), गौरवर्ण, आकर्षक, टैक्सेशन प्रैक्टिसनर युवक हेतु सजातीय, प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण, उच्च शिक्षित, सुंदर, गौरवर्ण वधू चाहिए. जिस की टैक्सेशन प्रैक्टिस या कंप्यूटर्स में रुचि हो. लिखें: वि.नं. 3885, सरिता, नई दिल्ली-110055.

33 वर्षीय, 167, ओसवाल, एम.बी.बी.एस., एम.डी., असिस्टेंट प्रोफेसर हेतु सजातीय, सुंदर, डाक्टर को प्राथमिकता. लेक्चरर वधू चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. वि.नं. 3886, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कश्यप (कहार), 37, 166, हायर सैकेंड्री, राजकीय सेवारत, आय चार अंकों में, युवक हेतु सुयोग्य वधू चाहिए. वि.नं. 3887, सरिता, नई दिल्ली-110055.

29/180, जादौन राजपूत, डाक्टर, एम.डी., हेतु सुंदर, सजातीय वधू चाहिए. मेडिको को प्राथमिकता. वि.नं. 3888, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी अरोड़ा, 30, 172, ग्रेजुएट, सरकारी नौकरी, आय 1,600/-, सुंदर, स्वस्थ वर हेतु संतान अयोग्य अनिच्छुक वधू चाहिए. जातिबंधन नहीं. वि.नं. 3889, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 23, 172, एम.बी.बी.एस., गोल्ड मैडेलिस्ट, आगे अध्ययनरत हेतु सजातीय, सुंदर, गृहकार्यनिपुण वधू. संपूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 3890, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चौरसिया, 27, 155, 51, 3,500/-, इलैक्ट्रा-

डिप्लोमा, दिल्ली समीप प्रतिष्ठित कंपनी में
र्टेंट इंजीनियर हेतु सजातीय, सुंदर, शिक्षित
चाहिए. शीघ्र विवाह. लिखें: वि.नं. 3891,
ा, नई दिल्ली-110055.

राजपूत, 28, बी.ए., 2,300/-, युवक हेतु कन्या
ए, दहेज/जातिबंधन नहीं. वि.नं. 3892, सरिता,
ल्ली-110055.

त्री, डाक्टर, 25, एम.डी. अध्ययनरत,
स्थर, 24, 4,200/-, हलद्वानी, हेतु सुंदर वधू
ए. वि.नं. 3893, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 28, 168 सें.मी., 5,700/-, स्मार्ट,
गौरवर्ण, आर्मी कैप्टेन हेतु अति सुंदर, स्मार्ट,
, व्यवहारकुशल, सुशिक्षित/कार्यरत वधू
ए. लिखें: वि.नं. 3894, सरिता, नई दिल्ली-
55.

माहेश्वरी, सरकारी सेवारत (लेखाकार वित्त
य दिल्ली), 26½, 180, ग्रेजुएट युवक.
नया और लोईवाल छोड़ कर सुंदर, सुशिक्षित वधू
ए. प्रथम बार में पूर्ण विवरण व जानकारी सहित
: वि.नं. 3895, सरिता, नई दिल्ली-110055.

37 वर्षीय, आंशिक विकलांग, रेलवे सेवारत
र्क, अविवाहित युवकार्थ वधू चाहिए. वि.नं.
, सरिता, नई दिल्ली-110055.

ओसवाल, अत्यंत संपन्न परिवार के एम.एस.
रहे, 25/170, युवक हेतु अत्यंत सुंदर वधू.
न उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 3897, सरिता,
ल्ली-110055.

बीसा अग्रवाल, कंसल, 23/152, इंटरमीडिएट,
ऊ निवासी, विकलांग (पोलियो), समस्त कार्यों में
, संपन्न व्यावसायिक परिवारीय युवकार्थ,
र्यदक्ष, सुंदर वधू. वरीयता आंशिक विकलांग.
3898, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल, 26½, 157, 1,600/-, डी.डी.ए.
त, ग्रेड 750/-, पद मोटोरमैन, दहेजरहित,
वधू चाहिए. वि.नं. 3899, सरिता, नई दिल्ली-
55.

गाजियाबाद, जाटव, 22, 175, 3,000/-,
ा हाथ अंगूठा रहित, सुंदर युवक, स्ववाहन,
ाय, अपना मकान, हेतु सुंदर, सुशील, घरेलू
कोई बंधन नहीं. शीघ्र, साधारण विवाह. संपूर्ण
ण वांछित. वि.नं. 3900, सरिता, नई दिल्ली-
55.

45, 3,500/-, महाराष्ट्रीयन, आयुधनिर्माणी
त, तलाकशुदा (18 वर्ष पुत्र), शाकाहारी हेतु
चाहिए. मृदुभाषी, शाकाहारी, सीधीसादी,
शुदा, विधवा, बी.एड., प्राईवेट शिक्षिका,
रा निस्संकोच लिखें. कोई बंधन नहीं. बिना खर्चे
दी. वि.नं. 3901, सरिता, नई दिल्ली-110055.

श्वकर्मा, 30/165/3,000/-, एकाउंटेंट (कोल
लिमिटेड), हैंडसम युवक हेतु शासकीय
सेवारत, सुंदर, सुशील कन्या चाहिए. लिखें: वि.नं.
3902, सरिता, नई दिल्ली-110055.

बीसा अग्रवाल, बिंदल गोत्र, एम.एससी.,
28/170, भारतीय स्टेट बैंक में आफीसर, वेतन उच्च
चार अंकों में, आकर्षक व्यक्तित्व युवक हेतु सुंदर,
सुशिक्षित एवं गृहकार्य में दक्ष वधू चाहिए. विज्ञापन
उत्तम चयन हेतु. लिखें: वि.नं. 3903, सरिता, नई
दिल्ली-110055.

यादव, 27, 167, 4,000/-, एम.ए., सरकारी
सेवारत, निस्संतान, तलाकशुदा, निजी व्यवसाय,
स्मार्ट युवक हेतु वधू चाहिए. वि.नं. 3904, सरिता, नई
दिल्ली-110055.

24/170, राजपूत क्षत्रिय, उत्तर प्रदेश, अति
संपन्न, ग्रेजुएट, स्मार्ट, सुशील, आकर्षक, दिल्ली
व्यवसायरत, निजी कृषि फार्म, युवक हेतु सजातीय,
गुणवती, रूपवती वधू चाहिए. लिखें: वि.नं. 3905,
सरिता, नई दिल्ली-110055.

गौड़ ब्राह्मण, 24/180, बी.ई. (सिविल)
सेवारत, सिविल इंजीनियर युवक हेतु सुंदर, शिक्षित,
प्रतिष्ठित परिवार की कन्या चाहिए. वि.नं. 3906,
सरिता, नई दिल्ली-110055.

30 वर्षीय, 175 सें.मी., कान्यकुब्ज ब्राह्मण,
आर्किटेक्ट इंजीनियरिंग डिग्री, आई.आई.टी., मासिक
आय 8,000/-, हेतु सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. लिखें:
वि.नं. 3907, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुजराती, माहेश्वरी, बी.काम., स्मार्ट,
24/168/1,800/-, केंद्र सरकार कार्यरत युवक हेतु
संस्कारी, प्रतिभासंपन्न, ग्रेजुएट कन्या चाहिए. लिखें:
वि.नं. 3908, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चावला (गुजराती सिख), 27/180, ग्रेजुएट,
स्मार्ट, स्वव्यवसायरत, शादी के चार महीने बाद
तलाकशुदा (कारण मंदबुद्धि पत्नी) युवक हेतु
खूबसूरत, गृहकार्यदक्ष, स्वस्थ वधू चाहिए. उपजाति-
बंधन नहीं. प्रथम पत्र विवरण सहित लिखें. गरीब,
दंगा पीड़ित, अनाथ कन्या स्वयं लिख सकती हैं. दहेज
रहित विवाह. वि.नं. 3909, सरिता, नई दिल्ली-
110055.

अरोड़ा, 26, 165 सें.मी., बी.ए., आय पांच अंकों
में, निजी व्यवसाय, निजी दुकान, मकान, युवक हेतु
सुंदर, पतली, शिक्षित, दिल्लीवासी वधू चाहिए.
विज्ञापन सुंदर कन्या हेतु. दहेज नहीं. वि.नं. 3910,
सरिता, नई दिल्ली-110055.

बजाज (पंजाबी) मंगली, 26, 167, बी.ए.,
3,500/-, निजी व्यवसाय, निजी दुकान, मकान, युवक
हेतु स्लिम, सुंदर, शिक्षित, दिल्लीवासी वधू चाहिए.
विज्ञापन सुंदर चयन हेतु. दहेज नहीं. वि.नं. 3911,
सरिता, नई दिल्ली-110055.

29, 170, 4,000/-, एस.सी. (रायदास),
एम.डी. (मेडिसिन), सहायक शल्य चिकित्सक (म.प्र.
शासन), रंग गेहुआं, स्मार्ट, मध्य प्रदेश निवासी युवक

हेतु सजातीय, सुंदर ग्रेजुएट कन्या चाहिए. नानमांगलिक, ग्रेजुएट भी स्वीकार, शीघ्र विवाह लिखें वि.नं. 3912, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 37 वर्षीय, 175 सें.मी., 3,500/-, एम.काम., फेयर कलर, अविवाहित, इकहरा, स्मार्ट, केंद्रीय कर्मचारी, आर्डिनेंस फेक्टरी में हेतु सुंदर, सरकारी सेवारत वधू चाहिए. उत्तर प्रदेश निवासी को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 3913, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल सिंघल, 26 वर्षीय, सुंदर, बी.एससी., एलएल.बी., मासिक आय 4,000/-, युवक हेतु सुंदर, सुशील, सुशिक्षित, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. पूर्ण विवरण सहित लिखें : वि.नं. 3914, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, 25/159/5,300/-, असिस्टेंट मैनेजर, फाइव स्टार होटल, हेतु वधू चाहिए. वि.नं. 3915, सरिता, नई दिल्ली-110055.

स्वास्थ्य विभाग सेवारत, 26, 165, 1,960/-, विकलांग, स्मार्ट, स्वयं निर्भर, आत्मनिर्भर हेतु वधू चाहिए. कोई बंधन नहीं. वि.नं. 3916, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 26½, 163, 2,140/-, बी.एससी., प्रथम श्रेणी, डिप्लोमा, हेतु दहेज वधू. वि.नं. 3917, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यू.पी. प्रतिष्ठित परिवार के, विश्वविद्यालय प्रोफेसर, अपने मकान, स्मार्ट (29-168), शाकाहारी, एक हाथ में थोड़ी कमी, कार स्कूटर सम्पन्न, निजी व्यवसाय, घर व अचल संपत्ति, अविवाहित युवक हेतु गृहकार्यदक्ष, कम या अधिक शिक्षित कन्या का दान मानते हैं. गरीबी, दहेज, जातिवाद भूल जाएं. अनाथ, अकेली, बेसहारा, सूक्ष्म विकलांग. वि.नं. 3918, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिगंबर जैन, धर्म, उच्च शिक्षित, स्वस्थ, सुंदर, महत्वाकांक्षी, संपन्न, 38 वर्षीय, विधुर व्यापारी युवक, पुत्री पांच वर्षीया, हेतु सुंदर, सुशिक्षित, लंबी, पतली वधू चाहिए. वि.नं. 3919, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अग्रवाल जैन, संपन्न, शिक्षित परिवार, 24, 174, स्वस्थ, सर्विस, आय चार अंकीय, आर्किटेक्ट इंजीनियर हेतु आर्किटेक्ट, प्रोफेशनल विषयों में कार्यरत अथवा शिक्षा प्राप्त कर रही, सुंदर, स्वस्थ, संपन्न पारिवारिक कन्या चाहिए. वि.नं. 3920, सरिता, नई दिल्ली-110055.

38, 164, 4,800/-, सैनी, उत्तरप्रदेशीय, नेत्र चिकित्सक, सरकारी सेवारत, विधुर, दो संतान (पुत्र), हेतु शिक्षित, सुंदर, गोरी, सुशील, योग्य वधू चाहिए. निस्संतान विधवा भी स्वीकार्य. लिखें : वि.नं. 3921, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्ली स्थित, 58 वर्षीय, परित्यक्त, प्रतिष्ठित प्रोफेसर हेतु लगभग 50 वर्षीया जीवनसाथी, अकेलापन है. अधिक या कम शिक्षा. किसी प्रकार का बंधन नहीं. निस्संकोच पत्रव्यवहार संपूर्णतः गुप्त रहेगा. वि.नं. 3922, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पंजाबी खत्री, परिवार, विभाजन पूर्व पाकिस्तान अब उत्तर बिहार निवासी, 26 वर्षीय, 175 से.मी., स्वस्थ, निजी दुकान व आवास, वस्त्र व्यवसाय, मासिक आय पांच अंकीय, युवक हेतु सजातीय, सुंदर, लंबी, गोरी, स्वस्थ, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. दहेज नहीं. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें : वि.नं. 3923, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी (बागड़ी), 25/173 सें.मी., बी.काम., स्वयं का व्यापार, आयकरदाता, मध्य प्रदेश वासी युवक हेतु समकक्ष हैसियत की सुंदर, सुशील, घरेलू कन्या चाहिए. बीकानेरी माहेश्वरी को प्राथमिकता. लिखें : वि.नं. 3924, सरिता, नई दिल्ली-110055.

धोबी, 31, 175, 74, डी.एम.ई., बी.ई. (मैकेनिकल), स्वस्थ, स्मार्ट, ओ.एन.जी.सी. पब्लिक सेक्टर कार्यरत इंजीनियर हेतु सुंदर, सुशील, उच्च शिक्षित कन्या चाहिए. कोई बंधन नहीं. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. लिखें : वि.नं. 3925, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुजराती, अविवाहित, 37/168, एस.एससी., (11 पुराना स्तर), मर्चेंट नेवी में सेवारत, 2,000/- आय, हेतु सुयोग्य जीवनसाथी, शिक्षित चाहिए. सेवारत को प्राथमिकता. विधवा या तलाकशुदा (वास्तविक कारणों से) भी विचारणीय. वि.नं. 3926, सरिता, नई दिल्ली-110055.

30/168, 5,000/-, राजस्थानी, निजी व्यवसाय, दो बच्चे (5-3), विधुर युवक हेतु शिक्षित, योग्य जीवनसाथी चाहिए. तलाकशुदा, विधवा स्वीकार्य. वि.नं. 3927, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सरयूपारीण ब्राह्मण, 27, 170, बी.एससी., डिप्लोमा, सिविल इंजीनियरिंग, बी.एड., कार्यरत, आय चार अंकों में, सुंदर युवक हेतु, लंबी, सुंदर वधू चाहिए. पिता, चाचा शासकीय अधिकारी. शीघ्र विवाह. लिखें : वि.नं. 3928, सरिता, नई दिल्ली-110055.

मेघालय स्थित, प्रतिष्ठित, शिक्षित, वैश्य (जायसवाल) परिवारीय, 27 वर्षीय, 5' 6", गोरे, स्मार्ट, बी.ए. (आनर्स) युवक हेतु गोरी, सुंदर, शिक्षित वधू चाहिए. वि.नं. 3929, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी वर, 24½, 176, बी.काम. आनर्स, गोरे, लंबे, सुंदर, सुदर्शन, सुस्थापित, कलकत्ता में निजी व्यवसाय/मकान/गाड़ी हेतु सुंदर, सुशील, गोरी, लंबी, सुशिक्षित, संभ्रांत परिवारीय वधू चाहिए. विज्ञापन उत्तम चयनार्थ. वि.नं. 3930, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुरील, 26/172/4,000/-, इंजीनियर, आकर्षक

व्यक्तित्व, गौरवर्ण, शिक्षित परिवार, पिता राज-पत्रित अधिकारी, हेतु सुशिक्षित, विनम्र, सुंदर, गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष वधू चाहिए. उत्तम चयन हेतु, संभ्रांत परिवार, प्रथम बार सविवरण लिखें : वि.नं. 3931, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अविवाहित, 40, 153, 4,200/-, पीएच.डी., संपादक, निर्धन परिवार, बैंगलौर कार्यरत, विज्ञान में महत्त्वपूर्ण लक्ष्य, हेतु अभिरुचि, कोई बंधन नहीं. पत्राचार आमंत्रित. वि.नं. 3932, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विवाहुत सुड़ी, उच्च शिक्षित परिवार कार्यरत, 28 वर्षीय, लेक्चरर, एम.फिल., हेतु एम.ए. अंगरेजी या एम.बी.बी.एस. पढ़ती सुंदर उपजाति वधू. सविवरण पत्राचार करें. वि.नं. 3933, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सैनी (फूलमाली), डाक्टर, एम.बी.बी.एस., 29/165, सुंदर, राजस्थान राजकीय सेवारत हेतु डाक्टर अथवा ग्रेजुएट कन्या चाहिए. वि.नं. 3934, सरिता, नई दिल्ली-110055.

जाट, 25/172, एम.काम., बी.एड., लड़के हेतु वधू चाहिए. जिस के अभिभावक लड़के को सर्विस/बिजनेस में नियोजित करा सकें. बंधन नहीं. लिखें : वि.नं. 3935, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सुंदर, 27/164/2,300/-, अनुसूचित जाति, कोरी, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक लिपिक, सह खजांची हेतु अत्यंत रूपवान वधू चाहिए. पिता अधिकारी. जाति, धर्म, क्षेत्र कोई भी बंधन नहीं. विज्ञापन उत्तम चयन हेतु. संपूर्ण विवरण सहित. शीघ्र लिखें : वि.नं. 3936, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गर्ग गोत्र, कुमाऊंनी, जोशी, इंजीनियर, एम.बी.ए., 26/174/5,000/- दिल्ली हेतु सुंदर, गोरी, स्लिम, गृहकार्य निपुण, बैंक/केंद्रीय विद्यालय, भारत सरकार सेवारत वधू चाहिए. केवल कृतसंबंधी कुमाऊंनी बायोडेटा, कुंडली भेजें. वि.नं. 3937, सरिता, नई दिल्ली-110055.

सरयूपारीय ब्राह्मण, 27/5'8", एम.काम., टैक्स कंसलटेंट, युवक हेतु गौरवर्ण, सुंदर, सुशील, शिक्षित कन्या चाहिए. सरयूपारीय ब्राह्मण को प्राथमिकता. वि.नं. 3938, सरिता, नई दिल्ली-110055.

माहेश्वरी, विधुर, 50 वर्षीय, 5' 4", दायित्वमुक्त, संपन्न, इंजीनियर हेतु शिक्षित, सुंदर, गृहकार्य निपुण जीवनसंगिनी चाहिए. शाकाहारी, निस्संतान विधवा, परित्यक्ता स्वीकार्य. वि.नं. 3939, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गुप्ता, 27/175, एम.बी.बी.एस., खूबसूरत, मंगलिक युवक हेतु शिक्षित, सुसंस्कृत, खूबसूरत, गृहकार्य में दक्ष वधू, प्रथम बार में विवरण सहित लिखें : वि.नं. 3940, सरिता, नई दिल्ली-110055.

अहलुवालिया (सिख नहीं), एम.एससी., पीएच.डी., 27/175/3,200/-, लड़के हेतु योग्य, सुंदर कन्या चाहिए. वि.नं. 3941, सरिता, नई दिल्ली-110055.

हिंदू गुर्जर, 27, 167, आय पांच अंकों में, रंग गेहुआं, दहेज नहीं. वि.नं. 3942, सरिता, नई दिल्ली-110055.

34 वर्षीय, पंजाबी खत्री, 182 सें.मी., सरकारी कर्मचारी, पारिवारिक व्यवसाय, हेतु सुंदर, सुशिक्षित, घरेलू वधू चाहिए. शीघ्र विवाह. वि.नं. 3943, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 27 व 28 वर्षीय, शिक्षित, स्वस्थ, सुंदर, निजी व्यवसाय और सर्विस, प्रतिष्ठित परिवार, जयपुर में निजी आवास और अच्छी अचल संपत्ति हेतु सुंदर, शिक्षित वधुएं चाहिए. लिखें : वि.नं. 3944, सरिता, नई दिल्ली-110055.

कुर्मी क्षत्रिय, 31/170, 10,000/-, एम.एससी., पीएच.डी., सुंदर, गौरवर्ण, स्मार्ट, दिल्ली सेवारत वैज्ञानिक हेतु सजातीय, एम.एससी., एम.ए., स्लिम, सुंदर, गौरवर्ण, गृहकार्यदक्ष, लंबी वधू चाहिए. पूर्ण विवरण लिखें : वि.नं. 3945, सरिता, नई दिल्ली-110055.

35, 170, उच्च कुलीन, प्रतिष्ठित, अच्छी आय, युवक हेतु सुंदर वधू चाहिए. स्वयं लिखें : वि.नं. 3946,

व्यक्तिगत विज्ञापनों की दरें

सरिता : 5.00 रु. प्रति शब्द

वूमंस ईरा : 3.50 रु. प्रति शब्द

सरिता व वूमंस ईरा : 7.00 रु. प्रति शब्द

पूर्ण विवरण के लिए लिखें :

मुख्य व्यक्तिगत विज्ञापन कार्यालय :

सरिता, एम 12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001. फोन : 3321313

शाखाएं

- 79-ए, मित्तल चैंबर्स, नरीमन पाइंट, **बंबई**-400021. फोन : 2022409
- 14, पहली मंजिल, सीसंस कंप्लैक्स, 150/82, मांटीअथ रोड, **मद्रास**-4600008. फोन : 868138.
- तीसरी मंजिल, पोद्दार पाइंट, 113, पार्क स्ट्रीट, **कलकत्ता**-700016. फोन : 298981.
- 302-बी, 'ए' विंग, क्वींस अपार्टमेंट, 3, क्वींस रोड, **बंगलौर**-560001. फोन : 258091.
- 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, **अहमदाबाद**-380009. फोन : 77845.
- 122, चिनाय ट्रेड सेंटर 116, पार्क लेन **सिकंदराबाद**-500003. फोन : 831576.
- 111, आशियाना टावर, प्रदर्शनी रोड, **पटना**-800001. फोन : 55286.
- जी-7, पायोनियर टावर्स, 1, मेरीन ड्राइव, **कोचीन**-682031.

सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा (लौहकार), मांगलिक, 27, 160, 4,200/-, बी.ई. (मैटलर्जी), सरकारी प्रतिष्ठान कार्यरत हेतु सजातीय, गौरवर्ण, डाक्टर, साइंस पोस्ट ग्रेजुएट, ग्रेजुएट, गृहकार्यदक्ष, संपन्न, सुशिक्षित परिवारीय कन्या चाहिए. विवाह शीघ्र. पूर्ण विवरण सहित भेजें. वि.नं. 3947, सरिता, नई दिल्ली-110055.

52 वर्षीय, विधुर, अग्रवाल, 166 सें.मी., स्वस्थ, समृद्ध, देहली में अपनी व्यवसाय, अपना मकान, पूरी लाइफ सेफ्टी, हेतु सुशील, धार्मिक, 40 वर्षीया, निस्संतान जीवनसंगिनी चाहिए. विधवा, तलाकशुदा मान्य, अग्रवाल, जैन को प्राथमिकता. पहली बार पूर्ण विवरण लिखें: वि.नं. 3955, सरिता, नई दिल्ली-110055.

वरवधू चाहिए

कश्यप (कहार) परिवार, हेतु वरवधू चाहिए. कन्या 31, एम.ए. (प्रथम), गोरी, सुंदर, युवक 30, इंजीनियरिंग डिग्री, सरकारी सेवारत हेतु धुरिया मल्लाह, निषाद, बाथम, केवट आदि को प्राथमिकता. लिखें: वि.नं. 3809, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा ब्राह्मण, 28/154, मंगलिक, एम.ए., ड्राइंग पेंटिंग में बी.ए., गेहुआं, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु वर, 26/173/2,000/-, मिडिल, प्रतिष्ठित परिवार, लड़के हेतु वधू चाहिए. वि.नं. 3948, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्लीवासी, अग्रवाल, 22/160, स्नातक, सुदर्शनी, गृहकार्यदक्ष कन्या (पिता टीचर), एवं भाई, 25/170, इंटर, सुशील, निर्व्यसनी, व्यवसायी, 4,000/-, हेतु दहेजविरोधी, सुसंस्कृत, सुयोग्य वरवधू. वि.नं. 3949, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिगंबर जैन, 22, 150, गौरवर्ण, सुशील, एम.ए. कन्यार्थ, गुणवान वर, एवं सुस्थापित निजी व्यवसाय, 24, 160, 3,000/-, स्मार्ट युवकार्थ सुयोग्य, सुंदर वधू चाहिए. वि.नं. 3950, सरिता, नई दिल्ली-110055.

पोस्ट ग्रेजुएट, 24 वर्षीया कन्या, 47/158, हेतु शाकाहारी, शासकीय कार्यरत वर चाहिए एवं भाई 32 वर्ष, ग्रेजुएट हेतु शाकाहारी, लंबी कन्या चाहिए. वि.नं. 3951, सरिता, नई दिल्ली-110055.

यादव, 25½, 162, एम.ए., गोरी, इकहरी, गृहकार्य निपुण कन्यार्थ सेवारत वर एवं 27½, 167, आकर्षक, विदेश सेवारत युवकार्थ उच्च शिक्षित वधू. सविवरण लिखें: वि.नं. 3952, सरिता, नई दिल्ली-110055.

विश्वकर्मा, भूतपूर्व अधिकारी की 27, 152, गौर, एम.ए., एलएल.बी., प्रैक्टिसरत, गृहकार्यदक्ष कन्या हेतु वर एवं 30, 157, गौर, बी.काम., डी.सी.पी., एम.काम. (प्रि.), सी.ए.आई.आई.बी. पार्ट-I, भारतीय स्टेट बैंक में कार्यरत युवक हेतु वधू. वि.नं. 3953, सरिता, नई दिल्ली-110055.

गोद विज्ञापन

पंजाबी खत्री दंपती (दोनों मुरादाबाद सरकारी सेवा में) नवजात बालक गोद लेना चाहते हैं, मां जिस का बच्चा पैदा होने वाला हो, विचारणीय है. वि.नं. 3810, सरिता, नई दिल्ली-110055.

दिल्लीवासी, युवा निस्संतान, समृद्ध दंपती एक नवजात लड़का गोद लेने को इच्छुक हैं. कोई बंधन नहीं. संस्थाएं भी विचारणीय. वि.नं. 3954, सरिता, नई दिल्ली-110055.

चिकित्सा सलाह चाहिए

क्या इंसानियत के नाते कोई विदेशी कास्मेटिक सर्जन मेरी मदद करेगा. आर्थिक सहायता नहीं, केवल उचित सलाह. ज्योति मखीजा, 45 ए, न्यू कृष्णा नगर, दिल्ली-51.

लेखकों के लिए

लेखकोपयोगी साहित्य मंगाइए. मनमुक्ता पांवटा-173025, हि.प्र.

शिक्षा

भारत के अंगरेजी के प्रमुख स्कूल 'ब्रिटिश स्कूल आफ लैंग्वेज' से केवल दो माह में अंगरेजी सीखिए. निम्नलिखित कोचिंग सेंटरों पर संपर्क करें अथवा लिखें: ए-8, रिंग रोड, साउथ एक्सटेंशन, पार्ट वन, नई दिल्ली. एम-116, कनाट प्लेस, नई दिल्ली. 3-बी, पूसा रोड, नई दिल्ली. बी.-4, राजा गार्डन चौक. फोन: 4624959, 5442039.

रिक्त स्थान

हिंदी फीचर, दूरदर्शन फिल्म के लिए महिला, पुरुष व बाल कलाकार तथा गायकों की आवश्यकता है. अपना नामपता लिखा लिफाफा भेज कर विवरण प्राप्त करें. निर्देशक, पोस्ट बाक्स नं. 26945, बंबई-400054.

व्यवसाय

अमरीकन ज्ञान पर अपना नामपता, 1,000, उत्तम क्वालिटी गोंद लगे लेबिल छपवा सकते हैं. जिन के बाईं ओर सुनहरे बार्डर, शुल्क रु. 60/-, वी.पी.पी. द्वारा (डाक खर्च अलग), कुलदीप सिंह, 32, दी माल, अमृतसर-143017.